अनोखा तीरन्दाज़

चयन, सम्पादन एवं रूपान्त

चन्द्रप्रकाश प्रभाकर 'मौत

प्रथम संस्करण

अनोखा तीरन्दाज़

बर्मी लोक कथा माला (खण्ड दस)

चयन, सम्पादन एवं रूपान्तर

चन्द्रप्रकाश प्रभाकर 'मौतीरि'



बर्मी लोक कथा माला : खण्ड दस

अनोखा तीरन्दाज़

अनोखा तीरन्दाज़

बर्मी लोक कथा माला

खण्ड दस

चयन, संकलन एवं प्रस्तुति

चन्द्रप्रकाश प्रभाकर 'मौतीरि'

इरावदी प्रकाशन

नयी दिल्ली, भारत

ANOKHA TIRANDAZ : A collection of Burmese Folk Tales.
Vol. Ten, Selected and translated by
Chandra Prakash Prabhakar, 'Maw Thi Ri' into Hindi, From
Burmese. 1996, Rs. 150/-

संस्करण : 1996

ISBN : 81-85720-72-X
मूल्य : 150 रुपये

प्रकाशक
इरावदी प्रकाशन
सी-487, विकासपुरी,
नयी दिल्ली-110018
फोन : 5504169

मुद्रक
अर्चना प्रिन्टर्स
दिल्ली-110031
फोन : 2205378, 2410586

कथाक्रम

अमन

अरुण

अनमोल

तानिया

मधुर

कल्याणी

वसुन्धरा

तविषी

और

शुभम्

के

लिए

अनोखा तीरन्दाज़

पुराने ज़माने की बात है। ढौची वाह नाम का एक देवता था। एक परिवार भी था जिसमें पति–पत्नी, बेटी और बेटा थे। पति का नाम अयै, पत्नी का मूढै था। नौ डौ नाम की उनकी लड़की थी और एक बेटा था जिसका नाम फूडेवू था।

पति–पत्नी ने अपने बाप–दादा की खेती–बाड़ी का पेशा अपनाया हुआ था और बड़ी मेहनत करते थे लेकिन फिर भी अधिक तौर पर दुखी थे क्योंकि उनका जीवन काफी गरीबी में बीत रहा था।

एक दिन वे अपने जीवन पर विचार कर रहे थे कि पति ने जिसका नाम अयै था, उसने अपनी पत्नी मूढै से कहा, "खेती–बाड़ी करके हम लोग धनवान बन जायें ऐसा कोई मार्ग मुझे नहीं दीखता। इसलिए हमको किसी दूसरी जगह जाकर थोड़ा–बहुत व्यापार करके देखना चाहिए। व्यापार करके पैसे कमाकर हम देखते हैं शायद भाग्य हमारा साथ दे दे।"

उसकी पत्नी मूढै ने पति के प्रस्ताव को सुनकर कहा, "किसी दूसरी जगह पर जाकर व्यापार करने का आपका प्रस्ताव तो अच्छा है। मेरी और आपकी शादी हुए काफी समय हो चुका है, हम लोग एक–दूसरे के साथ रहे, हम एक–दूसरे से कभी जुदा नहीं हुए हैं। हमारे दोनों बच्चे भी अभी काफी छोटे हैं। अगर आप अकेले ही परदेश जाते हैं तो मुझे समझ नहीं आती कि दोनों बच्चों के साथ मैं अकेली यहाँ कैसे रहूँगी।"

पति अयै ने कहा, "तुम इस बारे में सोचकर क्यों चिन्तित हो रही हो? मैं अगर जाऊँगा भी तो ज्यादा दिन के लिए नहीं जाऊँगा। मुझे कोई विशेष देर नहीं होगी। ज्यादा–से–ज्यादा मुझे एक महीना लग जायेगा। घर में एक महीने के लिए राशन और अन्य सब कुछ मैं इकट्ठा करके रख जाऊँगा।" यह कहकर उसने अपनी पत्नी से फिर यूँ कहा, "देखो, घरों की औरतें अगर सारा दिन घूमती रहें तो उनका घर बर्बाद हो जाता है। सारा दिन दूसरे के द्वार पर जाना और भटकते रहना, इस तरह की कभी बात नहीं करना। मैं न होऊँ तो विशेष तौर पर मेरी गैर हाजिरी में तुम और अच्छी तरह से रहना।" इस तरह पति ने

पत्नी से कहा और यात्रा पर जाने की तैयारी की। वह यात्रा पर विदेश के लिए निकल पड़ा।

घर से अयै के जाने के बाद एक दिन मूढै जंगल के बीच जहाँ एक नदी थी वहाँ एक नाली में नहाने के लिए गयी। नहाकर वह नाली के किनारे एक पत्थर की चट्टान पर बैठकर विश्राम करने लगी। तभी उसके सामने एक बहुत बड़ी कठिनाई, एक बहुत बड़ी मुश्किल आ गयी। जिस चट्टान पर वह बैठी थी जब उसने वहाँ से उठने की कोशिश की तो उसने देखा कि वह वहाँ से उठ नहीं पा रही थी। उसने देखा कि उसका शरीर, उस पत्थर की चट्टान से चिपक गया है। उस चिपकन के कारण वह वहाँ से हिल भी नहीं सकती है।

मूढै बहुत ज्यादा डर गयी। वह काँपने लगी। उसने चिल्लाकर अपने बच्चों को बुलाया और उन्हें बताया कि वह बहुत बड़े संकट में फँस गयी है। वहाँ कोई मित्र इत्यादि नहीं है। इसलिए किसी से भी किसी तरह की मदद मिलने की आशा नहीं थी। "बच्चों मेरी मदद करो, मेरी मुश्किल किसी तरह दूर करो।" यह कहकर वह रोने लगी।

इस तरह मूढै जब रो रही थी, तब वहाँ एक बन्दर आया। बन्दर ने उसके पास आकर उससे यूँ कहा, "मैं बन्दरों का राजा हूँ, पत्थर की चट्टान मैंने ही निर्मित की है। मैंने इसे बनाते समय प्रतिज्ञा की थी कि जो भी कोई मानव, खूबसूरत और महकदार लड़की यहाँ चिपक गयी मैं उसे अपनी रानी बनाऊँगा। इसलिए तुम मेरे साथ जंगल में रहने चलो। मेरे साथ जंगल में ही तुमको रहना होगा।" बन्दर की बात को जब मूढै ने सुना तो वह बहुत डर गयी और बोली, "ओ बन्दरों के राजा ! आपको मालूम होना चाहिए कि मैं ब्याहता हूँ। मेरे पति ने मुझे कहा हुआ है कि मैं किसी के यहाँ भी घूमने नहीं जाया करूँ इसलिए मैं किसी के घर नहीं जाती। मैं तो सिर्फ यहाँ नहाने आयी थी और आप द्वारा बनाए हुए जाल में फँस गयी हूँ। मेरा कोई सहारा नहीं है। मैंने अपने छोटे बेटे और छोटी बेटी को ही इस समय सहारा बनाया हुआ है। आप मुझे ले जाने का विचार छोड़कर मुझे इस जाल से मुक्त कराएँ। मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ।"

इस पर बन्दर ने कहा, "मैंने जब यह चट्टान बिछाई थी और जब मैंने प्रतिज्ञा की थी उस समय मैंने ऐसी कोई शर्त नहीं रखी थी। मेरी उसी प्रतिज्ञा का यह प्रताप है कि तुम इसमें फँस गयीं। मैंने प्रतिज्ञा के समय तुम्हारा ध्यान नहीं किया था। मैंने तो आमतौर पर यह कहा था कि फलां-फलां किस्म की यदि लड़की यहाँ आ जाये तो वह यहाँ से बचकर न जाने पाये। उसे पूरा जीवन मेरे साथ व्यतीत करना पड़े। अगर तुम मेरे साथ चलने के लिए तैयार नहीं हो तो

यह समझ लो कि तुम इस जाल से मुक्त नहीं हो सकतीं।"

बन्दर की बात सुनकर उस लड़की ने कहा, "आप एक बहुत बड़े बन्दरों के राजा हैं। मैं एक मामूली आदमी की पत्नी हूँ। मेरी गलती मात्र यह है कि मैं उस जगह उस नदिया पर आकर नहाने बैठ गयी जिसका जिक्र मेरे पति ने नहीं किया था। अगर पति ने मुझे यह कहा होता कि किसी नदी, नाले या झील में जाकर नहीं नहाना है तो मैं कभी भी यहाँ नहाने नहीं आती और मैं कभी तुम्हारे जाल में नहीं फँसती।

उस समय जब पति मुझे आदेश दे रहे थे तो मेरे भाग्य में क्या लिखा है, या मेरा भाग्य किस तरफ पलटी खाएगा, इस बारे में वह सोच नहीं पाये थे। अब देखिए, मेरे लिए मुसीबत है, मुझे लगता है कि मुझे अपने पति को छोड़ना पड़ेगा और यह कोई अच्छी बात नहीं है, मुझे अपने पति और बच्चों को नहीं छोड़ना चाहिए। मैं आपसे इसीलिए अनुरोध कर रही हूँ।"

इस बात को सुनकर बन्दर हँसने लगा।

"हाँ...हाँ...बहुत लम्बी–लम्बी बातें करती हो तुम। चुपचाप अपने बच्चों को बुलाओ और चुपचाप मेरे पीछे चली आओ।"

इस पर मूढे ने कहा, "अब बच्चे तो मैं लेकर नहीं चलूँगी, अगर चलने के लिए मजबूर ही करते हो तो मैं खुद ही चलती हूँ।" यह कहकर लड़की को प्यार करती हुई वह बोली, "प्यारी बेटी, अब तुम लोग मेरे साथ मत चलो। मुझे अब बन्दरों के राजा के पीछे जाना होगा। जब मैं नहीं होऊँगी तब तुम्हारे छोटे भाई को भूख लगेगी, उसे प्यास लगेगी। तुम पहले खुद चबाकर चावल उसके मुँह में डालना। मैं तुम्हारे पास वापस आ सकूँगी या नहीं, इस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकती। और बेटे तुम भी दीदी की बात को अच्छी तरह सुनना।" ऐसा कहकर माँ ने बच्चों को वहीं छोड़ दिया।

तभी बेटी कहने लगी, "माँ, अगर आप हम दोनों को यहीं छोड़कर जाओगी तो जीवन का बहुत बड़ा भार मुझ पर आ गिरेगा। माँ ! ये भार मेरे लिए एक पहाड़ को उठाकर रखने के बराबर होगा। मैं इस बोझ को अकेले नहीं उठा पाऊँगी और यह बोझ मेरे अकेले के उठाने लायक भी नहीं है, इसमें जितने लोग हों, वे सभी इसको मिलकर उठाएँ तभी हो सकता है। माँ ! उदाहरण के लिए दस मुँहवाला कोई शेर हो और वह किसी की लाज–लज्जा उतारने के लिए तैयार हो जाये तो हमारा पक्ष कमजोर हो जाता है। हमें चुपचाप सह लेने में ही भला मालूम होता है।" यह कहकर वह बहुत देर तक रोती रही और वापस अपने घर लौट आयी। माँ बूढ़े बन्दर के पीछे–पीछे गहरे जंगल में चली गयी।



जब भोर हुई तभी छोटा बेटा फूडेवू लगातार रोने लगा। इसकी बहन नौ डौ उसे चुप कराती थी। क्योंकि खुद बच्ची होने के कारण किसी काम को भी वह ठीक से नहीं कर पाती थी इसलिए उसने अपने छोटे भाई को पीठ पर बिठा लिया और जिस ओर उसकी माँ गयी थी उस ओर माँ...माँ पुकारती हुई चल पड़ी। "माँ...माँ...जल्दी लौट आ। छोटे भैया को बहुत ज्यादा भूख लगी है। वह दूध पीना चाहता है, माँ वह रो रहा है। तुम जल्दी आओ।" सारे जंगल में आवाज़ गूँज गयी, सारे पहाड़ों में यह आवाज़ गूँज गयी। उसकी पुकार चारों तरफ फैल गयी। उस बच्चे के रोने की आवाज़ को जंगल के रखवाले दैत्य ने जब सुना तो उसने यह आवाज़ दी, "क्या किसी लकड़ी की जड़ पर बैठकर बुला रहे हो? तुम कहाँ से बुला रहे हो ?"

दैत्य ने आवाज़ दी। वह आवाज बहुत ही डरावनी थी और आवाज़ सुनकर बच्चे दौड़ गये। घर पहुँचकर उन्होंने देखा कि उनका पिता वापस लौट आया है। बच्चों ने पिता को बताया कि एक बन्दर माँ को किस तरह ले गया है। इस पर पिता को बहुत क्रोध आया और उसने अपना धनुष–बाण उठा लिया और पहले उसने एक बार धनुष की तार को जोर से बजाया और फिर ललकारा, "यह एक बड़ा प्रभावी धनुष है। धनुष की लकड़ी सात गजी है और इसकी मोटाई एक हाथ जितनी है। अगर मैं यह कमान आकाश में चला दूँ तो आकाश के तारे भी टूटकर नीचे गिर पड़ें। मैं इसको अगर पानी में चला दूँ तो समुद्र के बीच में जो भँवर है वह भी उबलने लगे। मैं इस प्रभावी धनुष का स्वामी हूँ। बच्चों तुम लोग चिंता मत करो। हम लोग किसी की परवाह नहीं करते।"

इस तरह उसने अपने क्रोध का प्रदर्शन किया और बेटे और बेटी को लेकर जिस ओर दैत्य ने आवाज़ दी थी, उस जगह पर पहुँच गया। पहले की तरह बेटी ने फिर से बुलाया, "माँ...माँ...जल्दी करो, जल्दी आओ, भैया को बहुत भूख लगी है। उसने दूध पीना है। जल्दी आओ माँ, जल्दी आओ।" जंगल के रखवाले दैत्य ने जब वह आवाज़ सुनी तो उसने भी उत्तर दिया, "क्या तुम किसी पेड़ की जड़ पर बैठकर बुला रही हो? हा...हा...ही...ही..." बड़ी डरावनी आवाज़ से दैत्य ने अपनी उपस्थिति का अहसास करवाया। इस तरह आवाज़ देने के बाद वह बलशाली दैत्य पहाड़ से नीचे उतरा और वहाँ प्रतीक्षा करनेवाले अयै ने अपने कमान से उस पर वार किया और दैत्य वहीं मर गया। जब दैत्य मर गया तो पिता, बेटी और बेटा तीनों बन्दर के पीछे गये। बेटी सारे रास्ते अपनी माँ को पुकारती रही, "माँ...माँ...लौट आओ। छोटे भैया को बहुत भूख लग गयी है, उसने दूध पीना है। छोटा भैया रो रहा है। तुम लौट आओ, लौट आओ।" इसी तरह पुकारती हुई वह आगे बढ़ रही थी। एक जगह जंगल की झाड़ियों में से कुछ

आवाज़ आयी और वह आवाज़ थी, "माँ तो एक जाल से छूटती एक पहाड़ पार करती दूसरा उतरती है बहुत तकलीफ में है। जंगल के पेड़ों के पत्तों को ही खा रही हूँ।" तीनों लोगों ने उस आवाज़ को सुना। जब उसका पीछा किया तो उन्होंने देखा कि करौ...करौ...के स्वर में झाड़ियों में से तेज दौड़कर एक बन्दर निकला है।

बन्दर ने कहा, "अच्छा, तो तुम लोग मुझे चैन से नहीं रहने देना चाहते। मुझे कष्ट पहुँचाने तुम लोग यहाँ भी पहुँच गये। लेकिन लगता है कि तुम लोगों को मेरे प्रताप का अभी तक कुछ पता नहीं।" यह कहकर उसने अपने आप ही अपनी प्रशंसा की, "तुम लोगों को मेरी शक्ति का अन्दाजा नहीं है। शेर पक्षी की तरह कोई भी टेढ़ी चीज हो उसको सीधा करने तक मैं पकड़कर सीधा कर सकता हूँ।

तुम एक ऐसे पेड़ पर चढ़ने की कोशिश में हो, जिस पर तुम चढ़ नहीं पाते। तुम्हें जमीन पर रहनेवाले कछुए की तरह पेड़ पर चढ़ना नहीं आता है तो तुम पेड़ पर क्यों चढ़ना चाहते हो? मैं समझता हूँ तुम एक छोटी–सी, काले रंग की गिलहरी की तरह हो। तुममें मात्र उतनी ही शक्ति है। इससे ज्यादा तुममें कुछ नहीं है।"

तभी उस आदमी ने उत्तर दिया, "अरे, मेरे धनुष में जो माल मैंने लगाया है वह कोई साधारण माल नहीं है। लोहा और जवाहर दो कोनेवाला पत्थर इसमें लगा हुआ है। इसमें अद्‌भुत शक्ति है। जिसके साथ यह धनुष रहेगा, वह तीरन्दाज़ ऐसा होगा जैसे उसने कई–कई बाण एक साथ चला दिए हों। एक बाण जब छोड़ा जाएगा तो कम–से–कम एक तीर के हजार तीर हो जायेंगे।" यह कहकर उसने धनुष में बाण लगा दिया और उसे चला दिया। बाण चलाते ही वह बन्दर को लगा और बन्दर मर गया।

तभी अयै ने अपनी पत्नी मूढै को बुलाया और फिर सब मिलकर एक साथ अपने स्थान पर लौट आये।

घर पहुँचकर पति ने पत्नी से कहा, "जो दुख–तकलीफें हुई हैं उनके लिए तुम ही जिम्मेवार हो। मैं तुमको यह कहकर गया था कि तुम घर में आराम से रहना, कहीं बाहर मत जाना। लेकिन तुम नहीं मानीं और घर से बाहर तुमने कदम रखे। इसका मतलब है कि तुम्हें अपने ऊपर कोई नियन्त्रण ही नहीं है। तुम घर से बाहर गयीं, इसलिए जो नहीं होना चाहिए था वह हुआ। अब यह बात तुम अच्छी तरह गाँठ बाँध लो ताकि इस तरह की गलती फिर न हो सके।"

उस समय से लेकर करिन लोगों ने अपनी–अपनी औरतों को घर से बाहर जाने के लिए कठोरता से मना कर दिया और यह प्रथा आज तक लागू है।

एक टाँग

पुराने ज़माने की बात है सुमरा, नागा लोगों में एक आदमी था जिसका नाम फाम फाम पौ था। उसे लोगों से मजाक करने का बड़ा शौक था। उसे इतना ज्यादा मजाक करने का शौक था कि वह हर किसी से मजाक करता रहता था और हर समय मजाक करता रहता था। इसलिए उसके जीवन में आलस नाम की चीज नहीं थी। बोरियत नाम की चीज नहीं थी। हर समय वह खुश रहता था और भले ही वह कितना भी क्रोध में हो लेकिन लोगों से मजाक किये बिना उसे सन्तोष नहीं होता था। वह सन्तुष्ट नहीं होता था।

इसी तरह वह लोगों के साथ मजाक करता रहा और जीवनभर वह मजाक करता–करता काफी बूढ़ा हो गया। वह मरते दम तक मजाक करता रहा और आखिरकार वृद्धावस्था में जब वह मरा तो मजाक करते–करते उसकी मृत्यु हुई और वह एक चिड़िया बन गया।

फाम फाम पौ दूसरे जन्म में जब चिड़िया बना, लेकिन दूसरे जन्म में अपने मानव जीवन में जो मजाक करने का उसका शौक था, उसको उसने नहीं छोड़ा। इस मजाक करने की आदत को दूसरे जनम में भी उसने अपने साथ रखा और एक पक्षी के रूप में भी, एक चिड़िया के रूप में भी जहाँ वह जाता वहाँ मजाक अवश्य किया करता था। सबसे पहले उसने अपनी याद बनाए रखने के लिए जो मानव जन्म में उसका नाम था फाम फाम पौ, तो उसने पक्षी के रूप में अपनी आवाज़ जो निकाली वह आवाज़ निकली फाम फाम पौ। जब भी वह एक पक्षी के रूप में आवाज़ निकालता उसकी पहली आवाज़ निकलती फाम फाम पौ। लोगों ने जब देखा कि यह फाम फाम पौ–फाम फाम पौ चिल्लाता है तो लोगों ने उसकी आवाज़ को, उसके उच्चारण को देखकर उसका नाम रखा फाम फाम पौ। इसीलिए वह सुमरा, नागा जातियों में अपने पक्षी जीवन में भी फिर से विख्यात हुआ।

एक दिन फाम फाम पौ एक ऐसे वन में पहुँचा, जहाँ वह पहले कभी नहीं गया था। उस जंगल में वह एक ऐसे स्थान पर था, जहाँ वह पहले कभी नहीं



आया था और वह स्थान उसके लिए नया था। फिर भी पहले जंगल में उसकी पक्षियों से छेड़छाड़ करने की इच्छा हुई। उसने सुबह–सुबह उठ–उठकर पहले अपना नाम उच्चारना शुरू किया। सुबह वह उठा और उठते ही फाम फाम पौ पुकारना शुरू किया। जैसे मुर्गे बाँग देते हैं वैसे ही मुर्गों की बाँग की जगह अब एक नयी बाँग सुनाई देती–फाम फाम पौ...फाम फाम पौ.। जितने भी जंगल में जीव थे, जन्तु थे, जानवर थे, वह उसकी बाँग की वजह से सुबह–सुबह उठ जाते थे।

फाम फाम पौ हर सुबह बिल्कुल ठीक समय पर उठता था और उठकर बाँग देता था जिसकी वजह से जंगल के जानवर उसकी बाँग सुनकर उठ जाते थे। कुछ दिनों में ही सारे जंगल के जानवरों ने उसकी बाँग को मान्यता दे दी और उसकी बाँग को ही सुनकर जानवर उठ जाया करते थे।

इस तरह फाम फाम पौ जब हर सुबह बराबर बाँग देने लगा तो लगभग सारे जंगल के जानवर उसकी बाँग को मान्यता देते हुए अपने बिस्तरों से उठ जाया करते थे।

जंगल के जानवर अब उसकी बाँग को सुनकर अपने बिस्तरों से उठ जाया करते हैं इस बात को जब फाम फाम पौ ने जाना और समझा तो उस दिन से ही उसने जंगल के जानवरों से मजाक करने के लिए एक योजना बना ली।

एक दिन उसने फैसला किया कि आज जंगल के जानवरों से मजाक किया जाये। रात का समय था, सब लोग सो गये थे और फाम फाम पौ जाग रहा था। उसने सोचा कि आज मैं जागूँगा और सब लोगों को जगाऊँगा। जब सब लोगों का गहरी नींद में सोने का समय हो गया उस समय वह जागकर प्रतीक्षा करने लगा। जैसे ही सब जंगल के जावनर सो गये फाम फाम पौ एक पेड़ से दूसरे पेड़, दूसरे पेड़ से तीसरे पेड़ पर जा–जाकर फाम फाम पौ–फाम फाम पौ के रूप में चिल्लाने लगा। उसकी बाँग सुनकर उसकी बाँग को मान्यता देते हुए, यह मानकर कि सवेरा हो गया है एक के बाद एक जानवर बिस्तरों से उठकर जागने लगे।

सुबह हो गयी, प्रभात हो गया। इस विचार से एक गिलहरी अँधेरे में एक फल से टकरा गयी। फल टहनी से टूटकर चींटियों के छत्ते पर जा गिरा। जिस वेग से फल गिरा यह छत्ता भी पेड़ से नीचे गिरा और वह एक जंगली सुअर पर आकर गिरा।

छत्ता गिरने पर चींटियों को बड़ा क्रोध आया। वह सब जंगली सुअर पर टूट पड़ीं। चींटियों के बुरी तरह काटने पर जंगली सुअर को बुरी तरह दर्द हुआ

और दर्द के मारे वह कराहता हुआ इधर–उधर लोटने लगा। जमीन पर लोटने से उसके पास में पड़ा हुआ एक दारू का डिब्बा, जिसे लोगों ने पर्वत रक्षक देव के लिए चढ़ाया हुआ था, उसमें से सारा दारू नीचे गिर गया।

पर्वत के रक्षक देवता ने भी जब देखा कि उसका दारू धरती पर गिर गया है तो उसे बड़ा क्रोध आया। उसने जंगली सुअर को पकड़ लिया और जब उसको जान से मारने लगा तो जंगली सुअर ने काँपते हुए कहा, "देवताजी, मैंने जानबूझकर आपका दारू का डिब्बा नहीं गिराया, मुझे चींटियों ने इतनी बुरी तरह काट लिया था कि मैं जमीन में लोटपोट हो रहा था और जमीन में लोटपोट होते हुए मेरे शरीर से दारू का डिब्बा टकरा गया और जमीन पर गिर गया। अनजाने में मुझसे यह गलती हुई इसलिए मुझे क्षमा कर देना चाहिए।" उसने प्रार्थना की।

इस बात को सुनकर पर्वत रक्षक देव ने चींटियों से पूछताछ की। उन्होंने भी यही कहा कि हमने भी जानकर नहीं काटा है। हम लोगों पर एक फल गिर गया था और हमारा जो रहनेवाला छत्ता था वह भी पेड़ की टहनी से अलग होकर नीचे गिर गया और हम लोग सुअर के ऊपर जा गिरे थे और इसलिए हमने सोचा कि यह जंगली सुअर की शैतानी है। इसलिए हमने इसको काट खाया।

इसके बाद देवता ने जो फल ऊपर से गिरा था उसे उठाकर उससे पूछताछ की। फल ने कहा, "महाराज, इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। गिलहरी आकर मुझसे टकराई थी। यह आप गिलहरी से पूछिए कि क्या कारण था जो वह मुझसे टकराई।" पर्वत के रक्षक देवता ने गिलहरी को पकड़ा और उससे पूछताछ की। गिलहरी बोली, "महाराज, मैंने जानबूझकर टक्कर नहीं मारी। फाम फाम पौ जो रोज सुबह होने पर चिल्लाया करता था वह आधी रात में ही चिल्ला उठा। वह बाँग दे उठा और हम लोगों ने समझा कि सुबह हो गयी है इसलिए हम लोग अपने घोंसलों से उठे। क्योंकि अँधेरा था और अँधेरे में किसी के साथ टकरा जाना कोई कसूर थोड़े ही माना जायेगा।"

जब गिलहरी ने अपनी बात कही कि यह कसूर थोड़े ही माना जायेगा तो पर्वत रक्षक देवता ने कहा कि फाम फाम पौ को मेरे पास लाया जाये। फाम फाम पौ को जब बुलाकर पूछताछ की तो फाम फाम पौ देवता के सामने आया।

फाम फाम पौ देवता के प्रति श्रद्धा रखता था। और पहले मानव जीवन का भी कुछ प्रभाव था कि उसने देवता के सामने कभी झूठ नहीं बोला था और इस जन्म में भी वह देवता के सामने झूठ बोलने की हिम्मत नहीं रखता था। इसलिए उसने सोचा कि अब तो कुछ ऐसा करना होगा कि ये देव महाराज कुछ देर के

लिए विचार करते रह जायें और हम यहाँ से खिसक जायें। तो उसने जानबूझकर ऐसा उच्चारण किया जिसका कोई अर्थ न हो। उसने कहा, "मछेतरू।" मछेतरू एक ऐसा शब्द है जिसका कोई मतलब ही नहीं होता और इसको देव महाराज कुछ समय के लिए सोचेंगे कि इसका क्या अर्थ है। और एक बार मछेतरू कहकर वह वहाँ से भाग खड़ा हुआ। जब पर्वत रक्षक देवता महाराज ने देखा कि फाम फाम पौ उठकर भाग रहा है तो उसने अपना हाथ फैलाकर उसको पकड़ना चाहा। लेकिन फाम फाम पौ की एक ही टाँग हाथ में आयी और उस एक टाँग को उन्होंने जोर से खींच लिया जोकि उसके शरीर से अलग होकर उनके हाथ में आ गयी।

उस समय से लेकर सुमरा, नागा लोग यह मानने लगे कि फाम फाम पौ नामक पक्षी की एक ही टाँग होती है।

नोट—यह फाम फाम पौ जो पक्षी है, ब्रह्मीज भाषा में इसे यौ कहते हैं। फौ जो गिलहरी है उसको हमारे सुमरा, नागा भाषा में कलई कहते हैं। ये जो चींटी है उसको नागा भाषा में लौकी कहते हैं और जंगली सुअर को सुमरा, नागा भाषा में टना कहते हैं। और ये जो फाम फाम पौ जो पक्षी चिल्लाकर भागा था मछेतरू। जैसा कहानी में बताया गया है कि मछेतरू का कोई अर्थ नहीं था वह तो जानबूझकर एक पल के लिए देवता महाराज को सोचने के लिए मजबूर करना था कि उसको भागने का समय मिल जाये इसलिए वह 'मछेतरू' जिसका कोई अर्थ ही नहीं है चिल्लाकर भागा था। शायद इन शब्दों को याद करने में आपको कोई दिक्कत न हो इसलिए ये नागा शब्द आपको उपहारस्वरूप भेंट किये गये हैं। संभालकर रखने की कोशिश कीजिएगा।

पहले गीत का प्रारम्भ

नागा लोगों में गीत गाने के बारे में एक प्रथा है। लेकिन पहला गीत कैसे आरम्भ हुआ या पहले गीत का कैसे जन्म हुआ इसके पीछे दिलचस्प कहानी है। कहानी यूँ है कि किसी समय इस संसार में बातचीत करना तो जानते थे लेकिन एक–दूसरे के साथ प्यार से बात करना नहीं जानते थे। बातचीत के जरिए किस तरह प्यार बढ़ता है ? बातचीत किस ढंग से करनी चाहिए? उसका सिलसिला लोगों को नहीं आता था। इसीलिए जब कभी कुछ आपस में मिलकर करने की बात आती तो एक–दूसरे का सहयोग लेने की बजाय उनकी कोशिश यही होती कि अकेले किसी तरह वह काम कर लिया जाये। मिलकर रहने के बजाय लोग एक–दूसरे से व्यक्तिगत रूप से अलग रहने की कोशिश किया करते थे। वे इसी प्रकार समय गुजारा करते थे।

इस तरह करते–करते, यह सिलसिला चलते–चलते काफी समय गुजर गया और लोगों को धीरे–धीरे अपने बीच और और लोगों के बीच जो थोड़ा–बहुत अन्तर था उसके बारे में समझ आने लगा। सबसे पहले जो उनको अन्तर समझ में आया वह यह था कि ये दो दिखायी दे रहे हैं। कुछ लोग औरतें हैं और कुछ लोग मर्द हैं। यह सच्चाई उन्हें धीरे–धीरे समझ में आने लगी और यह लोगों को मान्य होने लगा। जब उनको यह भेद मालूम होने लगा कि फलां मर्द है और फलां औरत है तो उनमें एक–दूसरे के प्रति आकर्षण होने लगा और एक–दूसरे का अभिवादन करने की इच्छा होने लगी। लेकिन उनको इस बात का पता नहीं चलता था कि हम लोग एक–दूसरे के करीब कैसे आयें। लोगों को कैसे समझाएँ कि हम लोग एक–दूसरे को चाहने लगे हैं। किस तरह एक–दूसरे के प्रति स्नेह का वातावरण पैदा करें। उन्हें इस बात की समझ नहीं आती थी इसलिए जो उनके दिल में बात होती थी वह मुँह से निकालना भी उनके लिए बहुत भारी बात मानी जाती थी।

अब जो दिल में है उसे किसी–न–किसी तरह बाहर निकालने का कोई–न–कोई रास्ता तो होना चाहिए। इसलिए जब लोगों को इस तरह अपने



दिल की बात दबाते काफी समय हो गया और लोगों के लिए यह भी बड़ा मुश्किल हो गया कि हम लोग जो कुछ अहसास कर रहे हैं, उसको बिना वर्णन किये हुए अपने दिल में दबाकर रखें। इसलिए लोग जब भोजन की खोज में जाते थे तो अपने दिल में जो अहसास होता था उसे वे जंगल में एकांत में बैठकर बोल दिया करते थे। जिस ढंग से उनको आता था वह प्रकट कर दिया जाता था। जब उनको ऐसा करते–करते काफी समय हो गया तो यह देखा जाने लगा कि काफी लोग अपने दिल की बात को अपने–अपने ढंग से चुपचाप कराहने के रूप में, बात करने के रूप में और कभी कोई भावुक रूप में उसका प्रदर्शन करने लगे। इस तरह की भावना के जोर से वे लोग अपने अहसास का वर्गीकरण करने लगे। कभी–कभी उनके दिल में जो अहसास होता था वह इतना तीव्र होता कि वह जोर से चिल्लाकर अहसास कराना चाहते थे। अहसास का वर्णन करना चाहते थे। बताना चाहते थे। जब इस स्टेज पर वे लोग पहुँचे तो अपने दिल की बात को इस तरह चीखकर, चिल्लाकर यह समझ लो कि एक प्रकार से गाकर, यानी उसके अपने मन की जो भावुक स्थिति थी उसका वर्णन करते थे। जब वे ऐसे बात करने लगे तो उनकी जो आवाज़ थी वह पहले जैसी नहीं रही और जो उस आवाज़ को सुनता था उसको लगता कि यह सुनने में अच्छा लगता है और यह भी उसको लगता कि यह दिल के अहसास हैं या किसी के दिल की बात है। उसको सुनने में बड़ा आनंद आता है और वह सुनने योग्य होती है।

इसी तरह आदमी एक–दूसरे के दिल की या अहसास की बात जानने लगा। एक व्यक्ति जो अपने दिल की बात बाहर निकालकर कहता था उसको सुनने में लोगों को आनंद आने लगा और इसी तरह एक–दूसरे के मन की निकली हुई बातों को सुनने का उनको शौक हो गया। कोई अगर अपनी बात अकेले में भी कह रहा हो तो दूसरा उसे चुपचाप सुनता तो उसे अच्छा लगता। लोगों ने देखा कि किसी के दिल की बात को कोई अगर सुनकर उसे मान्यता देता है तो वे किसी के सामने अपने मन की बात करने में संकोच नहीं करते थे। और जो भावुकता है वह हठ के अनुसार बड़ी तीव्र हो जाती थी और इस तरह लोगों ने अपनी आवाज़ की ऊँचाई और बुलंदियों को ध्यान में रखकर अपने पर नियन्त्रण रखकर अपनी भावना को व्यक्त करना शुरू किया कि लोग उसे सुनें, उसे समझें और उसे मान्यता दें। इसी प्रयास को गीत का नाम दे दिया गया और इस तरह गीत का जन्म हुआ। इसी तरह सुमरा, नागा लोरा मानते हैं और यह उन्हीं की एक प्रथा है।

बिल्ली और चूहा

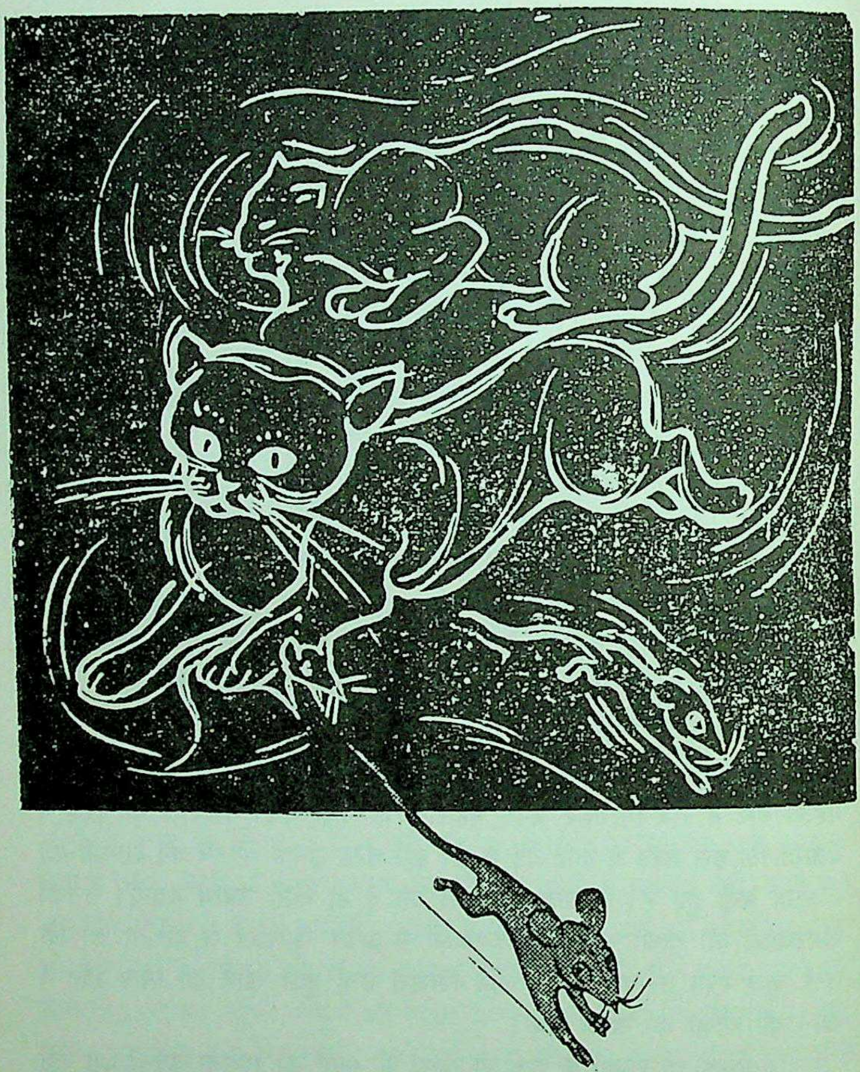
पुराने ज़माने में लोग जिन देवताओं को मानते थे, उनमें बिल्ली का मालिक देवता, चूहे का मालिक देवता और कुत्ते का मालिक देवता, इसी प्रक़ार अन्य जानवरों का मालिक देवता—इस तरह लोगों ने तय कर रखा था। जानवरों के मालिक के रूप में देवताओं को मालिक कहना यह कोई बिना कारण नहीं था।

उस समय दुनिया में जितने भी देवता थे वे सारे देवता मनुष्यों पर आश्रित थे। लेकिन लोगों की भलाई के लिए वह कुछ भी नहीं करते थे। इसलिए लोग यह मानते थे कि वह पूजने योग्य नहीं हैं। कभी—कभार उनको खिलाने—पिलाने के लिए उनसे साधारण व्यवहार ही किया करते थे।

इस तरह जब काफी काल बीत गये तो सारे संसार में मनुष्यों की संख्या बढ़ने लगी। उसकी तुलना में देवताओं की संख्या और अधिक ज्यादा होने लगी और लोग जो प्रसाद उन्हें चढ़ाते थे या जो कुछ खाने—पीने के लिए उनको देते थे उनसे देवताओं का गुजारा नहीं होता था और देवताओं के सामने खाद्य समस्या खड़ी हो गयी थी कि किस तरह वे पेट भरकर खा सकें। यह उनके सामने मुश्किल खड़ी हो गयी। देखते—देखते देवता कमजोर होने लगे और उनका मनोबल भी गिरने लगा।

इस मुश्किल से बचने का रास्ता जब देवताओं को नजर नहीं आया तो पहली बार वे सब मिलकर अपने महाराज के पास गये। महाराज को उन्होंने बताया कि इस तरह वे कठिनाई में हैं। इस तरह उनके भोजन की सामग्री की समस्या बनी हुई है। समस्या से बचने का वे ही कोई उपाय बताएँ। उनकी समस्याओं की गुत्थी सुलझाएँ। देवताओं ने अपने महाराज से प्रार्थना की कि उन्हें कुछ ऐसा तरीका बताया जाये जिससे उन्हें कुछ खाने को मिले और वे खाने की चीजों को खोज सकें।

देवताओं के राजा को खुद भी खाद्य की कमी का सामना करना पड़ रहा था। उसके पास भी खाद्य सामग्री पूरी नहीं थी। जब उससे खाद्य सामग्री की समस्या के बारे में देवताओं ने पूछा तो देवताओं के महाराज को बड़ा बुरा लगा।



उसको समझ में नहीं आ रहा था कि वह उनको क्या जवाब दे। उनके मन में आया कि वहाँ से उठकर दौड़ खड़े हों। लेकिन वे तो देवताओं के राजा थे इसलिए उनके नीचे जितने देवता थे, उनकी जो खाद्य समस्या थी महाराज को महसूस हुआ कि ये मेरी ही समस्या है। इसलिए देवताओं को शांत करने के लिए उन्होंने कहा कि मैंने आप लोगों की खाद्य समस्या सुन ली। इसके समाधान के लिए मैं आपको दो उपाय सुझाऊँगा। वे समाधान मैं आपको सात दिन बाद बता पाऊँगा। आप ठीक सात दिन बाद हमारे पास आयें। तब हम आपको कोई ऐसा रास्ता सुझाएँगे जिससे आप पेट भरकर आराम से खा सकेंगे। इसलिए आप अपने-अपने घरों को जायें और विश्राम करें। देवताओं ने वैसा ही किया।

देवता अपने महाराज की बात सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और वापस लौट आये। वे सब यह सोचकर लौटे कि महाराज ने कहा है कि एक हफ्ते बाद तुम लोगों की समस्या का समाधान हो जायेगा। भला महाराज किस तरह हमारी समस्याओं का समाधान करेंगे? क्या राशन, खाद्य सामग्री उन्होंने अपने पास इकट्ठी कर रखी है जिसको वे हमको बाँट देंगे और इस समस्या को हल कर देंगे? तरह-तरह के अंदाज लगाते हुए वे देवलोक वापस लौटे। लेकिन तीन दिन बीत गये लेकिन देवताओं के राजा को खाद्य सामग्री का कोई हल समझ में नहीं आ रहा था। चौथा दिन भी बीत गया, महाराज कुछ सोच नहीं पाये। सारे देवताओं को भरपेट खिलाने की जगह यदि महाराज होकर भी अगर देवताओं को वह सलाह न दे सके तो उनकी बड़ी बदनामी होगी। उनको इस बात की चिंता होने लगी। आखिरकार उन्होंने सोचा कि इस मामले में मैं अपने ही घर में बैठा रहूँ और अपनी जगह से उठूँ ही नहीं और यह समस्या हल हो जाये ऐसा तो होना बड़ा कठिन है। इसलिए उसने सोचा कि यह जो मानव जाति है इनकी आदतों का जरा अध्ययन करते हैं। शायद कोई रास्ता निकल आये। इसलिए लोगों के रहन-सहन, उठने-बैठने के ढंग का अध्ययन करने के लिए वे अकेले चुपचाप चले आये।

जब उन्होंने लोगों की आदतों का अच्छी तरह अध्ययन किया तो देखा कि मानव लोगों की जो प्रणाली है वह भी देवताओं की तरह ही थी कि जिस तरह मानव लोगों में सरदार हैं, नायक हैं उसी तरह देवताओं में भी हैं। इस तरह मानव लोग अपने सरदारों को, अपने नायकों को जिस तरह से खिलाते-पिलाते हैं और आदर मान करते हैं उसी तरह वहाँ के निवासी भी ऐसा ही करते हैं और उन्होंने देखा कि विशेष तौर पर मानव के जो देवता हैं, नायक हैं, सरदार हैं उनमें महाराज को बड़ी दिलचस्पी थी और वे उस स्थिति का अध्ययन करने

लगे। आखिरकार वह सोचने लगे कि यह मानव जाति अपने सरदारों को, अपने नायकों को इतना विश्वास का पात्र क्यों बनाती है, इतना इनका आदर क्यों करती है और जो बात वह कहते हैं उस पर अच्छी-अच्छी मोटी रकम खर्च करके उस बात को वह पूरा करते हैं। आखिर यह ऐसा क्यों है? इस बात का उन्होंने अध्ययन किया।

उनको उत्तर मिला कि नेता ज़ो होते हैं लोगों क़ी हमेशा भलाई करने की कोशिश करते हैं और वे हमेशा अपने लोगों को नेतृत्व प्रदान करते हैं इसलिए मानव जाति अपने सरदारों को अपना नेता कहती है। ये सारे रहस्य कि नेता अपनी प्रजाजन के कल्याण करने के लिए हमेशा सोचा करते हैं। यह बात छठे दिन उन्हें मालूम हुई। अगर आदमियों के सरदार अपने आदमियों के लिए कुछ-न-कुछ अच्छी बात कर सकते हैं तो अगर देव लोगों में भी देवताओं का राजा देवताओं के बारे में कल्याणकारी योजना बनाए और उनकी देखभाल ढंग से करता रहे तो आदमियों की तरह देवता भी अपने सरदार, अपने नायक के लिए सब कुछ उसके लाभ के लिए करने के लिए तैयार होंगे। हमेशा उसे भी वे पेटभर खिलाने के लिए तत्पर रहेंगे। ऐसा उन्होंने सोचा और उन्हें भी बड़ी खुशी हुई।

इस तरह जब सातवाँ दिन पूरा हुआ तो देवता अपने महाराज के पास इकट्ठे होकर आये। महाराज ने कहा, "देवतागण! तुम लोगों को भी मानव लोगों की तरह, मनुष्यों की तरह सारा करना पड़ता है फिर भी तुम लोग किसी आदमी का कोई लाभ नहीं सोचते। कभी उसका कोई फायदा नहीं करते। लेकिन आदमी से आप पूरी फसल, पूरी खाद्य सामग्री पाने की इच्छा करते हैं। अगर तुम आदमियों में बारे में कोई लाभ करके दोगे तो जो मानव जाति है आप लोगों के लिए, उपकार के बदले वे भी खाद्य सामग्री देंगे और खाद्य सामग्री की समस्या वह दूर कर देंगे। आप लोगों के पास जो खाने-पीने की चीजों की कमी होती है, उसकी पूर्ति मानव हँसकर कर दिया करेगा। इसलिए आप लोगों को आज से ऐसा सोचना है कि हम लोग ऐसा कौन-सा कार्य करें जिससे हमारे मानव भाइयों को लाभ हो सके। मैं मानव जाति के कल्याण के लिए आप लोगों को भार सौंपता हूँ। इसलिए आप आदमी के लाभ के लिए कार्य करें और साथ ही ऐसे और लोगों की तलाश करें।" यह कहकर देवताओं के शेर, हाथी, बारहसिंगा, बैल, बकरी, गाय और पेड़-पौधे, साँप और गेहूँ, बाजरा, जौ, मुर्गे, मुर्गियाँ और पक्षीगण, सुअर आदि इनके अतिरिक्त बिल्ली और चूहे इत्यादि भी लिए गये और इनसे कहा गया कि आप आज से लेकर लोगों के लाभ के बारे में सोचें।

उस दिन से लेकर देवताओं ने अपने महाराज की आज्ञा का पूरा–पूरा पालन किया। देवताओं ने उस दिन से लोगों के कल्याण के लिए कार्य शुरू किये और लोगों ने भी उनको उपकार के बदले जितना भी उनमें सामर्थ्य था, खाद्य पदार्थ देवताओं को उपहारस्वरूप भेंट करने शुरू किये।

लेकिन इन देवताओं में दो देवता ऐसे भी थे जो बिल्ली और चूहे के मालिक थे। इन दो देवताओं में एक बहुत बुरी आदत थी जिसको हम लोग जुआ कहते हैं। वह हर बात पर शर्त लगाते थे और जुआ खेला करते थे। उनको जो कर्तव्य निभाने के लिए कहते थे उसमें वे कोताही बरतते थे। वे उसे पूरा नहीं करते थे। जब काफी समय हो गया तो बहुत बिल्लियाँ और बहुत चूहे उत्पन्न हो गये। और इन चूहे–बिल्लियों ने लोगों की फसलों को लूटना शुरू कर दिया। उनको बर्बाद करना शुरू कर दिया और सारी परिस्थिति अनियंत्रित–सी लगने लगी। इस तरह दो देवताओं की वजह से, जिन्होंने अपना कर्तव्य ठीक नहीं निभाया, परिस्थिति अनियंत्रित हो गयी। इसकी शिकायत दूसरे देवताओं ने अपने महाराज से की। महाराज ने उनको बार–बार बुलाया, समझाया, उपदेश दिए लेकिन वे नहीं माने। उनकी ओर से उनके कर्तव्य की उपेक्षा होती रही।

इस तरह जब महाराज इंद्र अपने देवताओं को बार–बार बुलाकर डाँट–डपट करते थे तो दो देवता जिनके मालिक जो बिल्ली और चूहे के मालिक थे, उनको एक नयी योजना सूझी। उन्होंने विचार किया कि उनके जो चेले बिल्ली और चूहा, जिनके वे मालिक हैं जिनकी वजह से ये उनकी जो जुआ खेलने की प्रवृत्ति है, उनकी वजह से ही जो शर्त लगाने की उनकी आदत है इससे बड़ा नुकसान हुआ है। अब यह किया जाये कि जब भी किसी के साथ शर्त लगाई जाये उस शर्त में बिल्ली और चूहे को भी बीच में डाल दिया जाये ताकि इन पर भी शर्त लग जाये। अगर बिल्लीवाला देवता हार गया तो चूहा बिल्ली को खा लेगा और अगर चूहेवाला देवता हार गया तो बिल्ली चूहे को खा लेगी। यह आपस में उनकी स्वीकृति थी और इसके आधार पर फिर से दाँव लगाया। इस बार चूहेवाले देवता की हार थी। उस दिन से लेकर चूहा बिल्ली के भोजन के रूप में मान्य हो गया।

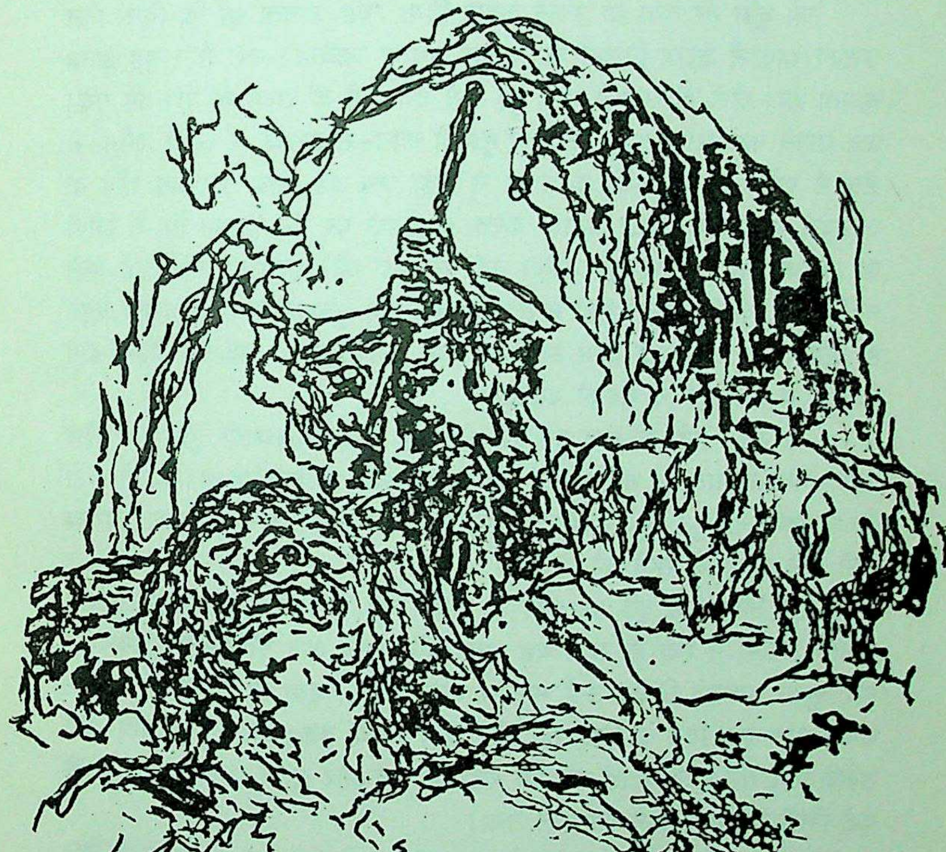
शिकार

पहले नागा लोगों में जो भी मरते थे उन्हें वे लोग अपने घर के नीचे ही दबाया करते थे। ये प्रथा यानी मृत आदमी को अपने घर के नीचे दबाने की प्रथा नागा लोगों की थी और मरने के सात दिन बाद शराब पीने का उत्सव मनाया जाता था। यह उसमें भाग लेने के लिए एक सुविधा प्रदान करनेवाली बात थी।

एक दिन नागा गाँव में जो सबसे वृद्ध व्यक्ति था उसकी मृत्यु हो गयी। बूढ़े के घरवालों ने उसे उनकी प्रथा के अनुसार घर के नीचे दफना दिया। सातवें दिन में उसकी याद के उपलक्ष्य में शराब पिलाने का उत्सव मनाया गया और जैसे कि कार्यक्रम था, जैसी प्रथा थी जहाँ वह दफनाया हुआ था वहाँ जाकर उन्होंने कहा कि अब आपकी याद में शराब पिलाने का उत्सव मनाया जा रहा है। यह सूचना हम देने आये हैं।

जिस दिन शराब पिलाने का उत्सव था उस दिन जो बूढ़ा मर गया था वह नहीं आया। इसलिए उनका मन बड़ा खराब था। जो लोग बच गये थे वे लोग कह रहे थे हम लोग सब इंतजार करते रहेंगे कि बूढ़ा आज आयेगा, आज आयेगा, कल आयेगा, कल आयेगा। लेकिन वह नहीं आया। उन लोगों को जो बेसब्री से इंतजार कर रहे थे, तेंतीस हजार ग्रामीणों का जो उत्सव था वह उत्सव आरंभ होने पर भी बूढ़ा वापस नहीं आया था। इसके लिए सबको बड़ा दुख था। जो लोग रह गये थे वह इस बात की प्रतीक्षा करते थे कि बूढ़ा आज आयेगा कल आयेगा और उनकी प्रतीक्षा जारी थी कि बूढ़ा आया नहीं। तब तक सब लोग निराश हो गये थे और हिम्मत हार गये थे।

बूढ़ा जिसकी मौत हो चुकी थी वह दिन, महीने नहीं पूरे एक साल बाद आया तो अपना एक बहुत ही भयंकर चेहरा बनाकर आया। वह सीधे शमशान से उठकर चला आ रहा था। गाँववालों ने जब इतना भयानक चेहरा देखा तो सब हथियार इकट्ठे करके आये। किसी ने तलवार उठाई, किसी ने भाला उठाया, किसी ने धनुषबाण उठाया। उस बूढ़े को मार डालने के लिए वे सब तैयार थे।



तभी बूढ़े ने कहा कि वे उसे नहीं मारें। उसने उन्हें बताया कि वह कौन है और कहा कि तुम लोग डरो नहीं, मैं तुम लोगों को सारी बातें बताता हूँ। तभी घरवाले लोगों और बाहरवाले लोगों को पुरानी घटना याद आयी। जिस दिन शराब पिलाने का उत्सव मनाया जा रहा था उस दिन वह क्यों नहीं आये। इतना भयानक चेहरा किसलिए बदलने में समय लगाया। सभी ने मिलकर पूछा।

जो बूढ़ा मर गया था उसने जवाब दिया, "वह जानता था कि किस दिन उसकी याद में शराब पिलाने का उत्सव मनाया जायेगा। उस दिन वह आना चाहता था। जैसे ही उसकी मृत्यु हुई उसे देवताओं के राजा के पास ले गये। जब उसने महाराज से पूछा कि आप मुझको कौन–से इलाके में रखेंगे, कौन–से क्षेत्र में रखेंगे तो देवताओं के राजा ने कहा जब वह जिंदा था तब गाँव के जानवरों को मारकर बलि चढ़ाया करता था। इस पर मैंने बताया कि मैं जीवों को मारकर बलि चढ़ाने को उचित नहीं समझता और इसलिए मैंने कोई बलि नहीं चढ़ाई, कोई जानवर नहीं मारा। इस बात को सुनकर देवता महाराज बहुत ही क्रोधित हुए और एक दण्ड स्वरूप उन्होंने उसका इतना भयानक चेहरा बना दिया।" ये बात बूढ़े ने सबको बताई।

जो लोग बूढ़े की बात सुन रहे थे उन्हें बहुत दिलचस्पी हुई और सिर ऊपर–नीचे हिलाते हुए वह उसकी कहानी बड़े ध्यान से सुन रहे थे। बूढ़े ने कहा कि उसके लिए मुर्गे, सुअर मारकर बलि चढ़ाकर अगर उत्सव मनाया जायेगा तभी उसे खुशी से रहने को मिलेगा।

सब लोगों को बूढ़े पर दया आ गयी। बूढ़े के कहे अनुसार हम उत्सव मनाएँगे। सभी ने एक ही साथ यह बात कही। उसी क्षण गाँववालों ने मिलकर मुर्गे, सुअर इकट्ठे किये। उन्हें मारकर बलि चढ़ाई। बूढ़ा भी उत्सव के दौरान उनके पास एक दिन के लिए रहा और जाते समय, देवताओं को वह बता सके उसके लिए वह बलि चढ़ाई गयी थी, यहाँ जो मुर्गे और सुअर काटे गये थे उनके कटे सिरों को वह अपने साथ ले गया।

जब देवताओं के राजा ने बूढ़े द्वारा लाए गये कटे हुए जानवरों के सिर देखे तभी उनका क्रोध शांत हुआ और बूढ़े को अच्छी तरह रह सकने की इजाजत दी।

इसलिए नागा जाति के लोग मृत्यु के बाद दूसरे जन्म में अच्छी तरह रह सकने के लिए मुर्गे और सुअर को मारकर उत्सव मनाया करते हैं। मारकर जानवरों के सिरों को सँभालकर रखने की आदत भी है। और जब आदमी

जीवित होता है उस समय, जब दूसरे जन्म में बदलेगा उस समय अच्छे समय की उम्मीद में वह जब भी उसे फुर्सत होती है शिकार खेलता है। अभिप्राय यह कि अपने जीवनकाल में वह अपने लिए जानवरों की बलि चढ़ाता है ताकि आनेवाले समय में, आनेवाले जन्म में अच्छे जन्म का दावा कर सके।

मूर्ख

एक समय की बात है। एक नागा गाँव था जिसमें शि शौ नाम का एक आदमी रहता था।

वह एक बहुत ही बलवान शक्तिशाली और बहादुर व्यक्ति था। बस उसमें एक ही नुक्स था कि सच और झूठ का वह फर्क नहीं समझ सकता था। उसे यह नहीं पता चलता था कि कौन–सी बात सच है और कौन–सी बात झूठ है। लेकिन वह गाँव में मूर्खतापूर्ण व्यवहार किया करता था। शायद इसलिए कि वह मूर्ख था।

उसको अपनी शक्ति पर अहंकार था, भरोसा था और गाँव में वह लोगों के साथ हमेशा टकराव रखता था। टकराव करने में ही उसे आनंद आता था और हमेशा इस बात का उसे गर्व भी था।

गाँववाले मूर्ख शि शौ के साथ उलझना नहीं चाहते थे। वे उसे कुछ नहीं कहा करते थे। अगर कोई चीज वह माँगता तो उसे चुपचाप वह चीज दे दिया करते थे। अगर वह उनके यहाँ घूमने आता तो वे उसे दुत्कारते नहीं थे और उसे बिठाकर उसका मनोरंजन कर दिया करते थे।

इस तरह गाँववाले एक मूर्ख के साथ में अपना मुकाबला नहीं करना चाहते थे। वे शांति और सुख–चैन से रहना चाहते थे। वे इसकी पूरी कोशिश करते थे। लेकिन शि शौ यह समझता था कि गाँव के लोग उससे डरते हैं और इसलिए वह हर रोज नए–नए उत्पात किया करता था।

एक दिन शि शौ की माँ, शि शौ की मूर्खता के किस्से सुन–सुनकर वेदना और पीड़ा से चल बसी।

माँ के देहांत, माँ के स्वर्गवास का शि शौ ने लाभ उठाया। उसके मन में हुआ कि गाँववालों से मक्की ऐंठी जाये। उसने सुबह–सुबह प्रभात के समय जिस रास्ते से भैंसे गुजरते थे उस रास्ते में अपनी माँ की लाश जाकर रख दी। सुबह होने पर गाँववालों ने भैंसे और बैल उस रास्ते से छोड़ दिए लेकिन भैंसों ने इंसान की लाश पड़ी देखकर उसे दबाया नहीं, बचकर वे दूसरी ओर से निकल गये। तभी शि शौ ने नजदीक में जो भैंसा था उसको जानबूझकर पकड़ लिया और

उस भैंसे को पकड़ने के बाद वह उसके मालिक से कहने लगा कि मेरी माँ को इस भैंसे ने दबाकर मार डाला है। यह कहकर वह कहने लगा कि मेरी माँ की मौत के एवज में उसे एक मन मक्की के दाने देने होंगे। भैंसे के मालिक से उसने यह माँगे।

भैंसे का मालिक यह अच्छी तरह जानता था कि यह शि शौ की चालाकी है। वह उसे ठगना चाहता है। लेकिन वह उससे उलझना नहीं चाहता था। एक मन मक्की के दाने उसने शि शौ के लिए दिए। शि शौ ने वह मक्की के दाने लिए और मक्की के दाने धूप में सुखाने लगा। जब वह दाने सुखा रहा था तभी बहुत ही तेज आवाज़ में घोषणा कर दी कि गलती से मक्की के दानों को जो भी मुर्गी या मुर्गा खाएगा मैं उस मुर्गी या मुर्गे का मालिक हो जाऊँगा। यह कहकर वह उस चटाई के पास बैठ गया जिस पर उसने मक्की के दाने सुखाने के लिए रखे थे।

जिनके घर में मुर्गे या मुर्गियाँ थीं, उनके लिए एक काम बढ़ गया। उन सबको अपने–अपने मुर्गे–मुर्गियों की रखवाली करनी पड़ रही थी ताकि उनके मुर्गे–मुर्गियाँ बाहर न निकल जायें और कहीं जाकर शि शौ की मक्की के दाने न खा लें। मालिकों के रखवाली करने के बावजूद एक मुर्गी बाहर निकल गयी और शि शौ के मक्की के दाने उसने खा डाले। इसलिए शि शौ ने उस मुर्गी को पकड़ लिया और मुआवजे के तौर पर उसे अपने पास रख लिया। उसकी इस हरकत का भी मुर्गी के मालिक ने कोई विरोध नहीं किया।

शि शौ को जब मुर्गी मिल गयी तो उसने सोचा कि अब और क्या करना चाहिए। उसने फिर सोचा। अभी वह तरह–तरह सोच ही रहा था कि गाँव में एक और बूढ़ा मर गया। उसका देहांत हो गया। रात के समय उसने अपनी मुर्गी को मार दिया और जिस घर में मौत हो गयी थी उस घर के नीचे उसने मुर्गी को रख दिया।

सुबह होते ही घरवालों ने जब शि शौ की मुर्गी को देखा तो वह बहुत हैरान हुए। वे आपस में कहने लगे कि शि शौ अब कोई–न–कोई नया गुल खिलाएगा। यह कहकर वे शि शौ के आने की प्रतीक्षा करने लगे।

शि शौ भी कुछ देर बाद 'मुर्गी गुम हो गयी है ! मुर्गी गुम हो गयी है !' यह कहता हुआ एक घर में घुसता फिर उतरता और बारी–बारी घरों का निरीक्षण करते हुए उस घर में पहुँच गया जहाँ कि मृत्यु हुई थी। तब खुद जहाँ मुर्गी फेंक रखी थी उस मुर्गी की ओर इशारा करते हुए बोला, "मुझे लगता है कि ये जो अर्थी है इसने मेरी मुर्गी चुराई थी। मेरी एक मुर्गी के लिए तुम्हें मुझे एक भैंसा देना होगा।" यह कहकर वह माँगने लगा। घर के मालिक भी उससे उलझना



नहीं चाहते थे इसलिए उन्होंने शि शौ को जैसा कि उसने चाहा एक भैंसा दे दिया। शि शौ को जब भैंसा मिल गया तो वह मरी हुई मुर्गी और भैंसा लेकर एक दूसरे स्थान में, दूसरी जगह में जाऊँगा यह कहकर गाँव से चला गया।

शि शौ हर रोज एक दिन के बाद दूसरे दिन अपनी यात्रा पर बढ़ता जाता था। जब उसकी यात्रा को सात दिन पूरे हुए तो वह एक चौराहे पर पहुँचा। वह बहुत ही खुश बैठा हुआ था। चौराहे पर शि शौ ने देखा कि वहाँ एक आदमी बैठा है। वह आदमी बड़ी प्रसन्नता से सीटी बजा रहा था।

शि शौ ने इससे पहले कभी भी सीटी की आवाज़ नहीं सुनी थी, न ही देखी थी। वह बहुत हैरान हुआ। वह उस आदमी के पास गया और उससे पूछा, "आप क्या कर रहे हो?"

उस आदमी ने उत्तर दिया, "खुशी से सीटी बजा रहा हूँ।"

तभी शि शौ ने पूछा, "सीटी बजाने से क्या होता है।" शि शौ की बात को सुनकर उस आदमी ने सोचा कि उसके अन्दर दिमाग नहीं है वह मूर्ख है। इसमें दिमाग नाम की कोई चीज है ही नहीं। जैसे वह उसकी बात को समझ गया। उसने कहा कि सीटी बजाने से इंसान पैसेवाला धनवान हो जाता है इसलिए बिना कुछ किये मैं बैठकर सीटी बजा रहा हूँ।

शि शौ ने कहा कि अगर ऐसी बात है तो मुझे भी क्यों नहीं सीटी बजाना सिखाते हो प्यारे भाई ! मुझे तुम सीटी बजाना सिखा दो और गुरु दक्षिणा के रूप में इस भैंसे को ले जाओ। यह बात शि शौ ने उस नौजवान से कही जो सीटी बजा रहा था।

उस आदमी ने शि शौ को सीटी बजानी सिखा दी और भैंसा लेकर चल पड़ा। शि शौ अपनी आगे की यात्रा पर पैदल ही चल पड़ा और इस तरह जाते हुए सारे रास्ते में वह सीटी बजाता गया।

एक दिन के बाद दूसरा और दूसरे दिन के बाद तीसरा दिन और इसके बाद कई दिन बीत गये। शि शौ एक ऐसे जंगल में पहुँचा जहाँ कोई इंसान काफी समय से नहीं आया था। शि शौ को धनवान बनने की धुन सवार थी। और इस तरह वह बियाबान जंगल में घूमते हुए सीटियाँ बजा रहा था। ज्ञान की कमीवाले मूर्ख शि शौ ने अपने भोजन की ओर ध्यान नहीं दिया। उसने शायद सोचा भी नहीं था कि भोजन नहीं खाने से क्या हो सकता है ! भोजन तलाश करने की और खाने की उपेक्षा की इसलिए एक दिन भूख की वजह से उसके शरीर में शक्ति, बल खत्म हो गया। वह अपने प्राणों से हाथ धो बैठा। उसकी अनायास मृत्यु हो गयी।

पायलवाली युवती

किसी समय की बात है। सुमरा, नागा गाँव में माता-पिता के उपकार को भली-भाँति गहराई से समझनेवाला एक बहुत ही सयाना नागा युवक था जिसकी बड़ी ही सुंदर मां गा पौ नाम की पत्नी थी।

जब मां गा पौ एक बहुत ही खूबसूरत युवती थी गाँव में जितने भी युवक थे, जवान थे उन सभी ने कोशिश की थी मां गा पौ का ध्यान आकर्षित करने की। सबने एड़ी-चोटी की कोशिश की थी कि वे मां गा पौ के प्यार को पा सकें लेकिन वे उसमें सफल नहीं हुए।

नागों का एक रिवाज है कि जीवनसाथी की खोज में वह बहुत ही स्वतंत्र है, बहुत ही आजाद हैं। जिस जीवनसाथी के साथ में उन्होंने अपना पूरा जीवन बिताना है उस पर, अपने माता-पिता के निवेदन का प्रभाव नागा युवक और युवतियाँ दोनों ही नहीं पड़ने देते और यह हक उन्होंने अपने हाथ में रखा है कि वह जिसे चाहें अपना जीवनसाथी चुन सकते हैं और जब तक उन्हें अपना जीवनसाथी, अपनी पसंद का जीवनसाथी नहीं मिलता वे चैन से नहीं बैठते। वे शादी का नाम नहीं लेते।

उनकी रीति-रिवाज और संस्कृति के अनुसार जो युवती जवान हो गयी, वह चाहे दिन हो चाहे रात, कोई सा भी समय हो उस समय में वह अकेली जहाँ जाना चाहती है, माता-पिता को बिना बताए जा सकती है। और उसके लिए, उसके इस तरह चले जाने के कारण माता-पिता को तनिक भी परेशानी नहीं होती।

मान लीजिए कि युवती रात किसी जंगल में बिताना पसंद करती है, जहाँ कि आदमी या आदमी की जात होती है, माता-पिता को इस बात के लिए कोई एतराज नहीं होता। मान लीजिए कि वह किसी नागा युवक से अकेली मिलती है तो उनकी संस्कृति, उनके रीति-रिवाज उनको यह हक देते हैं कि अगर अकेले में जवान लड़की और जवान लड़के मिलें तो कोई अनुचित बात करने की बजाय एक-दूसरे से प्यार का इजहार तक नहीं करेंगे। ऐसा उनका नियम है।



इसलिए इस नियम का पालन जवान लड़के–लड़कियों को इस प्रकार से सुरक्षा प्रदान करता है।

उनकी संस्कृति के अनुसार, उस तरह एक युवती अपनी जाति के दायरे में दिन–रात अगर आती–जाती है तो यह कोई जरूरी नहीं कि वह प्यार के लिए ही घूम रही हो, भटक रही हो, आती–जाती हो। उसके साथ में उसके घरवालों के रहन–सहन, खान–पान की समस्याएँ जुड़ी होती हैं और जिस इलाके में वे लड़कियाँ आती–जाती हैं रहन–सहन और खान–पान के लिए वह ऐसे इलाके नहीं, ऐसे क्षेत्र नहीं जहाँ कि लोग, घर के बड़े–बूढ़े नहीं आते–जाते। और वह कोई ऐसे क्षेत्र नहीं तय किये गये कि युवक यहाँ जाकर अपने प्यार का इजहार स्वतत्रापूर्वक कर सकते हैं।

नागाओं में जवान युवक–युवतियों के लिए प्यार का इजहार करनेवाला स्थान भी है और वह है फूलों का घर, जिसे लड़कियाँ खुद बनाती हैं। जवान लड़के–लड़कियों की प्यार की प्रवृत्तियों के अनुसार ऐसी जगह में वे प्यार का इजहार कर सकते हैं। नागा युवती जो कि जवान हो गयी वह अपने घर में नहीं सोती। वह उस फूलघर में सोती है, जिसे उसने अपने आप बनाया है और वह वहाँ अपने जीवनसाथी को उसी घर के अन्दर ही खोजती है।

आजकल सुमरा, नागा प्रांत में ये फूलघर नहीं हैं। फूलघरों की बजाय अपने–अपने घरों के पिछवाड़े में एक अलग से रसोईघर बनाया जाता है। उस रसोईघर में बड़े–बूढ़ों का प्रवेश नहीं होता। बड़े–बूढ़ों के लिए घर के सामने एक रसोईघर बना दिया जाता है। और घर के पिछवाड़े जो रसोईघर है, वहाँ ही प्रेम का इजहार किया जा सकता है।

मां गा पौ ने भी अपने रीति–रिवाज के अनुसार जब वह जवान हुई, उस समय से लेकर उसने फूलघर में जाकर सोना शुरू किया। मां गा पौ को पसंद करनेवाले नागा युवक भी उस घर में हर रात जाकर प्यार का इजहार किया करते।

लेकिन एक युवक जिसका नाम क्वेल डून था वह बहुत गरीब था, भले ही वह कितना भी गरीब हो मां गा पौ का दीवाना था और वह अपने बूढ़े माता–पिता की सेवा किया करता था। वह मां गा पौ के फूलघर में जा नहीं पाता था। उसकी बड़ी इच्छा थी कि वह भी अपने भाग्य की आजमाइश करे। मां गा पौ के फूलघर में जाये और देखे कि मां गा पौ उसके प्यार के प्रस्ताव को स्वीकारती है या नहीं।

गाँव में जितने भी युवक थे, हर युवक मां गा पौ से प्यार का इजहार कर

चुका था। लेकिन अभी तक मां गा पौ को अपने जीवनसाथी के रूप में कोई पसंद नहीं आया था और उसने किसी से भी वापस प्यार का इजहार नहीं किया।

अभी तक ऐसा कोई युवक नहीं था जिसको मां गा पौ का प्यार मिलने की पूरी उम्मीद थी। इस बात से जवान नागा युवक बहुत हैरान थे। इसलिए जवान होने के बाद जिन–जिन युवकों ने मां गा पौ से प्यार के लिए इजहार किया था अगर उनसे पूछा जाये कि आप लोगों ने अपना जीवनसाथी बनाने के लिए किसको चुन रखा है तो वे लोग यह बात कहना पसंद करेंगे कि हम लोग उस फूलघर में जाते हैं जिसे मां गा पौ ने बनाया है।

इस तरह कभी–कभी फूलघर में युवक मिलकर एक साथ जाते हैं। ऐसी घटना पहले नागा युवतियों ने नहीं देखी थी। वह खुद भी बड़े हैरान होने पर भी खामोश थे।

मां गा पौ खुद भी उन दृश्यों को देखकर बड़ी हैरान थी। बाद में उसको होश आया। "यह बताइए कि हर रोज आप लोग अपने माता–पिता से चोरी से अकेले इस फूलघर में आया करते थे। अब सब लोग मिलकर आते हैं। क्या इससे आप लोग अपने माता–पिता का अनादर नहीं करते?" मां गा पौ ने युवकों से यह प्रश्न किया।

नागा युवकों की मंडली ने कहा, "अभी जो हम आ रहे हैं वह सच्चे प्यार का इजहार करने के लिए नहीं। तुमसे संबंधित एक अजीब रहस्य है जिसके बारे में हम जानना चाहते हैं। अगर उस प्रश्न के बारे में हमें सही उत्तर मिल जाये तो हम वापस लौट जायेंगे और उसके बाद में जैसे हम ठीक समझेंगे, प्यार का इजहार करने के लिए माता–पिता से चोरी–चोरी हम फिर से आयेंगे।" ऐसा युवकों ने कहा। जब मां गा पौ ने कहा कि आप लोग जो पूछना चाहते हैं पूछ सकते हैं। तब युवकों ने कहा, "तुम्हारे रूप के जाल में फँसकर हमारे गाँव में जितने भी जवान हैं, सबने तुमको प्यार का इजहार किया है। ऐसा कोई व्यक्ति, कोई जवान बाकी नहीं रहा जिसने तुमसे प्यार का इजहार नहीं किया हो। तुमने किसी के भी प्यार का उत्तर नहीं दिया और उन नौजवानों ने भी अब दूसरी–दूसरी शादियाँ कर ली हैं और हम देख रहे हैं कि गाँव में अब कुँवारे लगभग खत्म होते जा रहे हैं। हम तुमसे यही पूछना चाहते हैं कि आखिरकार तुम किसको अपना जीवनसाथी बनाना चाहती हो?" यह प्रश्न युवकों ने मां गा पौ से किया।

तभी मां गा पौ ने कहा, "आप लोग अन्य लड़कियों के साथ विवाह कर चुके हैं और अब कुँवारों की संख्या नहीं के बराबर रह गयी है फिर भी मेरा जो

प्रियतम है, वह वाकई अभी है। वह कुँवारा ही है।" ऐसा मां गा पौ ने जोर देकर कहा।

इस बात को जब नागा युवकों ने सुना तो वे बहुत ही हैरान हुए। उन्होंने क्वेल डून को कभी भी इस लायक नहीं समझा था कि उसके बारे में मां गा पौ कभी कुछ सोच भी सकती है, क्योंकि क्वेल डून फूलघर में कभी नहीं आया था।

मां गा पौ से उन युवकों को कोई ठीक उत्तर नहीं मिला इसलिए जिस रास्ते वे आये थे, उसी रास्ते से नागा युवक एक–साथ मिलकर वापस लौट गये। इस बारे में कोई कुछ कह रहा था, कोई कुछ कह रहा था और उन्हीं की बातों के आधार पर क्वेल डून को भी सारी सूचना मिली।

क्वेल डून अपने माता–पिता का बहुत आदर किया करता था। वह कामकाज के प्रति समर्पित था। वह सोचने–विचारनेवाला युवक था। उसका दिमाग बहुत अच्छा था, बहुत तीव्र था। वह मां गा पौ के साथ जब खेत पर गया या पानी भरने गया और जब कभी भी उनकी भेंट हो जाती थी तभी उसके साथ बातचीत भी हो जाया करती थी। तभी अभिवादन भी हो जाया करता था। जब भी उनकी भेंट होती थी तो वे बातचीत भी करते थे। उसी के आधार पर वह समझ सकता था कि मां गा पौ ने जिस प्रेमी की ओर इशारा किया है वह और कोई नहीं वह खुद है।

एक दिन कामकाज जरा कम था और क्वेल डून ने यह सोचा कि जो बात उसके विचार में आयी है वह ठीक है या नहीं। उसका फैसला करने के लिए या उसकी जानकारी लेने के लिए वह मां गा पौ के घर गया।

जब वह उसके घर में पहुँचा तो मां गा पौ ने उसका स्वागत किया, उसका अभिवादन किया और बड़ी अच्छी तरह बातचीत की। क्वेल डून इस व्यवहार से बड़ा उत्साहित हुआ और उसने पहली बार में ही अपने प्यार का इजहार कर दिया। टोकने से पहले छिपने से पहले तैयार बैठी मां गा पौ बहुत देर तक नाटक नहीं कर पाई और तीन–चार रातों के बाद ही क्वेल डून को भी अपने ऊपर खुद यकीन नहीं हो रहा था। उसे बहुत खुशी हो रही थी जब उसे मां गा पौ का प्यार मिला। उसने मां गा पौ से कहा कि वह वास्तव में उससे बहुत प्यार करता है और उसके माता–पिता से जाकर उसका हाथ माँगेगा। पत्नी के रूप में वह जीवन भर उसे प्यार देगा। मां गा पौ को भी कोई इस तरह का काम नहीं करने देगा जिससे उसको थकावट हो। और तो और खेतीबाड़ी भी आसान हो सके, इसके लिए भी वह उचित प्रबंध करेगा। ये सब बातें क्वेल डून ने अपने माँ–बाप से कहीं।

जंगल के पेड़ काटकर उन्हें जलाकर खेत तैयार करने का जो कार्य होता

है, वह नागा लोगों में औरतों का काम ही होता है। हर नागा युवक, जो अपनी पत्नी और अपने बच्चों को प्यार करता है वह टहनियाँ और पत्ते आसानी से साफ करने के लिए पहाड़ी खेत को पहाड़ के उतार पर ही बनाया करता है।

उस समय से लेकर दोनों प्रेमी हर रात फूलघर में मिला करते थे। प्यारी–प्यारी बातें वे किया करते थे और बहुत ही प्रसन्न थे। क्वेल डून हर रात फूलघर में आया करता था और अपनी प्रेमिका के नजदीक होने के लिए भी हर रोज काम को पूरी ईमानदारी और मेहनत से किया करता था और पैसे जमा किया करता था।

इसी प्रकार यह सिलसिला चलता रहा और लगभग जब तीन साल बीत गये तो उसके पास काफी पैसे जमा हो गये। क्वेल डून ने मां गा पौ के पास अपने माता–पिता को ले जाकर उसका हाथ माँगा। मां गा पौ के माता–पिता भी खुशी–खुशी मां गा पौ का हाथ क्वेल डून के हाथ में देने के लिए सब बड़ों के सामने तैयार हो गये। दोनों ओर के बूढ़े–बुजुर्ग बैठे और उन्होंने भीतरी कीमत तय की। भीतरी कीमत उसे कहते हैं, जब पहली शादी होती है, शादी की पहली रस्म जो मुकर्रर की जाती है उसे शादी की फीस के रूप में तय मानते हैं।

मां गा पौ के माता–पिता शादी के बारे में हुक्म तय कर रहे थे। इसे भीतरी कीमत कहा जाता है। वो काफी ज्यादा थी और क्वेल की जो आर्थिक स्थिति थी उसको देखते हुए उसे कम करने के लिए बड़े–बुजुर्गों से बहुत अधिक प्रार्थना करनी पड़ी। पहले जो मंगनी का उत्सव होता है, जब वह पूरा हुआ और शादी का मुहूर्त निकालने के लिए तब ज्योतिषियों ने हिसाब–किताब लगाया। उनके हिसाब–किताब लगाने के बाद शादी की तारीख निकाली गयी और उसके बाद शादी के रीति–रिवाज के अनुसार दहेज जो लड़के देते हैं लड़कियाँ नहीं। भारत में लड़कियों को दहेज देना पड़ता है और वह दहेज बर्मा में लड़कों को देना पड़ता है। बर्मा में लड़कियाँ दहेज लेती हैं। शादी के लिए जो दहेज देना है उसके लिए भी मां गा पौ के माता–पिता ने एक ही साथ तय कर दिया।

शादी के कमरे में प्रवेश करने की जो कीमत रखी थी, उसमें शराब के घड़े, एक बड़ा मौ जिससे मुनादी की जाती है और एक मौ के कुंडल, मोतियों का हार, कानों के कुंडल, बहुत–सा नमक और सुअर, मुर्गे इत्यादि सब थे और साथ में एक पागल बैल भी।

बैल की बात सुनकर क्वेल डून काफी काँप गया। हाँ, एक पागल बैल भी। पागल बैल की बात को सुनकर क्वेल डून बहुत घबराया। वह काँपने लगा। पागल बैल का मतलब यह होता है कि जंगल में से एक जंगली जानवर को

पकड़कर लाना। किसी भी जंगली जानवर को पकड़कर उसे किफ़ायत से नहीं लाया जा सकता। इसलिए उसे सही ढंग से उठा लाने के लिए जिन वस्तुओं की जरूरत होती है उनको लाए बिना उसे गाँव या शहर नहीं लाया जा सकता। इसलिए उसे अपने ढंग से उठा लाने के लिए जरूरी सामान लाए जाते हैं, तभी उसको खींच सकते हैं। इस तरह के जंगली बैलों को नमक देना होता है। तभी वह बैल को खींच सकता है। ध्यान से देखें तो जो पैसेवाले लोग थे वे ज्यादा नमक खिलाया करते थे और फिर जो सभ्य बैल हैं उसे वे प्राप्त कर सकते थे। उनके लिए यह बात किसी प्रकार कहने से कोई परेशानी नहीं हो सकती। अपने बारे में जो मैं सोचता हूँ इतना आसान नहीं है। उसे अपने जीवन के लिए बड़ा वर्जिश होती है। जो लोग उसे नहीं खिला सकते थे वे बैल नहीं पाल सकते थे और बैल की देख–रेख के लिए उसके पास पैसे भी नहीं थे। इसलिए उसने बार–बार प्रार्थना की कि जो भीतरी सामान की कीमत लगाई गयी है उसमें से यह पागल बैल हटा लिया जाये। लेकिन मां गा पौ के जो माता–पिता थे उसको मानने के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने बहस की कि हम इसको वापस नहीं ले सकते इसलिए क्वेल डून को बहुत अधिक खतरा था।

वह अपनी प्रेमिका मां गा पौ के पास भी मदद लेने के लिए रात के समय फूलघर में गया। उसको भी यह बात बताई, और समझाई। जब मां गा पौ ने देखा कि उसका प्रेमी बहुत दुखी है, रोने के सिवा उसके पास कोई चारा नहीं था क्योंकि वह बड़ों के काम में कोई टाँग नहीं अड़ा सकती थी। उनके आदेश को हटा नहीं सकती थी।

एक दिन दूसरे गाँव में रह रहे क्वेल डून के ताये ने जब उनकी इस बात को सुना तो उसने संदेशा भेजा कि मेरे पास एक पागल बैल है। मैं उसे कुछ समय के लिए दे सकता हूँ और जब बाद में उन्हें अपना पागल बैल मिल जाये तो वे वापस कर दें। इस बैल को आकर ले जाओ। यह संदेशा दिया। अब क्वेल डून बेचारे के लिए शादी की तारीख भी बिल्कुल नजदीक आ गयी थी इसलिए वह अपने ताये के पास पागल बैल लेने के लिए गया। क्वेल जिस यात्रा पर जाना चाहता था वह काफी दूर थी। उसको कई पहाड़ लाँघने पड़ते थे, कई नाले पार करने पड़ते थे और वहाँ पर जंगली जानवर भी बहुत भयानक–भयानक गुजरते थे।

जब यात्रा के बारे में मां गा पौ को पता चला तो उसने प्यार से अपने प्रेमी के गले में एक पायल का दाना बाँध दिया और एक डंडा दिया उसमें भी एक पायल का दाना बाँध दिया। जंगली जानवरों को उस पायल की आवाज़ के साथ

भयभीत करके जाओ। इस पायल की आवाज़ जब जानवर सुनेंगे तो वे डर जायेंगे। बड़ी होशियारी के साथ आप जाइएगा। प्रेमिका ने प्रेमी से कहा और अपने गाँव के निकट तक भागकर वह उसे छोड़ने गयी और विदा लेने से पहले उसने कहा कि मैं इस पहाड़ी पर से हर रोज उस ओर देखा करूँगी और उसकी प्रतीक्षा किया करूँगी। गाँव के जब तुम नजदीक हो जाओगे तो जानबूझकर पायल की आवाज़ को जोर से बजाना और जोर से खड़काना। जब पायल की आवाज उसके कानों में पड़ेगी तो वह उन्हें लेने के लिए आयेगी।

क्वेल डून ने भी कहा कि यह अच्छी बात है। कई वन और कई पहाड़ पार करने के बाद अपने तायाजी के यहाँ से बैल लेकर वे वापस लौटे। लौटते समय जब वे आधे रास्ते में पहुँचे तो बारिश बहुत हुई और एक नाले में पहाड़ के ऊपर से पानी तेजी से लगातार गिर रहा था। ऊपर से उस नाले को पार करना बड़ा मुश्किल था। वे ऊपर से उस नाले को पार नहीं कर पाये।

इसलिए बारिश बंद होने तक नाले के उस ओर ठहरने का फैसला किया। उसने पागल बैल को एक पेड़ के नीचे मजबूती से बाँधकर रखा और प्रतीक्षा करने लगा। आकाश से सूरज एकदम अदृश्य हो गया था और बारिश लगातार हो रही थी। उसने अगर रात उसी जगह पर गुजारी तो अवश्य ही भयानक जानवरों के संकट से वह मारा जायेगा। ऐसा उसने अंदाजा लगाया। बारिश भी बंद नहीं होगी इसलिए इस नाले को साहस करके किसी तरह पार करना होगा। उसने यह सोचा और पागल बैल को खींचकर तैरते हुए उसने वह नाला पार करने की कोशिश की।

जब नाले के बीच में पहुँचा तो एक बहुत ही तीव्र पानी की लहर आयी जिसके वेग को वह सह नहीं पाया और बैल के साथ–साथ उस लहर की वेग में वह भी बह गया।

मां गा पौ भी प्रेमी की प्रतीक्षा में उस पहाड़ी की चोटी पर रोज चढ़कर रास्ता देखने लगी। दिन और महीने गुजरने लगे लेकिन उसका प्रेमी नहीं आया। प्रेमी के न आने से मां गा पौ का खाना–पीना सब कुछ छूट गया और पहाड़ की चोटी पर से प्रेमी की प्रतीक्षा करती–करती उसने प्राण त्याग दिए।

आज तक क्वेल डून वापस नहीं लौटा। मां गा पौ भी प्रेमी के प्यार में, उसकी वेदना में जब मरी तो मां गा पौ के माता–पिता को यह अहसास हुआ कि धरती के जो हालात थे, जो उनकी बेटी के हालात थे उनको ध्यान से न देखकर भीतरी कीमत इन्होंने इतनी अधिक माँगी थी कि उनकी बेटी का प्रेमी वह दे नहीं पाया और भीतरी कीमत अदा करने के प्रयास में वह मारा गया और उसके साथ

ही उनकी बेटी की भी मृत्यु हो गयी। यह उन्हें अहसास हुआ और उनको इस पर बहुत कुछ पछतावा भी हुआ।

मां गा पौ अपने प्रेमी पायलवाले की इंतजार में मरी और उस पहाड़ में वह देवता बन गयी। उस क्षेत्र के रहनेवाले लोग उस देवता को पायलवाली देवी के नाम से आज तक पुकारते हैं।

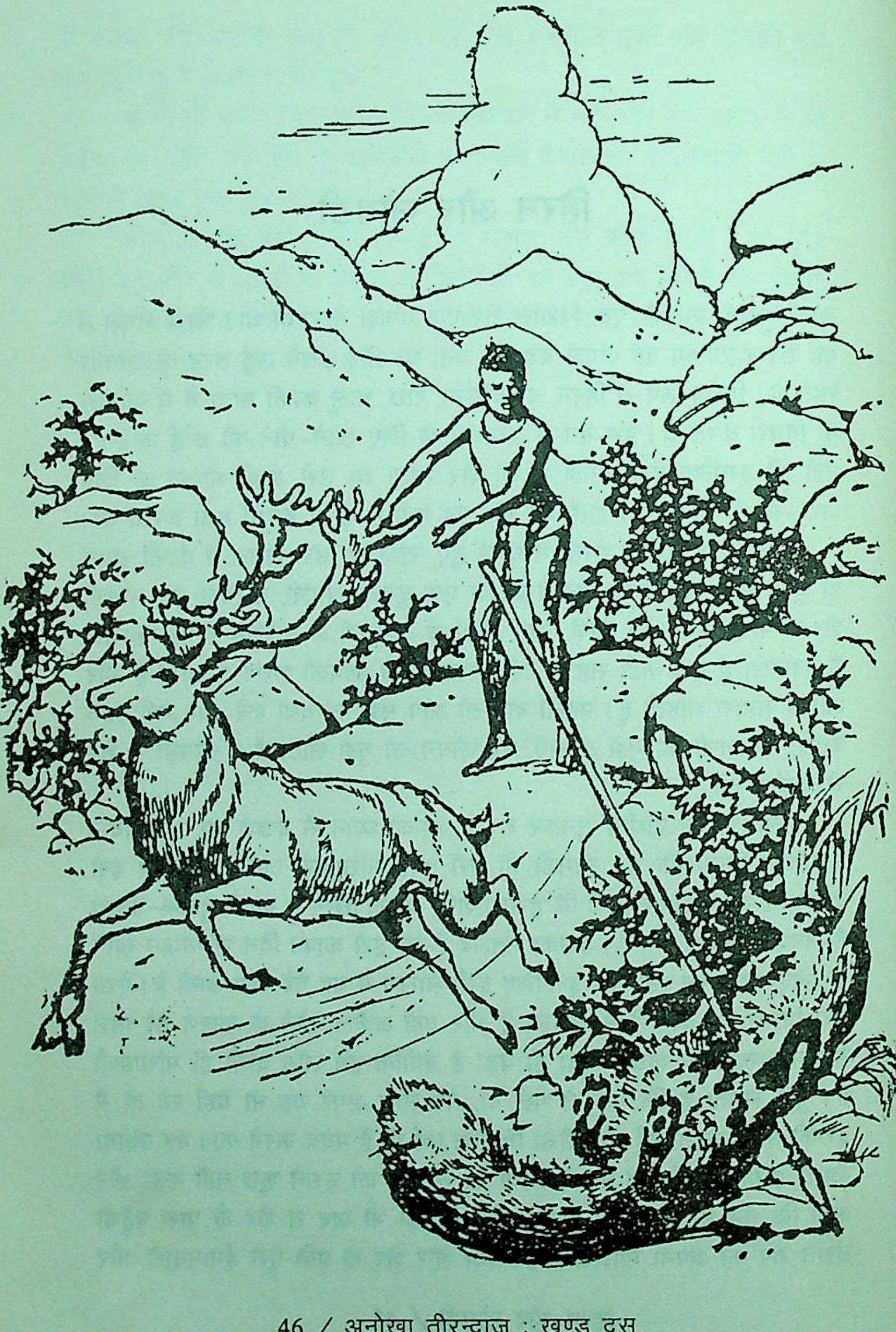
आज भी जब कहीं शादी–विवाह का मामला तय करने लगते हैं तो लोग क्वेंल डून और मां गा पौ के जीवन की घटनाओं को याद कर लेते हैं और विशेष रूप से पायलवाली कथा को एक पाठ के रूप में याद रखते हैं। लोगों को जरूरत पड़ने पर सुनाते भी हैं।

हिरन और लोमड़ी

काफी पुरानी बात है, एक विशाल शेर एक जंगल में रहता था। जिस जंगल में यह शेर रहता था वह जंगल बड़ा ही घना था और उसमें कई तरह के जानवर रहते थे। विशेष रूप से हिरन, बारहसिंघा, रीछ, भालू काफी मात्रा में ये जानवर भी विचरा करते थे। इस वन में जानवरों के लिए खाने–पीने की कोई कठिनाई नहीं थी इसलिए इस जंगल में जो शेर रहता था उसे अपने भोजन के लिए जरा–सी भी चिंता नहीं होती थी और वह बड़ी मस्ती में हमेशा घूमा करता था।

इस तरह उसको मस्ती में घूमते हुए, रहते हुए उस जंगल में काफी समय हो चुका था। एक दिन उसने देखा कि एक दुबली–पतली, मरियल–सी लोमड़ी शेर के पास आयी और बोली, "चार टाँगों के जानवरों के मालिक, हमारे महाराज मैं बेसहारा हूँ मुझे कहीं सहारा नहीं मिला है। मैं आपकी शरण में आयी हूँ और आपसे सहारा चाहती हूँ। पहली बात तो आप मुझ पर दया करें और मेरी जान बख्शें, मेरे प्राणों को मुझे लौटाएँ, मेरे जीवन को मुझे लौटा दें।" लोमड़ी ने शेर से प्रार्थना की।

लोमड़ी की प्रार्थना सुनकर शेर ने उसको ध्यान से देखते हुए अपने दिल में विचार किया कि यह लोमड़ी भी मेरी तरह मांसाहारी जानवर है और इसे देखने पर यह मालूम होता है कि इसका शरीर काफी छिन्न है, काफी दुबला–पतला है, काफी मरियल–सा है। इसका मतलब हैं कि इसे काफी दिन से भोजन खाने के लिए नहीं मिल रहा और इसीलिए इसी लालच में यह मेरे पास आयी है। ऐसा मेरा विचार है। वैसे भी मैं अकेला हूँ और यहाँ अकेला होने के कारण मेरे पास भोजन जरूरत से कुछ ज्यादा ही पड़ा है क्योंकि हम लोग दोनों ही मांसाहारी हैं। मुझे लगता है कि एक से भले दो, मेरे साथ अगर यह भी यहाँ रहे तो मैं इसकी मदद करता रहूँ और जैसा कि मेरा धर्म भी है मदद करने का। यह ज्यादा बेहतर होगा। उसने यह मन में सोचा पर लोमड़ी को उसने कुछ नहीं कहा और कहा कि तुम मेरे साथ रह सकती हो। लोमड़ी भी जब से शेर के पास पहुँची उसने शेर को अपना मालिक मान लिया और शेर के प्रति पूरी ईमानदारी और



वफादारी के साथ जो–जो काम उसे करने चाहिए थे उन कामों को पूरी दिलचस्पी के साथ वह कर दिया करती थी। उसकी तरफ से जो काम करनेवाले होते थे वह कभी उन्हें अधूरा नहीं छोड़ती थी। जहाँ तक खाने–पीने की बात है, भोजन की बात है वह भी जब उसका मालिक यानी शेर खा लेता था और जो कुछ बच जाता था, उसी बचे–खुचे से वह अपना पेट पालती थी। कोई ऐसी घटना देखने में नहीं आयी थी कि मालिक शेर के ज्ञान के बिना उसने कभी किसी चीज को चोरी से खाया हो। ऐसा कभी सुनने में नहीं आया था।

इस तरह लोमड़ी की ईमानदारी को, उसके सेवा भाव को जब शेर हर रोज देखता था तो शेर को लोमड़ी पर दया आ गयी। इसलिए उसने एक दिन लोमड़ी से कहा, "लोमड़ी, तुम काफी दिनों से मेरे पास हो, इस पूरे काल में जो भी मेरे प्रति, मेरे योग्य जो सेवा तुमको करनी चाहिए थी, उसको पूरे ध्यान से तुम करती हो। मैं तुम्हारा आभारी हूँ कि तुम मेरी सेवा, मेरी देखभाल करती हो लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि मैं तुम्हारे प्रति पूरा न्याय नहीं कर रहा। क्योंकि मैं देखता हूँ कि मैं जो शिकार लाता हूँ, उसे मेरे खाने के बाद में जो बच जाता है तुम उससे ही सन्तोष कर लेती हो। यानी एक तरह से मैं तुम्हें वह खिलाता हूँ जो मेरे से बच जाता है। और दूसरी तरह से अगर सोचा भी जाये तो ऐसा भी लगता है कि मैं अपना कर्तव्य ठीक से नहीं निभा रहा। इसलिए मैं सोचता हूँ कि मैं और तुम मांसाहारी हैं और एक जाति के जानवर हैं। मुझे यह नहीं करना चाहिए कि मैं इस तरह बचा–खुचा भोजन तुम्हें खिलाया करूँ। मुझे लगता है कि मैं अपनी जाति का सम्मान, उनका गर्व निभाने के लिए मैं तुमको निमंत्रण दूँ कि आज से हम दोनों एक साथ बैठकर खाया करें। इसलिए आज से लोमड़ी तुम बची–खुची चीजें नहीं खाओगी। तुम मेरे साथ एक मित्र की तरह रहोगी और मित्र की तरह ही मेरे साथ भोजन किया करोगी। यह आज से मैं तुम्हें निमंत्रण देता हूँ।" शेर ने लोमड़ी से कहा।

उस दिन से लेकर लोमड़ी को जो भी काम करने होते थे वह उन कामों को पूरी तरह अच्छी तरह किया करती थी। लेकिन जहाँ तक भोजन का सवाल है वह उसे शेर के साथ ही बैठकर खाने को मिल रहा था।

इस तरह ऊँच–नीच की भावना समाप्त कर शेर के साथ जब उसको भोजन करने को मिलता था तो लोमड़ी ने पहले की तरह शेर से डरना कम कर दिया। बड़ी आत्मीयता से जब वे एक–दूसरे के नजदीक हो गये तो भय नाम की चीज लुप्त होने लगी और उनका आपसी विश्वास और सम्बन्ध मधुर होने लगा और लोमड़ी का मन और चित्त अब प्रसन्न रहने लगा क्योंकि अब उसको पहले

जैसी बची–खुची चीजें खाने को नहीं मिलती थीं। इसलिए अब वह पहले जैसी मरियल–सी दुबली–पतली भी नहीं रह गयी थी। अब वह देखने में काफी अच्छी लगने लगी थी। उसकी सेहत बेहतर हो गयी थी और उसके शरीर में शक्ति भी काफी आ चुकी थी।

एक दिन लोमड़ी के दिमाग में भी एक बात आयी। उसने सोचा, "मैं भी शेर की तरह मांसाहारी जानवर हूँ। मुझे लगता है कि हमारी जो नस्ल है, हमारी जो जाति है उसमें भी कोई खास फर्क नहीं है। यह एक जैसी है, जिस तरह शेर में जो शक्ति है वह मुझमें भी हो सकती है लेकिन हम दोनों में फर्क यह है कि मुझे उसका सारा काम करना पड़ता है जैसे मैं उसकी नौकर हूँ। ये जो मुझे यह सब करना पड़ता है इसकी वजह से मुझे काफी शर्म उठानी पड़ती है। मुझे इज्जत का मजाक उठाना पड़ता है। मेरी अपनी बेइज्जती होती है। मुझे अपने आपको नीच समझना पड़ता है। जो मुझमें शक्ति है मुझे उसका प्रयोग करना चाहिए। मैं भी अपनी मर्जी से शिकर खोजकर खाऊँ। इस प्रकार नौकर के जीवन से अच्छी तरह मैं छूट सकती हूँ। अब मैं अगर शेर की तरह हाथ–पाँव हिलाकर अपना भोजन खोजने लग जाऊँ तो मैं उसके नौकर या उसके गुलाम के जीवन से मुक्त हो सकती हूँ। इसलिए आज से लेकर मुझे उन लोगों के पास बैठना चाहिए जो मेरे अपने हैं। जो मेरी अपनी जाति के हैं। मैं आज से शेर की नौकरी और चाकरी नहीं करूँगी।" उसने इस तरह सोचा। सोचने के बाद उसने अपने मन की बात शेर से कही।

लोमड़ी की बात सुनकर शेर ने कहा, "देखो, तुम मेरी सेवा नहीं करना चाहतीं तो बेशक मत करो। मुझे इसमें कोई ऐतराज नहीं है, लेकिन मैं यह चाहता हूँ कि तुम मेरे पास ही रहो और तुम मुझे छोड़कर मत जाओ। मैं तुम्हें जिंदगी भर, जीवन भर अपने साथ रखने का वायदा करता हूँ। तुम मेरे साथ रहो। यह तुमको क्या बात सूझी कि तुम भोजन की तलाश में भटको और जो कुछ मिलेगा उसी से तुम अपना पेट पालोगी। वास्तव में तुम्हारा शरीर पतला–दुबला है और जो तुम सोच रही हो वह ठीक नहीं है।" शेर ने लोमड़ी को समझाया।

लोमड़ी ने उत्तर दिया, "मित्र शेर, मेरा शरीर आप जैसा होशियार नहीं है। पर यह इतना छोटा भी नहीं है। जितना मेरे लिए उचित है उतना तो अवश्य है ही। मेरे शरीर के अन्दर जो ताकत है, मुझसे जितने छोटे जानवर हैं उनको मैं आसानी से पकड़कर खा सकती हूँ और अगर मुझे अपने से बड़े जानवरों को भी पकड़ना हो, उनको भी मारना हो, उनको भी यदि धोखा देना हो तो मेरे पास ऐसी शक्ति भी है कि अपने से बड़े जानवरों को किस तरह धोखा दिया जा

सकता है। उनको अँधेरे में खाया जा सकता है और उनको ऐसी जगह पर डाला जा सकता है जहाँ कि उनको पानी तक भी न मिले। जैसा कि मैं सोचती हूँ कि अगर अपने से बड़े जानवरों से मुक़ाबला करना पड़े तो मैं कैसे उनको धोखा दे सकती हूँ। उनसे कैसे बच सकती हूँ, उनको कैसे मारकर खा सकती हूँ। यह भी मेरे दिमाग में है।" शेर अंत में सोचता है कि "मैं इतना नीच नहीं हूँ।" इस तरह उत्तर देने के बाद क्योंकि शेर लोमड़ी को स्नेह करता था, प्यार करता था। और पूरी ईमानदारी के साथ उसे खिलाया करता था। उसने फिर से उससे कहा कि नहीं, शिकार वह लाएगा। उसी शिकार को तुम खाओ। तुम चुपचाप और शान्ति से उसके साथ मिलकर रहो। वास्तव में शेर ने अपने ऊपर नियंत्रण रखा, अपने क्रोध को भड़कने नहीं दिया और उसे पता नहीं लगने दिया कि उसे क्रोध आया है। लेकिन सच बात तो यह है कि शेर को लोमड़ी की बातें पसंद नहीं आईं। शेर यह भी नहीं चाहता था कि वास्तव में मैं लोमड़ी को अपने से जुदा कर दूँ। पर लोमड़ी किसी तरह भी मान नहीं रही थी, सुन नहीं रही थी, वह हार नहीं मान रही थी। वह जिद कर रही थी कि वह अपने आप ही भोजन की खोज करेगी। इस तरह सोचते हुए अब लोमड़ी के दिल में यह बात घर कर गयी थी कि उसे अब शेर के साथ नहीं रहना है। वह अकेली अपना भोजन खोजेगी और अकेली रहेगी। यह सोचकर वह शेर के यहाँ से चुपचाप चली गयी।

लोमड़ी जब शेर को छोड़कर आयी, तब से उसे पेट भर भोजन तो मिलता रहा लेकिन पेट भर भोजन पाने के लिए उसे बहुत कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी। उसे क्योंकि सफलता मिल रही थी इसलिए जो मेहनत लगती थी वह उसे दिखाई नहीं दे रही थी। और जो उसे खाने को मिल रहा था वह उसे दिखायी दे रहा था और वह इस बात को अपनी सफलता मान रही थी और उसे इस बात पर अपने पर मान भी हो रहा था और अहंकार भी।

एक दिन लोमड़ी ने सोचा कि इन मरियल–से जानवरों को पकड़कर खाने में कोई विशेष आनंद नहीं है। उसे न तो चर्बी ज्यादा मिलती है और न स्वाद में कोई खासियत है। ऐसे जानवरों को मारकर खाना चाहिए जिनमें खूब चर्बी हो, जिनका मांस बड़ा–ही स्वादिष्ट हो। यह सोचकर उसने बड़े जानवरों को पकड़ने के लिए शेर का साथ छोड़ दिया और अपनी यात्रा पर चल पड़ी।

वह अपनी यात्रा, नयी यात्रा पर चली और यात्रा में उसे बहुत बड़ा बारहसिंघा मिला। बारहसिंघा को देखकर लोमड़ी ने सोचा कि अगर इस बारहसिंघा के शरीर की मैं अपने शरीर से तुलना करती हूँ तो बारहसिंघा का शरीर मेरे शरीर से काफी बड़ा है और बारहसिंघा के जो सींग हैं वे बहुत ही तेज

हैं। उसके बड़े मजबूत पाँव भी हैं। अगर मैं बारहसिंघा से कहीं भिड़ गयी तो मेरी हार अवश्य होगी। इसलिए मुझे अपने दिमाग का इस्तेमाल करना चाहिए। मेरा दिमाग जिसके बल पर मैं जो चाहूँ खाती रही हूँ, इस तरह ये जो बारहसिंघा है इसको मैं किसी तरह काटूँगी, मारूँगी, खाऊँगी, ऐसी मैं योजना बनाती हूँ। वह बारहसिंघा के पास गयी और बोली, "मित्रवर बारहसिंघाजी आप बलवान हैं, आप शक्तिशाली हैं। आपके इतने शक्तिशाली सींग हैं। आपमें इतने अच्छे गुण मौजूद हैं और फिर मुझे यह समझ नहीं आती कि आप ऐसे जंगल में क्यों नहीं जाते जहाँ खाने के लिए, पेट भरने के लिए अपार साधन हैं। वहाँ भोजन भी ज्यादा मिलेगा, पानी भी ज्यादा मिलेगा। ऐसी जगह में आप जाकर रहें तो यह आपके शरीर में जो अभी शक्ति है इससे कई गुना शक्ति बढ़ जायेगी। आपका बल बहुत ज्यादा बढ़ जायेगा और आप देखने में इससे कहीं ज्यादा खूबसूरत लगेंगे। यह तो निश्चित है। क्योंकि हम तो जंगल के प्राणी हैं, आपको देखा तो मुग्ध हो गयी कि मैं आपको ऐसी जगह ले जा सकती हूँ जहाँ खाने–पीने के साधन अधिक हैं। अगर आप चाहें तो मेरे साथ चलकर देख सकते हैं।"

बारहसिंघा ने जब लोमड़ी की बात सुनी तो उसने सोचा शायद यह लोमड़ी ठीक कह रही है। कौन ठीक है कौन गलत है इसका फैसला तो अगर वह जगह नहीं देखेंगे तो करना बड़ा मुश्किल होगा। मुझे लगता है कि मुझ पर यह काफी श्रद्धा रखती है। वास्तव में मैं अपने सींगों और टाँगों से खूबसूरत लगता हूँ, इसीलिए तो यह कहती है कि मैं खूबसूरत हूँ। लोमड़ी मेरी प्रशंसा इसलिए करती है कि मैं वास्तव में खूबसूरत हूँ। जैसा कि उसने प्रस्ताव रखा है अगर मैं अधिक अच्छा खाना पेट भरकर खाने लगूँ और अधिक प्रसन्नचित्त रहने लगूँ तो मुझमें इससे कई गुना अपार शक्ति आ जायेगी और मेरी सुंदरता भी बहुत बढ़ जायेगी। मुझे चाहिए कि मैं वह जगह इसके साथ जाकर देख लूँ जिस जगह को यह बताना चाहती है। जो मेरी रहनेवाली जगह होगी, जहाँ मैं रहूँगा उसका अभी से मुआयना कर लेना चाहिए।

बारहसिंघा लोमड़ी से बोला, "मित्रवर, लोमड़ी भला ऐसा कभी हो सकता है कि तुम मुझे एक ऐसा स्थान दिखाओ जहाँ कि खाने–पीने की वस्तुएँ बहुत होंगी और मैं उस जगह की उपेक्षा कर दूँ। मैं इतना भी न करूँ कि तुम्हारे साथ चलकर उसको देख लूँ। भला मैं ऐसा क्यों चाहूँगा, भला मैं क्यों चाहूँगा कि अच्छे भोजन से, अच्छे वातावरण से और अच्छे स्थान से मैं वंचित रह जाऊँ। क्या यह वास्तव में सच है कि जिस जगह तुम मुझे ले जाना चाहती हो, उस भावी जगह में इस वर्तमान जगह से कहीं अधिक साधन हैं, अगर हैं तो चलो मुझे उस को

दिखाओ मित्रवर। अगर तुम मुझे उस जगह की ओर ले चलती हो तो मैं तुम्हारे साथ अभी चलने के लिए तैयार हूँ।"

लोमड़ी ने बारहसिंघा को जरा-सा मुड़कर देखा था और उसके थोड़े-से प्रयास से उसने देखा कि बारहसिंघा उसके जाल में बराबर फँसता जा रहा है। उसने महसूस किया कि उसकी जो योजना है वह कामयाब हो रही है, सफल हो रही है और बारहसिंधा उस जाल से बाहर नहीं निकल पायेगा। इसलिए लोमड़ी ने कहा, "मित्रवर बारहसिंघा, तुमने यह कैसी बात कह दी, मैंने तो तुम्हें चलने के लिए अपनी चेतना शक्ति से प्रेरित होकर कहा था। वास्तव में आप मेरे साथ चलिए और चलकर वह जगह देखिए जो आपके लिए वहाँ बेचैन हो रही है, जो आपको एक प्रकार से बुला रही है और आपकी बनने के लिए तैयार बैठी है। हाँ मैं आपको वह जगह दिखाती हूँ, वहाँ मैं तुमको ले जाऊँगी लेकिन फैसला तो आपको खुद ही करना है।" यह कहकर लोमड़ी ने बारहसिंघा को चलने के लिए इशारा किया।

बारहसिंघा लोमड़ी के साथ चल पड़ा। जब वे काफी दूर निकल चुके, तो वहाँ उन्होंने एक शिकारी द्वारा लगाया हुआ एक जाल देखा। तभी लोमड़ी ने बारहसिंघा को आगे-आगे चलने के लिए कहा। लोमड़ी के कहे अनुसार जब आगे-आगे बारहसिंघा चलने लगा तो एक शिकारी द्वारा लगाए गये जाल में जाकर फँस गया।

तभी लोमड़ी को लगा कि उसकी योजना कामयाब हो गयी। अब वह बारहसिंघा जब मरेगा तो उसकी चमड़ी के मांस को खाएगी। इसलिए वह चुप करके निकट की एक झाड़ी में छिपकर बैठ गयी। बारहसिंघा ने अपनी जान बचाने के लिए, अपने प्राणों को बचाने के लिए पूरी कोशिश की। आजाद होने के लिए उसने कई तरह के कार्य किये। लेकिन उसने जो ताकत लगाई वह बेकार गयी। वह जाल से मुक्त नहीं हो पाया। कुछ देर बाद शिकारी आया जिसने जाल लगा रखा था। उसने दाँव और भाले निकाले और दौड़कर उसके पास आया।

इस घटना को शुरू से आखिर तक वहीं बैठकर एक कौवा देख रहा था। अगर वह न बचाता तो कुछ ही देर बाद बारहसिंघा की मौत हो जाती। उसने सोचा कि अब बारहसिंघा की मुझे जान बचानी होगी। अगर वह उसकी जान नहीं बचाएगा तो अब कुछ ही देर बाद वह मारा जायेगा। इसलिए उसने बारहसिंघा से कहा, "मित्रवर बारहसिंघा, तुम पूरी तरह फँसे हुए हो। तुम्हें इस हालत में देखकर शिकारी तलवार और भाला लेकर तुम्हें मारने के लिए दौड़ा

आ रहा है। जैसे ही शिकारी तुम्हारे पास पहुँच जायेगा और तुम्हारा ये जो जाल है खुलेगा तो तुम छूटने की कोशिश मत करना। तुम किसी तरह का संघर्ष करने की कोशिश मत करना बल्कि मरे हुए होने का नाटक करना। हिलना–डुलना नहीं जैसा कि शिकारी को लगे कि तुम मर गये हो। जब वह जाल खोल देगा तो मैं तुमको आवाज़ निकालकर इशारा करूँगा। तुम मेरी आवाज़ सुनकर जाल में से निकलते ही जितनी भी तुम्हारी ताकत होगी उसका प्रयोग करोगे और फिर तुम यहाँ से दौड़ोगे। अगर तुम ऐसा कर सके तो तुम बच सकते हो।" कौवे ने बारहसिंघा को यह सलाह दी।

तभी बारहसिंघा कौवे से बोला, "मित्रवर कौए, मैं आपकी हर बात से सहमत हूँ। आपने मुझे जो योजना बताई है मैं उसका पूरी तरह पालन करूँगा। आप कृपा करके मेरी जान को बचा सकते हैं तो बचाइए।" कौवे को इतना कहकर उसने धीरे–धीरे साँस लेने का बहाना कर लिया और आँख बंद करके मृत होने का नाटक करने लगा।

शिकारी भी जाल के पास पहुँच गया। जब उसने बारहसिंघे को देखा तो उसमें जान नहीं थी, उसे लगा कि ये तो मृत है। इसलिए उसने जाल की ओर अधिक ध्यान नहीं दिया और बड़ी लापरवाही के साथ उसने जाल को खोला। और खोलते समय भी उसका अधिक ध्यान दूसरी ओर था।

इस तरह जाल को जैसे ही शिकारी ने खोला कौवे ने बारहसिंघा को अपनी आवाज़वाला इशारा किया। उस आवाज़ को सुनते ही जाल में बैठा हुआ बारहसिंघा पूरी ताकत के साथ दौड़ उठा। लेकिन जो शिकारी था अचानक ही उसने अपना भाला उठा लिया और भाले को लेकर दौड़ रहे बारहसिंघा पर उसने पूरी ताकत के साथ वार किया और उसका भाला बारहसिंघा को न लगकर बारहसिंघा के मांस और चर्बी के लिए बेताब लोमड़ी को जा लगा जो कि पासवाली जगह पर छिपी हुई थी और लोमड़ी वहीं मर गयी।

नोट—यह कहानी समाप्त करने से पहले नागाओं की भाषा में तीन–चार शब्द पाठकों के लिए बताना चाहूँगा। जैसे नागा भाषा में, नागा कौन से, सुमरा नागा, जिनको सुमरा नागा कहते हैं उनकी भाषा में लोमड़ी को जही कहते हैं और बारहसिंघा को खैया कहते हैं और जाल को कहते हैं ठारान। कौवे को तखा, शेर को जूरी कहते हैं। आदमी को तमी कहते हैं।

लोहे की गोली

एक समय की बात है एक गाँव था। उसमें एक लड़की जिसका नाम लौनी था, अपने माता–पिता के साथ रहती थी। लौनी का एक छोटा भाई भी था।

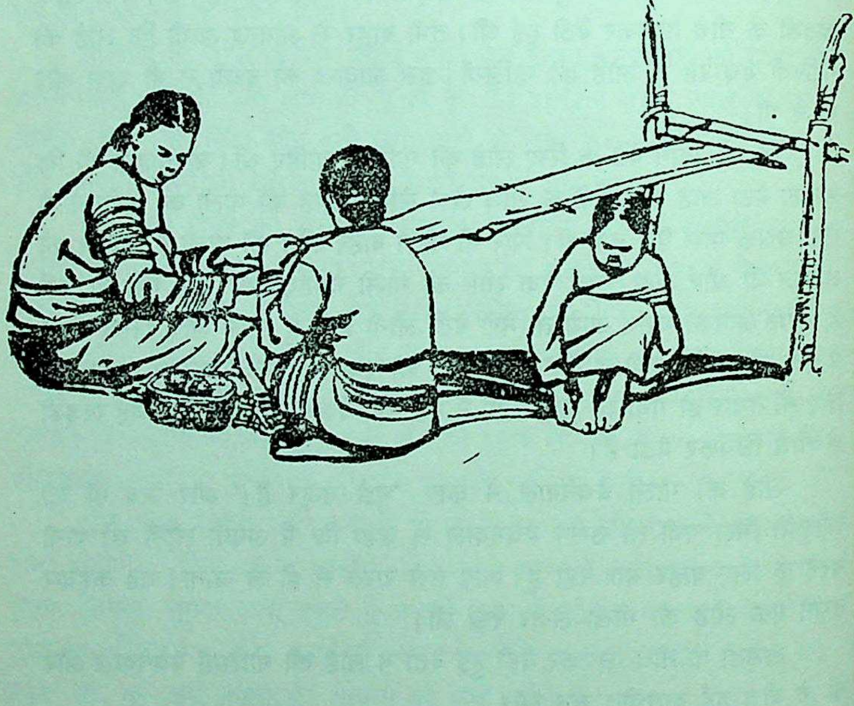
एक दिन माँ कपड़े बुननेवाली खड्डी पर काम कर रही थी। बेटी लौनी खड्डी के नीचे छिपकर बैठी हुई थी। तभी बाहर से आवाज़ आयी कि लोहे की गोलियाँ बेच रहे हैं, लोहे की गोलियाँ। इस आवाज को बच्ची ने भी सुना और माँ ने भी।

माँ को अपने बेटे के लिए लोहे की गोलियाँ चाहिए थीं। वो चाहती थी कि उसका बेटा लोहे की गोली के साथ खेले लेकिन लोहे की गोली को खरीदने के लिए उसके पास पैसे नहीं थे। फिर भी माँ ने बाहर लोहे की गोली बेचनेवाले को आवाज़ दी और कहा, "मुझे एक लोहे की गोली चाहिए। मेरे पास पैसे तो नहीं हैं, अगर आपको पसंद आये तो मेरी बेटी लौनी है, इसे ले लें और इसके बदले में एक लोहे की गोली दे दें।" यानी बेटी को एक लोहे की गोली में बदलने के लिए माँ तैयार हो गयी थी लेकिन माँ ने यह नहीं देखा कि जो बेटी है वह खड्डी के नीचे छिपकर बैठी है।

लोहे की गोली बेचनेवाले ने कहा, "मुझे मंजूर है।" और जब माँ को स्वीकृति मिल गयी तो उसने बेचनेवाले से कहा कि मैं अपनी लौनी को पानी भरने के लिए बाहर भेज रही हूँ। आप उसे रास्ते से ही ले जाना। यह कहकर उसने एक लोहे की गोली लेकर रख ली।

खड्डी के नीचे छिपकर बैठी हुई बेटी ने लोहे की गोलियाँ बेचनेवाले और माँ के बीच हुई बातचीत सुन ली।

लौनी उस गोलियाँ बेचनेवाले के हाथों में पहुँचने से पहले और कहीं भाग जाना चाहती थी। उसने इस बात पर गौर किया कि जब उसे घने जंगलों में अकेला भटकना पड़ेगा तो वहाँ विद्यमान बड़े–बड़े शेरों के संकट से छुटकारा नहीं मिलेगा। यह सब सोचकर वह सहम गयी और यही सोचकर उसने भागने का इरादा छोड़ दिया और माता के कहे अनुसार वह पानी भरने के लिए जब



निकली तो लोहे की गोलियाँ बेचनेवाला भी उसके पीछे–पीछे हो लिया और वह उसे अपने घर ले गया जहाँ वह रहता था।

लौनी के छोटे भाई को माँ ने जो लोहे की गोली दी थी वह उससे खेल रहा था तो उसके साथियों ने उससे कहा, "देखो, वहाँ वो देखो ! अपनी बहन से बदली हुई गोली से वह बच्चा खेल रहा है।" सब बच्चों ने उसका मजाक उड़ाया।

लौनी का भाई साथियों द्वारा उड़ाए गये मजाक से इस सोच में पड़ गया कि ये लोग भला मुझे यह बात क्यों सुना रहे हैं। वे मुझे यह बात क्यों आकर बोल रहे हैं। यह सोचकर उसने अपनी माँ से पूछा कि क्या माजरा है? माँ ने भी जो बात थी, उसे बता दी।

जब भाई को सच्चाई का ज्ञान हुआ तो उसने माँ से कहा कि मैं अपनी बहन को, अपनी बड़ी बहन को ढूँढकर लाऊँगा। मुझे आप घर से बाहर जाने की अनुमति दें। लौनी का छोटा भाई अपनी माँ की बात को सुनकर चुप हो गया और इस तरह कुछ वर्ष और बीत गये तो वह बहन को ढूँढने के लिए घर से निकला।

रास्ते में उसे एक लकड़हारा मिला। उसने पूछा कि लौनी कहाँ मिलेगी। अगर आप जानते हैं तो मुझे वहाँ का रास्ता दिखाइए।

लकड़हारे ने कहा कि अकर लकड़ी काटने के काम में तुम मेरी एक दिन मदद करो तो मैं तुम्हें बताऊँगा।

छोटे भाई ने लकड़हारे के कहे अनुसार उसके मनपसंद वृक्षों को पूरी मेहनत के साथ काट दिया।

लकड़हारे ने लौनी के घर की ओर उसे भेज दिया। छोटा भाई अपनी यात्रा पर आगे बढ़ा। उसे एक आदमी सामने दिखायी दिया जो कि जानवरों को हाँकता हुआ आ रहा था। उसने उससे पूछा कि मेरी बहन लौनी जहाँ रहती है, कृपया मुझे उसका रास्ता बताएँ। वह आदमी बोला कि इन पशुओं को हाँकते हुए पीछे–पीछे तुम आगे बढ़ो। ये तुम्हें तुम्हारी बहन के रहने के स्थान पर ले जायेंगे।

छोटा भाई उन पशुओं को हाँकता हुआ दिन–रात आगे बढ़ रहा था। कहीं उसने थोड़ा–सा भी विश्राम नहीं किया। आखिरकार वे लोग एक गाँव में पहुँचे। गाँव में जब एक घर के अन्दर उसने प्रवेश किया तो छोटे भाई को एक बहुत ही खूबसूरत लड़की दिखायी दी। वह उसकी बहन लौनी थी। दोनों भाई–बहन उस गाँव में जीवनभर सुख और चैन से रहने लगे।

हिरन और कछुआ

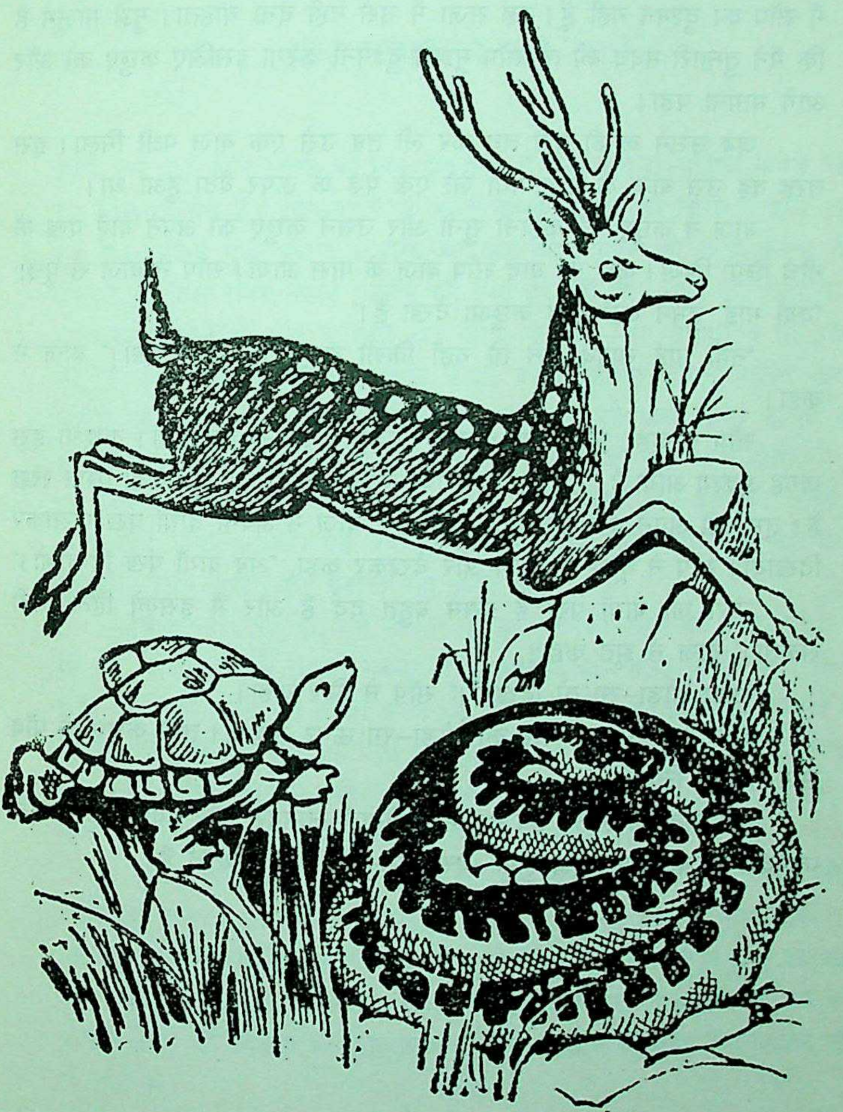
किसी समय एक हिरन और एक कछुआ एक साथ यात्रा कर रहे थे। चलते–चलते अचानक उन्होंने देखा कि एक बहुत बड़ा साँप ठीक उनके रास्ते में बैठा हुआ है। उनको ऐसा लगा जैसे कि वह उनका रास्ता बंद करने के लिए रास्ते में बैठा हुआ है।

तभी हिरन ने कहा कि साँप को पार करके वे आगे की यात्रा कर सकते हैं। तभी कछुए ने कहा, "मित्रवर, मुझमें इतनी शक्ति नहीं कि मैं साँप को कूदकर पार कर सकूँ। अगर मैं उछलकर कहीं साँप के अंडों पर गिर गया तो उसके अंडे टूट जायेंगे। तब ये साँप हमारे पीछे पड़ जायेगा और यह हमारे लिए खतरा साबित होगा। मैं साँप से बहुत डरता हूँ।"

"आप किसी तरह की चिंता नहीं करें। वास्तव में अगर खतरे से टकराव हुआ तो मैं, जितना मुझसे हो सकता है, तुम्हें बचाऊँगा। तुम्हारी मदद करूँगा। तुम्हारी सहायता करूँगा।" उत्साह बढ़ाते हुए हिरन साँप के ऊपर से कूद गया।

जब कछुए की बारी आयी और वह साँप के ऊपर से कूदा तो वह सीधा साँप के अंडों के ऊपर गिरा और अंडे टूट गये। साँप को बहुत क्रोध आया और वह तेजी से भागकर उनका पीछा करने लगा। जब हिरन ने देखा कि साँप उनका पीछा कर रहा है तो हिरन साँप से बहुत डर गया और फिर अपने साथी कछुए को भी भूल गया। वह हवा की तेजी के जिस ओर उसकी टाँगें ले गयीं उस ओर दौड़ गया। जब कछुए को और कुछ नहीं सूझा तो उसने पहाड़ के ऊपर से जो झुकाव होता है उसी से अपने आपको नीचे ढकेल दिया। कछुआ पहाड़ के नीचे एक भालू के घरौंदे से टकराया। भालू ने नाराज होकर कछुए से कहा कि बिना देखे हुए अंधाधुंध तुम कैसे काम करते हो।

कछुए ने कहा, "मित्र भालू, मेरे पीछे साँप का खतरा मँडरा रहा था और मैं जल्दी से अपनी जान बचाने के चक्कर में था इसलिए ऐसी गलती मुझसे हो गयी है। मैं चाहता हूँ कि आप मुझे माफ कर दें। सिर्फ माफ ही न करें बल्कि मुझे साँप के संकट से भी बचाएँ।" भालू ने कहा कि साँप का खतरा तो बहुत



है। मैं भी साँप से डरता हूँ इसलिए मैं तुम्हें कोई सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकता। तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता इसलिए तुम यहाँ से भागो।

कछुआ आगे–आगे भागा।

इसके बाद फिर कछुआ एक शेर से टकरा गया। शेर ने भी यही कहा कि मैं साँप का दुश्मन नहीं हूँ। यह सजा मैं उसे नहीं देना चाहता। मुझे मालूम है कि मैंने तुम्हारी मदद की तो साँप मुझसे दुश्मनी करेगा इसलिए कछुए को और आगे भागना पड़ा।

जब उसने काफी दूरी तय कर ली तब उसे एक बाज पक्षी मिला। इस तरह वह उस बाज के पास गया जो एक पेड़ के ऊपर बैठा हुआ था।

बाज ने कछुए की कहानी सुनी और उसने कछुए को अपने बाएँ पंख के नीचे छिपा लिया। कुछ देर बाद साँप बाज के पास आया। साँप ने बाज से पूछा, "क्यों भाई, तुमने यहाँ कोई कछुआ देखा है।"

"नहीं भाई साहब, मैंने तो यहाँ किसी कछुए को नहीं देखा।" बाज ने कहा।

साँप ने कहा, "कछुए के पाँव के निशान इस जगह तक हैं। कछुआ इस जगह अवश्य आया है। मुझे लगता है कि उसको तुमने कहीं–न–कहीं छिपा रखा है। तुम मुझे अपने पंख फैलाकर दिखाओ।" बाज ने अपना दायाँ पंख फैलाकर दिखाया। साँप ने दूसरे पंख की ओर देखकर कहा, "अब बायाँ पंख दिखाओ।"

"मेरा जो बायाँ पंख है इसमें बहुत दर्द है और मैं इसको हिला नहीं सकता।" बाज ने झूठ कहा।

"आप थोड़ा–सा तो दिखाएँ।" साँप ने फिर कहा।

बाज ने अपने बाएँ पंख को थोड़ा–सा ऊपर उठाया। तभी कछुए के पाँव साँप ने देख लिए।

इस बात को लेकर तब वन में रहनेवाले जानवरों और हवा में उड़नेवाले जानवरों के बीच एक युद्ध हुआ—ऐसा बड़े–बूढ़े बताया करते हैं।

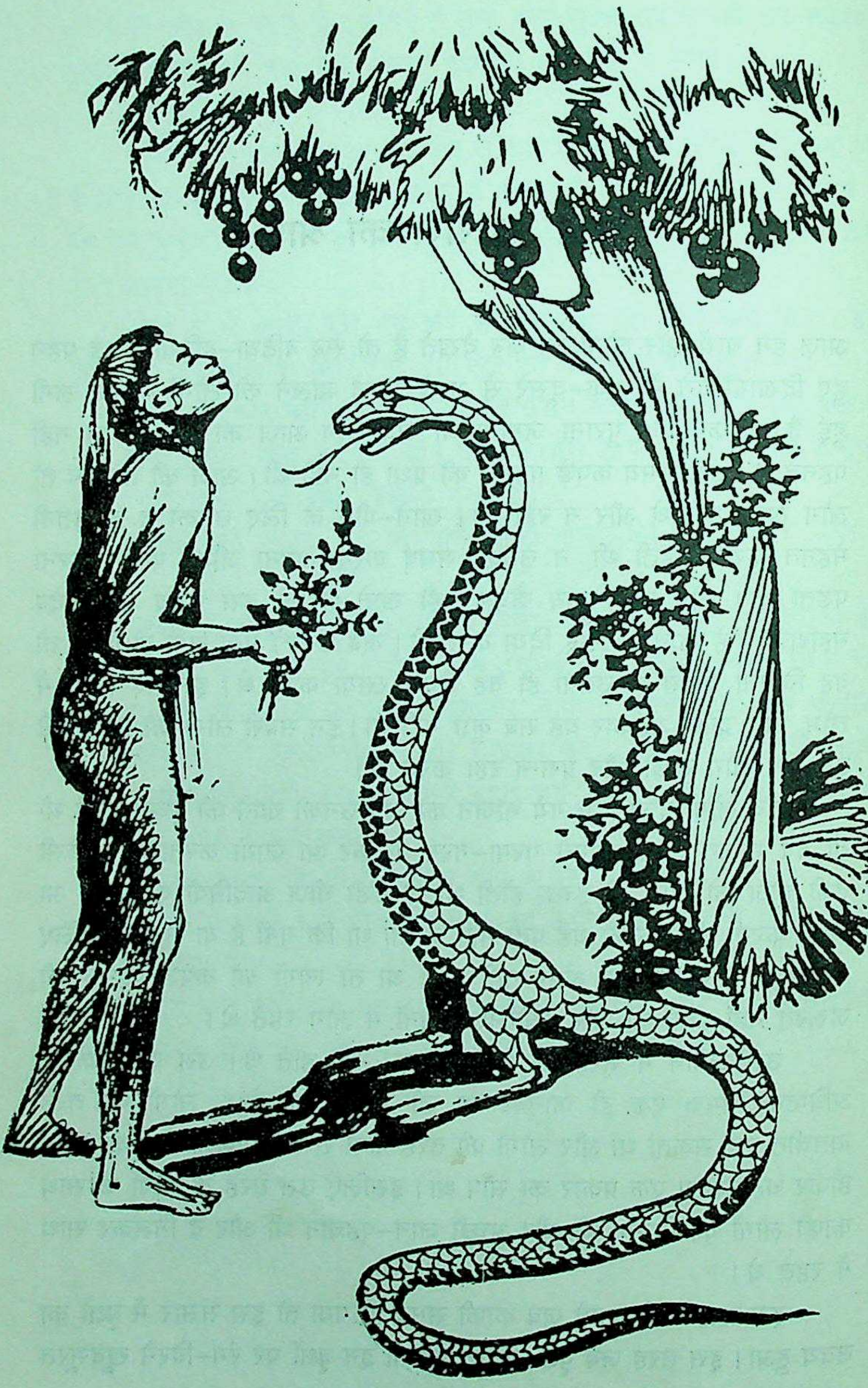
देव महाराज का श्राप

आज हम चारों ओर लोगों को जब देखते हैं तो सब बढ़िया–बढ़िया कपड़े पहने हुए दिखायी देते हैं। एक–दूसरे से अच्छे कपड़े डालने की लोगों में होड़ लगी हुई है। लेकिन एक पुराना ज़माना था जब लोग आज की तरह कपड़े नहीं पहनते थे। उस समय कपड़े पहनने की प्रथा ही नहीं थी। आज की तरह न तो लोग खाते–पीते थे और न रहते थे। खाने–पीने के लिए उनको न तो इतनी मेहनत करनी पड़ती थी, न उनको संघर्ष करके अपना जीवन पालन करना पड़ता था। लोग उस समय केवल वही खाते थे जो उस समय उनके देव महाराज उन्हें खाने के लिए दिया करते थे। जब उनको भूख लगी होती थी तो वह जितना चाहते थे उतना ही वह लेकर खाया करते थे। इसलिए लोगों में लोभ, मोह, क्रोध, अहंकार यह सब कुछ नहीं था। इन सबसे लोगों को छूट मिली हुई थी। लोग सुखी और प्रसन्न रहा करते थे।

देव लोगों द्वारा दिए गये भोजन को जब उनकी खाने की इच्छा होती थी तो देव भोजन उनके सामने गरमा–गरम पककर आ जाया करता था। किसी ठंडी चीज को खाने की इच्छा होती थी तो ठंडी चीज आदमियों के सामने आ जाया करती थी। उनको यह पता नहीं चलता था कि गर्मी है या सर्दी। इसलिए जब सर्दी और गर्मी का अंतर नहीं होता था तो लोगों को कपड़े पहनने की जरूरत नहीं होती थी और इसीलिए मैदानों में लोग रहते थे।

उस ज़माने में संसार में अभी जानवर नहीं होते थे। उस समय केवल अधिष्ठक नामक एक ही जानवर था जो आदमी की तरह, लोगों की तरह बातचीत कर सकता था और लोगों की तरह पाँवों से चल सकता था। वह खड़ा होकर चलनेवाला एक प्रकार का साँप था। इसलिए उस तरह के साँपों के साथ काफी लोगों की मित्रता थी और अच्छी जान–पहचान थी और वे मिलकर साथ में रहते थे।

इस तरह रहते–रहते जब काफी समय हो गया तो इस संसार में वृक्षों का उदय हुआ। इस तरह जब वृक्ष उत्पन्न हुए तो इन वृक्षों पर रंग–बिरंगे खूबसूरत



फूल और फल लगने लगे। लोगों ने उन्हें देखा और उनकी इच्छा उनको खाने की हुई। लेकिन देव महाराज ने कहा कि नहीं, यह फूल और फल आप नहीं खा सकते हैं। चाहे उनकी कितनी भी तीव्र इच्छा हो, उनकी अनुमति के बिना उनको न खाएँ। इसलिए लोगों की हिम्मत नहीं होती थी कि वे फूल और फल खाएँ। देवराज उनको जो प्रसाद दिया करते थे वे वही खाते थे।

इस तरह रहते–रहते जब काफी साल बीत गये। आदमी पेड़ों पर लगे फूलों को और फलों को खाने की इच्छा दूर नहीं कर पाये तब उन्होंने अपने मित्र साँपों को अपनी इच्छा की बात कही। तभी साँपों ने लोगों से कहा, "दोस्तों, हम भी फल खाना चाहते हैं। हमने भी देवराज से चोरी–चोरी फल खाए हैं। आज तक देवराज को यह पता नहीं चला कि हमने फल चोरी–चोरी खाए हैं। अगर आप लोग फल सचमुच ही खाना चाहते हैं तो देवराज से चोरी–छिपे आप इन फलों को खा सकते हैं। आपको कुछ नहीं होगा।" साँपों ने लोगों को यह सलाह दी।

लोगों ने साँपों का अनुभव सुना तो उन्होंने सोचा कि ये शायद ठीक ही कह रहे हैं। उनकी तरह हम भी देवराज से चोरी–चोरी खाएँगे। उन्होंने फूल भी तोड़े, फल भी तोड़े और खाने लगे लेकिन जैसा साँपों ने कहा था वैसी बात नहीं हुई। जैसे ही उन्होंने फल तोड़े और खाए देवराज को मालूम हो गया और उन्होंने कहा कि तुम लोगों ने मेरी बात, मेरी आज्ञा नहीं मानी है। इसलिए पूछताछ करने के लिए सबको बुलाया।

लोगों को अपनी करनी पर बड़ी शर्म आयी। वह कौन हैं इस बात का ठीक से पता न चल सके इसलिए उन्होंने अपने शरीर को पत्तों से ढक लिया और वे देवराज के पास गये। अभी वे उनके सामने उपस्थित ही हुए थे और जब देवराज ने यह पूछा कि तुम लोगों ने ऐसा क्यों किया तो उन्होंने कहा कि हम लोग फल देखकर बहुत ज्यादा खाना चाहते थे और इस बारे में जब हमने साँपों से कहा तो वे बोले कि उन्होंने भी फल तोड़कर खाए हैं लेकिन देवराज को कुछ पता नहीं चला। सारी बात उन्होंने अच्छी तरह बताई। सारी बात उन्होंने सीधी–सीधी कही। घुमा–फिराकर उन्होंने कुछ भी नहीं कहा।

तभी देवराज को बड़ा क्रोध आया और वे बोले, "तुम लोग बहुत मूर्ख हो। तुम्हें खाने–पीने के लिए पूर्ण रूप से हम दे ही रहे थे फिर भी तुम लोगों को सन्तोष नहीं हुआ। हम आराम से तुम लोगों को खिला रहे थे। आराम से खाने से तुम लोगों का पेट नहीं भरता। तुम लोग मेहनत–मजदूरी करके तकलीफें उठाकर और दुख उठाकर खाना चाहते हो। मुझे ऐसा लगता है कि आज से तुम

लोगों को, जब तक तुम लोग जिओगे या जब तक दुनिया कायम रहेगी तुम लोगों को अपना पसीना बहाकर अपना पेट भरना होगा। यह दुनिया में जो गर्मी और सर्दी बनी है इसके दण्ड को भी तुमको बड़ी बुरी तरह भुगतना होगा। बड़ी कोशिश करके अपने शरीर को इनसे दूर रखना होगा और यह जो साँप को लोगों से बात करने की शक्ति दे रखी है वह शक्ति भी हम वापस लेते हैं और साँप अब लोगों से बात नहीं कर सकेंगे। यह जो लोगों की तरह टाँगों पर चलने की अनुमति दे रखी है, यह भी हम वापस लेते हैं। अब से इनको धरती पर रेंगकर जहाँ चाहें जाना होगा, ये हमारा श्राप है।" ऐसा देवराज ने श्राप दिया।

इसलिए उस समय से लेकर देवराज द्वारा दिया गया जो श्राप था उसकी वजह से देवताओं द्वारा जो भोजन बनाया गया था या देवताओं के द्वारा मानव लोगों को देने के लिए प्रसाद बने हुए थे वे सारे लुप्त हो गये और साँप भी लोगों की तरह बातचीत करनेवाले नहीं रह गये और साँपों की जो टाँगें थीं वो लुप्त हो गयीं और साँपों की टाँगें लुप्त हो जाने के कारण साँपों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक रेंगकर जाना पड़ा। लोगों को मौसम की ठण्ड से बचने के लिए संघर्ष करना पड़ा। अपने लिए उनको कपड़े तैयार करने पड़े, घर तैयार करना पड़ा और इतना ही नहीं अपने–आपको जिन्दा रखने के लिए, भोजन इत्यादि भी अपने शरीर से पूरा पसीना बहाकर कमाना पड़ने लगा और इस तरह लोगों का नया सिलसिला चल निकला और लोगों के लिए अपने जीवन में जब तक यह संसार रहेगा खुद कमाकर खाने का सिलसिला चलता रहेगा।

दो अद्‌भुत मुर्गे

बहुत पुराने समय की बात है। सुमरा नागा गाँव में द्‌वेमू नाम का एक नागा आदमी था। ऐसी बात नहीं थी कि वह कोई आलसी था लेकिन उसमें किसी भी काम को जमकर करने का धैर्य कम था।

नागा प्रदेश में अधिकतर लोग पहाड़ियों को सीढ़ियों जैसा काटकर बड़ी–बड़ी खेती के लिए क्यारियाँ तैयार किया करते हैं। और वहाँ खेती–बाड़ी के साथ शिकार से अपना पेट पालते हैं। इन दोनों ही कार्यों के लिए हिम्मत, परिश्रम की आवश्यकता होती है और द्‌वेमू जैसे व्यक्ति के लिए ये दोनों ही काम उपयुक्त नहीं थे। इसलिए द्‌वेमू हमेशा संघर्ष करता रहा है। उसको जीवित रहने के लिए हमेशा कोशिश करनी पड़ती रही है। और इस संघर्ष में उसे बहुत बार अपनी जान की बाजी लगानी पड़ी है।

बहुत बड़ा संघर्ष करने की उसमें क्षमता जवाब दे चुकी होती है। बहुत बार कठिन काम करने का उसका मन नहीं होता। इसलिए अपने आपसे समझौता करना पड़ता है और बहुत बार उसे भूखा रहना पड़ता है। लेकिन यह उसके बारे में नहीं कहा जा सकता था कि वह एक बेकार का व्यक्ति था। यह नहीं कहा जा सकता कि उसके पास कोई काम नहीं था। वह तरह–तरह की योजनाएँ बनाता, उनके अनुसार कुछ–न–कुछ करता और अपना पेट पालता और उसका एक व्यवसाय यह भी था कि गाँव के पास जब वह शाम को टहलने जाता और उस समय मुर्गी और चिड़िया जैसे छोटे–छोटे जानवरों को जाल में फँसाकर अपना काम करता था। अपना काम चलाता था। बहुत बार यह देखने में आता कि आमतौर पर लोगों की जिस तरफ नजर नहीं पहुँचती, जिस तरफ उनका ध्यान नहीं जाता उस तरफ उसका ध्यान चला जाता और वह उस काम को करने में दिलचस्पी लेता। उसके बारे में यह अवश्य कहा जाता था कि जिस बात के लिए उसे दिलचस्पी होती वह उसको अवश्य कर लिया करता था। जाल लगाने का जो काम है उसमें बहुत कड़ी मेहनत नहीं चाहिए। जाल लगाने के बाद उसमें थोड़ा–बहुत अगर ध्यान दिया जाये तो इससे काम चल सकता है।



गाँव के नजदीक बहुत ज्यादा जंगल की जरूरत नहीं है। जहाँ झाड़ियाँ वगैरह हों वहाँ वह अपना जाल लगाकर शाम को एक बार, रात को एक बार घूमता फिरता। उसको एक बार जाकर देख लेता कि जाल में कोई जानवर फँसा है या नहीं, कोई पक्षी फँसा है या नहीं, जब यह उसको मालूम होता कि कोई उसके जाल में फँसा है, उसको पकड़कर अपना गुजारा वह कर सकता था।

एक दिन सुबह हर रोज की तरह वह अपने लगाए हुए जालों को देखने के लिए अपने हाथ में एक दाँव पकड़कर बाहर निकला। वह एक जाल नहीं कई जाल लगाया करता था और अपने जालों को बारी–बारी से समय लगाकर वह घूम–घूमकर देख रहा था लेकिन उस दिन उसके जालों में एक भी जानवर नहीं फँसा था। जब काफी जाल देख चुका और उनमें कोई जानवर फँसे हुए न देखे तो उसके मन में आया कि एक बार वह बाकी के जालों को देखना छोड़ दे और यहीं से घर मुड़ जाये। वापस लौटने का यह विचार उसके मन में आया। इसलिए जिस रास्ते से वह आया था उसी रास्ते से वापस जाने के लिए जैसे ही वह घूमा तो कुछ ही दूर पर फट–फट फट–फट की आवाज़ उसे सुनाई दी। जब वह झाड़ी के पास से आ रही आवाज़ की तरफ गया तो उसने देखा कि जो जाल उसने बिछा रखे थे उसमें फँसे हुए दो मुर्गे आपस में बड़ी भीषणता से लड़ रहे हैं।

द्वेमू को यह देखकर बहुत खुशी हुई। उसने फैसला किया कि वह बैठकर इन दोनों मुर्गों की लड़ाई देखता रहेगा और जब ये दोनों मुर्गे थक जायेंगे तो आसानी से उन्हें पकड़ेगा और लौट जायेगा। दोनों मुर्गे आपस में इतनी भीषणता से लड़े कि उनके देखते–देखते सारे बाल और पर उतर गये। इस दृश्य को देखकर द्वेमू बहुत खुश हुआ। इसका कारण यह था कि उसने सोचा था कि अब उसको मुर्गों के बाल और पंख उतारने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। इस तरह लड़ते–लड़ते दोनों मुर्गों के माँस के टुकड़े गिरने शुरू हो गये। द्वेमू एकदम आश्चर्यचकित होकर यह सब देख रहा था। दोनों मुर्गे बाल और मांस गिरकर झड़ जाने के बाद भी केवल हड्डियों के रह जाने पर भी, उनकी लड़ाई खत्म नहीं हुई थी और वे एक–दूसरे पर आक्रमण बोले ही जा रहे थे। धावा बोले जा रहे थे, वार किये ही जा रहे थे।

जब उन मुर्गों का सारा मांस उतरकर केवल हड्डियाँ–ही–हड्डियाँ रह गयीं और वह हड्डियाँ ही आपस में लड़े जा रही हैं। इस बात को जब उसने देखा तो वह देखता रहा। देखते–देखते उसको ध्यान आया कि उस लड़ाई में वह इतना मस्त हो गया कि उसको इस बात का भी ध्यान नहीं आया कि सुबह से उसने कुछ भी खाया नहीं है। द्वेमू का मुँह खुला–का–खुला रह गया है।

ऐसी मुर्गों की लड़ाई के बारे में उसने कभी सुना न था देखना तो बहुत दूर की बात थी। केवल हड्डियों के ढाँचेवाले दो मुर्गे आपस में जीवित मुर्गों की तरह बड़ी बुरी तरह लड़ रहे थे और उनकी हड्डियों का टकराव भी बार–बार हो रहा था। जब उन हड्डियों का आपस में टकराव होता था तो उनमें आपस में चिंगारियाँ निकलती थीं। और फिर उस टकराव से निकली हुई चिंगारियों से निकलती आग में दोनों मुर्गे जलकर मर गये।

दोनों मुर्गों की लड़ाई से उत्पन्न हुई आग की वजह से आसपास की जो झाड़ियाँ थीं, थोड़ा–सा जंगल था वह भी जल गया। तभी दोनों मुर्गों को हैरान होकर देख रहे द्वेमू को यह ध्यान आया कि आग ने उसको भी घेर लिया है और तब वह आग से बचने के लिए हताश होकर भाग खड़ा हुआ। गाँव के पास पहुँचकर उसने साँस ली। एक अच्छे छायादार पेड़ के नीचे बैठा। उसने अपने हाथ–पाँव ढीले छोड़ दिए और अपनी थकावट दूर करता हुआ उन घटनाओं के बारे में सोचने लगा जिनसे आज उसका सामना हुआ था।

दोनों मुर्गे बहुत कम दिमाग रखते थे और जाल में फँसे हुए होने की वजह से मरनेवाले होने के बावजूद भी लड़ना बन्द न करके वे लड़ते रहे। उनके बाल, उनके पंख, उनके मांस, उनकी चर्बी यह सब एक–एक करके नष्ट होती गयी, कटकर गिरती गयी और इतना ही नहीं अन्दर की जो हड्डियाँ थीं वे भी आपस में टकराने लगीं, आपस में रगड़ खाने लगीं और उस रगड़ से आग भी निकलने लगी और आग निकलने के बावजूद भी यह दोनों मुर्गे आपस में लड़ते रहे। ऐसी अद्भुत निष्ठा, ऐसा अद्भुत विश्वास मैंने आज तक कभी किसी में नहीं देखा, ये तो साधारण दो मुर्गे हैं, जानवर हैं, मैं तो इंसान कहलाता हूँ। लोग कहते हैं मुझमें सोचने–विचारने की शक्ति है, लोग कहते हैं कि मैं ज्ञान रखता हूँ। अगर यह बात सही है तो मुझमें जो निष्ठा की कमी है उसकी वजह से ही सारा संघर्ष करना पड़ रहा है। यदि मुझमें इन दो मुर्गों की तरह निष्ठा हो, विश्वास हो, लगन हो तो मैं क्या नहीं कर पाऊँगा। मुझमें सोचने–विचारने की शक्ति है, हिम्मत है, मैं परिश्रम भी कर सकता हूँ, ताकत भी है पर इन दो अद्भुत मुर्गों जितनी मुझमें निष्ठा नहीं है, इसलिए मुझे जीवनभर संघर्ष करना पड़ रहा है और मैंने बहुत तकलीफें उठाई हैं। आज मैं इन दो अद्भुत मुर्गों से अपने जीवन के लिए पाठ लेता हूँ, सबक लेता हूँ और आज से मैं हर काम घोर परिश्रम, घोर हिम्मत से, घोर मेहनत से, घोर विश्वास से, घोर निष्ठा से, घोर लगन से करूँगा। उसने यह पक्का निश्चय ले लिया।

जैसे कि उसने अब निश्चय ले लिया, उस दिन से लेकर वह अपनी पूरी

निष्ठा के साथ, पूरी लगन के साथ, पूरी ईमानदारी के साथ, पूरे विश्वास के साथ और पूरी मेहनत के साथ काम करने लगा और उसने देखा कि और लोगों की तरह वह आराम से रह सकने लगा है, आराम से खा सकने लगा है, आराम से लोगों के बीच इज्जत पा रहा है और आराम से लोग उसके मित्र बनते जा रहे हैं और किसी तरह से भी वो अपने आपको किसी से भी पीछे महसूस नहीं करता और अपने आपको भी वो जमकर संसार में महसूस करेगा, संसार में जमकर जियेगा। इस भावना को वह महसूस करने लगा। दो मुर्गों से मिले हुए पाठ ने उसके जीवन का काया–कल्प कर दिया था।

आठ टाँगोंवाला जानवर

नागा प्रदेश सुमरौ क्षेत्र में खौयांग नाम का एक अजीब जानवर पाया जाता है। सुमरौ नागा परिवार के टांकून् नागा जाति के लोग उस जानवर को अपनी मातृभाषा में खौयांग कहते हैं। और इस जानवर की आठ टाँगें होती हैं और यह आकाश में उड़ सकता है।

कहने को तो आकाश में उड़ सकनेवाला जानवर है लेकिन पक्षियों की तरह न तो इसके बाल होते हैं और न ही पंख। सारे शरीर पर चमड़ी ढकी होती है। शरीर के दोनों बाजुओं में आठ टाँगें चमड़ी के साथ जुड़ी होती हैं, इन्हीं टाँगों की सहायता से वो एक पेड़ से दूसरे पेड़ उड़कर जा सकता है फिर इस जानवर की दुम भी है, चोंच भी है पर थोड़ा–सा फर्क जरूर है। जो चोंच है वो जरा अधिक तीखी है और जो मुँह है, जो चेहरा है वो थोड़ा–सा लंबा नजर आता है, मुँह में दाँत नजर नहीं आते फिर भी फल खाने में समर्थ है। जानवर का जो रंग है वो लगभग काला है, अगर खौयांग नाम के इस जानवर की तुलना और किसी जानवर से की जाये तो यह कह सकते हैं कि जैसे उड़नेवाली गिलहरी या उड़न श्यू कहते हैं या फिर गिरगिटांग जो हवा में उड़ सके इनमें से किसी से भी वो नहीं मिलता और दूसरी ओर जैसे चमगादड़ इत्यादि से बहुत मिलता है यह भी नहीं कह सकते। यह जानवर अण्डे दिया करता है।

इस पशु की यदि परिस्थिति बताई जाये तो सबसे बड़ा जो है दस इंच की लंबाई में और उसके पेट की जो चौड़ाई है वो छः इंच तक पहुँचेगी। इस जानवर की जो विशेष आदत है वो यह है कि बारिश के मौसम में यह आवाज़ निकालता है। बारिश के मौसम में यह बाँग दिया करता है, गर्मी और सर्दियों के मौसम में इसको कभी भी बाँग देते हुए सुना नहीं गया है। आकाश में उड़नेवाले इस जानवर का खौयांग नाम रख देना कोई ज्यादती नहीं होगी। इसे खौयांग कहने का अभिप्राय यह है कि बारिश के मौसम में हमेशा इसकी आवाज़ सुनने को मिलती है। सुमरौ नागे, टांकून् नागे लोगों में और उनके परिवारों के बड़े–बूढ़े घर के अन्य छोटे–छोटे युवक–युवतियों को अक्सर यह कहानी सुनाया करते हैं



जोकि काफी दिलचस्प है। वो कहानी इस प्रकार है—

पुराने ज़माने की बात है, सुमरौ नागा प्रदेश में टांकून् नागा जातियों से अलग होकर रह रहे टांकून् नागाओं का एक गाँव था। उस गाँव में टांकून् नागा लोग अपने गाँववालों—आपसवालों को छोड़कर दूसरे गाँववालों के साथ में किसी तरह का कोई व्यवहार नहीं रखते थे। वह पहाड़ी इलाके में रहनेवाले लोग थे। पहाड़ियों की सीढ़ियों के ऊपर गाँव बसाकर नहीं रहते थे बल्कि पहाड़ी के नीचे पहाड़ियों के बीच में रहा करते थे।

इस गाँव के टांकून् नागा लोग शिकार करने में, खेती—बाड़ी करने में दिलचस्पी रखते थे लेकिन भले ही यह शिकार कर रहे हों या खेती—बाड़ी करें, यह लोग पहाड़ के नीचे कभी नहीं करते थे। न वहाँ शिकार कभी खेलते थे और न वहाँ खेती—बाड़ी करते थे। ऊँची—ऊँची पर्वत श्रेणियों पर ही यह शिकार करते थे और वहीं पहाड़ों में काट—काटकर जैसे सीढ़ियाँ होती हैं, सीढ़ियों की शक्ल में क्यारियाँ बनाकर उसी में खेती—बाड़ी किया करते थे।

इनकी जो संस्कृति है इसके बारे में अगर कुछ कहा जाये तो उस गाँव के जो टांकून् नागा थे वो अपनी जातिवाले टांकून् लोगों के न तो साथ रहते थे और न ही किसी तरह का व्यापार वो उनसे रखते थे, बिल्कुल अलग—थलग उनसे रहते थे और उनकी टांकून् नागा लोगों से विभिन्न एक संस्कृति थी, वो यह कि कोई भी मर्द कभी भी खेती—बाड़ी नहीं करता था। सारा साल शिकार करता था। खेती—बाड़ी केवल औरतें किया करती थीं। जब से वो जवान हों बूढ़ी होने तक वो खेती—बाड़ी किया करती थीं, यही इनकी प्रथा थी।

इस तरह औरतों के खेती—बाड़ी के काम में मर्दों को हिस्सा बँटाने का कोई हक नहीं होता था और उसी के साथ शिकार के कार्य में औरतों को भी हाथ बँटाने का कोई मतलब नहीं होता था, कोई हक नहीं था, न कोई एक—दूसरे के काम में आता—जाता था और न कोई मदद किया करता था। जो लोग बहुत बूढ़े हो जाते वो लोग घर में रखवाली करते हुए, बच्चों की देखभाल करते थे, बच्चों को संभाल लेते थे और घर के लोगों के भोजन इत्यादि का प्रबन्ध किया करते थे या और कोई घर का छोटा—मोटा काम हो वो ये कर लेते थे, पर जैसे कि लकड़ी बीनना, पानी भरना, अनाज ले आना और खेत पर खाना देने जाना, भोजन, सब्जी, तरकारी ले आना इत्यादि काम घर में पाले हुए कुत्तों से कराया करते थे। उनके पाले हुए कुत्ते आदमियों की तरह बातचीत करना जानते थे और आदमियों की तरह ही खड़े होकर चलते थे। कुत्ते आदमियों की तरह शरीर के साथ अपने सामान की टोकरी लटकाकर रखते थे, इसलिए यह नागा

लोग कुत्तों को हर घर में पालकर रखते थे ताकि उनसे ऐसे काम लिया जा सके। टांपौः और मूतैः इत्यादि के घर में भी दूसरों की तरह एक कुत्ता पाला हुआ था, पर अब उसकी उम्र काफी हो चुकी है और उसने अब काम करना बन्द कर दिया था। अब माता–पिता दोनों को बड़ा बेटा शिकार करके पालता था, और बेटी उनकी खेती–बाड़ी करके सबको खिलाती–पिलाती थी।

टांपौः और मूतैः लोगों का जो खेत था वो गाँव से काफी दूरी पर एक पहाड़ी के ऊपर था। उनकी बेटी जो खेती–बाड़ी का काम करती थी, खेती–बाड़ी करने के समय से फसल काटने के समय तक खेत के खलिहान में ही रात के समय सोकर काम करती थी।

जैसा कि बताया गया कि मूतैः बेचारी का जो खेत था, वो घर से काफी दूरी पर था, इस वजह से ऐसा नहीं हो सकता था कि वो घर से रोज जाये और दिन को खेत पर काम करे और रात को घर वापस लौट आये। इसलिए अब वो जब अपने खेत पर काम कर रही थी तो खेत में धान लगाने के समय से लेकर फसल काटने के समय तक पूरा समय उसको खेत पर ही रहना पड़ता था और वहीं रात गुजारनी पड़ती थी। ऐसा नहीं था कि वो रात के समय घर को वापस लौट आये और फिर घर पर रहकर ही दिन के समय वहाँ जाकर काम करे तथा फिर लौटे। इस वास्ते एक जो इनकी प्रथा चली आ रही थी कि घर से खाना बनाकर रोज ले जाने की, अब घर में बूढ़ी माँ थी, बूढ़ी माँ खाना बनाकर टोकरी में बंद करके बेटी के खाने के लिए रोटी, तरकारी इत्यादि सारी चीजें वो टोकरी में डालकर कुत्ते को लेकर भेजती थी कि जाकर बेटी को खेत पर खाना देकर आ। अब कुत्ता जो है अपने मालिकों को, मालिक लोग जैसा चाहते थे वैसा ही वो करते थे, यह भोजन की जो टोकरी थी उसको अपने शरीर के साथ में लटकाकर वो सुबह–सुबह एक खेत में एक बार जाते थे और रात के समय एक बार छोड़ने आते थे। यह जो काम था, यह एक–दो दिन का नहीं, एक साल या दो साल का नहीं यानी हर समय हमेशा के लिए यह कुत्ते को ही करना पड़ता था।

इस तरह यह सिलसिला चलता रहा, जो खाना पहुँचानेवाला कुत्ता था, उसको पहाड़ के ऊपर चढ़ना–उतरना होता और उतरते–चढ़ते–उतरते आखिर में वो तंग आ गया और वो सफर में जाना नहीं चाहता था। एक दिन इस कुत्ते ने क्या किया कि बारिश भी बहुत हो रही थी और उसको सर्दी बहुत लग रही थी, उसको घर से खाना पहुँचाने के लिए भेजा गया। उसने टोकरी अपने शरीर के साथ लटका ली और घर से बाहर निकल पड़ा। वो खेत तक नहीं पहुँचा और

रास्ते में ही उसने जो भोजन अपनी मालकिन के लिए लेकर जा रहा था, उसने वो खा लिया और घर लौट गया।

इस तरह खाकर जब वो घर वापस लौटा तो उस दिन से लेकर कुत्ता इसी तरह रास्ते में ही भोजन कर–करके घर वापस लौट जाता था। इस तरह खेत पर रह रही जो उसकी मालकिन थी, उसको भोजन नहीं मिल रहा था, इस कारण अब धीरे–धीरे उसकी शक्ति क्षीण हो रही थी, उसकी ताकत खत्म होती जा रही थी, और इस वजह से उस बेचारी को पेड़ के नीचे लेटकर समय गुजारना पड़ रहा था। भैंसे जो थे वो भी देखते कि उनकी मालकिन भूख की वजह से शक्तिहीन हो गयी है। उसकी शक्ति खत्म हो गयी है। जब मालकिन उनसे कोई काम नहीं ले रही थी तो वे सोच रहे थे कि हर साल की तरह जो खेती–बाड़ी का समय है वह पूरा हो चुका है और अब उनको विश्राम दिया गया है और इस तरह वे खेत में न रहकर अपने खेत को छोड़कर अपने घर अपने गाँव वापस चले आये।

जब भैंसे वापस लौट आये तो माँ को बड़ी चिंता हुई और उसने सोचा कि यह खेत का काम तो अभी पूरा नहीं हुआ तो भैंसों को वापस कैसे भेज दिया है और वह मूतैंः को गाली–गलौच करते हुए डाँटते–डपटते हुए खेत पर खुद गयी। वो खेत पर पहुँची तो उसने देखा कि उसकी बेटी एकदम क्षीण हुई है, बहुत कमजोर हो गयी है। उस अवस्था में उसने जब बेटी की ओर देखा तो बेटी ने कहा, "माँ, बहुत दिनों से तुम लोगों ने भोजन नहीं खिलाया, मेरी ताकत बिल्कुल खत्म हो गयी है और मैं तुम्हें प्रणाम करती हूँ।" इतना कहकर उसने प्राण त्याग दिए।

इस तरह जब उसकी बेटी मूतैंः यानी खेत की किसान जब मरी तो माँ को बड़ा गुस्सा आया, वो घर तेजी के साथ गयी और उसने कुत्ते की खूब पिटाई की। कुत्ता मरा नहीं कुत्ते की कमर टूट गयी, अब वो खड़ा होकर चल नहीं सकता था, चार टाँगों के बल पर थोड़ा–बहुत रेंग सकता था। उस दिन से कुत्तों को टोकरी लटकाकर देने की प्रथा भी टूट गयी, उस दिन से वे कुत्ते क्योंकि आदमियों की तरह खड़े नहीं हो सकते थे, चार टाँगों पर चलने लगे थे इसलिए अब खाने की टोकरी उनके शरीर के साथ लटका नहीं सकते थे और इतनी मार कुत्ते को पड़ी कि उसके दिमाग का संतुलन बिगड़ गया, और बिगड़े हुए दिमागी संतुलन के कारण वो मानव लोगों की जो भाषा है, जो बोली है, उसको भी वो नहीं बोल पा रहा था। इतना ही नहीं उसको इतनी बुरी मार पड़ी थी कि उसकी बार–बार जीभ निकल आती थी और उसको बहुत थकावट महसूस होती थी

इसलिए अब भी कुत्तों की यह आदत है कि जब भी वे जीभ निकालते हैं उनको बहुत ही थकावट होने जैसा अहसास होता है।

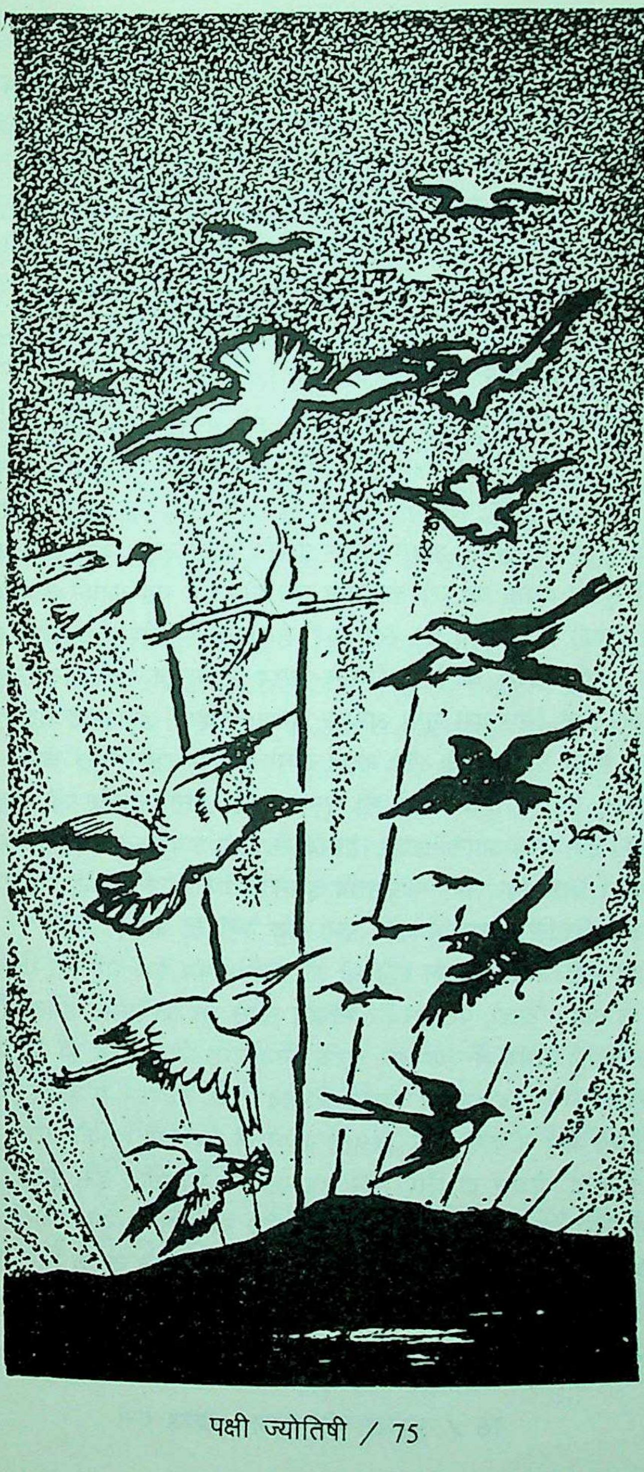
जो किसान बाला मरी थी वो मरने के बाद आठ टाँगोंवाली खौयांग बन गयी और फिर जब बारिश का मौसम आया फिर जब वो मरी थी, तब माता–पिता को याद करती कभी–कभी गाँव में आती हुई नजर आती है, ऐसा लोग कहने लगे।

पक्षी ज्योतिषी

जब यह संसार पहली बार उदय हुआ था तब इस संसार में रोशनी या प्रकाश नाम की कोई चीज नहीं थी और संसार अंधकार में डूबा हुआ था। इस संसार के साथ पहली बार दो चीजें और उदय हुईं वे थे दो खास देवता जिन्हें हमेशा इस संसार की रखवाली करनी थी, जो संसार के रक्षक के रूप में संसार के साथ में ही उदय हुए थे।

संसार के उदय होने के बाद जब काफी साल बीत गये तो संसार में सबसे पहले पक्षी अन्य जानवरों से पहले उदय हुए। जब पक्षियों का उदय हुआ, तब भी इस संसार में अँधेरा ही छाया हुआ था। इसलिए पक्षियों को अपना भोजन खोजने में काफी कठिनाई होने लगी। इस संसार के रक्षक देवता इस बात से भली–भाँति परिचित थे कि इन पक्षियों का उदय हुआ है, इनको विचरकर भोजन ढूँढने में काफी परेशानी होती है। आसानी से, इनको भोजन खोजने में कोई कठिनाई न हो, इसलिए उन्होंने आपस में सलाह की कि इनकी कैसे मदद की जाये। जब सबकी एक राय हुई तो उन्होंने संसार के लिए सूरज का निर्माण किया। अब पक्षियों को सूरज की रोशनी के कारण भोजन को तलाश करने में सहूलियत हुई, एक जगह से दूसरी जगह आने–जाने में आसानी हुई और सारे बड़े प्रसन्न हो गये, खुश हो गये। लेकिन सूरज जिसका उन्होंने निर्माण किया था उसके पास विश्राम का कोई समय नहीं था, सूरज हमेशा ही प्रकाश दे रहा था और जो पक्षी थे अब उनके लिए भी विश्राम का कोई समय नहीं था। जिस तरह सूरज हमेशा निकला करता, उसी तरह पक्षी भी हमेशा घूम–घूमकर अपने लिए भोजन इकट्ठा करते रहते, उनको काफी थकावट महसूस हो रही थी। तभी पक्षी यह सोचते कि इस तरह नहीं चलेगा और यह कहा गया कि सूरज को हमेशा उजाला नहीं देना चाहिए या सूरज को हमेशा नहीं चमकते रहना चाहिए। इसको भी विश्राम लेना चाहिए, ऐसा सबने देवताओं से प्रार्थना की।

संसार के रक्षक देवताओं ने भी पक्षियों की प्रार्थना के अनुसार उसे मंजूर कर लिया और सूरज के लिए निकलना और डूबना दो समय अलग–अलग तय



कर दिए। एक देवता को इसी कार्य का भार सौंप दिया गया। इस देवता ने पक्षियों के लिए भोजन ढूँढने का समय, विश्राम का समय तय कर दिया। लेकिन देवराज के लिए यह कुश नाम का जो समय था काफी देरवाला समय था। इसलिए पक्षियों को धूप निकलनेवाले समय में यानी सूरज के होते समय में काफी समय मिल जाता था। उस काफी समय में वे लोग खूब खाते–पीते थे। तब संध्या हो जाती और सूरज डूब जाता था, किंतु थोड़ी देर बाद फिर उजाला होता तो पक्षियों को आराम के लिए कम समय मिलता। उन्होंने फिर देवताओं से प्रार्थना की। तब देवताओं ने पक्षियों के लिए यह कहा कि आप लोग बताइए कि आप लोगों के लिए क्या कार्यक्रम तय किया जाये।

जैसे कि पक्षियों ने कहा, देवताओं के कहे अनुसार सब पक्षियों को बुलाया और उनसे पूछा कि यह बताइए कि अँधेरे और उजाले की कैसी व्यवस्था होनी चाहिए? तरह–तरह के पक्षी जोकि उस सभा में आये थे, अपनी–अपनी इच्छा प्रकट करने लगे या अपने–अपने विचार प्रस्तुत करने लगे। कुछ लोग कहने लगे कि अभी सूरज देवता का जो कार्यक्रम तय किया है वह काफी ठीक है। उतने समय में काफी खाने–पीने का सामान मिल जाता है और कुछ लोग यह कहने लगे कि कमाई करने के लिए जितने समय में सूरज एक बार निकलता है, आराम करने के लिए दस गुना अधिक समय चाहिए। इससे उजाला होनेवाला जो समय है वो तय कर दें और बाकी समय अँधेरा रखें। कुछ कहते दस गुना ज्यादा होना चाहिए, कुछ कहते नौ गुना ज्यादा होना चाहिए और कुछ कहते आठ गुना। इस तरह अपने–अपने हिसाब से लोग अपनी–अपनी सलाह देते गये और उन्होंने देखा कि सभा में प्रस्ताव इतने अधिक हैं कि कोई निर्णय नहीं हो पायेगा और इसलिए सभा में कोई राय तय नहीं हो पाई।

जब ऐसी व्यवस्था चल रही थी तो उसी समय एक धुएँ रंग के कौए जैसे जानवर ने कहा, "देखो, पेट भरकर भोजन खाने का जो समय हमको मिलता है, उस मिलनेवाले समय में एक बार सूरज निकलेगा और उतने ही समय के लिए अँधेरा रखा जाये, तब जाकर हमारा हिसाब ठीक बैठेगा। न हमारे पास समय फालतू होगा और न कम होगा, विश्राम करने के लिए भी हमको उतना ही समय मिलेगा जितना भोजन के लिए और तब जाकर हम लोग इस झंझट से छूटेंगे और हम लोग धूप से मुक्त हो पाएँगे।" कौए के प्रस्ताव को पक्षियों ने काफी पसंद किया। जिस समय कौआ अपने एक बार का भोजन करके निकला, उसका पेट जितने समय एक बार भरा और भरने में जितना समय लगा वो सूरज को एक बार निकलने का समय तय किया गया और देवताओं के लिए भी जो कौए

का यह प्रस्ताव है उसके अनुसार बताया गया, जैसा पक्षियों ने चाहा देवताओं ने वैसे ही कार्यक्रम तय कर दिया।

उस समय से लेकर अभी तक जो समय तय है जिसे हम दिन कहते हैं, रात कहते हैं, यह क्रिया उसी समय से चली आ रही है।

कौए का जो प्रस्ताव था वो सारे पक्षियों के लिए ठीक उतरता था और सारे पक्षियों ने कौए का प्रस्ताव स्वीकार किया और कौए की प्रशंसा की और सभी पक्षियों ने मिलकर कौए के पंखों को रगड़ा जिस कारण से वह एक छोटी–सी चिड़िया में बदल गया।

इस कौए से पक्षी बनी चिड़िया को पक्षियों से काफी सम्मान मिला, काफी श्रद्धा मिली और सबने यही समझा कि इसकी वजह से ही हमारा जो रहन–सहन का सिलसिला है वो ठीक हुआ है। सारे पक्षियों ने कौए की प्रशंसा करते हुए कहा, "जो तुमने कहा वही ठीक निकला, जो तुमने कहा वही सत्य निकला, जो तुमने कहा वही श्रेष्ठ निकला।" इस तरह नारे लगाकर कौए की प्रशंसा की और उसके पंखों को सबने सहलाया तो उस समय से लेकर कौआ छोटी चिड़िया जितना छोटा हो गया।

उस दिन से जिस दिन से छोटी चिड़िया को यानी कौए को पक्षियों का स्नेह मिला और छोटी चिड़िया के लिए किसी तरह का संकट न हो इसके लिए सुरक्षा करने के लिए सब पक्षी जोर से आवाज़ें निकालकर छोटी चिड़िया का रास्ता तय करने की चेष्टा करने लगे, उसका मार्ग ठीक है कि नहीं, अच्छा है या बुरा यह बताने की कोशिश करते थे। इसलिए नागा सुमरौ प्रदेश की नागा जाति कौए की आवाज़ को और अन्य पक्षियों की आवाज़ को सुनकर इस बात का निर्णय करते हैं कि यात्रा पर जाना चाहिए कि नहीं जाना चाहिए। उनकी मान्यता है कि अगर कौआ या कोई और पक्षी यात्रा करनेवाले व्यक्ति के बायीं ओर से चिल्लाएगा तो वो यात्रा अशुभ है और अगर वो दाहिनी ओर से चिल्लाएगा तो वह शुभ है, ऐसी उनमें मान्यता है।

उन्हें यह मान्य है कि यात्रा करनेवाले के दाहिनी ओर से अगर चें–चें–चें करके धीरे–धीरे आवाज़ निकाले तो यात्रा पर जाना ठीक नहीं है, अगर वही आवाज़ जल्दी–जल्दी चें–चें–चें निकाले तो यात्रा करनेवाले के लिए शुभ है, अच्छी है, ऐसा वो अर्थ निकालते हैं।

इसलिए पक्षी जो हैं जैसे कौआ है, आज तक इसे ज्योतिष का आचार्य माना जाता है या ज्योतिषाचार्य माना जाता है।

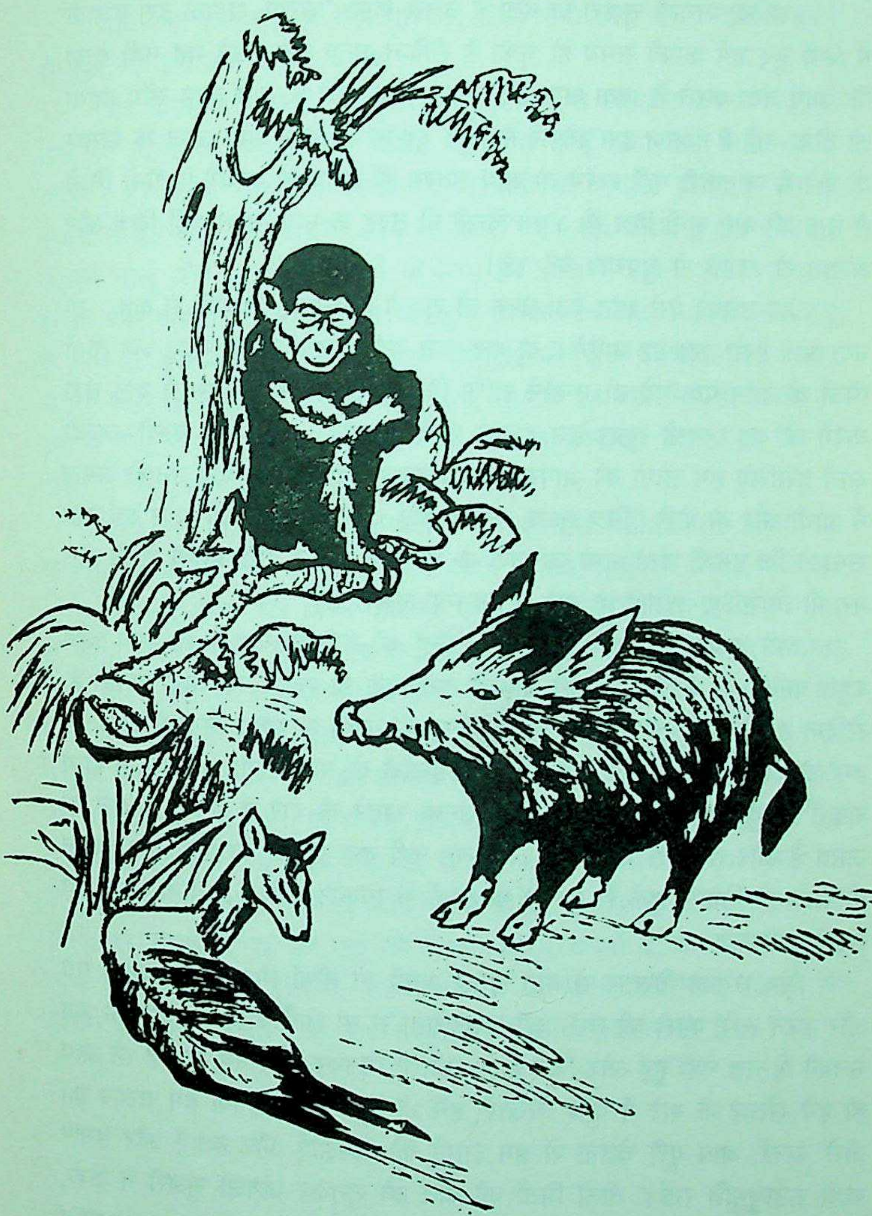
नोट : सुमरौ नागा जाति की भाषा में चिड़िया को 'फूट्टाना' कहते हैं और ज्योतिषी को 'मूपौं:' कहते हैं।

तीन मित्र

किसी ज़माने में एक घने जंगल में हिरन, जंगली भालू और बन्दर एक पेड़ के नीचे रहा करते थे। जिस इलाके में वो रह रहे थे वो इलाका इतना उपजाऊ था कि उनके लिए जीवन–भर जितना मर्जी खाएँ खत्म नहीं हो सकता था। भोजन के लिए उनको कुछ मेहनत नहीं करनी होती थी, जब चाहें उठकर खाएँ और फिर खाने के बाद आराम करते रहें, और इसी प्रकार वो जीवनभर खाकर बिना काम किये हुए आराम से व्यतीत कर सकते थे।

तीनों मित्र इसी तरह आराम से रहते रहे, इस तरह रहने को ही उन्होंने सोचा कि यह स्वर्ग है। वो बड़े खुश थे, खाते थे उठते थे। फिर सो जाते थे। कहीं जाने की जरूरत नहीं पड़ती थी लेकिन जब काफी समय बीत गया तो अब उनको ऐसी बुरी आदत पड़ चुकी थी कि थोड़–बहुत उनको बोलना भी पड़ता था तो वे यह सोचते थे कि यह बड़ा कष्टदायी है, इसलिए उन तीनों को अपना सिर्फ सिर हिलाकर या मुँह हिलाकर उनको जो बात करनी पड़ती थी, उसको भी वो तकलीफ महसूस करने लगे और फिर धीरे–धीरे उन्होंने आपस में बात करना ही बंद कर दिया और फिर चुपचाप वो लोग रहने लगे, यानी उन तीनों ने आपस में बातचीत करनी भी बंद कर दी, इतना वो आलसी हो गये थे।

एक दिन जंगली सुअरों का एक झुंड हिरन, जंगली भालू और बन्दर तीनों मित्र जिस पेड़ के नीचे रहते थे, उस पेड़ के पास आकर रहने लगा। जंगली सुअरों में किसी बदबू या महक को खोज सकने की शक्ति बड़ी तीव्र होती है। इसी से उनको, तीनों मित्रों का ठिकाना आसानी से मिल गया लेकिन उन्होंने हिरन, जंगली भालू और बन्दर को करीब आते–जाते एक बार भी नहीं देखा और वो बहुत हैरान हो रहे थे इस बात से इसलिए एक दिन जंगली सुअरों के झुंड ने हिरन, जंगली भालू, बन्दर तीनों मित्रों की रहने की जगह का अच्छी तरह निरीक्षण किया, तीनों जानवर, तीनों मित्रों ने जंगली जानवरों के झुंड की उपस्थिति में कोई दिलचस्पी नहीं ली। आँखें बंद करके आराम से लेटे रहे, इस



तरह उनकी हरकतों को देखकर जंगली सुअरों को उन तीनों मित्रों की नीति को समझने में कठिनाई होने लगी।

इसलिए जंगली सुअरों के नेता ने उनसे कहा, "दोस्तो, आपके इस इलाके में आये हुए हमें काफी समय हो चुका है लेकिन आज तक हमने यह नहीं देखा कि आप क्या करते हैं, क्या आप इसी तरह सोए रहते हैं, इस तरह सोए रहना तो ठीक नहीं है। आज इस संसार में बहुत दुश्मन हैं, अगर आप आज के संसार के बारे में जानकरी नहीं रखेंगे तो आप अवश्य ही बर्बाद हो जायेंगे।" तीनों मित्रों ने नेता की बात सुनी फिर भी अपने किसी भी तरह के भाव व्यक्त नहीं किये और आराम से, शांति से चुपचाप बैठे रहे।

जब उनको ऐसे शांत बैठा देखा तो सुअरों के सरदार ने फिर से कहा, "तो क्या आप इसी तरह रह पाएँगे।" वो बार–बार यही बात दोहराता रहा। जब तीनों मित्रों के कान पक गये तो उन्होंने सोचा कि हम तीनों मित्र आपस में बात नहीं करेंगे तो यह जंगली सुअर इस इलाके से कभी लौटेंगे नहीं, यह जल्दी–जल्दी जायें इसलिए हम लोगों को आपस में बात करनी चाहिए, यह बात उनको समझ में आयी और वो बोले, "मित्र सुअर, हमारा कोई दुश्मन नहीं है, और हम यह नहीं समझते कि हमारी तरह अन्य जानवरों के भी कोई दुश्मन होंगे, इतनी शांति होने पर भी किसलिए संसार के बारे में जानना जरूरी है।"

तभी सुअर ने कहा, "अगर आप लोगों की यही मान्यता है तो आप लोग बहुत गलती पर हैं, वैसे हम भी आपकी तरह एक ही स्थान पर रहना चाहते हैं, लेकिन हमारे चारों तरफ दुश्मन हैं, इसलिए हम लोग आपके इलाके में आये हैं। हम लोग अपनी सूँघने की शक्ति से सारे इलाके के, सारे संसार के बारे में जान सकते हैं, दुश्मनों के मिलने से पहले उनके खतरे के बारे में हमको मालूम हो जाता है और तब ऐसे में भी हम लोग यह नहीं कह सकते कि हम लोग दुश्मन के जाल से निकल चुके हैं, दुश्मन के हाथों से निकल चुके हैं।" तीनों मित्रों को उसने समझाया।

जब उनको विस्तार से बात समझ आयी तो तीनों मित्र काफी घबरा गये और डरने लगे, पहले की तरह पूरी असुरक्षिता से या लापरवाही से रहने की अब उनकी हिम्मत नहीं हुई और फिर बोले, "हाँ तो मित्रवर, जब यह बात है तो आप ही हमें संसार के बारे में कुछ सिखाएँ, हमें भी कुछ समझाएँ कि हम संसार को कैसे परखें, आप पूरी चेतना से हम लोगों को समझाएँ और बताएँ और हमारे साथ सहानुभूति रखें।" तीनों मित्रों की बात को सुनकर जंगली सुअरों ने कहा, "हमें पूरी उम्मीद है कि आप विद्या सीखना चाहते हैं, लेकिन संसार का अध्ययन

करने का मतलब यह होता है कि उसका अर्थ बहुत विशाल होता है। आप लोगों को सिखाने के लिए अभी हम पूरी विद्या ग्रहण नहीं कर पाये हैं।" यह कहा।

यदि यही बात हुई तो बड़ी मुश्किल हो जायेगी और तीनों मित्रों ने फिर से पूछा कि हमें क्या करना चाहिए।

"हर जगह हमें अपनी होशियारी और दिमाग से अध्ययन करना चाहिए। उस पर विचारना चाहिए और किसी भी जगह कोई लापरवाही नहीं करनी चाहिए। हर जगह सावधानी बरतकर लापरवाही को भगाना चाहिए।" जंगली सुअरों ने यह कहा और अपने–अपने घर लौट गये। उस समय से लेकर हिरन, जंगली भालू और बन्दर इन तीनों के लिए हर चीज में अपने आपको जाग्रत रखना बड़ा जरूरी हो गया। हिरन जो कुछ उसके साथ घटा था, यह क्या शत्रु है, मित्र है, इस बात का फैसला करने के लिए आपस में विचार करने लगा। जंगली भालू जो कुछ भी जब भी वो देखता, सोचता यह क्या मित्र है, वास्तव में जंगली भालू ने भी जो कुछ देखा तो इस बात का अध्ययन करने लगा कि वो दोस्त है या दुश्मन और वो सोचने लगा।

इसी तरह वो बन्दर भी उन सारी जगहों पर गया जहाँ वो घूमा करता था, खाया–पिया करता था। वहाँ उसने बड़े ध्यान से सब बातों का अध्ययन किया।

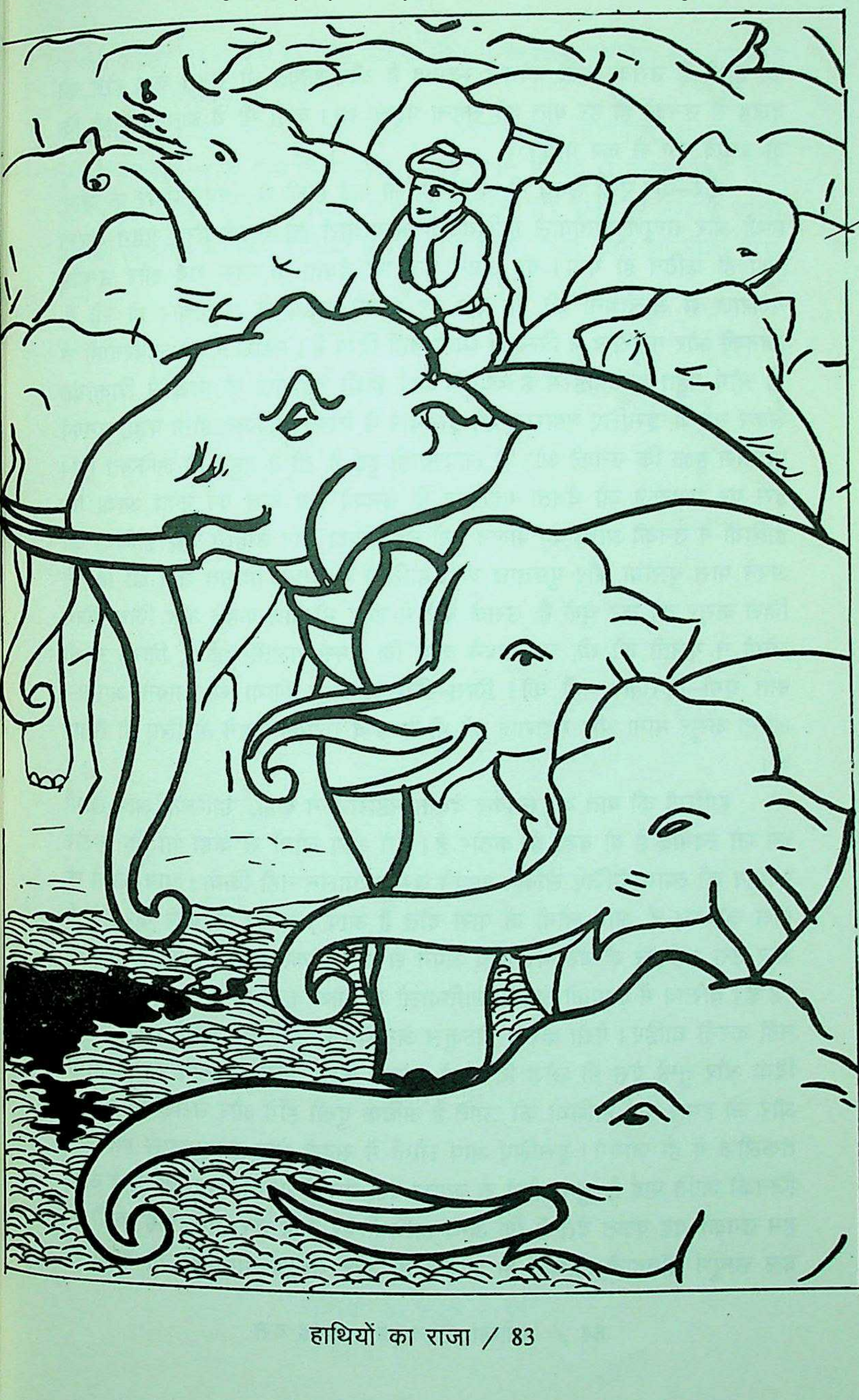
इसलिए आज तक हिरन जब भी उन्हें कुछ दिखायी देता है वो भयभीत हो जाया करते हैं और कुछ समय के लिए दौड़ जाया करते हैं और जब वे दौड़ा करते हैं तो एक ही बात जानने के लिए कि वो शत्रु है या मित्र, इस बात को ठीक से परखने के लिए, जानने के लिए वो दोबारा आकर देखा करता है, यह उसकी आदत है। और यह जो जंगली भालू है, यह भी जो कुछ वो देखता है उसको फिर से बड़े ध्यान से देखने लगता है और यही सोचता है कि क्या वह दुश्मन है या मित्र, बहुत देर तक वो सोचता रहता है लेकिन बन्दर जहाँ भी भोजन खोजने जाता है, भले ही कोई भी जगह हो, वो एक बार फिर उस जगह को देखने जाता है, यह हर एक की अलग–अलग आदतें हैं, यह आदतें उनके साथ चिपकी हुई हैं, इसलिए उनके बारे में जानकारी रखनेवाले जितने भी दुश्मन हैं उनको आसानी से मार सकते हैं, उनको पकड़ सकते हैं।

हाथियों का राजा

किसी समय हाथियों पर राज करनेवाला एक देवता हुआ करता था। हाथियों का जो राजा देवता था वो बहुत चरित्रवान था, बहुत उदार था और जिन हाथियों पर वो हुकूमत रखता था, उन हाथियों को यही सिखाया करता था कि तुम न्यायप्रिय बनना। हर आदमी के साथ बिल्कुल ठीक–ठाक सत्य भावना पर चलना, यही हमेशा वो हाथियों को उपदेश देता था।

जो बुजुर्ग हाथी हैं वो युवा हाथियों को सहानुभूति से देखें, दया करें, उन पर करुणा करें और जो बलवान हाथी हैं वे कमजोर हाथियों पर अपना व्यवहार अच्छा रखें, उन्हें तंग न करें, उन पर जुल्म न ढाएँ। पूर्ण रूप से सभ्य ढंग से रहें। यह बातें जोर देकर सिखाया करता था। हाथियों ने भी वायदा किया कि आप जो भी हमें उपदेश देंगे, जो भी निर्देश देंगे हम उस बात को उसी प्रकार करेंगे, सबने यह बात स्वीकार की।

गजराज क्योंकि स्वयं भी बहुत चरित्रवान थे और बहुत आदर्श ढंग से सोचते थे, उनका यह विचार था कि मेरे प्रभाव में जितने भी हाथी हैं उसी तरह वो उनके साथ श्रेष्ठ व्यवहार करेंगे इसलिए उन्होंने कभी भी किसी हाथी पर कोई भी बंदिश नहीं रखी और आजादी से हाथियों को आने–जाने का अवसर दिया और अपने मुताबिक काम करने का अवसर दिया। उन दिनों में हाथियों में ऐसे हाथी जो झुंड के साथ हुआ करते थे वो अधिक बलवान हुआ करते थे, एक दूसरा भी हाथी होता था, जिसका एक ही दाँत था उन्हें तंड हाथी कहते थे, उनमें मादवक्ष श्रेणी की ताकत होती थी, और ऐसे भी हाथी थे जिनके दाँत नहीं होते थे, उनको दय हाथी कहते थे और वो सबसे कम बलवान हुआ करते थे। हाथियों को क्योंकि गजराज ने पूरी आजादी दे रखी थी, वो अपनी मर्जी से जैसे चाहें रह सकते थे इसलिए जब काफी समय तक आजादी से रहने लगे तो उनके अन्दर बुरी प्रवृत्तियाँ प्रवेश कर गयीं। एक–दूसरे पर अत्याचार करने लगे। सम्पूर्ण दाँतवाले जो हाथी थे वो अपने नीचे जो दो तरह के 'डल' हाथी और 'पाई' हाथी थे इन लोगों पर वो अत्याचार करने लगे, विशेष रूप से जो पाई नाम



का हाथी है उसका बड़ा कोमल स्वभाव है और शक्ति भी उनमें कम होने की वजह से उनको ही हर बात को सहना पड़ता था। कभी भी ये बात नहीं थी कि वो बचाव ढंग से कर पायें।

धीरे–धीरे ऐसा समय भी आया कि जो पाई हाथी थे—अपने ऊपर के 'डल' हाथी और सम्पूर्ण दाँतोंवाले हाथियों के अत्याचारों को उनके लिए सहन करना बड़ा ही कठिन हो गया। वह अपने गजराज देवता के पास गये और उन्होंने गजराज से आलोचना की कि उन पर काफी समय से अत्याचार हो रहे हैं, जिनकी ओर महाराज ने बिल्कुल ध्यान नहीं दिया है। महाराज की लापरवाही से वो लोग बहुत कठिनाई में हैं क्योंकि पाई हाथी महाराज के पास में शिकायत लेकर गये थे, इसलिए महाराज को इस बारे में काफी लज्जित होना पड़ा, उनको एहसास हुआ कि उनकी ओर से लापरवाही हुई है, तो वे बहुत ही लज्जित हुए। इस पर गजराज जो देवता महाराज थे उनको इस बात पर क्रोध आया कि हाथियों ने उनकी आज्ञा का पालन क्यों नहीं किया और उन्होंने सारे हाथियों को अपने पास बुलाया और पूछताछ की। हाथियों में इतनी हिम्मत नहीं थी कि वो जिस कसूर को कर चुके हैं, उसके बारे में कोई भी बात कहते और जिन–जिन लोगों ने गलती की थी, उन सबने कहा कि हमसे गलती हुई है, किसी ने भी बात घुमा–फिराकर नहीं की। जिस–जिसने कसूर किया था, सबने अपना–अपना कसूर माना और महाराज जो भी दण्ड दें उसको सहने के लिए वो तैयार थे।

हाथियों की बात को सुनकर देवता महाराज ने कहा, "हाथियों, आप लोगों का जो स्वभाव है वो बड़ा ही कठोर है। मैंने आप लोगों से कहा था कि कठोर स्वभाव को त्याग दीजिए लेकिन आपने उसका पालन नहीं किया। आप लोगों के पास जो बल है, आप लोगों के पास दाँत हैं आप उस पर अहंकार कर रहे हैं और उस अहंकार के बल पर आप अपने से कम ताकतवालों पर अत्याचार कर रहे हैं। वास्तव में आपको अपनी जातिवालों के साथ कभी भी इस तरह की बात नहीं करनी चाहिए। ऐसा करना बिल्कुल अनुचित है, यदि तुम लोगों को दण्ड न दिया और तुम्हें ऐसे ही छोड़ दिया तो तुम्हारे कारण मेरा भी नाम खराब होगा और जो हमारे पाई हाथियों की जाति है अधिक दुखी होंगे और उससे भी ज्यादा तकलीफ में हो जायेंगे। इसलिए आप लोगों में सबसे श्रेष्ठ स्वभाववाले हाथियों, जिनकी जाति पाई है, तुम लोगों से ज्यादा बल उनको प्रदान किया जाता है और हम उनको यह वकत देते हैं कि अन्य हाथियों पर राज कर पायें, पाई हाथी में बल सम्पूर्ण दाँतवाले हाथियों से अधिक हो और सम्पूर्ण दाँतवाले जो हाथी हैं

उनकी शक्ति सबसे कम हो ऐसी आपके लिए मैं व्यवस्था कर रहा हूँ।" गजराज ने एक नयी व्यवस्था चलाई।

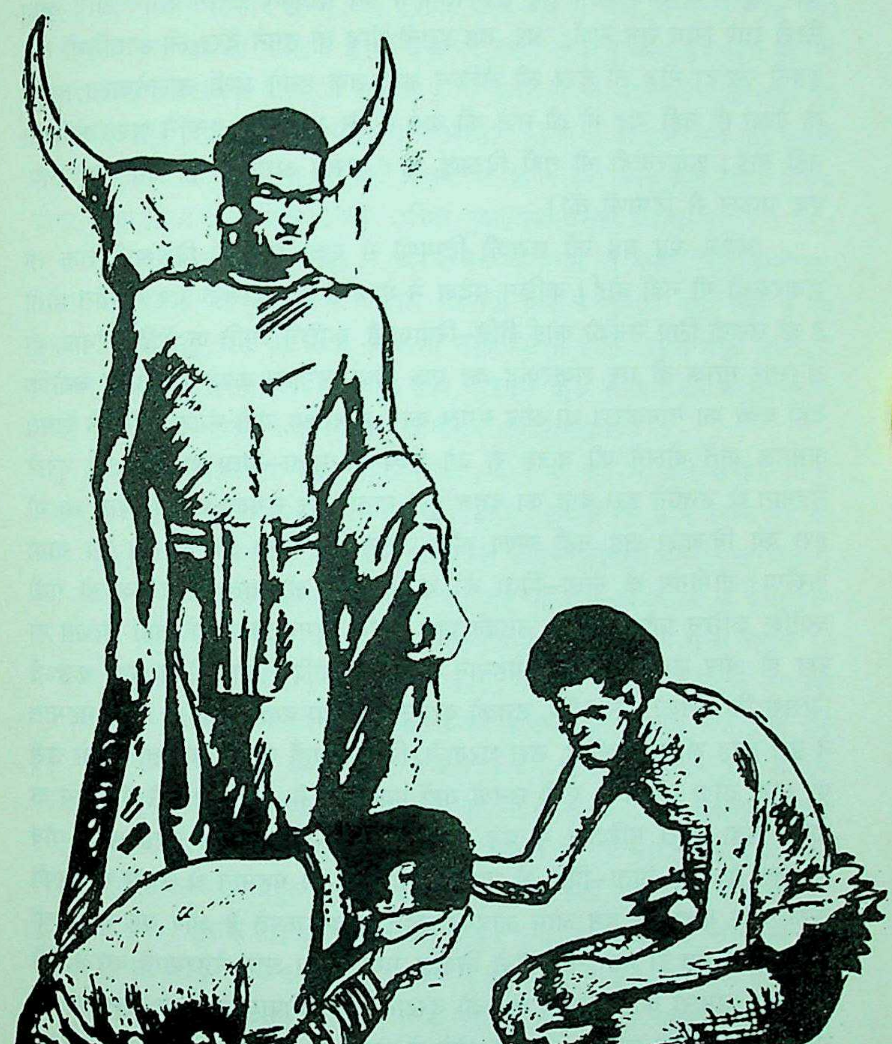
गजराज के प्रताप से उस दिन से लेकर सम्पूर्ण दाँतोंवाले जो हाथी थे, उनकी ताकत तब से कम हो गयी और डल जाति के जो थे उनको मध्य श्रेणी की ताकत मिली और जो सबसे कम ताकतवाले पाई हाथी थे उन्होंने सबसे अधिक ताकत पायी और हाथियों में उनको सरदार, राजा बनने का मौका दिया गया।

प्यार की जीत

बर्मा के मुख्य प्रदेशों में एक है कछिन् प्रदेश, यह कहानी वहाँ के रहनेवाले एक ऐसे आदमी की कहानी है जिसका नाम रनवा था जो बचपन से ही पैदा होते समय से ही हमेशा गलतियाँ करता आ रहा था और उसकी गलतियों को देखकर ही उसका नाम रनवा रखा गया था, रनवा यानी गलतियाँ करनेवाला, जिससे कोई काम सीधा न हो उसे कछिन् प्रदेश में यह नाम दिया जाता है इसलिए उसका यह नाम पड़ा।

वैसे माता–पिता ने जन्म के समय जो उसका नाम रखा था वो था वौमीगम, वौमीगम वौमिला और मौंतून् का बेटा था। वौमीगम जब कोई भी काम करता था तो उस काम में गलतियाँ–ही–गलतियाँ हुआ करती थीं, इसलिए आमतौर पर लोग उसका जो असली नाम था वौमीगम उस नाम से न बुलाकर उसके कार्य को देखते हुए उसे रनवा यानी गलतियाँ करनेवाला ही पुकारा करते थे। जब से वौमीगम पैदा हुआ था माता–पिता हमेशा यही सोचते थे कि हमारा बेटा अगर होशियार हुआ तो इतना होशियार होगा कि लोग हैरान होंगे, लेकिन अगर यह होशियार न हुआ तो साधारण बच्चों जितना, साधारण युवकों जितना होशियार तो अवश्य होगा। ऐसा जब वो अभी शिशु ही था लगभग सात महीने का, तभी से माता–पिता को इस बात का अंदाजा था और वो ऐसा सोचते थे, लेकिन जैसे–जैसे वौमीगम बड़ा होता गया तो उन्होंने देखा कि वौमीगम वैसा नहीं है जैसा कि वो सोच रहे थे। बिल्कुल वैसा–जैसा कि तराजू होता है, तराजू की जो जीभ होती है वो हमेशा एकतरफा होती है, कभी इस तरफ तो कभी उस तरफ। ऐसा होने के बावजूद भी माता–पिता उसे बहुत प्यार करते थे और उसका पूरा ध्यान रखते थे। लाड़–प्यार से उसको पालते थे, उस पर पूरी उम्मीदें उनकी थीं और देखते–ही–देखते वौमीगम पाठशाला जाने की उम्र का हो गया।

एक दिन दोनों माता–पिता अपने मित्र के साथ मित्र के घर में मनानेवाले एक उत्सव में गये, वो उत्सव बच्चे के नामकरण का था, इसलिए बच्चों से



संबंधित उत्सव भी था, इसलिए वौमीगम को भी माता–पिता अपने साथ अपने मित्र के यहाँ ले गये। जैसे ही उस घर पर वो पहुँचा वौमीगम ने वहाँ देखा कि वहाँ बहुत–से लोग आये हुए हैं। मेहमानों को देखकर उसने अपने आप कहा जिसे सारे लोग सुन सकें, "अरे, यह इतनी भीड़ तो हमने देख ली आदमियों की, इतनी ज्यादा भीड़ तो देख ली लेकिन अभी तक हमने अर्थी डालनेवाला ताबूत तो देखा ही नहीं, यह भी तो मजे की बात है कि अभी तक इन्होंने शकरकंदी भी नहीं बोई। शकरकंदी भी नहीं दिखाई दी।" उसने अचानक ही यह बात कही, एक प्रकार से टिप्पणी की।

अच्छा अब यह जो उसकी टिप्पणी में एक बात थी कि अभी तक तो शकरकंदी भी नहीं बोई। कछिन् प्रदेश में ऐसा है कि जिसके घर में मौत होती है तो उसके लिए उनकी कोई रीति–रिवाज है, कछिन् जाति के रीति–रिवाज के अनुसार मृतक के घर शकरकंद का एक पौधा लगाया करते हैं। आज क्योंकि यहाँ बच्चे का नामकरण था और मंगल कार्य होना था, ऐसे मंगल कार्य के समय अमंगल बातें बोलने की वजह से जो बच्चे के माता–पिता थे और जो दूसरे मेहमान थे उन्होंने इस बात का बहुत बुरा माना और उनका जो मेजबान था वो इस को बिल्कुल सह नहीं सका और उसने यह कहा कि मैं तुम पर दावा करूँगा। वौमीगम के माता–पिता को दावा करने की बात खतरनाक हो गयी क्योंकि कछिन् प्रदेश में एक उनकी प्रथा है कि अगर किसी के यहाँ उत्सव हो रहा हो और उत्सव में कोई मेहमान या कोई व्यक्ति कोई ऐसी बात कह दे जिससे कि उनको ठेस पहुँचे, उनको बुरा लगे तो वो क्या है कि वो जिस मेहमान ने इस तरह की बात की है, उस घरवाले, जिनके यहाँ उत्सव हो रहा है, वो उस पर दावा ठोंक सकते हैं, ऐसी उनके यहाँ एक प्रथा है, इस वजह से वौमीगम के माता–पिता बहुत मुश्किल में पड़ गये लेकिन उन्होंने किसी तरह हाथ–पाँव जोड़कर बच्चे के माता–पिता से माफी माँगी और जो मेहमान थे उनसे भी माफी माँगी, और कहा कि हम लोग आपका बहुत आदर करते हैं और यह तो बच्चा है, बच्चे के मुँह से पता नहीं कैसे निकल गयी बात। आप मेहरबानी करके हमें क्षमा करें, हमारा कोई आपके मन को दुखाने का अभिप्राय नहीं था, इसलिए वो अपने बेटे वौमीगम को उत्सव शुरू होने से पहले ही वहाँ से अपने घर वापस ले आये। यहाँ पर मैं आपको एक बात बता देना जरूरी समझता हूँ कि जैसे आपको बताया था कि किसी कछिन् आदमी के घर में कोई कैसा भी उत्सव हो रहा हो तो उस उत्सव में शामिल होनेवाला व्यक्ति यदि घरवाले की मर्जी के खिलाफ कोई बात कहता है, कोई घटना वहाँ घटने के लिए मजबूर करता है तो ऐसे

आदमी पर जो घरवाला है, वो अपने मेहमान पर दावा ठोंक सकता है, केवल उसकी शर्त है या तो वो इस तरह माफी माँगे कि सब लोग जो उसके घर आये हुए हैं, अन्य जो मेहमान हैं वो सब उसको क्षमा कर दें और अगर वो ऐसा नहीं कर सकता तो वो जो मालिक है वो उस पर दावा ठोंक सकता है। और वो जो अधिकारीगण हैं उनके पास जा सकता है, वो कोर्ट में भी न्यायाधीश के पास जा सकता है और जब तक जिस आदमी ने अपमान किया है वो इस बात को अपनी गलती नहीं मानता तब तक वो उस आदमी के ऊपर पूरी तरह हक रखते हैं कि दावा ठोंक दिया जाये और उससे उचित मुआवजा वसूल किया जाये।

घर पहुँचकर माता–पिता ने अपने बेटे वौमीगम से कहा, "बेटे वौमीगम, देखो, जब किसी के घर जाते हैं और जिसके बारे में तुमको पता नहीं है तो तुमको किसी भी तरह की कोई टिप्पणी नहीं करनी होती, लोग क्या करते हैं उसको ही अच्छी तरह देखा जाता है और देखकर कुछ सीखने की कोशिश की जाती है।" माता–पिता ने अपने बेटे वौमीगम को समझाया।

एक दिन वौमीगम अपने माता–पिता के साथ घर में था। उसके पिता तंबाकू का पाइप पी रहे थे। उसने अपने पिता की नकल की और अपने मुँह के साथ में एक पाइप लटका लिया और जैसे कि देवी–देवताओं के उत्सव होते हैं वहाँ अच्छे–अच्छे कपड़े पहनकर चला गया। जब वह देवी–देवताओं के बलिवाले उत्सव में पहुँचा तो उसने देखा कि देवी–देवताओं को उनकी पूजा करने के लिए या उनको भोग लगवाने के लिए तरकारी, भोजन, पकवान इत्यादि बन रहे थे। वौमीगम एकदम उबलते हुए तरकारी की हंडिया को देखता रहा और वह हैरान था उन बड़ी–बड़ी हंडियों को देखकर। उन सब्जियों से आ रही अच्छी महक को सूँघकर उसके दिल में आया कि वह भी थोड़ा–सा उन्हें चखकर देखे। ऐसा सोचकर उसने उबले हुए तरकारी के हंडिये में से एक सब्जी के टुकड़े को उठाया। चूँकि तरकारी बहुत गर्म थी इसलिए उसका हाथ जल गया और उसका मुँह खुल गया। इससे उसके मुँह में जो पाइप लगा हुआ था वह तरकारी की हंडिया में जा गिरा, लेकिन क्योंकि उसके माता–पिता ने कह रखा था कि कुछ कहना नहीं इसलिए उसने कोई आवाज़ नहीं निकाली और चुपचाप वहाँ बैठा रहा।

कुछ देर बाद जो देवी–देवताओं के लिए तरकारी बना रहे थे उन्होंने जब तरकारी के पतीले को जाकर हिलाया तो तरकारी की हंडिया में से एक पाइप निकला। तभी तरकारी बनानेवालों ने बाहर खड़े वौमीगम से पूछा, "क्या यह तुम्हारा ही पाइप है?" पूछने पर वौमीगम ने कहा, "जी हाँ, बिल्कुल मेरा ही है।"

तभी रसोई में काम कर रहे लोगों ने कहा, "तुम यहाँ मत रहो और यहाँ से चले जाओ।" और लोगों ने उसको वहाँ से भगा दिया।

अब जब उत्सव में देवताओं का भोजन बनानेवालों ने उसे भगा दिया तो वौमीगम उस घर में गया जहाँ देवताओं की पूजा होनेवाली थी और वहाँ देवताओं की पूजा करने के लिए एक पुजारी था जिसका नाम दुन् चौंवाः था। वह चुपचाप देवता की पूजा कैसे कर रहे हैं इस बात को देखने लगा। वह चुपचाप बैठा देख रहा था लेकिन उसे चुपचाप देखते–देखते आनंद नहीं आ रहा था कि यह कोई बात है कि कोई भी चीज एकदम चुपचाप करते रहो और चुपचाप ही देखी जाए, इसलिए उसने पुजारी से एक प्रश्न किया, "पुजारीजी आप जो कहते हैं कि आप इनकी पूजा करेंगे लेकिन अब तक तो मान्जान भी दिखाई नहीं दिया।" मान्जान उसको कहते हैं जिसके ऊपर अर्थी रखी जाती है। उस बात को सुनकर पुजारी को बहुत क्रोध आया और उन्होंने वो दाँव खींच लिया जो उन्होंने देवताओं की पूजा के लिए रखा हुआ था और उसके पीछे–पीछे वौमीगम को काटने के लिए दौड़ा, वौमीगम डरकर तेजी से दौड़कर भागा और सीढ़ी पर एक कुत्ता सोया हुआ था उससे टकरा गया। इस टक्कर से कुत्ते को बहुत ज्यादा दर्द हुआ और कुत्ता बहुत जोर से चीखा तभी वौमीगम और डरने लगा और उसने घर के नीचे ही छलाँग मार दी लेकिन घर के नीचे जो उसने छलाँग मारी तो घर के नीचे एक सुअर सोया हुआ था, वो सुअर पर जा गिरा। सुअर बड़ी तेजी से चिल्लाया और वौमीगम को काटने की तैयारी करने लगा। जब वौमीगम ने देखा कि कुत्ता और सुअर उसके विरुद्ध उस पर हमला बोलने के लिए आ रहे हैं तो वो बहुत डर गया और वहाँ से तेजी के साथ दौड़ने की वजह से वह कुत्ते को चिल्लाता और हटाता हुआ देवता के लिए जो तरकारी का पतीला था उससे जाकर टकरा गया और तभी सारी तरकारी नीचे गिर गयी।

ये सारी घटनाएँ घट रही थीं, और वैसे जो समझा जाये कि वह देवता की शान में कोई गुस्ताखी कर रहा था इसलिए वौमीगम चाहता था कि लोग यह न समझें कि मैं देवताओं के प्रति कोई गलत बात कर रहा हूँ और फिर जब और कोई रास्ता नहीं था तो वह घर भागा। उसने अपने माता–पिता से कहा कि मुझसे यह–यह गलती हो गयी हैं आप इनको संभाल लीजिए। वौमीगम के माता–पिता ने पुजारियों से और जो लोग जागरण करा रहे थे उनसे माफी माँगी। तभी उस दिन से लेकर बेटे वौमीगम को रनवा नाम दे दिया गया और यह मशहूर हो गया कि यदि किसी जगह पर रनवा आ गया तो और तो और देवताओं के लिए जो भोज़ आदि के कार्य हैं सब उल्टे हो जायेंगे।

वौमीगम के माता–पिता ने अपने बेटे वौमीगम या रनवा को कहीं और न जाने देने के लिए फैसला कर लिया और उन्होंने कहा कि आज से तुम कहीं भी किसी उत्सव में नहीं जाओगे।

अब रनवा को जैसे कि माता–पिता ने कहा, कानून बना दिया था, उसके अनुसार उसको घर में ही रहना था, वो कहीं न जा सकता था और इसलिए उसको और आलस्य आने लगा, जब भी उसको आलस्य आता वो कुछ–कुछ खोज करके खोजना चाहता था और जो घर में चीजें छिपी हुई होती थीं उन्हीं को ढूँढ़कर वो कोई–न–कोई चीज खोजने की कोशिश करता था।

एक बार उसके घर में दाल बनाकर रखी थी जोकि ठंडी हो चुकी थी इसलिए वौमीगम ने वो सारी दाल भरा पतीला पूरा–का–पूरा खा लिया। लेकिन उसने जैसे ही वो दाल खाई उसके बाद उसका पेट खराब हो गया और उसको पतले–पतले मल आने लगे। वौमीगम का पेट खराब था और उसको बार–बार शौच जाना पड़ता था। मल त्यागने जाना पड़ता था। रात का समय होने की वजह से वह इस बात से डरता था कि कहीं जंगली जानवर उस पर हमला न बोल दें और घर के नीचे जाने की उसकी हिम्मत नहीं थी और दूसरी बात यह थी कि उसने सोचा कि माता–पिता ने यह कह रखा है कि मैं कहीं न जाऊँ, उन्होंने मुझे यह आदेश दे रखा है कि मैं कहीं न जाऊँ इसलिए वह वहाँ से हिलने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था और जब ऐसी स्थिति हुई कि पेट में हवा का जो दबाव था वो मल करने के लिए, मल त्यागने के लिए बेचैन हो रहा था और उसको कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था और वो इसको सह नहीं सकता था इसलिए अँधेरे में उसने टटोलते हुए एक स्थान की तलाश की जहाँ उसे लगा कि एक छेद है। वहाँ वो बैठ गया और वहाँ बैठकर उसने अपना पेट साफ कर लिया और उसके बाद अपने बिस्तरे में गया और जाकर बिस्तरे के पास बैठा। अँधेरे में न तो वो देख सकता था और न ही वो टटोल सकता था इसलिए दीवार के साथ में उसके पिता ने जो भाले और तलवार खड़े किये थे उनसे जाकर टकरा गया।

दीवार के साथ में खड़ी कर रखी तलवार और भाला जब नीचे गिरे तो पिता वौमिला जाग गये और उन्होंने अपनी पत्नी को भी जगाया। उन्होंने घर के बीच में रसोई में आग जलाई और आग की रोशनी में उन्होंने देखा कि क्या हुआ है। उसका अध्ययन किया जाये। माता–पिता आग की रोशनी में यहाँ–वहाँ देखने लगे और देखा कि पहले तो मल की बहुत बुरी बदबू आ रही है। उन्होंने देखा कि जो दाल का पतीला था उसमें किसी ने मल त्याग रखी है। वे यह

जानते थे कि यह शैतानी उनके बेटे वौमीगम की है लेकिन अपने बेटे के प्रति जो उनका प्यार था, उसकी वजह से उनकी डाँटने–डपटने की इच्छा नहीं हुई। उन्होंने सोचा कि हो सकता है कि इसका पेट खराब था और कोई चारा नहीं लगा इसलिए इसने ऐसा किया है। यह सोचने के बाद उसको क्षमा करने का उन्होंने फैसला किया।

यह जो वौमीगम का उत्पात था, उसकी जो गलतियाँ थीं, त्रुटि थीं और जो ऊट–पटाँग वो कर दिया करता था उन सबके आधार पर रनवा की बुरी आदतों के बारे में सारे प्रदेश में खबर फैल गयी थी। अब और प्रदेश के जो मुखिया थे जोकि राजा का दर्जा रखते थे, उनके पास भी यह खबर पहुँची। राजा ने यह सोचा कि उनके प्रदेश में ऐसे मूर्ख हैं, उनकी अज्ञानता को दूर करने की जिम्मेदारी तो हमारी ही है। ऐसा सोचकर राजा ने रनवा के माता–पिता को कहा कि रनवा को उसके पास में दो महीने के लिए आप भेज दें ताकि मैं उसे सुधारकर वापस भेज सकूँ।

अब समस्या यह थी रनवा अकेला बेटा था और उसको समझाने के लिए राजा के पास में दो महीने के लिए भेजने का आदेश था और यह आदेश उनके लिए हितकारी था, इसलिए माता–पिता ने अपने मन को समझाया और बेटे रनवा को राजा के पास शिक्षा के लिए भेज दिया।

जब रनवा उसके घर पहुँचा तो गूँगा और उसकी पत्नी मिले। एक दिन उनको फुर्सत नहीं थी। उनका एक छोटा बेटा था जिसका नाम डौबी था, उससे कहा कि तुम इस पर जरा नजर रखना। डौबी पर नजर रखने के लिए कहकर वह अपने काम पर चले गये। जब गूँगा और उसकी पत्नी काम करके लौटे तो उन्होंने देखा कि उनका छोटा बेटा डौबी घर की सीढ़ियों पर मरा पड़ा है। तभी गूँगा ने रनवा से बच्चे के मरने के बारे में पूछा कि हमने तुमसे कहा था कि बच्चे का ध्यान रखना। तुमने बच्चे का ध्यान क्यों नहीं रखा। तो रनवा ने जवाब दिया, "आपने तो कहा था कि तुम बच्चे को बहुत अच्छी तरह देख़ना और मैं इसको बहुत अच्छी तरह देख रहा हूँ। मैं बच्चे को चोटी तक ले जाकर देख रहा था तभी बच्चा गिर गया और मर गया और देखो, देखो, मैंने अपना काम खत्म नहीं किया, मैं अपने काम को अभी तक कर रहा हूँ और इसको लगातार देख रहा हूँ।" रनवा ने गूँगा को उत्तर दिया।

अब वो कुछ भी नहीं कर सकते थे, अपने बच्चे के लिए उनको बहुत दुख हुआ। "वौमीगम तुम्हें यह पता नहीं चलता कि तुम्हें अपने घर के जो आदमी और जानवर हैं उनके बारे में तुमको कुछ तसल्ली करनी चाहिए। जो वस्तु प्राप्त हो

गयी है उसको संभालकर रखना चाहिए।" उन्होंने रनवा को समझाने की कोशिश की।

एक दिन गूँगा ने एक थैला रनवा को थमाते हुए कहा, "इसमें खाने की सामग्री है।" और उसने वो थैला वौमीगम के गले में लटका दिया और एक घोड़े पर बैठकर एक शांत गाँव की ओर गये। रनवा घोड़े के पीछे–पीछे चलता जाता था और जब उसने देखा कि रास्ते में घोड़े ने मल त्यागी है तो रनवा ने घोड़े की लीद को उठाकर थैले में डाल लिया और साथ में लेकर चलने लगा। जहाँ उन्होंने विश्राम करना था, उस जगह पर पहुँचे तो बूढ़ा उस घोड़े के ऊपर से उतरा और फल, खाने की सामग्री इत्यादि डाले हुए थैले को लाने के लिए कहा। जब उसने थैला खोलकर देखा तो थैले के बीच में घोड़े की लीद पड़ी हुई थी और वो खाने की चीजों में मिल गयी थी औरं खाना पूरा बेकार हो गया था। तभी गूँगा ने रनवा से पूछा, "तुमने ऐसा क्यों किया? यह सब कैसे हो गया?" तब रनवा ने कहा, "गूँगे महोदय, जैसा कि आपने समझाया था कि जो अपनी चीज है भले ही वो जानवर हो, जो अपना सामान है उसमें कंजूसी करनी चाहिए। आपने कहा था तो मैंने सोचा जो यह घोड़े की लीद है इसको भी संभालकर रखना चाहिए इसलिए जो सामान घोड़े के शरीर से निकलता गया मैं उसको उठाता गया और उसको मैं अपने थैले में डालता गया और साथ में ले आया।"

रनवा की बात को सुनकर गूँगा बहुत नाराज हुआ और बोला, "इस तरह प्राण त्यागी हुई चीजों को लेने की जरूरत नहीं है रनवा।" और मात्र इतना कहने के बाद वो अपनी यात्रा पर आगे बढ़े। सारा भोजन खराब हो गया था और बिना कुछ खाये हुए वे आगे बढ़ गये थे और जो उनकी असली यात्रा थी वो गाँव में पहुँच गयी थी जहाँ पहुँचकर जिस घर में उन्होंने ठहरना था उस घर के सामने जब वे घोड़े से उतरे तो जिस घर में उन्होंने ठहरना था उस घर के मालिक और उनके पड़ोसियों के लिए वे कुछ उपहार लाये थे, वो सब उन्होंने बाँट दिये। जैसे महाराज उन उपहारों को बाँट रहे थे तो रनवा ने देखा और बोला, "गूँगे महोदय, यह जिन–जिन सामान को आपने देने के लिए मना किया था वह सामान आप अब इन लोगों को क्यों दे रहे हैं, क्यों बाँट रहे हैं?" तभी गूँगा ने कहा, "जिनसे हम अच्छी तरह परिचित नहीं हैं, तो जब उनसे मिलते हैं तो उपहार देकर उनसे इसी तरह मित्रता बढ़ाई जाती है।" बूढ़े ने उसे समझाया।

जिस घर में वो ठहरे हुए थे तो उस घर के मालिक ने उनसे भोजन के लिए कहा तो भोजन परोसने के लिए जो बरतन रखे गये, जैसे प्लेटें, चम्मच इत्यादि वो सब उठाकर उसने अपने थैले में डाल लिए। रनवा ने सोचा जो

सामान हमारे पास आया है उसको अच्छी तरह संभालकर रखना चाहिए। तभी गूँगे ने जो बात कही थी उस पर ठीक से अनुसरण करने की बात होगी मेरे लिए। जब घर में लोगों को यह मालूम हुआ कि रनवा जो कुछ कर रहा है वो अनुचित है, ठीक नहीं कर रहा है, क्योंकि वो लोग गूँगाजी से संकोच करते थे इसलिए वो चुपचाप रहे कुछ बोले नहीं।

गाँव में जब सारा गाँव सो गया तो दूसरे दिन वापस लौटने का उन्होंने कार्यक्रम बनाया। गूँगा को रनवा पर बिल्कुल भरोसा नहीं था बल्कि शक था, इसलिए उसने थैला खोलकर देखा और उसने थैले में देखा कि रनवा ने बहुत–सी चम्मचें और प्लेटें रख रखी हैं। तब उसने जो मकान का मालिक था, उससे क्षमा–याचना की और सारा सामान उनको लौटाया और फिर उस घरवालों ने रास्ते में बनाने के लिए जो चावल दिए उसे उसने थैले में डाल लिया और रनवा के कंधों पर वो थैला लटका दिया और वापस लौट आये।

अभी जब वो लौट रहे थे तो एक जगह पर जब वो विश्राम करने लगे तो वहाँ यात्रा पर आये हुए कुछ व्यापारियों से उनकी भेंट हो गयी, तभी रनवा ने अपने साथ लाये हुए चावलों को यात्रा पर जा रहे व्यापारियों में अच्छी तरह बाँट दिया और फिर यात्रा करने लगे। अब विश्राम करने के लिए उन्होंने जो स्थान तय किया वो वहाँ पहुँच गये, जब उस स्थान पर वो लोग पहुँचे तो बूढ़े ने कहा, "देखो ! तुम ऐसा करो रात के लिए जो चावल हैं उनको जरा उबाल लो।" उन्होंने रनवा को आज्ञा दी।

तभी रनवा ने कहा, "मेरे पास तो चावल का एक दाना भी नहीं बचा। रास्ते में हमने ऐसे आदमियों को चावल के दाने बाँट दिये, ऐसे व्यापारियों को जिनको हमने कभी देखा भी नहीं था और मैंने उनसे दोस्ती करने के हिसाब से वो चावल उनको दे दिये थे। यह बात आपने कही थी इसलिए आपकी बात रखने के लिए वो चावल मैंने उनमें बाँट दिये और खत्म हो गये।" इस बात पर भूख लग रहे गूँगे को रनवा पर बहुत क्रोध आया और उसने कहा, "अब चावल नहीं हैं तो यह बर्तन गिलास हैं इसका क्या करोगे, यह सब बेकार हैं, इन सबको फेंक देना चाहिए।" गूँगे ने गुस्से में कहा और घोड़े पर चढ़कर आगे बढ़ गये। रनवा ने जब ये देखा कि उसका मालिक उससे नाराज हो गया है, और घोड़े पर चढ़कर घोड़े को तेजी से भगाकर ले गया है तो रनवा गूँगे के अनुसार बर्तन वहीं छोड़ गया। उसने घोड़े का पीछा किया और जब वे घर पहुँचे तो गूंगा उससे अभी तक नाराज था। उसने कहा कि घोड़े को अच्छी तरह बाँधकर रख दो। यह कहकर वे घर के ऊपर चले गये। रनवा ने उस घोड़े की चारों टाँगें, गला, मुँह आदि सभी

इतनी कसकर बाँध दिये कि वह हिल–डुल भी न सके और उसे एक रस्सी से खम्भे के सहारे ले आकर चारों ओर से कसकर बाँध दिया। और फिर घर के ऊपर चला गया।

घर के ऊपर पहुँचते ही गूँगेजी की पत्नी ने रनवा से कहा, "जो बर्तन तुम ले गये थे वो निकालकर दो, खाना वगैरा बनाना है।" तब रनवा ने कहा, "वो सब तो मैंने रास्ते में ही फेंक दिये थे।" तभी गूँगेजी की पत्नी ने कहा, "यदि तुमने बर्तन रास्ते में फेंक दिये थे तो दौड़कर जाओ और सारे बर्तन उठाकर लाओ नहीं तो दूसरे लोग ले जायेंगे।" रनवा को बर्तन लाने के लिए कहा गया था इसलिए रनवा बर्तन लाने के लिए घर से जल्दी–जल्दी निकल् गया। जिस नाले के पास बर्तन फेंके थे, वहाँ उसने बर्तन ढूँढे पर उसे वहाँ बर्तन नहीं मिले। तभी नाला पार करते हुए एक बूढ़ा दिखायी दिया। उसको देखने के बाद में उसने बूढ़े को रोका और पूछा, "बाबा, बाबा ! उस गूँगे के बर्तन हमने यहाँ रखे थे, कहीं आपने तो नहीं लिए हैं? गूँगे को बहुत गुस्सा चढ़ा हुआ है, और उसके बर्तन गुम गये हैं इस वजह से वह और भी गुस्से में है। तुम उसके बर्तनों के बारे में बताओ।" यह कहकर उसने बूढ़े से बर्तन माँगे। यह सुनकर बूढ़े ने जवाब दिया, "अरे, मेरे पोते मैंने गूँगे के बर्तन नहीं लिए हैं। यह बिल्कुल सच है। अगर तुम्हें विश्वास नहीं है तो तुम मेरे साथ मेरे घर चलो और वहाँ खोजकर देख लो। ढूँढकर देख लो।" यह बात कहने पर रनवा ने कहा, "यदि आप ऐसा कहते हैं तो मैं आपके साथ चलकर देख लेता हूँ।" और वो गूँगे के बर्तनों की खोज में उस बूढ़े के साथ में चल पड़ा।

तभी गूँगा को मालूम हुआ कि उसकी पत्नी ने रनवा को बर्तन लेने के लिए भेजा है, और उसे गये एक रात से ऊपर हो गयी है। क्योंकि बहुत देर हो गयी थी और हो रही थी और वे रनवा से काफी निराश हो चुके थे, घर के सामने थोड़ी देर के लिए निकलकर जाते थे और बाहर देखते थे। जब घर के नीचे अचानक उन्होंने झुककर देखा कि उनका जो घोड़ा है वो मरनेवाला है। उसको घर के खम्भे से पूरी तरह बाँधकर रखा हुआ है। यह देखकर उनको और भी निराशा हुई। जैसा कि गूँगा ने सोचा था कि रनवा को दो महीने रखने की बात का वचन दिया था और दो महीने में ही उसको सुधारने का वचन दिया था, वो नहीं कर पाया था और दो महीने पूरे होते ही वह अब रनवा को उसके माता–पिता के पास भेज देगा। ऐसा अब उसने मन में निश्चय कर लिया और उस रात रनवा गूँगे के पास वापस लौट आया और आते ही उसने कहा, "बर्तन नहीं मिले। मैंने लाख कोशिश की लेकिन नतीजा हासिल नहीं हुआ। मुझे आलू

बहुत से मिले लेकिन किसी ने कहा कि यह देवताओं को पसन्द नहीं आयेंगे इसलिए उनको मैं रास्ते में रखकर आया हूँ।" उसने बड़ी लम्बी भूमिका बाँधकर गूँगे को बताया। गूँगा बड़े धैर्य से उन बातों को सुनता रहा लेकिन उसके मन में बहुत गहरी चोट लगी हुई थी और रनवा को उसके पास रहते दो महीने पूरे हो चुके थे इसलिए गूँगा नें कहा, "रनवा, तुमको मेरे पास रहते हुए आज दो महीने पूरे हो गये। अब तुम अपने घर जा सकते हो।" तभी रनवा ने गूँगे से कहा, "नहीं मालिक, मेरी माँ ने कहा था कि जब दो महीने पूरे हो जायेंगे तभी लौटना। अभी आकाश में एक ही चाँद दिखायी दिया है। जब तक आकाश में दो चाँद दिखायी नहीं देते मैं कैसे जा सकता हूँ?" तभी चालाक गूँगा बोला, "अरे ! दो चाँद हैं तुमने देखे नहीं। तुम घर से एक पतीला लेकर आओ।" रनवा जब पतीला लाया तो गूँगा ने उसमें पानी भरा और कहा, "देखो भाई, तुम ध्यान से ज़रा देखो, आकाश के ऊपर एक चाँद है। है कि नहीं।" तो रनवा ने कहा, "हाँ है।"

"अब उस पतीले में देखो। जरा ध्यान से देखो तुमको एक चाँद और वहाँ दिखायी दिया कि नहीं।" पानी में जो चाँद की छाया पड़ रही थी उसको दिखाते हुए उसने उससे पूछा तो रनवा ने कहा, "हाँ, पतीले के बीचोंबीच में एक दूसरा चाँद है वो भी मैंने देख लिया।" तब गूँगा ने कहा, "अब तुमने दो चाँद देख लिए। एक ऊपर है और एक चाँद नीचे है। दोनों को मिलाकर दो चाँद हो गये। अब तुम ऐसा करना कि प्रभात होते ही अपने घर को रवाना हो जाना और तुम जा सकते हो।" ऐसा उन्होंने आदेश दिया।

जब सुबह हुई और रनवा अपने माता–पिता के घर को लौटने लगा तो गूँगा ने उसको जैसे बड़े समझाते हैं ऐसे समझाया, "वौमीगम, तुम्हें मुझसे और क्या चाहिए।" रनवा ने कहा, "गूँगा महाराज, मुझे बस और कुछ नहीं चाहिए। मुझे तो बस आपका वो घोड़ा चाहिए जिस पर सवारी करते हैं।" उसने घोड़ा माँग लिया। तभी गूँगा ने कहा, "वौमीगम लेकिन वह जो घोड़ा है उसको तुम अभी मत लो, जब दूसरा घोड़ा होगा और तब उस घोड़े के बेटे को हम तुमको दे देंगे।" यह कहकर रनवा के माता–पिता के लिए उपहार इकट्ठे करके रनवा के हाथ में दे दिए। अपने माता–पिता के पास पहुँचने के बाद रनवा के दिमाग में बस एक ही बात याद रहती थी और वह थी घोड़ेवाली बात जो कि गूँगे ने उसको देने के लिए कहा था। वह माता–पिता से पूछता कि माँ यह जो गूँगे का घोड़ा है वह घोड़ा कब मिलेगा और उसकी माँ ने अधिक प्रश्नों से बचने के लिए उससे कह दिया, "बेटे यह ज़ो गूँगेजी का घोड़ा है न वो तुम्हें आजकल में कभी भी मिल सकता है।" रनवा को घोड़ा लेना था इसलिए वह गूँगे के घर उसी

समय ही चल दिया और गूँगे के घर पहुँचने के बाद रनवा ने गूँगे से कहा, "माँ ने कहा था कि घोड़ा कभी भी मिल सकता है और घोड़ा मुझे अभी ही चाहिए और आप मुझे वो घोड़ा दे दीजिए।" तभी गूँगे के सामने एक समस्या आयी कि अभी तक तो उसकी घोड़ी ने कोई बच्चा नहीं दिया था। कोई बच्चा पैदा हुआ ही नहीं था। अब उसने सोचा कि इस बेवकूफ को बातों से कैसे टाले। इसकी बातों में फँस जायेंगे तो पागल हो जायेंगे। और पीछा छुड़ाने के लिए उसने एक बड़ा पत्थर उठाकर एक लम्बे-से थैले में रखकर रनवा को देते हुए कहा, "मैंने इस थैले में घोड़े का अण्डा रख दिया है। यह तुम्हारे लिए है। घर पहुँचने के बाद इस अण्डे से घोड़ा अवश्य निकलेगा। बस तुम्हें एक बात करनी है। वास्तव में इसकी खूब देखभाल करना ताकि यह फूट-फाट न जाये।" यह कहकर उसने उसे थैला दे दिया।

रनवा ने घोड़े का अण्डा समझकर उस पत्थर को संभालकर रखा। उसे कन्धे पर उठाकर ले गया और लटकाते हुए वापस लाया और रास्ते में जो पत्थर का वजन था उसको वह सह नहीं सका। उसने सोचा यह जो घोड़े का अण्डा है, यह बहुत भारी है, इसका मतलब है कि घोड़े का अण्डा भारी होता है अगर इतना भारी अण्डा उठाने के बाद घोड़ा प्राप्त करना है तो इससे क्या फायदा है। इससे तो अच्छा है कि इसको फेंक ही दिया जाये। बड़े ही निराश होकर उसके विचारों में यह परिवर्तन आया और ऐसा सोचकर उसने अपने कन्धे से लटते हुए थैले को उतारा और सड़क के किनारे जो झाड़ी थी उसमें फेंक दिया। पत्थर के साथ जब थैले को झाड़ी के ऊपर फेंक दिया तो झाड़ी के बीच छिपकर बैठा एक खरगोश वहाँ से डरकर भाग खड़ा हुआ।

उसे देखकर रनवा ने समझा कि ये घोड़े का बच्चा है जो अण्डे के फूट जाने से बाहर निकल आया है और दौड़ रहा है। बहुत तेजी से दौड़ रहे खरगोश के पीछे वह उसको पकड़ने के लिए भागा।

रनवा खरगोश के पीछे इतनी तेजी से दौड़ रहा था जैसे कि मानो उसके लिए ये जीवन-मरण का प्रश्न हो। वे एक खेत पर पहुँचे और वहाँ पहुँचकर खरगोश उसकी आँखों से ओझल हो गया और जिस खेत पर पहुँचा वो सवाटु, मठ्न्, खौः पति-पत्नी और बेटी का खेत था जहाँ वो धान निकाल रहे थे।

सवाटु और मठुन् खौः बेटी और पत्नी मठ्न् वाट् यह किसान लोग थे। बहुत ही थके-मांदे रनवा को खेत पर आये हुए देखकर उन्होंने उसे पानी पिलाया, खाना खिलाया और उसकी सेवा की व उसे अपने घर पर ले गये। उनका अपना कोई बेटा नहीं था। इस वक्त वौमीगम को कहीं और जाने की

जरूरत नहीं है, हमारे पास ही रहो–यह कहकर उन्होंने उसे रोकने की कोशिश की । रनवा उसी घर में रह गया और एक साल के बाद दो साल, दो साल के बाद तीन साल और उसे यूँ रहते–रहते वहाँ पाँच साल बीत गये।

इसी तरह रहते–रहते जब पाँच साल पूरे हुए तो एक दिन रनवा ने एक व्यापार करने के लिए, कहकर बेचने के लिए सामान इकट्ठा किया और उसने सामान को भर लिया। लेकिन उसके लिए इस काम के लिए कोई मार्गदर्शक नहीं था, असल में जो दो बड़ी–बड़ी टोकरियाँ उसके सामान से भरी थीं व्यापार के लिए उन दोनों को वह एक बहंगी में डालकर कन्धे पर बहंगी उठाकर कहाँ जायेगा उसे यह भी पता नहीं था। बहंगी के सामने जो उसने टोकरी लगायी थी वो जरा बड़ी थी और जो टोकरी उसे दिखायी देती थी उसे ही उसने अपना मार्गदर्शक मान लिया और उसी के पीछे–पीछे वो यात्रा करने लगा। रनवा उस टोकरी को उठाकर बड़े ध्यान से जा रहा था। दोपहर तक एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ अन्य व्यापारी भी विश्राम कर रहे थे। वहाँ अन्य व्यापारियों के साथ में वो भी जाकर मिल गया और उन व्यापारियों से मिलकर बातचीत करने लगा। एक सामान उठानेवाले ने रनवा जो सामान उठाकर लाया वो कितना भारी है यह देखने के लिए, उसने सामान उठाकर देखा और उसने वापस रख दिया और सबने यही कहा कि सब लोग जो जितना भी सामान उठाकर लाये हैं उसमें रनवा का सामान ही सबसे भारी है, ऐसी उन लोगों ने प्रशंसा की।

सामान जो उठाकर लाये थे वो व्यापारी लोग उस जगह पर विश्राम करने के बाद अपने–अपने सामान उठाकर जहाँ–जहाँ जाना चाहते थे चल दिये। रनवा ने भी अपने सामान को उठाया और उठाने के बाद वो भी वहाँ से चल पड़ा। वो जैसा कि पहले बता चुके हैं कि जो सामने टोकरी रखी हुई थी, उसको और तो कुछ नजर नहीं आता था, वो उस टोकरी को देखकर ही आगे बढ़ता जाता था। शाम के समय उसके साथ एक अजीब घटना घटी। उसने देखा कि जिस घर में वो रह रहा था, उस घर में जो किसान था उसकी खूबसूरत बेटी मठुन् खौः से मिलती–जुलती एक युवती उसे मिली और जिस जगह पर वह लड़की खड़ी थी वह उसी किसान के घर के सामनेवाली जगह थी। ऐसा लगता था कि वो फिर से जो किसान के घर के सामने मैदान था उस पर आ गया है।

रनवा सोचने लगा कि जिस शहर में पहुँचा हूँ वहाँ भी जिस घर में मैं रहता था उस घर के मालिक की जो जवान बेटी थी, उससे मिलती–जुलती शक्ल क्या अभी भी रह रही है और उसने यह सोचा तो घर के सामने खड़ा हो गया और हैरत से मठुन् खौः को देखता रहा। मठुन् खौः ने जब उसको देखा तो

वो रनवा के पास आयी और उसका हाथ पकड़कर बोली, "वापस क्यों आ गये?" यह पूछकर वह उसको घर के अन्दर ले गयी।

हुआ यह कि जहाँ वो विश्राम कर रहा था अन्य व्यापारियों के साथ में तो व्यापारियों के जो मजदूर थे, उन मजदूरों में से एक ने रनवा की जो बहंगी थी उठाकर देखी और जब उसको उसने वापस रख दिया तो जो बड़ी टोकरी थी उसको उसने जिस रास्ते की ओर से आया था उसी रास्ते की तरफ उल्टा करके वापस रख दिया था और यह रनवा एक ऐसा था जिसने अपना मार्गदर्शक एक बड़ी टोकरी को बनाया हुआ था। बड़ी टोकरी का मुँह जिस ओर था वो उसी ओर चल पड़ा और उस बड़ी टोकरी का मुँह फिर से उसी के घर की ओर जाता था जहाँ से वो आया था और इस तरह रनवा अपने घर में वापस पहुँच गया।

उस रात किसान की पुत्री और किसान की पत्नी दोनों यह सोचने लगे कि यह युवक रनवा बहुत दया और करुणा के योग्य है। इसके सामने नेतृत्व देकर इसको कोई काम खुद करवाने से तभी यह अपना काम खुद करता है और ठीक से करता है तो इसीलिए उन लोगों ने इस पर दया करने की बात सोची। रनवा के साथ उनका व्यवहार हर रात की तरह नहीं था। हर रोज की तरह नहीं था, हर रोज से ज्यादा बेहतर, ज्यादा मानवतापूर्ण और ज्यादा दयावान और करुणावान था।

एक दिन रनवा मठुन् खौः के साथ जब भैंसे चरा रहा था तो रनवा ने सोचा कि मंठुन् खौः लोगों के पास में अच्छी तरकारी खाने के लिए नहीं है और इसलिए जो यह भैंसा है इसके जो दिल है अगर इसको तलकर खाया जाये तो बहुत बढ़िया होगा। और उसने सोचा कि इसके दिल को निकाल लेता हूँ और भैंसे का दिल निकलेगा तो तुम अपनी बर्मी टोपी जिसको खमौः कहते हैं इसमें तुम उसे गिरा लेना। उसने यह बात मठुन् खौः से कही और जो भैंसे का मल निकलने का स्थान था उसके नीचे बाँस की जो टोपी थी उसको वहाँ उसने रखा और रनवा ने भैंसे के मल छिद्र में हाथ डाला, जैसे ही हाथ भैंसे के मल छिद्र में गया भैंसा डरकर उछलने–कूदने लगा और रनवा भी भैंसे के साथ चार–पाँच कदम गिरता–लुढ़कता उसके साथ–साथ घिसंटता हुआ गया और रनवा का सारा शरीर भैंसे के मल में, गोबर में लिपटता हुआ वहाँ गिरकर रह गया।

इस दृश्य को देखकर मठुन् खौः अट्टहास लगाकर हँसने लगी, वो इतना हँसी, इतना हँसी कि शायद वो जीवन में इतना कभी नहीं हँसी होगी और इतनी बुरी तरह वो हँस रही थी कि हँसते–हँसते वो बेहोश होकर गिर गयी। सारे शरीर पर गोबर से लथपथ हुए, रनवा ने जब देखा कि उसके दुर्भाग्य पर

अट्टहास लगाकर हँस सकनेवाली मठुन् खौः अब बेहोश हो गयी है, लेकिन उसको समझ नहीं आया कि मठुन् खौः क्यों बेहोश हुई है, बल्कि क्रोधावेश उसने यह जानने की कोशिश नहीं की और एक थप्पड़ खींचकर लगा दिया, मठुन् खौः बेहोश थी और उसको क्या हुआ, क्या न हुआ इस बात का बिल्कुल भी पता न चला, गहरी बेहोशी में वो पहुँच गयी। तब रनवा जिसे यह सिखाया गया था कि अपने घरवालों से प्यार करना चाहिए, करुणा करनी चाहिए। दया करनी चाहिए। यह बात गूँगा महोदय ने उसे समझायी थी और मठुन् खौः को प्यार से हिलाकर देखा, तभी मठुन् खौः को होश आया।

उस दिन से मठुन् खौः ने सोचा कि रनवा को मैं संभालूँगी। मनमानी करने से मुझे ही रोकना होगा। जब तक मैं न कहूँ, जब तक मैं आदेश न दूँ उसे कुछ नहीं करना होगा। अगर वो ऐसे कर सकेगा तो ही उसके लिए सब कुछ सही चलेगा। इसलिए उसने रनवा से कहा, "रनवा मेरे कहे बिना तुमको कुछ नहीं करना है समझ गये।" उसने बड़े प्यार से यह बात कही। रनवा मठुन् खौः की बात को मानता था। इसलिए लोग कहने लगे कि रनवा पहले से अब तो बहुत सुधर गया है, संभल गया है।

रनवा किसान के घर में बड़े प्यार से रह रहा था। उसकी घर के मालिक, मालकिन और उसकी बेटी के साथ बहुत अच्छी गुजर रही थी। अब लड़की के माता–पिता ने रनवा को ही अपना दामाद बनाने का फैसला कर लिया और उसने इस बात के बारे में अपने मित्रों से सलाह की कि क्या यह उचित होगा? उन्होंने दूर में रह रहे अपने रिश्तेदारों को बुलाकर भी इस बात के बारे में आपस में सलाह की और जब उन्होंने अपने रिश्तेदारों को बुलाया तो उनको मालूम हुआ कि जो यह रनवा है यह वौमिला का बेटा है। वौमिला ने कहा कि हमारा बेटा मठुन् खौः के प्यार से समझाने और बताने के कारण अब बहुत ही ज्यादा सयाना हो गया है और यह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई है और इसके अलावा वौमिला जो है मायु और डामा बनी हुई है। यह जब मालूम हुआ तो दोनों की शादी के लिए स्वीकृति दे दी और यह शादी बड़े ही धूमधाम से वो करने के लिए राजी हो गये।

नोट : अभी हमने अपने पाठकों के लिए दो शब्दों का प्रयोग किया था। हम यह जानते हैं कि वो दोनों शब्द हमारे पाठकों के लिए बिल्कुल समझ नहीं आये होंगे। वास्तव में कछिन् भाषा में कछिन् लोगों के जो रीति–रिवाज हैं उसमें अगर रिश्तेदारी मायु है तो यह कहते हैं कि रिश्तेदार पत्नी के रिश्तेदार की तरफ से हैं और अगर यह कहा जाये कि रिश्तेदारी डामा है तो डामा जो है यह

पति की ओर से रिश्तेदारी होती है। इस तरह रनवा को सुधारने में बड़े–बड़े महारथी नाकामयाब हुए, उसे एक युवती के प्यार ने, उस युवती के जिसका नाम मठुन् खौः था उसके प्यार ने, उसको समझाने–बुझाने और सँवारने में वो सफल हुई। इस कहानी में एक बात का और पता चलता है। मठुन् परिवार और वाँवुये खानदान में मायु का रिश्ता है यानी कि पत्नी की ओर का रिश्ता है और वाँवुये जो खानदान है वो मठुन् खानदान से डामा का रिश्ता रखता है, मतलब कि पति की ओर का रिश्ता रखता है।

दूवा और राजा

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में राजाओं द्वारा शासन किये जानेवाले ऐसे कई देश होते हैं, उसी तरह कछिन् प्रदेश में जो पर्वत श्रेणियाँ हैं वहाँ लोग राजाओं की तरह शासन करते हैं और जिस तरह राजा लोग शक्तिशाली होते हैं, सामर्थ्य रखते हैं उसी तरह ये लोग भी शासन करते हैं और सामर्थ्य रखते हैं, यह एक ऐसे समय की घटना की कहानी है।

इस तरह एक राजा थे, जिनको अपने राजा होने का बड़ा गर्व था और उसी तरह दूवा अपने प्रदेश में राज्य कर रहा था। किसी दिन किसी वजह से दोनों एक जगह मिले और उन्होंने व्यक्तिगत प्रतियोगिता करने का या शक्ति परीक्षण करने का फैसला किया।

पहले दिन राजा और दूवा ने अपने–अपने खजानों का मुकाबला किया। सोना–चाँदी, सुख–वैभव इन सबके विषय में एक–दूसरे से वार्तालाप की। उस विषय में मुकाबला हुआ। तब कछिन् पर्वत श्रेणी पर जिस दूवा का अधिकार था उसने कहा, "महाराज, मुझे नहीं लगता कि आपके पास इतना सोना–चाँदी या धन होगा जितना कि मेरे पास है। मेरे जो दास–दासियाँ और नौकर–चाकर, गुलाम हैं, एक बार जब वो भोजन खाते हैं और खाने के बाद जिन बर्तनों का या जिन वस्तुओं का वो प्रयोग करते हैं उनको एक बार प्रयोग करके फेंक देते हैं। पहले आप बताइए क्या आपके यहाँ ऐसा होता है? क्या आप इतना सामर्थ्य रखते हैं?" दूवा ने प्रश्न किया।

तभी महाराज को दूवा की बात पर बड़ा ही झटका लगा और वह बोले, "सामर्थ्य क्यों नहीं रखता दूवा, वास्तव में तेरे पास में मेरे जितना सोना–चाँदी नहीं है। अगर तुम्हारे जैसा व्यक्ति सामर्थ्य रखता है तो मेरे बारे में शंका कैसी? मैं अवश्य ही सामर्थ्य रखता हूँ।" राजा ने दूवा को जवाब दिया। उसी समय राजा ने अपने खजाने में से आधे को निकाला और उसने आधे पैसों से बर्तन खरीद लिए। उसके बाद अपने नौकर–चाकर, दास–दासियों में वे बर्तन बाँट दिये और यह आदेश दिया कि यह जो तुम लोगों को बर्तन वगैरा दिये जाते हैं



इनमें एक ही बार भोजन खाकर इनको फेंक देना।

नौकर–चाकरों ने महाराज की आज्ञा के अनुसार पूरा पालन किया और कुछ ही दिनों बाद उनके जो बर्तन थे वो खत्म हो गये। जब महाराज को मालूम हुआ कि अब बर्तन खत्म हो गये हैं तो उन्होंने अपने खजाने में से आधा खजाना जो था उसको फिर बर्तनों के लिए निकाला और नौकर--चाकर दास–दासियों ने भी उन्हीं बर्तनों में खाना खाया और फिर उन्होंने उन्हें फेंक दिया। इसके बाद में वो फिर खाली हो गया।

इस तरह महाराज ने बर्तनों के ऊपर सारा खजाना खाली कर दिया। एक ओर जब महाराज का खजाना खत्म होनेवाला था तभी दूवा ने सोचा कि जरा मालूम तो किया जाये। पता तो लगाया जाये कि हालात कहाँ तक पहुँचे हैं, इसलिए वो राजा के पास गये और उन्होंने जाकर देखा। इसी तरह महाराज का खजाना जब बर्तनों की वजह से खत्म होनेवाला था तब उन्होंने सोचा कि यह दूवा जो है इसकी क्या हालत है, इसका भी तो पता करना चाहिए। इसलिए उसने अपने आदमी भेजे ताकि वो दूवा के पास जाकर जरा देखकर लौटें। तभी दूवा के जितने दास–दासियाँ और चेले–चपाटे थे उनको जैसे दूवा ने सिखा रखा था भोजन एक बार खाने के बाद जिस चीज में जिस वस्तु में वे भोजन करते थे, उनको फेंक दिया जाता था। यह बात बिल्कुल सत्य है लेकिन जिस चीज में, जिस वस्तु में वे भोजन डालकर खाते थे वे बर्तन नहीं थे हरे पत्ते थे। यह बात राजा के आदमियों ने देखी और हरे पत्ते संसार में तब तक रहेंगे जब तक वन और पहाड़ रहेंगे, इसलिए महाराज को दूवा से हार माननी पड़ी।

दूवा ने बड़ी होशियारी और संयम से काम लिया इसलिए वो जीता, लेकिन दूवा के ऊपर असन्तुष्ट हुए महाराज को एक दिन एक विचार आया तो उन्होंने एक टेढ़े–मेढ़े सींग को लिया और दूवा से कहा, "भाई दूवा ! तुमने बर्तनों के मामले में मुझसे धोखाधड़ी करके, चालाकी करके विजय प्राप्त की थी। इतने चालाक, इतने होशियार, इतने धोखेबाज अगर हो तो तुम इस टेढ़े–मेढ़े सींग को सीधा कर दोगे तो मुझे करके दिखाओ।" यह कहकर बैल का सींग उन्होंने दूवा को दे दिया। दूवा ने बैल के सींग को आग में गरम किया और उसको नरम करने की कोशिश की और नरम करने के बाद उसने उसको सीधा कर दिया, इसके बाद दूवा एक टेढ़े–मेढ़े सूखे कद्दू को निकालकर लाया और उसने महाराज को देते हुए कहा, "महाराज आपके टेढ़े–मेढ़े बैल के सींग को मैंने सीधा करके आपको दे दिया है। अब आपकी बारी है इस टेढ़े–मेढ़े कद्दू को सीधा कर दें।" यह कहकर सूखे हुए कद्दू को उसने महाराज को दे दिया।

महाराज ने बहुत सोचा लेकिन उनको यह समझ नहीं आया कि सूखा हुआ कद्दू कैसे सीधा किया जाये। उन्होंने जरा सी ताकत लगाकर प्रयास किया तो पतला–सा जो उसका छिलका था, वो एकदम टूट गया और कद्दू के टुकड़े–टुकड़े हो गये। तभी दूवा ने महाराज से कहा, "महाराज आप जब भी मुझसे मुकाबला करते हैं हार जाते हैं। अब आप ऐसा कीजिए कि मुझसे और बात या मुकाबला या प्रतियोगिता करने की बात अब और न सोचें।" निराश होकर अपने महल को लौटे महाराज दूवा पर बहुत असन्तुष्ट थे, और जब–जब भी उन्हें दूवा पर क्रोध आता था, तो वो एक पतले–पतले धागे को लेकर उसको गोल–मोल कर दिया करते थे। उसको जितना भी उलझा सकते थे, उलझा देते थे, धागे उलझ जाते थे, और उलझे हुए धागों को फिर से सुलझाने के लिए दूवा के पास एक नौकर को भेजकर उन्होंने कहा। दूवा ने जो धागों के उलझने की समस्या थी उसको सूत कातनेवालों को बुलाकर सुलझाया और एक फल जिसका नाम है 'डौंका: तैं: जोकि पहाड़ी इलाके में यह होता है, उस फल के अन्दर का जो हिस्सा था, उसको भेजकर कहा जरा इसको साफ करके दिखलाइए आप। यह डौंका: तैं: नाम का जो फल है यह बिल्कुल डोरी जैसा एक फल होता है और उसके अंदर भी जो हिस्सा होता है सूखा हुआ बिल्कुल जैसे कि डोरी का सूखा जाला होता है, उसी तरह वो एकदम उलझा हुआ होता है, धागे ज्यादा बारीक होते हैं और धागे से ज्यादा यह कोमल होता है। इस तरह का यह एक फल होता है।

महाराज ने नौकर द्वारा लाये हुए उस डौंका: तैं: फल को आराम से जब छिलका हटाकर देखने की कोशिश की तो अन्दर धागे की तरह उलझे हुए उसके जो पतले–पतले धागे की तरह जो रेशे थे वो टूट गये।

तब उस समय से महाराज ने कहा, "दूवा और कछिन् जाति इनका बहुत ज्यादा दिमाग होता है और यह हमसे ज्यादा दिमाग रखते हैं।" एक बार विचार व्यक्त करने के बाद उसने फिर कभी दूवा से मुकाबला न करने का फैसला किया और न ही उसके बाद उसकी दूवा के साथ मुकाबला करने की हिम्मत कभी हुई।

उल्लू और गिलहरी

कहते हैं किसी समय उल्लू और गिलहरी मित्र हुआ करते थे। ये दोनों पौं: माई खौ: नदी के पास ही विचरते थे। एक दिन रात के समय खई डौं: नौं: का देहान्त हो गया और डोवौं: डौं: उत्सव मनाया जाने लगा। डोवौं: डौं: का मतलब है कि जो लोग देवता को मानते हैं और देवता को माननेवाले लोगों में से यदि किसी का देहान्त होता है तो गाँव में क्वांरे और क्वांरियाँ और जो लोग जवान हैं वो लोग रात के समय शमशान घाट जाते हैं और वो शमशान घाट में जाकर जिनके घर में मौत हो गयी है, उन घरवालों को सान्त्वना देते हैं, उनके गिरे हुए मनोबल को ऊपर उठाने की बात को या अशान्त मन को शान्त करने के इरादे से वो उनके सामने जाकर उनका मन बहलाते हैं, नाचते हैं, गाते हैं और इसी नाचने–गाने और उनका उत्साह बढ़ानेवाली बातों को करने का जो उत्सव है उसको डोवौं: डौं: उत्सव कहते हैं।

अब यह डोवौं: डौं: उत्सव में जाना चाहते थे इसलिए जो ये उल्लू है उसने गिलहरी को अपने साथ चलने को कहा तब गिलहरी बोली, "मित्र, उल्लू मैं डोवौं: डौं: को जाना चाहती हूँ। लेकिन जो पौं: माइ खौ: नदी है न मैं उसको पार नहीं कर पाऊँगी।" गिलहरी ने कहा।

"नदी के उस पार किनारे तक जाने के लिए चिन्ता मत करो, तुम मेरी पीठ पर चढ़कर बैठ जाना।" यह प्रस्ताव था उल्लू का और उसने गिलहरी को अपनी पीठ पर बैठा लिया और दोनों डोवौं: डौं: उत्सव देखने के लिए नदी को उड़कर पार करने लगे।

नदी के उस पार जब वो पहुँचे तो उल्लू भी अपने रास्ते चल पड़ा और गिलहरी भी अपनें रास्ते पर चल पड़ी, वो अलग–अलग हो गये और वहाँ से जुदा होकर अपनी–अपनी मंजिल की ओर जाने लगे। जब रात का समय हुआ तो गिलहरी डोवौं: डौं: उत्सव में आनंद लेती रही और इस बात की प्रतीक्षा करती रही कि उल्लू आ रहा है, आधी रात से भी जब ज्यादा समय हो गया और उल्लू नहीं आया तब गिलहरी घर के उस हिस्से में गयी जहाँ घर के मालिक चावल



कूट रहे थे, जहाँ ओखली होती है। वहाँ जाकर जब उसने देखा तो क्या दिखायी दिया कि जो उल्लू महाशय हैं वो दर्शक जो चीजें त्यागकर चले गये हैं उनको वो उठा–उठाकर खा रहा है और जो शराब की बूँदें वो छोड़ गये हैं उनको उठा–उठाकर चख रहा है।

डोवौंः डौंः जैसे उत्सव में आने के बाद इस तरह गिरी हुई चीजों को उठाकर खाना यह बहुत ज्यादती थी, लोग देखते तो क्या कहते। लोगों को अजीब लगता कि यह क्यों नीचे से उठाकर खा रहे हैं, इसलिए गिलहरी ने उल्लू से कहा, "तुम्हें शर्म नहीं आती यह सब उठाकर खाने में।" तब उल्लू को क्रोध आया और वो बोला, "अरी, नन्हीं गिलहरी तू चुप बैठ, कल सुबह होते ही मैं तुमको अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता हूँ और तब मैं तुमको बताऊँगा कि मैं क्या हूँ।" यह कहकर जहाँ वो चाहता था वहाँ उड़कर चला गया। दूसरे दिन गिलहरी पौंः माई खौः नदी के दूसरी ओर पहुँचना चाहती थी मगर उसे पहुँचानेवाला कोई नहीं मिला, इसलिए गिलहरी को नदी के उस पार पहुँचानेवाले की तलाश थी और इसके बारे में वह सोचने लगी। जब उसे और कुछ न सूझा तो उसने मरने का ढोंग रच लिया। मरी हुई होने का ढोंग उसने रचा, उसी समय एक बूढ़ी तिलों से भरी हुई एक टोकरी को सिर पर उठाकर वहाँ से जा रही थी।

बूढ़ी ने जब मरी हुई गिलहरी को देखा तो अचानक ही उसे अपने घर में रह गया अपना पोता याद आया जिसके लिए वो उस गिलहरी को ले जाने के लिए तैयार हो गयी और उसने उठाकर मृत गिलहरी को तिल की टोकरी में डाल दिया और नदी को पार कर घर आयी। जब बूढ़ी नदी को पार कर रही थी तो गिलहरी उसकी टोकरी में से तिलों को पेट भरकर खाती आ रही थी और जैसे ही वे नदी के दूसरे किनारे पर पहुँचे तो उसने टोकरी में से छलाँग मारकर कूदकर वो जहाँ जाना चाहती थी वहाँ चली गयी।

घर पहुँचने के बाद ही बूढ़ी को मालूम हुआ कि उस टोकरी में गिलहरी नहीं है, पहले तो वो समझ रही थी कि तिलों में कहीं–न–कहीं दबी होगी और तभी उसने फिर क्या किया कि डबरा लिया जिसमें कि तिलों को साफ करते हैं। तिलों को साफ करके देखा। बूढ़ी ने जो तिल के छिलके साफ करके निकाले तो पास में कुछ यैः खड़े हुए थे जिनकी आँखों में वह गिर गये।

आज तक यैः (कौआ) लोगों की जो आँखें हैं, लाल होती हैं। इसका कारण है कि उनमें छिलका जो है वो गिर गया था और उन्होंने लगातार आँखें मली थीं, आँखें रगड़ी थीं, इसलिए वे लाल हो गयीं। इस पक्षी ने जब यह देखा कि उसकी आँख के अन्दर तिल का छिलका चला गया है तो उसने क्रोध में आने के बाद

जो भी कुछ उसको दिखायी देता उसको वह चोंच मार–मारकर तोड़ डालता।

एक दिन उसने गिलहरी के घोंसले को भी चोंच मारकर तोड़ दिया। अब गिलहरी को इस बात पर क्रोध आया कि इस पक्षी ने उसके घोंसले को चोंच मारकर तोड़ दिया है और इसी क्रोध में उसे जो भी मिला सारी वस्तुओं को काटकर नष्ट कर दिया। एक दिन उसने गर्फौः ई नाम के किसी फल को काटकर नीचे गिराया और वो फल पेड़ के नीचे बैठे किसी केकड़े के ऊपर जाकर गिरा।

केकड़े ने पूछा, "मेरी पीठ पर किसने फल गिराया है?" उसे बहुत क्रोध आया और इसलिए वो चिल्लाया और जितनी भी मछलियाँ उसको मिलीं उन्हें उसने अपने अँगूठे में दबा लिया।

इसके बाद मछलियों ने भी उनकी दुमों को काट देने के कारण वो भी बड़ी क्रोधित हुईं और उन्होंने नदी के किनारे को काटना शुरू किया।

मछलियों के काट खाने से नदी का किनारा भी डर गया और उसमें छोटे–छोटे नाग बह गये। इस बात का जब नागराज को पता चला तो इस बात से सम्बन्धित जितने भी लोग थे उनके बारे में उन्होंने पूछताछ की। यह जो छोटे–छोटे नाग नदी के पानी के बहाव में जो बह गये, यहाँ तक जितनी भी घटनाएँ घटीं उसका आधार, उसका कारण उल्लू और गिलहरी के बीच में हुई समस्या है। जो ये घटनाएँ घटीं उन सबकी वजह उल्लू और गिलहरी हैं, यह बात जब नागराज को समझ में आयी तो उन्होंने कहा, "आज से लेकर न तो गिलहरी कभी नदी को पार करेगी और यह जो उल्लू है यह भी पेड़ों के जो खोखले होते हैं उनके अन्दर छिपकर रहेंगे। उल्लू केवल अँधेरे में ही बाहर निकला करेंगे।" उन्होंने यह आज्ञा निकाली।

उस दिन के बाद गिलहरियाँ कभी नदी पार नहीं कर पायीं और जो उल्लू थे, दिन के समय पेड़ों के खोखलों में छिपकर रहते आ रहे हैं।

लोगों का अनुसरण मत करो

पुराने ज़माने में एक पलौः गाँव था, वहाँ एक बहुत ही गरीब व्यक्ति हुआ करता था। उस व्यक्ति ने बड़ी कोशिश की वह अपनी गरीबी से मुक्त हो लेकिन सफल नहीं हो पाया।

उस गाँव से काफी दूर पर एक घना जंगल था। उस घने जंगल के आरम्भ में ही एक पीपल का विशाल वृक्ष था। उस विशाल पीपल के वृक्ष पर एक बन्दरों का झुण्ड रह रहा था। जंगल में जो लोग घूमने जाया करते थे वो इस पीपल के वृक्ष क़े नीचे जाने की कोशिश नहीं करते थे। जो लोग इस पीपल के पेड़ के पास से गुजरकर जाते थे उन्हें बन्दर घेरकर काट लिया करते थे।

लेकिन उन बन्दरों के पास सोने और चाँदी के घड़े थे। इस बारे में जाननेवाला एक गरीब था, उसने फैसला कियां कि बेशक भले ही जान चली जाये, रात के समय जब सारे बन्दर सो रहे होते हैं वह पीपल के पेड़ के नीचे प्रवेश करेगा। उसने अपने सारे शरीर पर शहद मल लिया, घी मल लिया और वहाँ मरने का नाटक करके लेट गया। सुबह हुई, प्रभातं हुआ, शहद और घी में लिपटे एक इन्सान की लाश देखकर उस लाश से आ रही बदबू से प्रभावित होकर पेड़ पर रहनेवाले सारे बन्दर पेड़ से नीचे उतर आये। उनमें से सबसे वृद्ध बन्दर भी नीचे उतरा जिसके पास में सोने और चाँदी के बर्तन थे और वह सोने और चाँदी के बर्तन साथ में लेकर ही नीचे उतरा। जैसे ही सोने और चाँदी के बर्तनों को मरने का अभिनय कर रहे व्यक्ति ने देखा तो वह बड़ी छलाँग मारकर उठ खड़ा हुआ और अचानक बन्दरों को डराकर सोने और चाँदी के बर्तनों को उठाकर ले गया। वह बर्तनों को अचानक उठाकर तेजी से दौड़ खड़ा हुआ। बन्दर अचानक हैरान होकर आश्चर्यचकित होकर अपने–अपने स्थान पर खड़े रहे, उनको यह नहीं सूझा कि क्या करना चाहिए। उनको यह नहीं समझ में आ रहा था कि क्या हुआ है? इसलिए उन्होंने कुछ समय, कुछ क्षण वहाँ खो दिये और उन्हें जब परिस्थिति का आभास हुआ, तब उस गरीब के पीछे–पीछे उसे पकड़ने के लिए दौड़े। वह गरीब उनके हाथों से निकल चुका था।



उस गरीब का एक पड़ोसी था। जब उसने देखा कि वह गरीब रातों–रात अमीर हो गया है तो उसे बड़ी हैरानी हुई। और उसने उस गरीब से पूछा कि तुम रातों–रात इतनी जल्दी कैसे अमीर हो गये। तो गरीब ने बताया कि उसने क्या किया और उसे सोने और चाँदी के घड़े कैसे मिले, अचानक उसके जीवन में परिवर्तन होने की वजह क्या है यह बता दिया।

इस बात को सुनकर पड़ोसी गाँववाला भी जंगल में गया। अपने शरीर पर उसने घी और शहद मला और दोपहर के समय ही पीपल के पेड़ के पास पहुँच गया। बन्दर जिनके सोने और चाँदी के घड़े चले गये थे वो बहुत क्रोध में थे और जैसे ही बन्दरों ने उस व्यक्ति को देखा, तो उन्होंने समझा कि उस दिन हमारे सोने और चाँदी के बर्तन ले जानेवाला व्यक्ति यही है और वो पेड़ से अचानक नीचे आये और उन सबने एक ही बार में उस व्यक्ति पर मिलकर हमला बोल दिया और उस व्यक्ति को दाँतों से काट–काटकर मार डाला। इसलिए हम लोगों को ऐसा काम नहीं करना चाहिए जो दूसरों ने किया हो और उन्हें उससे लाभ हुआ हो। इसलिए हमको यह भी समझ लेना चाहिए कि यदि किसी काम से किसी अन्य व्यक्ति को लाभ हुआ हो तो जरूरी नहीं उसकी अंधाधुंध नकल करके हम भी वही काम करें और उसमें हानि उठाएँ।

सुन्दर और कुरूप

पुराने ज़माने की बात है, एक गाँव में दो मित्र थे। एक बहुत सुन्दर था और एक बहुत कुरूप था। दोनों जवान थे और दोनों मित्र थे, दोनों के जो नाम थे वो यथा नामः तथा गुनः कहावत को चरितार्थ करते थे, जिसका नाम सुन्दर रखा था वो वास्तव में ही सुन्दर था और जिसका नाम कुरूप रखा वो वास्तव में ही कुरूप था। लेकिन दोनों बचपन के ही साथी थे और जवान होने पर भी उनकी मित्रता वैसे ही कायम रही और जहाँ भी रहते एक साथ रहते थे और जहाँ भी जाते थे एक साथ जाते थे, एक–साथ खाते–पीते थे।

दोनों एक–दूसरे के गले लगकर बड़े हुए। ऐसा होने के बावजूद भी उनके रंग–रूप में काफी अन्तर था। इस वजह से गाँववाले एक को देवता और दूसरे को दैत्य कहकर छेड़ा करते थे।

उन दोनों के रूप में काफी फर्क था, दोनों के व्यक्तित्व में जिस तरह का फर्क था, उसी तरह उनके स्वभाव भी अलग–अलग थे, सुन्दर जिस तरह नाम से सुन्दर था उसका स्वभाव उस तरह सुन्दर नहीं था। वो आलसी था और स्वभाव से वो धोखेबाज था। जहाँ तक कुरूप की बात है उसके पास अच्छी सूरत न होने पर भी वह स्वभाव से बहुत ही सीधा–सादा और मेहनत मजदूरी करनेवाला एक ईमानदार युवक था। इसलिए जो सुन्दर था, उसके माता–पिता का जब देहान्त हुआ तो पहाड़ी इलाके में खेती करने का काम जो उसके माता–पिता इतने वर्षों से करते आ रहे थे, उसे वह नहीं कर पाया और बस उसने आसान जीवन पकड़ लिया। उसे आसानी से जो फल इत्यादि मिल जाया करता था वह उसे ही खा लिया करता था। आसानी से मिले फल से अभिप्राय यह है कि जो आसानी से फल मिलते हैं मात्र उन्हें ही खाकर गुजारा कर लेता था। लेकिन कुरूप जो था वह अपने माता–पिता के परिवार के समय से चले आ रहे पहाड़ी इलाके में सीढ़ियाँ बनाकर खेती–बाड़ी के कार्य को बड़ी अच्छी तरह और बहुत ही विश्वास के साथ किया करता था। हमेशा उसको खाने–पीने की कोई फिक्र नहीं होती थी और न ही उसको कभी खाने–पीने की कोई दिक्कत



हुआ करती थी। पेट भरकर उसको खाना मिलता था।

इस तरह स्वभाव और सूरत दोनों में अन्तर होनेवाले दो मित्र एक ही गाँव में रहनेवाली एक सुन्दरी लादैः नाम की अनाथ लड़की के पास जाकर उसको प्राप्त करने की कोशिश कर रहे थे। लादैः भी यह जानती थी कि दोनों ही उसको पाने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन लादैः इस बात का निर्णय नहीं कर पायी थी कि क्या वो कुरूप के प्यार को स्वीकार करे या जो सुन्दर है उसके प्यार को स्वीकार करे। इस बात का उसने निर्णय नहीं किया था। अगर वो सुन्दर के प्यार को अपनाती है तो यह बात तय है कि वो एक आलसी और धोखेबाज से शादी कर लेगी और इस बात पर लोग उसका मज़ाक उड़ायेंगे कि कैसी लड़की है जिसने एक आलसी से शादी की है। और अगर उसने कुरूप के प्यार को अपनाया तो कहेंगे कि अरे, भई इसे बदसूरत आदमी ही पसन्द आया। इस तरह उसका मजाक उड़ायेंगे। ऐसा वो सोचती थी।

उसने सोचा कम–से–कम कोई मेरा मजाक तो नहीं उड़ायेगा इसलिए उसने अभी दोनों में से किसी के प्यार को भी मन्जूरी नहीं दी थी। और फिर वो सोचने लगी कि इस तरह अकेली रही तो एक अकेली लड़की, वो भी अनाथ और जवान, उसके लिए बड़े संकट, बड़े खतरे हैं। उसके लिए कोई सहारा भी नहीं है और सच बात तो ये है कि एक जीवनसाथी उसको चाहिए और जीवनसाथी का चयन भी आसानी से नहीं बड़ी सोच–समझ और गम्भीरता से करना ज़रूरी है। ये बातें एक के बाद एक उसके दिमाग में अपने–आप स्पष्ट हो गयीं। इसलिए उनके इलाके में जो समाजवाले हैं वो उसका मजाक न उड़ा पायें इससे बचने के लिए अपने पति के रूप में किसका चयन करे अभी तक वो इसी सोच में पड़ी हुई थी और निर्णय नहीं कर पा रही थी। उसने यह सोचा कि साथ तो चाहिए पर अभी तक यह फैसला नहीं कर पायी थी कि किसको अपनाये।

लादैः की मनःस्थिति के बारे में सुन्दर समझ गया क्योंकि वो वास्तव में चालाक था। वो जान गया कि लादैः क्या सोच रही है और उसने सोचा कि जैसे ही कोई अवसर मिलेगा तो वह उस अवसर का पूरा फायदा उठायेगा। अब सुन्दर कुरूप के साथ नहीं आता था। जब कभी भी वो आता तो अकेले ही आता और आकर कहता, "इस संसार में जिसके पास धन–दौलत है उनसे ही विवाह करने से मन खुश रहता है, ऐसी बात नहीं है, मर्द और औरत जो आपस में प्यार करते हैं वो भी किसी वस्तु या धन की वजह से नहीं, जरा सोचो यदि यही बात सच होती कि आदमी के पास धन होता, तभी वो प्यार की बात सोचता, तुम्हारे जैसी लड़की जिसके पास में धन–दौलत है ही नहीं औंर अनाथ है तो कौन

तुमसे प्यार की बात करता। असल में तुम रूपवती हो इसलिए हम लोग तुमसे प्यार की बातें करते हैं। मैं गलत नहीं कहता और मेरी बात को तुम गलत मत समझो लादैः।" वो इस तरह की बातें किया करता। कोशिश करता कि लादैः को गलत रास्ते पर डाला जाये।

जब बार–बार सुन्दर इस तरह की बात को दोहराने लगा तो लादैः को सुन्दर की इस तरह की बातों में कुछ आनन्द–सा महसूस होने लगा और उसने उसकी बात को मानकर सुन्दर के प्यार को स्वीकार कर लिया।

कुछ दिन बाद लादैः ने सबके सामने सुन्दर के साथ शादी कर ली। नया–नया विवाह हुआ था और आपस में काफी प्यार होता है। ऐसे समय में इसलिए लादैः और सुन्दर एक साथ फल–फूल खाकर रह सकते थे। लेकिन जैसे–जैसे समय बीतता गया, उसकी भूख दम लेने लगी। भूख के दण्ड को वह नहीं सह पाये, इसलिए एक दिन लादैः सुन्दर का साथ छोड़कर कुरूप के पास जाकर उसके साथ रहने लगी। जहाँ तक कुरूप की बात थी वो उसे सच्चा प्यार करता था। इसलिए उसने उसे अपने पास रख लिया और उससे अपने सम्बन्ध स्थापित कर लिए।

जब सुन्दर को यह मालूम हुआ कि उसकी पत्नी भूखी नहीं रह सकती तो उसे बड़ा क्रोध आया और उसने सोचा कि मैं अपनी पत्नी को जाकर ले आऊँगा। वो गया और बोला, "लादैः, तुम बहुत मूर्ख हो, यह जो कुरूप है यह एक दैत्य की भाँति डरावना है और इसका स्वभाव भी ऐसा ही है, जितना बुरा इसका स्वभाव है काला है, और तो और इसका रूप भी उतना ही काला है। तुम मेरे साथ चलो और मेरे साथ वहाँ पर चलकर रहो।" सुन्दर लादैः के पास ऐसे समय में गया जिस समय कुरूप घर में नहीं था। सुन्दर भले ही कुछ भी कहे लादैः सुन्दर की बात पर भरोसा नहीं कर सकती थी। वो इसलिए उसके साथ लौटी नहीं, तभी धोखा देने का अद्भुत दिमाग पाये हुए सुन्दर ने अपने शौच को उठाकर रसोई के पास रख दिया जो तुरती फल के खाने के बाद उसने किया था। यह निश्चित है कि तुरती फल खाने के बाद में जो मल निकलती है वह एकदम काले रंग की होती है और वहाँ रखने के बाद उसने चोरी–छिपे अपनी पत्नी लादैः को बुलाया और उसको बताया देखो, तुम अपने मर्द के मल को देखो, गू को देखो, जिस आदमी की मल इतनी गन्दी हो, इतनी काली हो, भला वो दिल का कैसे गोरा हो सकता है। वो दिल का बड़ा काला है और भयानक है। मैं अभी भी कहता हूँ कि तुम मेरे साथ चलो। लादैः फिर से सुन्दर की बातों में आ गयी और उसके साथ चली गयी।

सुन्दर और लादैः फिर से एक साथ रहने लगे। उनका एक बेटा भी पैदा हुआ। जब लादैः वहाँ नहीं होती थी तो हमेशा ही सुन्दर को बच्चा संभालना पड़ता था। वह उस बच्चे को सुलाने के लिए हमेशा एक लोरी सुनाया करता था। जिसके भावार्थ थे, मेरे बेटे, तुम्हारी माँ को पाने के लिए मैंने अपने मल से उसे धोखा दिया।

एक दिन सुन्दर के गीत को, सुन्दर की लोरी को लादैः ने सुन लिया और अब उसको यह बात समझ में आ गयी कि सुन्दर ने धोखा देकर उसे पाया है और एक दिन जब घर में सुन्दर नहीं था तो लादैः मौका पाकर अपने बच्चे के साथ फिर से कुरूप के पास पहुँच गयी।

इस बार सुन्दर कुछ नहीं कर पाया, भले ही उसने उसे धोखा देने की कोशिश की, कितना ही बहकाया, लेकिन अब लादैः को उसकी किसी बात पर विश्वास नहीं आता था। वो अब उसको साफ–साफ कहने लगी कि तुम धोखेबाज हो, आलसी हो। तुम मेरे पास मत आओ। यह कहकर उसको भगा देती थी।

सुन्दर फिर भी अपनी योजना पूरी करने के लिए हिम्मत नहीं हारता था। वह अपनी योजना पूरी करने के लिए लगातार कोशिश करता रहता था।

एक दिन जब लादैः फसल काट रही थी तो कुछ ही दूर जंगल के द्वार से सुन्दर ने एक पक्षी की भाषा में जोर से कहा, "सुन्दर के दिल में कुरूप कितना बदसूरत है। उसके लिए आदमी तो क्या पक्षी तक धिक्कारते हैं और सुन्दरता को आदमी ही क्या पक्षी तक प्यार करते हैं और उसकी कद्र करते हैं।" उसने इस तरह पक्षी बनकर आदमियों की भाषा में कहा। सुन्दर का यह विचार था कि उसके इस कथन से लादैः सुन्दरता की विशेषता को समझ जायेगी और उसके पास वापस लौट आयेगी और उसने यह जाल जानबूझकर फिर से बिछाया। पर उसे इससे आशानुकूल सफलता नहीं मिली। लादैः ने कहा कि ये चिल्लाने का शोर है पक्षी का नहीं। यह तो सुन्दर की ही आवाज़ है जो वो बदलकर बोल रहा है और उसने आपनी आवाज़ में चिल्लाकर उत्तर दिया—जाओ अब से तुम तुरती फल खाना शुरू कर दो ताकि तुम्हारे मल का रंग भी काला हो जाये। सुन्दर ने जब से यह उत्तर सुना तो उसने हमेशा के लिए लादैः का खयाल छोड़ दिया क्योंकि अब उसे यकीन हो गया कि लादैः को सारी कहानी समझ में आ गयी है और उसकी किसी बात का भी वो विश्वास नहीं करेगी।

हौ तौ

हौ तौ एक ऐसा शब्द है जोकि सुमरौ नागा जाति में टांकौः नागा ज्यादा इस्तेमाल करते हैं। हौ तौ का अर्थ है एक बाँस का बनाया हुआ बाजा जिसे बजाने पर बहुत बढ़िया, बहुत उत्तम, बहुत श्रेष्ठ आवाज़ आती है।

कहानी यूँ शुरू होती है कि बर्मा के नागा प्रदेश में किसी समय एक राजा राज्य करता था, वो राजा बहुत ही न्यायप्रिय था और पूर्ण रूप से न्याय कर राज्य करता था।

राजा अपनी प्रजा को एक रख सकता था, उनमें अनुशासन रखने की उसमें पूरी क्षमता थी। प्रशासन चुस्त था, वह एक अच्छा प्रशासक था, उसके अपने व्यक्तिगत गुणों में तलवारबाजी, धनुष विद्या और बाण बनाने की विद्या या जहर बना सकने की क्षमता, युद्ध की सारी विद्या, युद्ध के सारे व्यूह इन सबमें वो राजा बड़ा ही निपुण था, उसमें हिम्मत थी, परिश्रम कर सकता था, वो बहादुर था और एक जागरूक प्रशासक होने के कारण अन्य राजा उस पर चढ़ाई करके उसका प्रदेश जीतना चाहते थे, लेकिन वो ऐसा करने में असफल रहते थे।

इस राजा के और उसकी जाति के लोगों में एक खूबी थी। यह टांकौः नागा जाति दुश्मनों के प्रदेश में जाकर कभी भी युद्ध नहीं करते थे, किसी पर जाकर आक्रमण नहीं करते थे। अगर कोई दुश्मन उन पर आकर आक्रमण करता तो अपने बचाव में वो हथियार उठाते थे और बहादुरी का जबरदस्त प्रदर्शन कर दुश्मन को खदेड़कर ही रहते थे।

दुश्मन यह चाहते थे कि किसी तरह टांकौः नागाओं का जो प्रदेश है, उसको किसी तरह पा लिया जाये और वहाँ शासन किया जाये, इसलिए वो हर साल वहाँ आते और उनके प्रदेश पर चढ़ाई करते। लेकिन जब–जब भी दुश्मन उनके प्रदेश पर चढ़ाई करते उन्हें हमेशा हार का ही सामना करना पड़ता और उन्हें लज्जित होकर पीछे हटना पड़ता। हर साल टांकौः नागा ही जीतते थे। अपने शत्रुओं पर वो ही हमेशा विजयी हुआ करते थे।

वो किसी के प्रदेश को पाकर खुश नहीं होना चाहते थे और न ही किसी



के प्रदेश को बलपूर्वक, छल–कपट से पा लेना उनका ध्येय था, अपने बचाव में जब वो दुश्मन को खदेड़ देते थे, तो विजयी के रूप में दुश्मन का जो प्रदेश था उस पर वो कब्जा कर लेते थे, इस तरह टांकौः नागाओं का जो प्रदेश था वो काफी विशाल हो गया था, हर साल प्रशासन का जो प्रदेश था, वो और भी विशाल होता जा रहा था इसलिए महाराज ने अपने नीचे काम करनेवाले कार्यकर्ताओं को एक दिन बुलाया और उन्होंने प्रशासन के कुछ कार्यों के बारे में सलाह मशवरा किया।

सबने एक आवाज़ में कहा, "जितना भी हमारे पास में इलाका है, प्रदेश है, इनका एक ही नायक एक ही सरदार होना चाहिए और वो आप महाराज खुद हैं और हमारे इलाके से जो दूर के इलाके हैं, जिनको कि हमने अपने राज्यों के साथ मिला लिया है, जो अभी प्रथा है कि वहाँ जो हमारा राजा है उसके नीचे का कोई भी व्यक्ति जिसे महाराज कार्य सौंपेंगे वो उसका प्रशासक रहेगा और अभी जो प्रथा चल रही है वो बिल्कुल ठीक है, अगर कहीं महाराज को उनके नीचे आये हुए सारे इलाकों पर शासन करना मुश्किल लगे तो वो अपने नीचे किसी भी अधिकारी को जिसे वो उस लायक समझें, कार्यभार सौंपकर प्रशासन का कार्य चला सकते हैं।" ऐसी आम राय थी कि महाराज खुद ऐसे उचित व्यक्ति का चयन करें और उसे कार्यभार सौंपें।

महाराज ने भी अपने नीचेवाले कार्यकर्ताओं की दी गयी युक्ति के अनुसार अपने विशाल प्रदेश को दो भागों में विभाजित कर दिया। एक हिस्से पर वो स्वयं राज्य करने लगे और दूसरे हिस्से को अपने एक अधिकारी को उन्होंने सौंपा और लोगों से कहा कि वहाँ का यह प्रशासक होगा, लेकिन महाराज ने नियुक्ति करने से पहले अपने प्रजाजनों से कहा, "हमारे पास इस समय जो सरकारी कार्यकर्ता हैं, उनमें से जो सबसे अधिक बहादुर हैं और जिनकी प्रशासन सेवाओं की धूम मची हुई है उनमें से जो सबसे ज्यादा लोगों को मान्य है, मैं उसे ही नियुक्त करूँगा।" और फिर महाराज ने ऐसे आदमी का चयन करवाया जिसे सबसे ज्यादा मत मिले। उसे नया कार्यभार सौंप दिया और उसे देश के एक हिस्से का प्रशासक बना दिया।

नया जो अधिकारी था, उसने भी अपनी पूर्ण योग्यता के अनुसार अपने प्रदेश में अमन–शान्ति रखी। उसमें उसने एकता बनाए रखी और अपने सुप्रशासन का कौशल दिखाया।

जो लोग दुश्मन थे वो भले ही सोच में पड़ जाते थे कि टांकौः नागा की एकता को कैसे ध्वस्त किया जाये क्योंकि उनकी एकता काफी सालों से मजबूत

होती चली आयी है। उन लोगों ने तरह—तरह के तरीके अपनाये लेकिन टांकौः नागा जाति के लोगों की एकता को वह ध्वस्त नहीं कर सके, तब अपने प्रयासों में असफल रहकर उन्होंने नये युद्ध के तरीके सोचे।

नये सोचे हुए तरीकों से टांकौः नागा लोगों की एकता को जब तक नहीं तोड़ेंगे तब तक उनको सफलता नहीं मिलेगी। यह तो जानते थे इसलिए उन्होंने कुछ समय के लिए हिंसात्मक शस्त्र नीति को जरा त्याग दिया और उसकी जगह चालाकी, धोखाधड़ी का सहारा लिया। टांकौः महाराज ने जिस अधिकारी को प्रशासक के रूप में देश के दूसरे हिस्से में राज्य करने के लिए नियुक्त किया था; शत्रु उसके पास पहुँचे और शत्रु ने अपने पूरे प्रयासों से राज्यपाल से घनी मित्रता बना लेने में सफलता पा ली।

दुश्मन राज्यपाल से अपनी घनी दोस्ती का लाभ उठाने लगे। राज्यपाल महोदय को समझाने लगे कि टांकौः प्रदेश बहुत ही शक्तिशाली प्रदेश है। बहुत ही विशाल है। अगर कहीं टांकौः प्रदेश का पूरा इलाका उनके इलाके से मिल जाये तो फिर बहुत ही विशाल, बहुत ही शक्तिशाली एक टांकौः प्रदेश बन सकता है, इतने बड़े विशाल प्रदेश पर राज्यपाल महोदय आप जरा सोचिये महाराज अकेले ही इस पर हुकूमत कर रहे हैं, क्या यह उचित है? कम—से—कम एक राजा की बजाय दो राजा होने चाहिए। देखिए न ! राजा और राज्यपाल में तो फर्क है न इसलिए हम यह चाहते हैं कि अलग से एक प्रदेश का निर्माण हो और वहाँ के राजा के रूप में आपका उदय हो, राज्यपाल के रूप में नहीं। यह लालसा राज्यपाल महोदय के मन में शत्रुओं ने कूट—कूटकर भर दी।

शुरू—शुरू में तो राज्यपाल ने उनसे कहा कि तुम लोगों की यह जो योजना है यह बिल्कुल अनुचित है। यह योजना नहीं यह तो धोखाधड़ी है। अपने किसी प्रियजन या अपने मालिक को धोखा देनेवाली बात है। लेकिन जब एक ही बात को सच करने की लोग कोशिश करते हैं तो उसका थोड़ा—बहुत प्रभाव तो पड़ता ही है। यहाँ भी राज्यपाल महोदय ने यही समझा कि इन बेचारों की क्या पड़ी है जो बार—बार मुझे राजा बनने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। हो सकता है कि इसमें मेरा ही भला हो और यह मेरा ही भला चाहें, क्योंकि मैं अपने बारे में यत्न से नहीं सोचता। यह विचार मुझे नहीं आये तो इसमें हर्ज ही क्या है। अगर मान लीजिए कि दुश्मन का एक बहुत बड़ा इलाका मेरे प्रभाव के कारण हमारे साथ मिल जाना चाहता है और मिलकर हमारा इलाका और ज्यादा विस्तृत हो जाता है तो इसमें हर्ज ही क्या है। दुश्मन को खुशी—खुशी अपने साथ मिला लेना चाहिए। इस तरह उन्होंने अपनी विचारधारा बनाई।

और विचारधारा ही क्यों? इस योजना को उन्होंने पूरा कार्य रूप दिया और जो राज्यपाल था उसने अपने–आपको दुश्मन के इलाके से अपना इलाका मिलाकर वहाँ का, उस प्रदेश का राजा घोषित कर दिया।

इस बारे में जब महाराज ने सुना तो उन्होंने राज्यपाल को अपनी सत्ता का गलत ढंग से प्रयोग करने के इल्जाम में उसे पकड़कर सामने पेश करने के लिए कहा गया। उन्होंने अपनी सेना के कुछ जवानों को चुनकर भेजा कि तुम लोग इधर आओ और जाओ इस काम को पूरा करके आओ। दुश्मन तो अच्छे मौके की तलाश में था। उसने एकदम से टांकौः नागे जो पकड़ने आये थे, दुश्मनों ने पकड़ने के लिए आये हुए टांकौः नागा इत्यादि पर हमला बोला। महाराज जो वास्तव में नया राज्यपाल ही था, दुश्मनों ने अपनी धोखाधड़ी और चालाकी से अपने लोगों के साथ, अपने साथियों के साथ गलतफहमी पैदा करवाकर उन्हें आपस में लड़वाया। इसलिए उन्होंने अपने नेतृत्व में महाराज के साथ एक जोरदार आक्रमणं किया। ये जो राज्यपाल थे यह अपने प्रदेश के टांकौः नागाओं के साथ ही नहीं उसकी ओर से दुश्मन भी मदद कर रहे थे इसलिए वह युद्ध में टांकौः महाराज पर विजय पा सके और टांकौः महाराज का जो प्रदेश था उसको भी उन्होंने अपने कब्जे में ले लिया और महाराज को पकड़कर मृत्यु–दण्ड दे दिया। जो हारे हुए टांकौः नागा थे बिखरकर तितर–बितर हो वहाँ से जान बचाकर भागे। इस तरह उनके तितर–बितर भाग खड़े होने से किसी समय बहुत ही ज्यादा चहल–पहलवाले टांकौः प्रदेश में दुश्मनों के अलावा और कुछ नहीं रह गया था।

इस तरह दौड़कर जब वो बचने लगे तो महाराज के बेटे को बहुत ही गहरी चोट लगी। पहाड़ पर चढ़ने और उतरनेवाली यात्रा पर और आगे दौड़ सकने में वो असमर्थ रहा और नाले के बहाव के अनुरूप अकेले ही उसे अपनी जान बचाकर दौड़ना पड़ा।

जब काफी दिन बीत गये तो भूख और प्यास से और जो चोटें थीं वो भी कुछ जानलेवा थीं, आखिरकार उसकी शक्ति क्षीण होकर नाले के बगल में रेत के ढेर के ऊपर वो बेहोश पड़ा रहा। कुछ देर बाद जब उसको होश आया तो उसने देखा कि उसके पास में एक हौ तौ बाँस का एक बाजा पड़ा है जिसे बजाया जाता है और जिससे बहुत बढ़िया ध्वनि निकलती है। उसने बिना मतलब उस हौ तौ को उठाया और उसको बजाकर देखा। इससे पहले उसने हौ तौ कभी नहीं बजाया था। लेकिन उसने देखा कि उसमें से बहुत ही सुहावनी आवाज़ निकलती है जोकि बड़ी आकर्षक है तो वो उन आवाज़ों पर मोहित हो गया।

उसने अपने–आपसे कहा "कमाल हो गया यह हौ तौ की आवाज इतनी सुहावनी, इतनी आकर्षक हो सकती है, कभी मैंने ऐसा सोचा भी नहीं था। पर क्या किया जाये इस समय जो ये भूख लगी है नहीं तो इस मधुर आवाज़ का और भी मजा आता। अब तो दिल चाहता है कि बढ़िया–सा भोजन मिल जाये।" उसने इस तरह कहते हुए भोजन खाने की इच्छा जाहिर की और देखते–ही–देखते एक बहुत बढिया भोजन परोसा हुआ उसके सामने उदय हुआ। वह भोजन को देखकर बहुत खुश हुआ और उसने अपने हाथ में थामे हुए हौ तौ बाजे को कुछ देर के लिए रख दिया और खूब अच्छी तरह पेट भरकर भोजन खाने लगा।

जब वह भोजन कर चुका तो वह बोला "अब खाना तो मैं खा चुका पर अभी जो मेरा यह घाव है यह अभी ठीक नहीं हुआ है, मेरा घाव यदि ठीक हो जाये तो मुझे बड़ी खुशी होगी।" उसने ऐसा कहा और यह कहकर उसने हौ तौ बाँस बाजा बजा दिया। हौ तौ की मधुर आवाज़ के साथ उसके शरीर के घाव जैसे किसी ने उठाकर फेंक दिये हों एकदम ठीक हो गये और वो एक भला–चंगा व्यक्ति बन गया। उसने हौ तौ को बजाया और हौ तौ को बजाकर वो अपनी जाति के लोगों को खोजने लगा। रास्ते में जितने भी जानवर थे हौ तौ बाजे की मधुर आवाज के कारण निर्दयी जानवरों से पालतू जानवरों के रूप में अपने–अपने दिल बदलकर या किसी ने उनको अच्छी तरह सिखा रखा हो, पालतू जानवरों की तरह सब इकट्ठे होकर उसके साथ हो लिए। एक दिन के बाद दूसरे दिन एक रात के बाद दूसरी रात इस तरह वो यात्रा पर आगे रहता और टांकौः नागा कहाँ रहते थे इसकी खोज करता। आखिरकार टांकौः नागा लोग जिस पर्वत पर रहते थे, वहाँ वो पहुँचा तो **हौ तौ** बाँस का बाजा बजा रहा था और जैसे ही हौ तौ की आवाज़ को उन्होंने सुना टांकौः नागा भी आपस में इकट्ठे होने लगे और इकट्ठे होकर उसके पीछे–पीछे दौड़ने लगे। इस तरह टांकौः महाराज का जो बेटा था, उसने कहा, "अब मुझे लगता है कि टांकौः जाति के लोग एक स्थान पर अब काफी जमा हो चुके हैं, अगर हम सबको एक स्थान पर अभी इकट्ठा कर सकते तो कितना अच्छा होता?" उसने यह इच्छा जाहिर की और सात दिन तक उसने हौ तौ बाँस बाजा बजाया। पहले उसके पिता के प्रदेश में अलग–अलग जगहों पर रहनेवाले टांकौः नागें सब उसके पास में एकजुट होकर इकटठे होने लगे।

जब टांकौः नागा सारे–के–सारे उसकी छत्र–छाया में आकर इकटठे हो गये। तब उसने टांकौः नागा लोगों को कहा, "आप सब लोग आपस में ग़लतफहमी के शिकार हो गये थे। आज कैसे उन्हें तकलीफ उठानी पड़ रही है।

दुश्मन ने हमारी भलाई का प्रदर्शन कर हमें झूठी बातों में धोखे में उलझाये रखा और हम गलतियाँ करते रहे। इस तथ्य को हमेशा याद रखना चाहिए कि हमसे क्या गलती हुई है और अब बड़ी होशियारी के साथ हमें रहना चाहिए।"

टांकौः नागाओं ने अपनी गलतियों को महसूस किया। उनसे जो गलती हुई है उसको उन्होंने माना और महाराज के बेटे से अनुरोध किया कि आप अपने पिता की तरह, जैसे आपके पिता महाराज हम पर शासन करते थे उसी तरह आप शासन करें। हम आपका चयन अपने महाराज के रूप में करते हैं। सबकी मतों से, सबकी राय से महाराज का कार्यभार संभाले हुए नये राजा ने कहा, "दुश्मनों पर युद्ध किये बिना अगर हम जीत सकते तो सबको बहुत प्रसन्नता होती।" यह कहकर उसने हौ तौ बाँस के बने उस बाजे को बजाया। तब देखते–ही–देखते जो दुश्मन थे वो उथल–पुथल, यहाँ–वहाँ होकर भागने लगे। जैसे ही हौ तौ की मधुर आवाज़ निकली दुश्मन अलग–अलग तितर–बितर हो गये और दौड़कर निकल गये। जब दुश्मन काफी साफ हो गये तो नये महाराज ने उस राज्यपाल के बारे में पता किया जिसने उसके पिता के खिलाफ बगावत फैलायी थी। पूछताछ के दौरान यह मालूम हुआ कि वो व्यक्ति दुश्मन की गोलियों से मारा गया था। तभी से उसने अपने लोगों को सबक लेने के लिए कहा, "जब तक हम लोग एकजुट होकर एक संगठित जाति के रूप में खुशी–खुशी नहीं रहेंगे तो हम लोग ज्यादा दिन तक जिन्दा नहीं रहेंगे। हमें संगठित होना पड़ेगा और खुशी–खुशी रहने के लिए हमारा जो प्रशासन है उसके साथ तालमेल रखना पड़ेगा।" टांकौः नागे हौ तौ बाँस के बाजे के कारण उसकी आवाज़ के कारण ही उनकी जो जाति थी आपस में उनका हित पहले की तरह था, संगठन टूटा नहीं। उनका खून सफेद नहीं हुआ और फिर वो सब लोग एकजुट हो गये और अब तक नागा लोगों का दृढ़ विश्वास है कि जब तक उनके प्रदेश में हौ तौ रहेगा और बजता रहेगा, उनका जो संगठन है, उनकी जो एकता है, वो कभी नहीं टूटेगी और इसलिए नागाओं के हर घर में हर व्यक्ति के पास हौ तौ बाँस एक बाजा आज तक बड़े प्यार, इज्जत और सम्मान के साथ घर में रखा हुआ पाया जाता है।

नेता

बर्मा नागा प्रदेश की घटना है बहुत समय पहले खेती–बाड़ी करके पेट पालनेवाली एक दम्पति थी जिसमें पति का नाम ऊपौः लौः था। उनका एक बेटा था, जिसका नाम मजांः था। इन्हें विवाह किये हुए बीस साल हो गये थे लेकिन इनकी कोई औलाद नहीं होती थी। इन बीस सालों में इन्होंने औलाद प्राप्त करने के लिए तरह–तरह की चेष्टायें कीं। जितने भी हकीम थे, जितने भी अघोरी थे, उन सबको अपने–आपको बताया, दिखाया और तरह–तरह के उपचार कराए और सबसे सलाह ली और आखिरकार इन्होंने बीस वर्ष तक देवी–देवताओं की खूब सेवा की। खूब पूजा की लेकिन जब फिर भी इनके सन्तान नहीं हुई तो इन्होंने गुस्से में आकर सबकी पूजा–पाठ छोड़ दी और जब सबकी पूजा–पाठ छोड़ दी तब बीस साल बाद इनके एक बेटा हुआ, जिसका नाम इन्होंने मजांः रखा, मजांः को यह बहुत ज्यादा प्यार करते थे।

जब यह छोटा था तब ऊपौः लौः के घर में कोई भी उनके काम में मदद करने के लिए नहीं था और क्योंकि परिवार छोटा होने की वजह से यह लोग अपने आप ही उतनी मेहनत कर सकते थे जितनी कि एक छोटे–से परिवार को चलाने की जरूरत होती है तो इन्हें उस समय तो ज्यादा पता नहीं चला और जैसे–जैसे इनका बेटा बड़ा होता चला तो इनको महसूस हुआ कि इनके पास आय का और भी अच्छा साधन होना चाहिए।

वे सोचते थे कि जितनी हमारी उम्र बढ़तीं जा रही है और हमारे आय के साधन उतने ही कम होते जा रहे हैं, हमारा जो बच्चा है वो भी बड़ा होता जा रहा है, ऐसा कुछ–न–कुछ बन्दोबस्त होना चाहिए जिससे हमारी आय बढ़ सके।

यह बात सही है कि मजांः अभी बहुत छोटा था लेकिन वो बड़ा होशियार था, माता–पिता की परिस्थिति वो अच्छी तरह भली–भाँति समझता था। उसे यह समझने में देर नहीं लगी कि माता–पिता काफी दिनों से परेशान हैं। वो जानता था कि वो जब तक अकेला खेती–बाड़ी का काम नहीं संभाल लेगा तब तक उसके माता–पिता कभी खुश नहीं हो पायेंगे। उनको कभी पूरी खुशी नहीं मिल



पायेगी। वो यह भी जानता था कि माता–पिता उसके इस बात के लिए दुख करेंगे कि हमारे बेटे को बहुत मेहनत करनी पड़ेगी, लेकिन दिल से वो यह जानता था कि जितना उसके माता–पिता समझते हैं, उसके साथ ऐसा नहीं होगा। बचपन से लेकर वो माता–पिता के साथ खेत पर जाया करता था और खेती–बाड़ी की जो क्रिया है, जो ढंग है, जो सिलसिला है, उसे वो अच्छी तरह जानता था। इसलिए उसने अपने माता–पिता से कहा कि अब से मैं खेती–बाड़ी का कार्य संभालूँगा। यह सोचकर दिल मत खराब करिए कि मुझे ही यह काम बड़ी मेहनत से करना होगा। यह बात सही है कि मैं खेती–बाड़ी अब से करूँगा, यह भी बात सही है कि मैं पूरे परिश्रम से करूँगा लेकिन आप निश्चिन्त रहें कि मैं बहुत ज्यादा थकूँगा नहीं, इसलिए आप कोई भी निराशाजनक बात अपने दिल से निकाल दीजिए।

बेटे की बात को सुनकर पिता ने कहा, "इस समय जो हम लोगों को दुख हो रहा है वो इसलिए नहीं कि तुम्हें यह खेती–बाड़ी का काम अकेले करना पड़ रहा है और तुमको इस काम में निपुणता हासिल नहीं है। जब से तुम पैदा हुए उस समय से अब तक हम तुमसे कभी अलग नहीं हुए हैं और अब हम लोगों को तुमसे अलग होना पड़ेगा और यही सोचकर हम लोगों को दुख हो रहा है।" यह माता–पिता ने अपने बेटे को समझाया।

बेटे ने कहा, "मुझसे आपको अलग जो रहना पड़ेगा वो कोई हमेशा के लिए नहीं दोपहर के समय मैं वहाँ खेतों में काम करूँगा। उस दौरान आपको मुझसे अलग रहना होगा, मैं रात के समय घर को आऊँगा तो मुझे आप रात को और सुबह में हमेशा मिलोगे तो सही।"

तब उसकी माता ने कहा, "हम लोग तुम्हारे बिना इतने समय भी नहीं रह सकते। हम तुम्हें आँखों से ओझल नहीं कर सकते। एक ऐसे स्थान से जहाँ से तुमको देखा जा सकता है, अगर वहाँ से हम लोगों को तुम दिखायी न दिये तो हम शोक और चिन्ता से मर जायेंगे।" बेटे मजांः ने माता–पिता को तरह–तरह से समझाया और उनको सान्त्वना दी कि आप अपना दिल छोटा न करें। मैं आपकी भावनाओं से भली–भाँति परिचित हूँ। मैं ऐसा कोई भी कार्य नहीं करूँगा जिसके कारण मैं आपकी आँखों से ओझल हो जाऊँ और हमेशा कोशिश करूँगा कि ज्यादा–से–ज्यादा आपकी आँखों के सामने रहूँ लेकिन फिर भी माता–पिता किसी तरह भी बेटे से अलग होकर रहने को तैयार नहीं थे, इसलिए क्योंकि मजांः को अब यकीन हो गया कि अब उसके माता–पिता उससे अलग नहीं रह सकते हैं, तो उसने सोचा कि मैं खेती–बाड़ी भी हमेशा कर सकूँ और मेरे जो

माता–पिता हैं इनको भी अलग न रख सकूँ, तो यह कैसे किया जाये? यह कैसे पूरा हो सकता है? यह कैसे सम्भव हो सकता है इस पर वो विचार करने लगा। जब वो इस तरह विचार कर रहा था तो उसके दिमाग में सोच आयी कि यह जो पहाड़ में हम लोग खेती–बाड़ी करते हैं, एक बार जो हम लोग जिस पर खेत बनाकर बोते हैं दूसरी बार उसी खेत पर खेती–बाड़ी करना ठीक नहीं होता है, इसलिए हमेशा ही यह कोशिश होती है कि नयी–नयी जगह हो और नयी–नयी जगह में ही खेती–बाड़ी की जाये और अगर अब भी हमें इसी तरह नये खेतों को खोजकर उनके पेड़ों को साफ करके नयी जगह बनानी ही पड़ेगी तो यह नयी जगह हमको कहाँ मिलेगी। गाँव के पास जितनी भी जगहें हैं वो सब खत्म हो चुकी हैं और अब गाँव से कितनी दूर जाना होगा, हो सकता है दूसरी बार ऐसा होगा कि हमें गाँव से पता नहीं कितनी दूर जाना पड़ेगा और वहाँ जाकर हमको खेती–बाड़ी करनी होगी। इस तरह खेती–बाड़ी के लिए अगर हमको नयी–नयी जगह खोजनी पड़ी तो रोज–के–रोज हम कैसे घर वापस लौट आयेंगे। एक पन्थ दो काज के रूप में माता–पिता से भी अलग न हों और गाँव और खेत के बीच में चक्कर मारते रहें। इस तरह समय बर्बाद करने की बजाय यह अच्छा होगा कि हम अपने माता–पिता को भी खेतों में अपने साथ ले जायें। उनके साथ में ही काम करें और उनके साथ में ही रहें। ऐसा उसको विचार आया जैसे उसको यह विचार आया, वैसे ही उसने यह विचार अपने माता–पिता के सामने रखा।

माता–पिता ने भी अपने बेटे के प्रस्ताव को मान लिया। छोटी–सी उम्र में इस तरह से सोच सकने के लिए उन्होंने अपने बेटे की प्रशंसा की।

जब मजां: ने देखा कि उसके विचारों को माता–पिता ने स्वीकार किया है तो पहले जिन खेतों पर उन्होंने काम किया था, अब नये खेतों को बनायेंगे। ऐसा सोचकर वो माता–पिता के साथ एक ही बारी में चले गये और वहीं पर रहने लगे और खेतों से जो धान निकला उस धान को खेत और गाँव दूर होने की वजह से गाँव को न ले जाकर खेतों पर ही उसने रखा। उसने खेत–खलिहान भी वहीं बनाया और वहीं जाकर अपने माता–पिता के साथ रहने लगा।

मजां: के घरवाले जब अच्छी तरह रहने लगे तो उसने नया खेत शुरू किया। पहले की तरह घर से बहुत दूर जाकर खेत नहीं काटने पड़ते थे। इसलिए काफी काम हुआ, वो लोगों से पहले जल्दी उठता था और कटे हुए पेड़ों को आग लगाता था। और इन मामलों में वह लोगों से पहले कार्य आरम्भ करता था और खेती में कुछ ऐसे पेड़ थे जिनको आग नहीं लगती थी लेकिन उनको हटाना ज़रूरी था और ऐसी जो लकड़ियाँ थीं उसका सारा काम अकेले ही

करना होता था। ऐसी बड़ी–बड़ी लकड़ियों को अकेला तो हटा नहीं पायेगा। उसने सोचा कि खेतों के पास जो जंगली बैल आते–जाते हैं उन जंगली बैलों को पकड़कर, इन बैलों का पेड़ वगैरा खिंचवाने में प्रयोग किया जाये तो आदमी की मेहनत कम लगेगी और काम भी अधिक होगा इसलिए उसने यह सोचा कि यह जो जंगली बैल हैं इनको कैसे पकड़ा जाये इसके बारे में वो सोचने लगा। जलती हुई आग जोकि बहुत तेज थी वहाँ बैठकर मजां: यह योजना बना रहा था कि जंगली बैलों को कैसे पकड़ा जाये।

जब से उसके दिमाग में यह बात आयी थी कि जंगली बैलों को कैसे पकड़ा जाये मजां: ने हर अपने उस समय में जिसमें कि उसे कोई काम नहीं होता था उसने समय को बर्बाद नहीं होने दिया, वो चारों तरफ अपने खेतों के चक्कर काटता और उन खेतों के इधर–उधर जो जंगली जानवर विचरण करते थे उनके स्वभाव को, उनकी प्रकृति को, उनके आचरण को, उनकी आदतों को अच्छी तरह देखना समझना शुरू कर दिया।

एक दिन एक जंगली बैल उसने देखा कि जहाँ उसने आग लगायी है खेत में जो राख बन गयी है वहाँ जाकर वो बैल उस राख को बहुत जोर से चाट रहा है। उसको देखने के बाद उसने सोचा कि वह राख क्यों चाट रहा है इसकी जाँच की जाये। उसने कुछ राख उठाकर उसको चाटकर देखा और देखा कि उसमें नमक है। अब वो यह देखने लगा कि जो जंगली बैल थे वो हर रोज उस राख को आ–आकर चाटते थे। तब मजां: को एक बात समझ में आयी। अगर इन जगली बैलों को यह एक आहार के रूप में इनको रोज दे सके। यह जो जंगली बैल हैं यह हर रात को आकर इसको आहार के रूप में चाट रहे हैं। इसका और कोई कारण नहीं इसमें नमक की प्रवृत्ति है। इसका मतलब है कि जंगली बैलों को यह जो नमक का स्वाद है यह काफी पसन्द है और इसके बजाय उसने ऐसा किया कि जहाँ राख को बैल आकर चाटा करते थे उस स्थान पर हरे–हरे पत्ते बिछाये और हरे–हरे पत्ते बिछाने के बाद उसके ऊपर थोड़ा–थोड़ा नमक का ढेर उसने रखकर बड़े ध्यान से उनको देखा।

ठीक अपने समय से बैल आया करते थे और हमेशा जब वो राख को चाटा करते थे उसके बदले जब उन्होंने नमक को चाटा तो वो एक–दूसरे को धक्का देकर लूट–पाट करके चाटने लगे।

मजां: जिसने यह सब कुछ देखा उसके दिमाग में एक बात आयी कि यह जंगली बैलों के लिए राख से अधिक नमक असर करने योग्य है। अगर इन जंगली बैलों को नमक दिखाकर पकड़ने की कोशिश की जाये, तो अवश्य ही यह

पकड़े जायेंगे और अवश्य ही यह काबू में आयेंगे। ऐसा उसने सोचा इसलिए उसने वहाँ एक काफी बड़ा बगीचा बनाया और उस बगीचे के द्वार पर, द्वार से लेकर उसने बगीचे के चारों ओर जो बेड़ा लगाया था, उसमें नमक का ढेर भरकर रख दिया और इस तरह कई ढेर उसने बनाकर रख दिये। बहुत-से स्थानों में उन्होंने नमक बिखेरकर भी रखा और नजदीक से उन पर छिपकर नजर रखी। जैसी उसे उम्मीद थी, जंगली बैल भी अपने ठीक समय पर रोज वहाँ आते थे, उन्होंने अब राख की तरफ देखना भी बन्द कर दिया और वो नमक की खोज करने लगे, जब-जब उनको नमक मिला तो वो उसको इस तरह लूट-पाट करके खाते थे जैसे इससे पहले वह कभी देखा नहीं और नमक से उनका पेट भरेगा ही नहीं।

धीरे-धीरे नमक लूटते-लूटते में मजां: के बगीचे में भी एक-दूसरे पर बढ़-चढ़कर प्रवेश करने लगे और देखते-ही-देखते वो सारे-के-सारे मजां: के बगीचे में पहुँच गये। जब जंगली बैल उसके खेत में पहुँच गये तो मजां: जहाँ छिपकर बैठा हुआ था जल्दी-जल्दी दौड़कर आया और उसने बगीचे का द्वार बन्द कर दिया।

अचानक दरवाजा बन्द कर देने के कारण जंगली जानवरों ने अपने-आपको छुड़ाने की काफी कोशिश की लेकिन बड़ी मजबूती के साथ बनाया गया मजां: का बगीचे का जो बेड़ा था उससे निकलकर बाहर जा सकना यह लगभग असम्भव बात थी। जंगली जानवर अपने आपको छुड़ा नहीं पाये और उनको वहाँ कैद होना पड़ा। इन जंगली जानवरों को मजां: ने पालतू बनाने की बड़ी कोशिश की। वो घास काटकर उसमें नमक मिलाकर उसे बैलों को खिलाता। जंगली जानवरों को भी खिलाता। जब काफी समय बीत गया तो जंगली जानवरों ने मजां: से डरना छोड़ दिया। वो जैसे ही मजां: को देखते बगीचे के द्वार से एक-दूसरे से पहले कोशिश करके मजां: से भोजन माँगने के लिए एक-दूसरे से बढ़कर मजां: के पास पहुँचने की कोशिश करते। उनमें इतना परिवर्तन आ गया था।

तभी मजां: एक दिन बगीचे के अन्दर घुसा। उसने जंगली जानवरों को प्यार से थपथपाया और फिर जंगली जानवरों को उचित ढंग से रस्सी से बाँधना शुरू किया। जब जंगली बैल वास्तव में सभ्य हो गये मजां: ने सबसे बड़ा जो एक जंगली जानवर था, उनमें से जो सबसे बड़ा बैल था उसको बगीचे से बाहर निकाला और जो बड़ी-बड़ी लकड़ियों के ढेले थे उन ढेलों को उस जंगली बैल की मदद से हटा दिया।

मजां: हर रोज एक नये बैल का प्रयोग करता था। हर रोज एक नये बैल को निकालकर वो लकड़ियाँ हटवाया करता था।

पड़ोसी गाँववालों ने जब यह देखा कि मजां: किस तरह जंगली बैलों को काम में ला रहा है तो उन्होंने भी कोशिश की और वे भी कामयाब हुए पर अधिकतर लोगों ने कुछ कोशिश नहीं की। वे मजां: की तरह उन बैलों से काम लेना चाहते थे इसलिए मजां: के जो पालतू जानवर थे उनको धन का एवज देकर उससे ले जाया करते थे।

मजां: ने जो जंगली बैल पकड़कर सभ्य बना रखे थे वे उसके पास बहुत भारी संख्या में थे तो उसने अपने लिए अपनी मनपसन्द के कुछ जंगली जानवर चुनकर रख लिए और अन्य जानवरों को जो भी अन्य सामग्री चाहिए होती उसके एवज में बदलना शुरू किया। जंगली बैलों की मदद से मजां: ने बड़े–बड़े पेड़ों को हटाने में सफलता प्राप्त की और सबसे पहले उसी के खेत तैयार हो गये। सबसे पहले वो ही बोये गये।

लोगों से पहले उसने बीज बोये थे इसलिए लोगों से पहले उसकी फसल तैयार हुई। उसकी जो फसल थी वो लोगों से पहले पक गयी और लोगों से पहले तैयार हुई।

जब धान पक गये और चिड़ियों का झुण्ड उसके खेतों पर आकर अनाज खाने लगा बाकी किसी के खेत पर अभी धान नहीं पके थे इसलिए उसी के खेतों पर चिड़ियाँ अधिक संख्या में आयीं और उन चिड़ियों को भगाने के काम में मजां: इतना व्यस्त हुआ कि उसे बिल्कुल कोई समय मिल ही नहीं रहा था।

जब काफी समय बीत गया तो मजां: को लगा कि यही रफ्तार रही तो एक समय ऐसा आयेगा कि उसके पास एक भी दाना खाने के लिए नहीं रहेगा। इसलिए यह ज़रूरी है कि उसकी फसल नष्ट करनेवाले जितने भी पक्षी हैं उनको नष्ट किया जाये। इस बारे में वो सोचने लगा। जब–जब वो बड़े–बड़े पेड़ काटता था तो वो देखता था कि उसके पेड़ काटते समय एक प्रकार का दूध निकलता था। उस दूध की वजह से हाथ आपस में इतने चिपक जाते थे कि उन हाथों को बड़ी आसानी से साफ नहीं कर सकते थे। तभी उसको समझ आयी कि अगर उसी गोंद से उसी दूध से अगर जानवरों को पकड़ा जाये तो वे अवश्य ही पकड़े जायेंगे इसलिए उसने पक्षियों से निवेदन किया, "प्यारी चिड़ियों, आप लोग अपनी प्रकृति के अनुसार अपने स्वभाव के अनुसार जो धान खाते हैं, धान के खाने के लिए जो आकाश से नीचे आते हैं तब अचानक ही धान को पहले न खाकर आप लोग यह छोटी–छोटी लकड़ी हैं अधजली, इनके ऊपर आप

विश्राम कर लें।" यह बात देखने में आयी इसलिए मजांः ने बहुत–सी पेड़ों की टहनियाँ काटीं और खेतों के चारों ओर उसने उन टहनियों को गाड़ दिया और काफी मजबूती से चिपकानेवाले उस गोंद को उन टहनियों के साथ मलकर रखा।

दूसरे दिन भी पक्षी खेत में आये और जैसा कि उनकी आदत थी मजांः ने जो पौधे वहाँ लगा रखे थे उनके ऊपर और अधजली लकड़ियों पर वो विश्राम करने लगे, मजांः ने यह सोचा कि उसने जो यह उपाय किया है देखा जाये कि वह उपाय सफल है कि नहीं तो अचानक उसने उन पक्षियों को डरा दिया।

लेकिन वैसा नहीं हुआ जैसा कि मजांः सोच रहा था कि यह पक्षी उसके द्वारा लगाये हुए गोंद की वजह से चिपक जायेंगे। लेकिन जैसे ही पक्षियों ने जोर लगाया, संघर्ष किया वो एक ही बार में आजाद हो गये। मुक्त हो गये।

मजांः ने सोचा कि यह जिससे उसे अपना अंगूठा तक अलग करने में कठिनाई महसूस हो रही थी तो यह छोटे–छोटे पक्षी हैं, यह उससे कैसे छूट गये। उसने खुद डंडों के ऊपर लगाए हुए गोंद को हाथ लगाकर चिड़िया की भाँति झटका देकर छुड़ाने की कोशिश की।

उसने सोचा, मैंने जो डण्डे लगाए हैं, वो बहुत सख्त हैं, इसलिए उसने जो कोमल या टेढे–मेढ़े हो सकनेवाले डंडे थे उनमें गोंद लगाकर देखी। तब यह देखने में आया कि पक्षियों को पहले से कहीं अधिक ताकत लगानी पड़ती है। आखिर में मजांः इस नतीजे पर पहुँचा कि टहनी वो हो जिसे दोनों ओर झुकाया जा सके। कोमल हो और छोटी हो। ऐसी टहनियों को उसने फिर से लगाया और उसने फिर से उन पर गोंद लगायी।

जैसे कि मजांः का विचार था, पक्षी और चिड़ियाँ उन पर जब विश्राम करने लगे और जैसे ही वो उन पर आकर विश्राम करने लगीं टहनियाँ झुकनी शुरू हो गयीं। मजांः ने प्रतीक्षा करते हुए जब अचानक उनको डरा दिया और तब वो डरकर उड़ान भरने लगीं तो झुकी हुई टहनियों की वजह से अचानक संघर्ष करने के बावजूद भी उड़ने में असमर्थ रहीं और फिर वहीं विश्राम करने लगीं।

जब पक्षी विश्राम करने लगे तो टहनियाँ और भी झुक गयीं। जब चिड़ियाँ उड़ने की कोशिश करने लगीं तो फिर टहनी वापस सीधी होने लगीं।

अब टहनी कभी उठती, कभी झुकती इसलिए पक्षियों ने कोशिश की कि यह जो चिपकनेवाली चीज है इससे बचा जाये। जैसे कि बताया गया कि टहनी कभी उठती, कभी झुकती वो ऐसे ही होती रही और पक्षी जिस गोंद से टहनी के साथ चिपके हुए थे, अपने–आपको उससे मुक्त कर सकने में असमर्थ रहे

और वो थक गये। मजांः ने अब उन्हें डराया लेकिन अब वो उड़ नहीं पाये और वहीं विश्राम करते रहे, तभी मजांः ने उन पक्षियों को वहाँ से पकड़ा। जब यह कार्यक्रम वो रोज करने लगा, तो उसके खेत में आनेवाले जितने भी पक्षी थे वो भयभीत हो गये और वहाँ आना उन्होंने बन्द कर दिया, उसके खेत को छोड़कर वो दूर जाने लगे, गाँववालों को जब यह पता चला कि मजांः बिना किसी मेहनत के चिड़ियों को पक्षियों को अच्छी तरह पकड़ सकता है तो पहले जैसे उन्होंने जंगली बैल पकड़े थे उस समय से अधिक उनकी मजांः के प्रति श्रद्धा हुई और वे लोग पक्षी पकड़ने के तरीकों को सीखने के लिए उसके पास आकर उसके शिष्य बने। सब लोगों ने मजांः को अपने सरदार के रूप में मान्यता दी।

मजांः छोटी उम्र का होने पर भी अपने दिमाग, अपनी बुद्धि पर विश्वास करता था और उन्होंने जो नेतृत्व सौंपा था उसको उसने स्वीकार किया।

एक दिन गाँववाले मिलकर मजांः के पास आये। उन्होंने कहा, "जब फसलें काटी जाती हैं तो बन्दर आकर बहुत परेशान करते हैं और फसलों को नष्ट करते हैं तो कोई ऐसा आरामदेह तरीका निकाला जाये कि यह बन्दरों का जो संकट है इससे बचा जा सके तो इसके लिए कोई प्रस्ताव दीजिए।" इस पर मजांः ने जिन बन्दरों को वह हमेशा देखा करता था उनकी आदतों को देखकर उनकी आदतों के आधार पर यह सलाह दी, "देखिये, बन्दर एक ऐसा जानवर है कि अगर आदमी भगाए तो वो पेड़ के ऊपर चढ़ जाया करता है इसलिए खेत के बीच कोई ऐसी टहनियोंवाला पेड़ नहीं होना चाहिए जिसके ऊपर बन्दर चढ़कर दौड़ सके। इस इरादे से कमजारे पतली टहनीवाला एक ही झाड़, खेत में रहे। ऐसी टहनियोंवाले पेड़ों के बीच जब वो बन्दर आये तो वो उस पर जाकर दौड़कर बैठ सके इस इरादे से हम बन्दरों को डरायें तो वह अवश्य ही बैठा करेंगे। अगर वो लोग दौड़कर इस तरह पेड़ों पर चढ़ गये और उसके बाद में हम लोग उसे मिलकर पकड़ें तो बन्दर भी पकड़े जायेंगे और हमको बन्दरों का माँस भी खाने को मिलेगा।" ऐसी उसने सलाह दी। गाँववालों ने वैसा ही किया जैसा कि मजांः ने कहा था और ऐसे में उनको बन्दर का मांस काफी मात्रा में खाने के लिए मिला और इस तरह बन्दरों का संकट भी समाप्त हो गया।

उस समय से लेकर नागा लोग खेत के बीच में बन्दरों को पकड़ने के लिए एक स्वाभाविक छोटा–सा नन्हे जंगल को छोड़कर, आज तक खेती–बाड़ी करते चले आ रहे हैं और बाकी जितने भी पेड़ होते हैं काट दिये जाते हैं।

जब मजांः को अपने खेत पर काम करते–करते अठारह वर्ष हो गये तब ही उसके माता–पिता का देहान्त हुआ।

माता–पिता के देहान्त के बाद मजां: ने अपने लोगों पर बड़ी अच्छी तरह शासन क़िया और हमेशा जो कुछ उसे प्रकृति का स्वरूप दिखायी देता था, उस पर अपने विचार आधारित क़रके उसने शेर, सुअर इत्यादि जंगली जानवरों को पकड़ने का तरीका, धान के एवज में, आलू इत्यादि के बदले यह विद्या लोगों को सिखाने लगा और सबसे बुरी बात इन सबके आधार पर देशी शराब जिसे खौ: जें: कहते हैं यह सब बनाने का ढंग और यही नहीं तेज जहर लगे हुए बाण–तीर से अपने–आपको बचाने के लिए कई विद्याएँ वह गाँववालों को सिखाने लगा और उनके नेता के रूप में जीवनभर खुशी–खुशी उन्होंने जीवन बिताया और बड़े ही प्रसन्न रहे।

कान से नहीं एड़ी से सुनना

पुराने ज़माने की बात है, एक पलौः सौः वौजी था, उस सौः वौजी की एक बहुत ही खूबसूरत बेटी थी।

उस सौः वौजी के पास जो–जो लोग आते थे, उनमें से एक गाँव का साहूकार हूहैंः था, गाँव के साहूकार हूहैंः का जो घर था, राजमहल से काफी दूर पर था। गाँव का साहूकार भी सौवाः खानदान में से ही था, लेकिन क्योंकि वो जंगल में रहता था इसलिए जंगल का साहूकार ही कहलाया जाता था।

हर साल जिस प्रदेश में वो शासन करता था, वहाँ के राजा के लिए उसे कर उठाकर देना पड़ता था और इसलिए वो कर देने के लिए हर साल महाराज के पास आता था। जब काफी समय बीत गया तो महाराज सौवाः जी और गाँव के साहूकार में काफी मित्रता हो गयी। अब गाँव के साहूकार का एक लड़का था। एक दिन साहूकार और सौवाः जी दोनों बातें कर रहे थे और सौवाः जी कुछ ज्यादा बात कह गये। गाँव के साहूकार को सौवाः जी गलती से यह कह गये अगर तुम वास्तव में साहूकार होतो जहाँ तुम रहते हो वहाँ से मेरे महल तक अगर चाँदी का मार्ग बनाकर मुझ तक पहुँच सकते हो तो मैं तुम्हारे बेटे से अपनी बेटी का विवाह करने के लिए तैयार हूँ।

वास्तव में सौवाः जी को यह लगता था कि साहूकार जो है वो इतना अमीर नहीं हो सकता, इसलिए उसने यह बात कह दी थी। साहूकार ने जब सौवाः जी की यह बात सुनी तो वो बहुत ज्यादा खुश हुए। वे सोचने लगे कि सौवाः जी की बेटी को अपनी बहू बनाने का यह बहुत अच्छा रास्ता निकला है और इसलिए वो बहुत खुश थे। इसलिए साहूकार ने कहा, "बहुत अच्छी बात है। मैं अपने घर से आपके महल तक चाँदी की सड़क बनवा दूँगा।" जैसे कि बताया कि घर बहुत दूर था। कई पहाड़, कई जंगल उन्होंने पार किए और फिर घर पहुँचे। काफी समय भी हो गया। दिन भी बीत गये और सौवाः जी ने अचानक बिना किसी ध्येय से जो बात कही थी उसको उन्होंने खुद भी याद नहीं रखा।

पर जैसे ही साहूकार महोदय हूहैंः अपने घर पहुँचे उन्होंने दिन देखा न



रात धरती के अन्दर दबाकर रखे हुए, चाँदी के घड़ों की खुदाई उन्होंने की और महल तक चाँदी की सड़क वास्तव में बिछा दी और सड़क बिछाते समय जैसे बताया कि उन्होंने कई पहाड़, कई जंगल उन्हें पार करने थे लेकिन उन्होंने समय बर्बाद न किया और इस काम में तुरंत ही जुट गये। धीरे–धीरे जो नयी सड़क का निर्माण हो रहा था वो राजमहल तक पहुँच रही थी। एक आदमी की बात दूसरे ने सुनी, दूसरे ने तीसरे से कही और तीसरे ने चौथे से। इस तरह बारी–बारी से सुनते–सुनाते ये बातें सौवाः जी के कान में भी पड़ीं। सौवाः जी को तब अपनी बात याद आयी।

उस समय उन्होंने यह बात इसलिए कही थी कि यह काम हो नहीं सकता था। असम्भव था क्योंकि महाराज अपनी बेटी का विवाह साहूकार के बेटे से नहीं करना चाहते थे।

लेकिन राजाओं की जो बात है जो उनका वचन है वो अटल है। जो कह दिया उसे करना है उसे मानना है और साहूकार हूहेंः जब चाँदी का राजमार्ग राजमहल तक पहुँच गया तो अपनी बेटी से साहूकार के बेटे का विवाह करने का उन्होंने निश्चय किया। जब चाँदी का रास्ता राजमहल के काफी नजदीक आ गया तो उस समय जिनको ज्यादा चिन्ता और शोक था वो थी महादेवी और उसकी बेटी। महादेवी यह नहीं चाहती थी कि वो अपनी बेटी को इतनी दूर भेजे कि बेटी तक पहुँचने के लिए उन्हें कई पहाड़ और कई जंगल पार करने पड़ें और सच बात तो यह थी कि वो अपनी बेटी को जंगली पलौः जंगल के या गाँव के साहूकार के साथ नहीं करना चाहती थीं और अपनी बेटी को जंगल और पहाड़ों को पार करती हुई कहीं भेजने की उसकी ख्वाइश नहीं थी।

इसी दौरान राजकुमारी अपने परिवार में से किसी स्वर्णपलौः युवक से प्यार करने लगी थी। चाँदी की सड़क का मालिक जब राजमहल पहुँचा तो राजकुमारी को ऐसा लगा कि उसको अपने प्रेमी से अलग होना पड़ेगा। उसे यह नहीं सूझ रहा था कि वो क्या योजना बनाए? किस ढंग से सोचे जिससे कि उसकी यह बात ठीक हो सके। उसे समझ नहीं आ रही थी कि कैसे वो योजना बनाए। उसकी हिम्मत भी नहीं होती थी कि वो इस प्यार के बारे में अपने पिता को बताए और अगर बताती है तो तब भी पिताजी उसकी बात को सुनेंगे नहीं। उसके पिता अपने वचन के पक्के थे। उन्होंने जो वचन दिया था उसको वे तोड़नेवाले नहीं थे।

महल तक बनायी जा रही सड़क महल के काफी नजदीक पहुँच चुकी थी। आखिरकार दोनों प्रेमियों ने यह तय किया कि जो होना है वो होने दो देखा

जायेगा तो यह सोचकर वे दौड़ खड़े हुए। जब महाराज को यह मालूम हुआ कि उनकी बेटी भाग गयी है तो उनको बहुत क्रोध आया। किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी कि सौवाः जी के साथ बात करे।

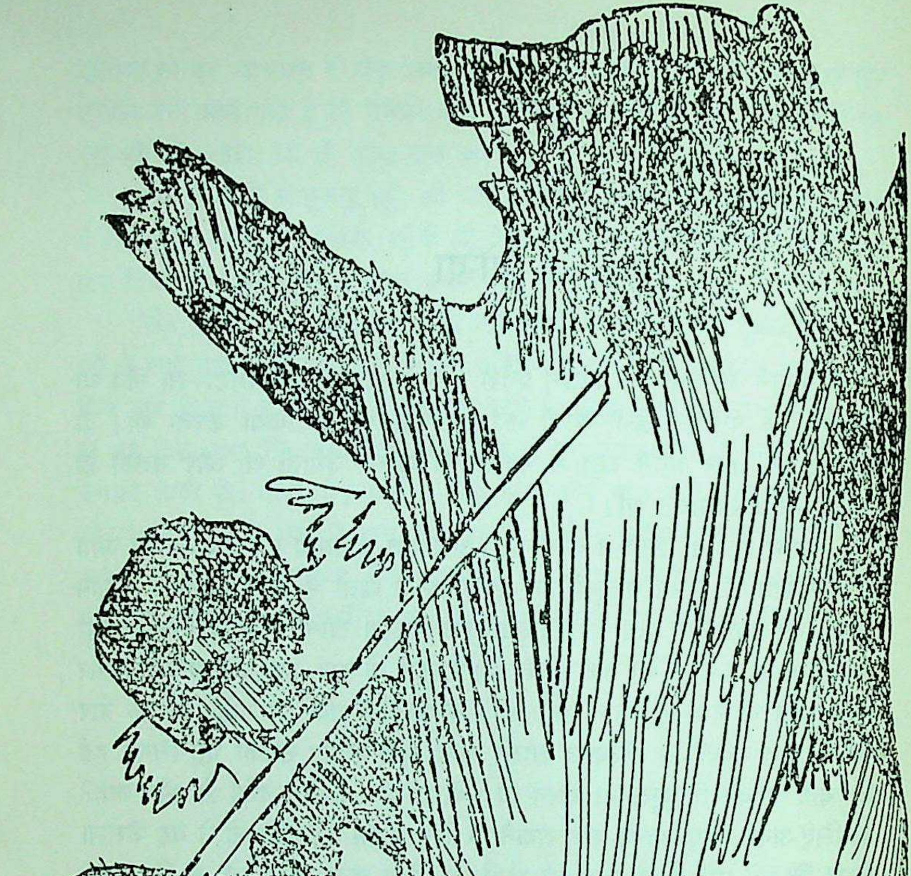
जब गाँव के साहूकार हूहैंः को यह मालूम हुआ कि राजकुमारी भाग गयी है तो उन्होंने जहाँ तक सड़क पहुँची थी वहीं रोक दी। आगे उन्होंने बनाना बन्द कर दिया और फिर वापस अपने स्थान को लौट गये।

जब काफी समय बीत गया और सौवाः जी का क्रोध शान्त हुआ तो सौवाः जी ने सारे हालात का जायजा लिया। परिस्थिति का सारा अध्ययन किया और फिर जब विद्वानों ने भी समझा कि अब उचित समय है तो महाराज सौवाः जी से यह कहा गया कि अभी पुत्री और दामाद को वापस बुला लिया जाये और उनकी शादी कर दी जाये। कान से नहीं सुना कोई बात नहीं आप यह मानकर चलिए कि आपकी एढ़ी ने सुना पर हमारी प्रार्थना स्वीकार कर लीजिए और बच्चों को अपना आशीर्वाद देकर उनके दुखी जीवन में फिर से खुशियाँ भर दीजिए। महाराज ने दरबारियों की प्रार्थना मान ली और वैसा ही किया।

योद्धा

पुराने ज़माने की बात है। कछिन् प्रदेश के पूर्व उत्तर में एक छोटा–सा गाँव था जिसमें एक परिवार खेती–बाड़ी करके अपना गुजारा किया करता था। वो परिवार हर साल अपने खेत में मक्की की फसल उगाता था और मक्की ही उनका मुख्य उत्पादन था।

सारा दिन वो खेतों में काम करते और रात के समय घर लौटकर सो जाते थे और रात के समय भालुओं का झुण्ड उनके खेतों में आता था और उनकी फसल को नष्ट कर देता था। भालुओं को जितना खाना होता था उससे कहीं ज्यादा तो वो फसलों को नष्ट करते थे। भालुओं के बार–बार वहाँ आकर फसल नष्ट करने से बड़ा नुकसान होता था। नौबत यहाँ तक आ गयी कि एक बार उनका खेत मक्की से बिल्कुल खाली नजर आने लगा। उनको यह चिन्ता हुई कि यदि मक्की बिल्कुल ही खत्म हो गयी तो हम खायेंगे कहाँ से और क्या? इसलिए अपने लिए मक्की बचा सकने के लिए उनके परिवारवालों ने यह फैसला किया कि जो पति है वो रात को खेतों पर सोया करेगा रखवाली के लिए और मक्की की फसल नष्ट करनेवाले भालुओं से खेत की रक्षा करा करेगा। पति अपनी पत्नी के आदेशानुसार मक्की की खेती की रखवाली करने के लिए खेतों पर जाकर सोने लगा पर पति बहुत ही डरनेवाला व्यक्ति था। वैसे भी वो रात के समय रहकर खेत की रखवाली करना पसन्द नहीं करता था। अब पत्नी की जिद थी कि पति को खेतों पर रहकर उनकी फसल की रखवाली करनी होगी इसलिए उसे करनी पड़ेगी। लेकिन जैसे ही सूरज डूबा और अँधेरा हुआ कुछ देर के लिए वहाँ रखवाली करने के बाद वो घर चला जाता था क्योंकि उसे वहाँ बहुत ज्यादा डर लगने लगता था। डर लगने की वजह से कुछ देर बाद जब वो घर लौटता तो उसकी पत्नी उसे देखकर ताना मारती और कहती, "देखो ! क्या यह खेत के रखवाले हैं? देखो, अभी तो सारी रात पड़ी है और जनाब मुँह लटकाकर घर आ गये हैं।" इस तरह वो पति पर व्यंग्य कसा करती। इस तरह पत्नी के कहने पर भी पति मात्र इतना ही कहता, "चिन्ता मत करो। कल मैं



अवश्य ही खेत पर सारी रात पहरा दूँगा।"

जब दूसरी रात आयी तो पति महाशय अपने मक्की के खेत पर रखवाली करने के लिए रुक गये। उस रात भी अन्य रातों की तरह उसने किया। रात में रखवाली नहीं की और घर पहुँच गया। उसे घर पहुँचा देखकर पत्नी बहुत बिगड़ी। उसने उसकी मर्दानगी को ललकारा और कहा, "मर्द होकर इतना तुम क्यों डरते हो? क्या मर्द डरनेवाले होते हैं?" पत्नी ने बहुत डाँट–डपट लगायी जिसकी वजह से तीसरी रात पति ने फैसला किया कि अब मैं पूरी रात खेत पर गुजारूँगा और रखवाली करूँगा।

तीसरी रात जब आयी तो वो खेत पर रखवाली करने लगा। उसकी पत्नी और बच्चे खेत से घर वापस लौट आये। धीरे–धीरे सूरज भी डूब गया और अँधेरा छाने लगा। पति पत्नी की डाँट नहीं खाना चाहता था इसलिए वो पीछे रह गया था। वास्तव में उसका यह इरादा नहीं था कि वो खेत पर रहकर खेत की रखवाली करेगा। जिस तरह कहावत है। कहते हैं कि जितना अधिक दिन बढ़ता जायेगा उतना अधिक पागलपन भी बढ़ता जायेगा। उसके ठीक विपरीत जितनी रात होती जायेगी उतना ही उसका पति भयभीत होता जायेगा। इसलिए पति ने, जो खेत की रखवाली करने के लिए वहाँ ठहर गया था, खेत में न ठहरकर उसने एक तेज बाँस की छड़ी बनायी और उसको उसने बहुत ज्यादा नुकीला कर लिया। उसको बनाकर उस झोंपड़ी की मचान पर बैठ गया जिस पर छत थी, उस मचान पर बैठकर वो रखवाली करने लगा।

धीरे–धीरे समय आगे खिसकने लगा और आधी रात हो गयी। तभी खेत से कुछ दूरी पर लगता था कि टहनियाँ चल रही हैं। पेड़ों के हिलने–डुलने की कुछ आवाज़ें सुनायी दे रही हैं और मक्की के जो पेड़ हैं, मक्की के जो भुट्टे हैं उन्हें तोड़ने की साफ–साफ आवाज़ें सुनायी देने लगीं। इन सुनायी दे रही आवाज़ों से यह साफ जाहिर था कि खेत में कोई अवश्य ही मौजूद है और वो उसके खेत को नुकसान पहुँचा रहा है। धीरे–धीरे वो आवाज़ें और भी निकट आने लगीं। जब और निकट आने लगीं तो खेत में बनी हुई झोंपड़ी पर चढ़कर बैठे हुए पति का डर और अधिक बढ़ गया।

पति ने उत्तर, दक्षिण, पूरब–पश्चिम चारों दिशाओं की ओर देखा। जब से यह आवाज़ें आ रही थीं तब से ऐसा नहीं हुआ कि वे आवाज़ें रुक जायें। धीमी हो जायें या बिल्कुल लुप्त हो जायें ऐसा नहीं हुआ बल्कि हर पल के बाद वे आवाज़ें और भी नजदीक आती जाती थीं। अँधेरे में धुँधला–धुँधला सा एक साया दिखायी दिया जोकि बिल्कुल काला–काला दिखायी दिया। प्रारम्भ से ही

डरपोक पति ने यह दृश्य जैसे ही देखा उसके पैर जोर–जोर से भय के कारण काँपने लगे। आखिरकार पति को यह मालूम हुआ कि जो यह साया है यह हिल रहा है और मचान जहाँ वो बैठा है, उसके बहुत नजदीक आ चुका है। उसके पैर काँपने लगे और घुटनों का कम्पन अधिक तेज हो गया। उसका भय और अधिक बढ़ गया। वह अपने–आप पर नियन्त्रण नहीं रख पाया। अपने शरीर पर नियन्त्रण नहीं रख पाया और जब वो उस झोंपड़ी के ऊपर चढ़कर आया था तो उसने अपने हाथ में एक नुकीला बाँस पकड़ रखा था। उसी डण्डे को पकड़े हुए वो उसी झोंपड़ी से नीचे आ गिरा। उसी समय पहले जो काला साया दिख रहा था वो एक भालू का ही था। जहाँ भालू था वहाँ उसे गिरने की आवाज़ आयी तो वह वहाँ चौंककर गया और एक ही बार में उस गिरे हुए व्यक्ति को जब काटने के लिए उसने अपना मुँह खोला तभी झोंपड़ी से नीचे गिरे हुए पति के हाथ में पकड़ा हुआ नुकीला बाँस आया और भालू के मुँह में सीधा घुसता हुआ उसके गले में जा लगा और वो बड़े वेग से, बड़ी तेजी के साथ जाकर लगा और भालू उस नुकीले बाँस के लगने के कारण उसी क्षण वहीं गिरकर मर गया।

इस तरह भाग्य अच्छा था कि नुकीला बाँस सीधा भालू के गले में जाकर लगा और वहीं मर गया। वो व्यक्ति यह चाहता था कि यह प्रचार किया जाये कि भालू उसके मारने से मरा है इसलिए खून से लथपथ उस नुकीले बाँस को उसने वहाँ से हटा दिया। भाग्यवश नुकीला बाँस गले के भीतर जाकर सीधा धँस जाने की वजह से जब भालू मारा गया तो वह व्यक्ति यह जताना चाहता था कि भालू को उसने अपनी बहादुरी से मारा है इसलिए उसने उस नुकीले बाँस को जिससे भालू मारा गया था और खून से लथपथ था उसने उस खून को उस भाले पर से साफ कर दिया। और वह भालू के साथ चिपककर कभी भालू को ऊपर करता तो कभी वो ऊपर हो जाता। जान–बूझकर अपनी पूरी ताकत के साथ वो उस मरे हुए भालू से कुश्ती करने लगा। और फिर उसने उसके गले को जान–बूझकर इस तरह दबाया जिससे पता चले कि भालू वाकई मर गया है और यही बात उसने अपनी पत्नी और बच्चों को बतायी। उसने कहा, "देखो ! आज मैंने अपने भय के सारे प्रमाण खत्म कर दिये हैं। आज मैंने पूरी बहादुरी के साथ अपनी जान पर खेलकर भालू को मार डाला है।" उसने जहाँ भालू मरा पड़ा था वहाँ अगल–बगल में जितनी भी जगह थी वहाँ उसने भालू को खींच–खींचकर ऐसे चिन्ह पैदा कर दिये कि ऐसा दिखने लगे कि इस जगह पर किसी भालू और आदमी की कुश्ती काफी देर तक हुई है। पाँव के निशान भी ऊपर–नीचे एकदम बने हुए दीख रहे थे।

अभी सुबह होनेवाली थी और सूरज अभी निकल रहा था। उसकी पत्नी और बच्चे हर रोज से जरा जल्दी वहाँ आ गये।

पत्नी और बच्चे जब खेतों पर पहुँच गये तो पति ने उस मरे हुए भालू को दिखाकर कहा कि कैसे उसने उस भालू के साथ कुश्ती की और किस तरह उसने भालू का गला घोंटकर मार डाला और कहा कि यदि तुम्हें विश्वास नहीं आता तो यह देखो भालू और मेरे पाँवों के निशान। यह देखो, इस जगह का जो हाल हुआ है कुश्ती की वजह से और जब भालू मारा जाये तो तुम इसको देखकर समझ सकती हो कि मैंने किस तरह अपनी जान पर खेलकर भालू को मारा होगा। पत्नी और बच्चों ने समझा कि वे सत्य कह रहे हैं इसलिए भालू की चीड़–फाड़ करने के लिए गाँववालों को पत्नी ने बुलाया। वे गाँव गये और वहाँ से गाँववालों को साथ लेकर आये। जब गाँववाले आये तो उन्होंने भी अपनी आँखों से देखा कि किस तरह भालू मरा पड़ा है और पति ने गाँववालों को बताया कि बहुत देर तक भयानक कुश्ती होती रही और आखिर में मैंने भालू को मार डाला। भालू मेरे हाथों से मारा गया है यह भी उसने गाँववालों से कहा। सारे गाँववालों ने इस घटना को सच्ची घटना समझा और वे भालू मारनेवाले व्यक्ति पर गर्व करने लगे और सबने मिलकर कहा कि तुमने एक योद्धा का कार्य किया है। तुम हमारे गाँव के योद्धा हो। तुम हमारे गाँव की शान हो। तुम हमारे गाँव की आन हो। तुम हमारे गाँव के चाँद हो। आज से हम तुम्हें योद्धा की उपाधि प्रदान करते हैं। सब गाँववालों ने मिलकर यह कहा कि आज से तुम योद्धा के नाम से जाने जाओगे।

इस समाचार को सुनकर सारे गाँव में बड़ी खुशियाँ मनायी गयीं और यह समाचार जंगल की आग की तरह चारों ओर फैल गया। एक गाँव में बड़ी तेजी के साथ बहुत ही भयानक शत्रु उत्पात मचा रहे थे। उस गाँव में भी खबर पहुँच गयी। उस गाँव के लोग दुश्मनों की वजह से कहीं भी जाने की हिम्मत नहीं करते थे और आ–जा नहीं रहे थे। और वो कुछ दिन और नहीं आ–जा पाते तो उनके गाँव में अकाल पड़ जाता और अकाल से काफी लोग मर सकते थे। इसलिए गाँव के लोग, जैसे कि उन्होंने समाचार सुना था, योद्धा को निमन्त्रण देकर उत्पातियों को दबाने की बात सोच रहे थे। आपस में सोचने के बाद सबने एकमत से यह निर्णय किया कि अपने शत्रुओं का नाश करने के लिए वे योद्धा की सहायता लेंगे।

इसलिए वे लोग मिलकर योद्धा के पास गये और उन्होंने उससे सहायता माँगी। लेकिन योद्धा ने चलने से इन्कार कर दिया। दूसरे गाँववाले फिर से एक

बार योद्धा के पास गये और उन्होंने फिर से सहायता माँगी। इस दूसरी बार भी पहली बार की तरह योद्धा ने मना कर दिया। लेकिन गाँववालों ने हार नहीं मानी। वे तीसरी बार मिलकर गये और तीसरी बार उन्होंने फिर से प्रार्थना की तो योद्धा को लगा कि अब उसके पास न करने का कोई कारण नहीं है तो उसने कहा, "ठीक है। मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ और तुमसे यह वादा करता हूँ।"

उसने वादा तो कर दिया लेकिन उसके पास कोई योजना तो थी नहीं। उसको यह नहीं पता था कि क्या सोचना चाहिए क्या करना चाहिए? किस तरह की तैयारी करनी चाहिए? उसने इस बारे में कुछ नहीं सोचा। इस तरह उसने एक हफ्ते का समय लिया जोकि अब पूर्ण होने पर आ गया था। आखिर में जब उसको कुछ नहीं सूझा तो उसने सोचा कि जो कुछ होगा वो देखा जायेगा। और जब वो उस जगह पहुँचा तो उसने वहाँ अपना पूरा रौब रखा। अपने चेहरे के हाव–भावों का विशेषकर ध्यान रखा कि कहीं उसके डरपोक होने की बात का लोगों को पता न चल जाये। उसके वहाँ आ जाने से उसने अपने चेहरे के भाव बदलने नहीं दिये। भाव बनाये रखे जिससे यह पता चलता था कि उसको किसी बात की चिन्ता नहीं है। बस मात्र उसने गाँववालों से इतना पूछा कि बताओ यह शत्रु कहाँ और किस ओर से कैसे और कब आता है? क्या करता है? इन सारी बातों की जानकारी उसने गाँववालों से ली। गाँववालों ने योद्धा को बताया कि हमारे शत्रु सूरज डूबने के बाद गाँव के बाहर जो एक विशाल पीपल का पेड़ है उसके नीचे इकट्ठे होते हैं और जब अँधेरा होता है उसके बाद में वो गाँव में प्रवेश करते हैं। वे गाँव में घुसने के बाद लूट–पाट, मार–पीट, खून–खराबा इत्यादि किया करते हैं। और इस तरह करने के बाद वे लौट जाया करते हैं। तभी योद्धा ने एक घोड़े की माँग की। घोड़ा मिल जाने पर दुश्मनों की जगह पहुँचाने के लिए कहा। वहाँ पहुँचकर वह घोड़े पर चढ़ गया और गाँववालों से कहा, "अब तुम मुझे अच्छी तरह बाँध दो।" जब उसे बाँध दिया गया तो वह बोला, "अब मुझे एक चाकू दो।"

गाँववालों के मन में एक शक उत्पन्न हुआ। अरे ! यह कैसा योद्धा है? कहीं इसका दिमाग तो नहीं फिर गया? इस आदमी ने न तो तलवार माँगी न भाला माँगा। न इसने तीर–कमान माँगा जो कि युद्ध में काम आनेवाले मुख्य हथियार हैं। उनमें से एक भी न माँगकर एक मामूली–सा चाकू माँग रहा है। इतने सारे शत्रुओं का एक चाकू से यह कैसे मुकाबला करेगा। यह तो असम्भव बात है। यह तो हो ही नहीं सकता। पर हाँ जो एक साधारण व्यक्ति के लिए नहीं हो सकता वो शायद एक योद्धा के लिए हो सकेगा क्योंकि यह योद्धा है। इसको

अपने ऊपर पूर्ण विश्वास होगा इसलिए कहा है कि मुझे एक चाकू दे दो और फिर एक अद्भुत बात यह देखो कि न जाने यह क्यों कहा है कि मुझे घोड़े के साथ बाँध दो और भला एक घोड़े से बँधा आदमी एक चाकू की सहायता से शत्रुओं से कैसे निबटेगा? यह मेरी समझ में नहीं आता। फिर भी गाँववाले उसकी प्रशंसा करने लगे। वास्तव में योद्धा कुछ नहीं जानता था कि दुश्मनों को किस तरह नीचा दिखाया जाये या दुश्मनों को किस तरह हराया जाये या युद्ध नीति क्या होती है? युद्ध–व्यूह क्या होता है? इसके बारे में उसे कुछ भी मालूम नहीं था। उसे यह नहीं मालूम था कि तलवारबाजी क्या होती है? भालेबाजी क्या होती है? धनुष–बाण विद्या क्या होती है? कुछ नहीं, एक भी बात उसको नहीं आती थी। लेकिन उसने अपने जीवन में हथियारों में चाकू का ज्यादा–से–ज्यादा इस्तेमाल किया हुआ था इसलिए उसने चाकू ही माँगा। ऐसी कोई बात नहीं थी कि चाकू माँग लेने की और घोड़े पर अपने–आपको कस लेने की उसके पास में कोई योजना हो।

वह जो कुछ माँगता गया गाँववाले देते गये। जो कुछ कहता गया गाँववाले करते गये और इस तरह करने के बाद में गाँववाले गाँव को लौट गये। जैसे ही सूरज डूबा और अँधेरा शुरू हो गया और गाँव और उसके आस–पास चारों ओर अँधेरा तेजी से फैलने लगा उस समय जैसा कि गाँववाले कहा करते थे, उसी के अनुसार दुश्मन सैकड़ों और हजारों की संख्या में योद्धा की ओर आते हुए दिखायी दिये। अभी तक वो नजदीक नहीं पहुँचे थे।

योद्धा मुकाबला करने की बात तो दूर रही दूर से ही दुश्मनों को आता हुआ धुँधला–सा देखकर उसका सारा शरीर काँपने लगा। घोड़े के ऊपर बँधा हुआ था लेकिन उसे अभी तसल्ली नहीं हुई थी इसलिए वो घोड़े के साथ बहुत जोर से चिपका। चिपकने की बात यह थी कि वो सोच रहा था कि भयभीत होकर मैं कहीं गिर न जाऊँ इसलिए घोड़े से चिपका रहा। उसे लगा दुश्मन काफी नजदीक आ गये हैं। जैसे–जैसे उसको लगता कि दुश्मन उसके नजदीक आते जा रहे हैं वह डर से काँपने लगता था। उसके हाथ काँपने लगे। जिस हाथ में उसने चाकू पकड़ा हुआ था वह भी डर के मारे हिल रहा था और इस वजह से वो घोड़े के पेट में जाकर चाकू लगा। घोड़े ने जब यह देखा कि उसके पेट में चाकू लगा है तो वो दर्द से कराह पड़ा और यकायक अंधाधुंध दिशाहीन इधर–उधर दौड़ने लगा। पहले से ही डर के कारण काँप रहा था योद्धा और उस पर जब घोड़ा उछल–कूद करने लगा तो योद्धा घोड़े की पीठ पर न होकर घोड़े के पेट पर पहुँच चुका था लेकिन उसने घोड़े का जो गला था उसको नहीं छोड़ा।

उसने अपने दोनों हाथों से उसके गले को अद्‌भुत ढंग से मजबूती के साथ जकड़ रखा था। घोड़ा यहाँ–वहाँ दौड़ा। उछला–कूदा। उसके पेट के नीचे एक आदमी लटका हुआ था। घोड़े को कुछ नहीं सूझा तो जिस ओर जिस मन से जिस दिशा से दुश्मन आ रहे थे वहाँ अंधाधुंध उनकी ओर भागता चला गया था। तभी जिन्होंने यह बात कभी जीवन में नहीं देखी थी एक अद्‌भुत बात उन्होंने देखी थी कि घुड़सवार जो है वह अजीब ढंग से घुड़सवारी करता है और यही बात देखकर वे पहले डर गये। यह कैसा अद्‌भुत व्यक्ति है। आज तक जितने भी हमसे लड़ने आये हैं उन सबसे बिल्कुल अलग। लोग घोड़े के ऊपर सवारी करते हैं उसकी पीठ पर सवारी करते हैं और यह घोड़े के पेट के नीचे लटककर आ रहा है। लगता है इसके पास अपना कोई अनोखा युद्ध व्यूह है। कोई अपनी अनोखी व्यूह–रचना है और कोई नये ढंग से यह लड़ना चाहता है। यह सोचकर जो हथियार थे, जो तलवारें थीं, जो भाले थे, जो धनुष–बाण थे उन सबको वहीं फेंककर वे दौड़ खड़े हुए।

योद्धा जिस घोड़े पर चढ़कर आया था वो घायल था और घायल घोड़े का जो घाव था वो भी काफी तेज था और घोड़ा अंधाधुंध दौड़कर आ रहा था इसलिए घोड़ा थककर एक जगह पर गिरकर मर गया।

जब सुबह हुई तो योद्धा ने दुश्मन द्वारा फेंके गये कुछ हथियारों को उठाया और गाँववालों से कहा कि घमासान युद्ध में मैंने दुश्मन से जो हथियार प्राप्त किये हैं वो ये हैं। दुश्मन मुझसे डरकर भाग खड़े हुए लेकिन थोड़ा–बहुत घमासान मुकाबला हुआ उसमें उसका अपना घोड़ा मारा गया। दुश्मनों के हाथों से मारा गया। योद्धा ने गाँववालों से बड़ी–बड़ी डींगें मारीं। गाँववाले भी उसकी बात को सुनकर पहले की तरह ही जो योद्धा कह रहा था वो ठीक ही होगा और वो उसकी बातों का विश्वास करने लगे। गाँववालों ने यह भी नहीं सोचा कि क्या ऐसा हो सकता है या नहीं हो सकता। यह सब काम उसने नहीं किया किसी ने इस बात के बारे में सोच–विचार नहीं किया। लेकिन उन्होंने इन बातों पर दृढ़तापूर्वक विश्वास अवश्य किया। यह खबर सारे गाँव में, सारी दिशाओं में फैल गयी और योद्धा का नाम और भी प्रसिद्ध हो गया।

एक गाँव में एक शेर बहुत उत्पात मचा रहा था। उस गाँव के लोग भी उत्पात मचा रहे शेर को दबाने के लिए, शेर को मरवाने के लिंए योद्धा से सहायता माँगने के लिए योद्धा के पास गये। तब योद्धा जिसके पास कोई विद्या नहीं थी। जिसने कभी कुछ सीखा नहीं था। जिसके पास न बहादुरी थी। उसने कहा, "मुझे क्षमा करें। मेरी जाने की इच्छा नहीं होती।" गाँववाले जिद करने लगे

कि हम आप पर निर्भर हैं। आप ही तो एक हमारा सहारा हैं। कृपया आप शेर के संकट से हमें बचाएँ। उन्होंने बार–बार प्रार्थना की। आखिर योद्धा को लगा कि मैं नहीं जाऊँगा तो बात बनेगी नहीं। नहीं जाऊँगा तो ये लोग मानेंगे नहीं। ऐसी हालत में जब जाना अति अनिवार्य हो गया तो योद्धा उनके गाँव की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँचकर पहले उसने शेर के बारे में जानकारी हासिल की। गाँववालों ने बताया कि जब शाम होगी, अँधेरा होगा तो बाहर गाँव के पास जो बाँस का झुरमुट है उसके नीचे आकर वो बैठता है और जैसे ही अँधेरा होता है, गाँव में शेर प्रवेश करता है, यह बताया। तभी योद्धा ने कहा, "मुझे बाँस के झुरमुट के पास ले चलो।" गाँववाले उसके आदेशानुसार उसको गाँव के बाहर जो बाँस का झुरमुट था जहाँ अक्सर शाम के समय शेर विचरता था वहाँ ले गये। उसे छोड़ने के बाद गाँववाले लौट गये। योद्धा जिसके पास दिखावे के सिवाय कुछ नहीं था। और दिखावा उसका सर्वश्रेष्ठ होता था। देखने में जितना वो बहादुर लगता था वास्तव में उसके अन्दर बहादुरी नाम की कोई वस्तु नहीं थी। इसलिए जब से गाँववाले उस स्थान से लौटे तो तब से उसका डरना शुरू हो गया। वह इतना भयभीत हो गया था कि जिस कारण उसका सारा शरीर काँप रहा था। रात के समय जब शेर आयेगा तो शेर से बचने के लिए बाँस के झुण्ड में से उसने कुछ बाँस काट लिए और उस जगह को खाली करके वह उसमें चुपचाप छिपकर बैठ गया और फिर उस जगह के चारों ओर बाँसों से परदा–सा कर लिया और वहाँ छिपकर बैठ गया। इस तरह एक जगह पर घुसकर छिप जाने के बाद और इसके अलावा उसके पास करने के लिए कुछ नहीं था और न ही वो कुछ करना जानता था और न ही उसके पास में इससे अधिक सोच सकने की शक्ति थी। तब वहाँ बैठा–बैठा वह उस बाँस की पतली–पतली फाँकें बनाकर उससे बाँस की रस्सी बनाने लगा। गाँववालों ने जिस समय का जिक्र किया था जब वह समय आया तो वास्तव में शेर की गर्जन सुनायी दी और शेर की गर्जन सुनायी देने के बाद वह पीछे हटती हुई सुनायी नहीं देती थी। शेर की गर्जन आगे–ही–आगे बढ़ती आ रही थी और कुछ देर बाद जहाँ वो था वहाँ तक पहुँच गयी थी। शेर को आदमी की महक मिली। शायद इसी वजह से वह बाँस के झुरमुट के पास पहुँचा। यहाँ–वहाँ खोज करने लगा। कुछ देर बाद उसे यकीन हो गया कि बाँस के झुरमुट में कोई आदमी है। जैसे ही उसे यह यकीन हुआ उस आदमी पर धावा बोलने के लिए वो कोशिश करने लगा। योद्धा अन्दर से अपने–आपको पूर्ण रूप से सुरक्षित किये हुए बैठा था पर वो इतना डरा हुआ था कि जरा–सा भी हिलने–डुलने की हिम्मत नहीं कर रहा था और यही नहीं

उसे साँस लेने तक की हिम्मत नहीं हो रही थी। शेर ने बड़ी कोशिश की कि किसी तरह जो अन्दर छिपा आदमी है उस पर वो धावा बोल सके। बार–बार उसने कोशिश करके बाँस के झुरमुट के अन्दर घुसने की कोशिश की लेकिन वो असमर्थ रहा। बाँस की जिन चीजों के परदे कर रखे थे वे काफी सुरक्षित थे। जब शेर कुछ नहीं कर सका तो उसे बहुत क्रोध आया। उसने अपनी दुम से आदमी पर आक्रमण किया। शेर द्वारा अपनी दुम से आक्रमण करने की बात को देखकर बाँस में छिपे योद्धा को एक अच्छा अवसर मिला। योद्धा ने शेर की दुम को पकड़कर बाँस के पेड़ों से चिपकाकर उसे बाँस की मजबूत रस्सी से बाँध दिया जिसे वह बना रहा था। जितना वो दुम को खींचकर बाँध सकता था उसने बाँधनी शुरू की और आखिर में देखते–देखते जो शेर की दुम थी उसने उसे खींचकर बाँध दिया। बाँस की रस्सी से जिसे उसने खुद बनाया था और बाँस की रस्सी को बर्मा में चौः कहते हैं। बाँस की पतली–पतली फाँकें इतनी पतली–पतली फाँकें की जाती हैं कि उन फाँकों को रखकर अगर उनको एक दिशा में घुमा दिया जाये तो वो एक रस्सी बन जाती है और उसकी मजबूती इतनी होती है कि उसके द्वारा बँधी हुई वस्तु का निकल सकना बड़ा ही मुश्किल होता है। अब शेर बिल्कुल हिल–डुल नहीं सकता था क्योंकि उसकी जो दुम थी उसे बड़ी मजबूती के साथ बाँध दिया था।

जब शेर ने देखा कि वो अपनी दुम से आदमी को किसी तरह का भी नुकसान नहीं पहुँचा सकता है तो उसने अपनी दुम को वापस खींचना शुरू किया लेकिन वो कामयाब नहीं हुआ। असफल रहा क्योंकि योद्धा ने बड़ी मजबूती के साथ ध्यान से शेर की दुम को बाँस के साथ में बाँध दिया था। शेर को और गुस्सा आया। शेर ने और ताकत लगायी और अपनी दुम को छुड़ाने की कोशिश की लेकिन वो असफल रहा। जैसे–जैसे वो असफल होता गया वैसे–वैसे ही उसका क्रोध बढ़ता गया और वह क्रोध में पागल हो जोर–जोर से गरजने लगा। चिल्लाने लगा। इस तरह शेर की भयानक गर्जन सुनायी देती रही।

गाँववाले जिन्होंने सारी रात शेर की गर्जन सुनी थी आपस में कहने लगे, "हमारा योद्धा अकेला न जाने शेर को किस तरह काबू में कर रहा होगा। न जाने वो शेर को किस तरह मार रहा होगा। शेर को इस तरह गरजते कभी सुना नहीं गया। लगता है जिस हिसाब से शेर गरज रहा है, वो मरनेवाला ही होगा।" यह कहकर वो योद्धा की प्रशंसा करने लगे।

इस तरह अपनी दुम को वापस छुड़ाने की कोशिश में अपनी गर्जन द्वारा अपना क्रोध जाहिर करने में शेर का सारा समय बीत गया और प्रभात होने लगी।

प्रभात होते–होते क्रोधित शेर थकावट से मर गया।

तभी योद्धा बाँस के झुरमुट से बाहर निकला और उसने ऐसा वातावरण तैयार किया जिससे ऐसा लगे कि वो शेर के साथ में सारी रात कुश्ती करता रहा है। मरे हुए शेर को दूसरी जगह पर खदेड़कर ले गया और शेर के ऊपर तरह–तरह की गन्दगी को लगाया और शेर को इस तरह घसीटा कि उसके शरीर पर तरह–तरह के निशान लग जायें और लोग यह समझें कि यहाँ पर शेर की और योद्धा की भयानक कुश्ती हुई है और जान–बूझकर इस तरह के निशान लगाये कि जैसे योद्धा ने उसके ऊपर कूदकर हमला किया हो। और वो इसीलिए सुबह होते ही गाँव को लौट गया और जैसे कि उसका कार्यक्रम था उसने गाँववालों को बताया। गाँववालों को यह नहीं मालूम हुआ कि शेर तो अपने क्रोध के कारण मरा है। यह नहीं कि उसे उनके योद्धा ने मारा है और योद्धा नाहक में झूठी कहानी गढ़कर अपनी डींगें मार रहा है कि शेर को उसने मारा है। गाँववाले सब योद्धा की बात पर पूर्ण रूप से विश्वास करने लगे और इस तरह योद्धा की मिलकर और प्रशंसा करने लगे और उसे खूब इनाम भी दिये।

यह खबर चारों ओर फैल गयी और जैसे–जैसे यह खबर फैली योद्धा और भी विख्यात हुआ और प्रसिद्ध हुआ और यह खबर जो थी दूर–दूर बड़े महत्त्वपूर्ण लोगों तक पहुँची। कछिन् के दो दुआ राजाओं के बीच में जो दुआ राजा हार गया था उसने भी योद्धा के कारनामे सुने। उसने उस योद्धा के कारनामे सुने और उसके मन में दूसरे दुआ से बदला लेने में मदद लेने का विचार आया।

युद्ध में हारे हुए दुआ ने योद्धा के पास सन्देश भेजा कि मैं आपसे मिलना चाहता हूँ लेकिन योद्धा ने क्षमा चाही और जो आदमी लेने आया था उसने उसे लौटा दिया। दुआ का आदमी फिर एक बार आया तो उसने उसे फिर लौटा दिया। दुआ का आदमी फिर तीसरी बार आया तो भी उसने उसे लौटा दिया। चौथी बार फिर दुआ का आदमी आया तो इस बार उसको न करना बड़ा मुश्किल लगा और उसने कहा जो होगा देखा जायेगा। दुआ के आदमी के साथ वो चल दिया। दुआ के सामने पहुँचते ही उसने अपना समय बर्बाद नहीं किया। योद्धा ने सीधी बात पूछी कि दुश्मन के बारे में बताओ। मेरे पास ज्यादा समय नहीं है। दुआ ने बताया कि शाम के समय दुश्मन पूरे हथियारों के साथ, हमारा जो गाँव है उसके बाहर पीपल के नीचे आकर अपना डेरा डालते हैं और वहीं वो पकाते–खाते हैं और रात के बारह बजे वे गाँव में प्रवेश करते हैं और लूटपाट मचाकर लौट जाते हैं।

तभी योद्धा ने कहा, "मैं उस पीपल के पेड़ के पास जाना चाहता हूँ और

मुझे वहाँ छोड़कर आ जाइये।" सब लोग गये और उसे छोड़कर चले आये। जब छोड़कर आनेवाले लोग लौट गये तब हमारा योद्धा, जो कि वहाँ पर अकेला रह गया था उसकी पीपल के पेड़ के नीचे रहने की या बैठने की हिम्मत नहीं हुई। वो पेड़ के ऊपर चढ़ गया और वहाँ छिपकर बैठ गया। इस तरह पीपल के पेड़ के ऊपर छिपकर जब हमारा योद्धा बैठ गया तो कुछ देर बाद जैसे कि लोगों की बताई हुई बातों के अनुसार दुश्मन का आगमन हुआ और वे आपस में कहने लगे, "हर काम, हर चीज बड़ी सावधानी से करनी होगी। हमें मालूम है कि इन गाँव वालों ने एक शूरवीर योद्धा को बुला रखा है।" चुपचाप ये बातें उनमें आपस में हो रही थीं तभी उन्होंने फैसला किया कि किसी तरह भोजन बनाया जाये। उनकी बातों को पीपल के पेड़ के ऊपर बैठे हुए योद्धा ने सुना तो उसे यह शक हुआ कि कहीं उसे देख तो नहीं लिया गया और भय के कारण उसका सारा शरीर काँपने लगा। पीपल की टहनी को, उसका सहारा लेकर उसको थामे रखा क्योंकि उसको भय था कि कहीं वह नीचे न गिर जाये। लेकिन दुर्भाग्यवश जिस टहनी को उसने हाथ में पकड़ा था वो टहनी एकदम सूखी हुई थी इस कारण टहनी टूट गयी और योद्धा उन शत्रुओं में जा गिरा जो भोजन बना रहे थे। तभी दुश्मनों ने कहा, "लो बोलते—बोलते किसी ने ऊपर से छलाँग लगायी है। यह योद्धा के सिवाय और कोई नहीं हो सकता।" यह कहकर वे जो हथियार लाये थे उन्हें भी उठाना याद नहीं रहा और वो भयभीत होकर वहाँ से चारों ओर भाग खड़े हुए।

योद्धा हालाँकि एक बहुत ऊँचे पीपल के पेड़ की चोटी से नीचे गिरा था लेकिन उसका भाग्य अच्छा था कि उसे कोई चोट नहीं आयी। इसलिए जब सुबह हुई तो दुश्मन ने जो हथियार वहाँ फेंक दिये थे उन सब हथियारों को उसने इकट्ठा किया और सबको जाकर कहा कि दुश्मन उसका मुकाबला करने से डरते थे इसलिए अच्छी तरह मुकाबला किये बिना ही भाग खड़े हुए और भागते हुए दुश्मनों से उसे काफी हथियार भी प्राप्त हुए हैं। यह सन्देश उसने दुआ महाराज और गाँववालों को भिजवाया।

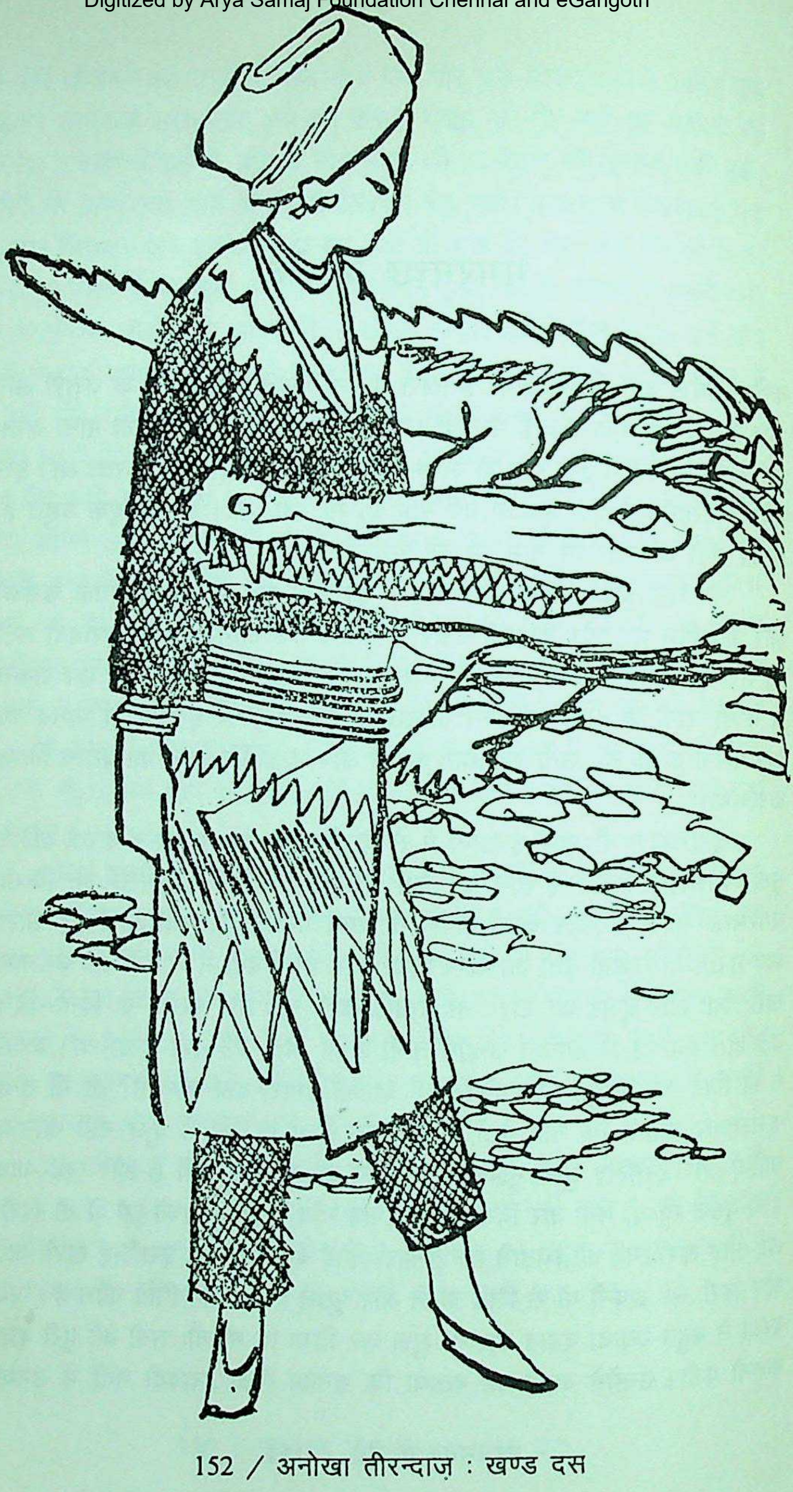
सब गाँववाले योद्धा पर मोहित थे। जो भी बात योद्धा कहता उस पर वे विश्वास करते। दुआ ने कहा, "कुछ कहने की बात रह नहीं गयी।" उसे विश्वास था और वो बहुत प्रसन्न था इसलिए दुआ ने योद्धा को बहुत—से पुरस्कार दिये और इतना ही नहीं अपनी बेटी की उसके साथ शादी कर दी।

मगरमच्छ के बेटे

कछिन् प्रदेश बर्मा में एक शहर है जिसे मचीना कहते हैं। मचीना के उत्तरी ओर कुछ ही दूर वहाँ एक गाँव है मौः खौः। आजकल यह काफी आधुनिक माना जाता है। क़िसी ज़माने में इस गाँव के आस–पास खौःखाः प्रदेश हुआ करता था। इस प्रदेश में रहनेवाले एक आदमी का नाम था मौः खौः नौंः। उसकी एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी जिसका नाम था नौंः सनी।

नौंः सनी बहुत अधिक रूपवती थी इसलिए सब प्रदेशों के युवक उसकी ओर आकर्षित थे। लोग ही क्यों उत्तर से दक्षिण तक जानेवाली जो इरावदी नदी थी उस इरावदी नदी में जितने भी मगरमच्छ थे, जो मानव रूप धारण कर सकते थे वे नौंः सनी के दीवाने थे और अक्सर वो मगरमच्छ से इन्सान या मानव का रूप धारण करके नौंः सनी का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न किया करते थे।

दुर्भाग्यवश नौंः सनी इन्सानों में से किसी युवक को पसन्द न करके बल्कि मूर्ख मगरमच्छ होकर इन्सान का रूप धारण करनेवाले मगरमच्छ से, किसी मगरमच्छ युवक से प्यार करने लगी। नौः सनी गर्भवती हो गयी और ढाई साल बाद उसने दो जुड़वाँ बेटों को जन्म दिया। उन दोनों बेटों में से बड़े बेटे का नाम खरौंः जांः और दूसरे का खरौंः नांः रखा। खरौंः जांः और खरौंः नांः दिनों–दिन बड़े होते जा रहे थे लेकिन उन्होंने कभी अपने पिता को नहीं देखा था। बच्चों ने भी जिद करनी शुरू कर दी कि माँ बताओ हमारा बाप कौन है? तो माँ उन्हें फुसलाकर कहती कि नहीं बेटों, तुम्हें अपने पिता के बारे में कुछ नहीं जानना चाहिए और इसलिए तुम्हें मुझसे कुछ पूछने की जरूरत नहीं है और जब–जब बच्चे पूछते तो वो मना कर दिया करती। तब गाँव के दूसरे बच्चे जो थे वो खरौंः जांः और खरौंः नांः को चिढ़ाते कि तुम्हारा कोई बाप नहीं है। इसलिए खरौंः जांः और खरौंः नांः अपनी माँ से जिद करते और पूछते कि उनका पिता कौन है। जब बच्चों ने बहुत ज्यादा दबाव डालना शुरू कर दिया तो माँ नौः सनी को पूरी बात बतानी पड़ी। उन्होंने बच्चों को बताया कि उनका पिता इरावदी नदी में उनके



गाँव के पास गहरे पानी में रहनेवाला एक मगरमच्छ है। खरौं: जां: और खरौं: नां: को अपने पिता के बारे में जब मालूम हुआ तो अपने पिता मगरमच्छ को पकड़ने के लिए उन्होंने लोहार का काम शुरू किया ताकि वो लोहे को पिघला सकें और एक लोहे का जाल बना सकें ताकि अपने पिता मगरमच्छ को पानी की गहरायी से पकड़ा जा सके। दोनों भाई लोहा पिघलाते और जाल बनाने के लिए जिस तरह की चीजें उनको चाहिए थीं वो सारी चीजें बनाते। उन्होंने अपना कारखाना उस झील के पास बनाया जहाँ उनका पिता मगरमच्छ रहता था और पानी में रह रहे मगरमच्छ राज को, लोहा पिघलाकर पानी के बीच जब वो उसे गिराते तो बहुत बुरी बदबू आती। इतना ही नहीं हथौड़ों की चोटों की वजह से कान फटने जैसे हो जाते।

इसलिए मगरमच्छ राज ने दोनों लोहार भाइयों को किनारे के बगल में बनाए हुए अपने कारखाने को हटाने के लिए केकड़े को भेजा। केकड़ा जब दोनों भाइयों के पास पहुँचा तो दोनों भाइयों ने उससे पूछा, "इरावदी नदी के बीच में या अन्दर विचरण करनेवाले मगरमच्छ क्या तुम ही हो?"

केकड़े ने कहा, "नहीं, नहीं। मैं तो एक केकड़ा हूँ जो तुम दोनों भाइयों को यह कहने आया हूँ कि तुम लोगों ने जो यहाँ अपना कारखाना बना रखा है इसको यहाँ से हटाओ।" तब खरौं: जां: और खरौं: नां: दोनों भाइयों ने कहा, "हम मगरमच्छ राज से ही मिलना चाहते हैं। और कोई भी हमारे काम के बीच आकर दखल नहीं दे सकता।" यह कहकर उस चिमटे से जिसे वे अपने काम में इस्तेमाल करते थे, उससे दबाकर रखा केकड़ा अपनी जान बचाने के लिए बड़ी मुश्किल से संघर्ष करके छूटा और पानी के बीच दौड़कर चला गया। उस समय से लेकर केकड़े का शरीर गोल न होकर चिमटे से फँसाकर दबा दिया गया था इसलिए अब वो चपटा हो गया था और चलते समय भी टेढ़ा–मेढ़ा होकर उसे चलना पड़ता है। ऐसा लोग कहते हैं।

इसके बाद मगरमच्छ राज ने दूसरी बार गोल सिरवाली एक मछली जिसका नाम है मछांग, उसे खरौं: जां: और खरौं: नां: के पास भेजा। इस पर दोनों भाइयों ने यही कहा कि जिनसे मतलब नहीं है वे बीच में आकर दखलंदाजी न दें और यह कहकर वो मछांग मछली जो उनके पास आयी थी उन्होंने उसे अपने चिमटे से फँसाकर दबा लिया और उसका सिर बिल्कुल चपटा हो गया। मछांग मछली का सिर पहले गोल हुआ करता था। चिमटे से दबाये जाने के कारण उसका सिर चपटा हो गया। ऐसा लोग मानते हैं।

मगरमच्छ राज को सन्तोष नहीं हुआ। उसने तीसरी बार समीयै नाम की

एक मछली को भेजा जिसकी दुम का हिस्सा लाल रंग का होता है। उस मछली को भी दोनों भाइयों ने चिमटे से फँसाकर दबा लिया और जब दबाया तो मछली घूम–घूमकर दौड़ने लगी। उन्होंने इस मछली की पूँछ को दबा रखा था इसिलए इस समीयै मछली की दुम का जो हिस्सा था आज तक वो लाल है ऐसा कहते हैं।

इस तरह मगरमच्छ राज जो भी केकड़ा या मछलियाँ भेजता था उनको खरौं: जां: और खरौं: नां: दोनों भाई चिमटे से दबाकर वापस भेज देते थे और अब मगरमच्छ राज जब दूसरी मछलियों को या दूसरे जन्तुओं को उनके पास भेजना चाहता था तो कोई भी उनके पास जाने की हिम्मत नहीं करता था और आखिरकार मगरमच्छ को स्वयं ही खरौं: जां: और खरौं नां: के पास जाना पड़ा।

जैसे ही मगरमच्छ राज वहाँ पहुँचे तो खरौं: जां: और खरौं: नां: इत्यादि ने मगरमच्छ राज को बन्दी बनाने के लिए लोहे की जंजीरों को जोड़ दिया और उनसे पूछा, "इरावदी नदी में विचरनेवाले मगरमच्छ राज क्या आप ही हैं?" मगरमच्छ राज ने कहा, "हाँ, ठीक अन्दाजा लगाया।" तभी खरौं: जां: और खरौं: नां: लोगों ने मगरमच्छ राज को लोहे की जंजीरों में जकड़ लिया। बाँध लिया और उनकी नाक में से लोहे की चेनों को निकालकर, उनकी नाक में लोहे की नकेल डालकर एक पत्थर की चट्टान से बाँधकर रख दिया।

इस तरह बाँधकर रखने की वजह से मगरमच्छ राज जब अपने आपको छुड़ाने लगे तो इरावदी नदी के किनारे पर जो पहाड़ थे उनको अपनी दुम से मगरमच्छ राज ने मार गिराया। आज भी मचीना शहर के इरावदी के किनारे वहाँ कोई पहाड़ नहीं है बिल्कुल मैदान पाया जाता है। ऐसा लोग कहते हैं।

मगरमच्छ राज अपने आपको छुड़ाने की काफी कोशिश कर रहे थे लेकिन अपने आपको छुड़ा पाने में सफल नहीं हो रहे थे। तब मगरमच्छ राज ने खरौं: जां: और खरौं: नां: से पूछा, "कृपया आप दोनों भाई मुझे बता सकते हैं कि आप लोगों ने मुझे क्यों कैद करके रखा है?"

खरौं जां: और खरौं नां: ने उत्तर दिया, "आप हमारी माता को और अपने दोनों बेटों को यानी हमको फेंककर, बेसहारा छोड़कर भाग खड़े हुए। इसलिए हम आज तक पिता रहित हैं। लोग कहते हैं कि इनका बाप नहीं है। लोग हमारा अपमान करते हैं। आप हमारे पिता हैं फिर भी हमें आप पर वही बात दोहरानी पड़ रही है जो आपने हमारे साथ की। आपने हमारे साथ निर्दयता की और अब हम आपको बन्दी बनाकर आपके साथ निर्दयता कर रहे हैं और इसलिए आप पर निर्दयता बरतकर आपको पकड़कर रखा गया है।" दोनों भाइयों ने उत्तर दिया।

तब मगरमच्छ राज को अपने किये पर पछतावा हुआ और तब उन्होंने अपने बेटों से गलती के लिए माफी माँगी कि हमसे गलती हो गयी। खरौं: जां: और खरौं: नां: दोनों भाई सन्तुष्ट हो गये और उन्होंने मगरमच्छ को छोड़ दिया।

एक बार मगरमच्छ गहरे पानी में गया और फिर वापस प्रकट हुआ। एक पीठ पर लटकानेवाला थैला लेकर आया जोकि सोने से भरा हुआ था। यह थैला विशेष तौर से कछिन् प्रदेश में कछिन् युवतियाँ अपनी पीठ पर लटकाकर रखती हैं इसलिए इसे पीठ पर लटकानेवाला थैला कहा जाता है या टोकरी कही जाती है। उन्होंने एक बहुत ही बड़ा धनुष और तलवार दिया और एक नौका बेटों को दी। अपने पिता से मिली जागीर जायदाद के रूप में तुम्हें दी है इनको अपनी पूँजी बनाकर जीवन में सुख–शान्ति और आराम से रहो। यह कहकर मगरमच्छ राज गहरे पानी में उतर गया।

खरौं: जां: और खरौं: नां: लोग अपने पिता मगरमच्छ राज से प्राप्त हुए उपहारों को लेकर अपनी नाव में सवार होकर बर्मा के निचले भाग में व्यापार करने चले गये। जब उनकी नाव नदी में थी और तूफान आ गया तो वो जिस पर सवार होकर आये थे और इन्हें लादे हुए जो किश्ती थी वो बोझ से फट गयी। खरौं जां: और खरौं: नां: का जो सोने से भरा हुआ थैला था वो एक किनारे से जाकर लग गया। खरौं: नां: जिस हिस्से पर था उस पर वो बैठा रह गया और उसके पास एक दाँव था और दूसरा धनुष। वो उस दाँव और धनुष–बाण के साथ आगे बहता गया और इदावदी के किनारे जहाँ एक गाँव था वो वहाँ किनारे पर लगा।

उस गाँव में जब उसने घूमकर देखा तो वहाँ एक भी व्यक्ति नहीं पाया गया। गाँव के अन्त में एक मकान था। वहाँ पोती और दादी एक–दूसरे का आलिंगन करके सोती हुई दिखायी दीं।

उन पोती–दादी से खरौं: नां: ने पूछा, "सारा गाँव खाली क्यों है?" सबने बताया किं उस गाँव में एक बहुत बड़ा वीर दैत्य है जोकि राज्य कर रहा है, हर रोज मत डालकर एक व्यक्ति को चुना जाता है जिसे गाँववाले उसके भोजन के रूप में भेजते हैं। कल मेरी पोती की बारी है इसलिए हम रो रहे हैं। हमारे गाँव के जितने लोग थे उन सबको एक भयानक चील ने पकड़कर खा लिया है इसलिए अब वो नहीं रहे इत्यादि सारी बातें बताईं। खरौं: नां: ने पोती और दादी दोनों से कहा, "आप चिन्ता न करें क्योंकि यह जो चील है इससे मैं आपको बचा सकता हूँ। आपको चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।" खरौं: नां: उस रात को पोती–दादी के घर में ही ठहरा। दूसरे दिन सुबह होते ही खरौं: नां: ने उस

भयानक चील के संकट को हमेशा–हमेशा के लिए दूर करने के लिए अपना धनुष–बाण तैयार कर लिया। उस दिन दोपहर होने से पहले वो भयानक चील बूढ़ी की पोती को खाने के लिए गाँव के कोने में जो पीपल का पेड़ था उस पर आकर ठहर गयी। खरौंः नांः ने अपना धनुष–बाण संभाला और एक बाण छोड़ दिया। वो बाण सीधा उस भयानक चील को जा लगा जोकि बाण लगते ही वहीं पर मर गयी। खरौंः नांः दादी की प्यारी पोती से विवाह कर वहीं जीवन यापन करने लगा।

उस भयानक चील को खरौंः नांः ने मार गिराया था। उसके संकट को कैसे समाप्त कर दिया था। इस बात की खबर जंगली आग की तरह चारों ओर फैल गयी। हर आदमी की जबान पर इसी घटना की चर्चा थी।

कुछ दिनों बाद एक गाँव से कुछ लोग इकट्ठे होकर आये कि उनके प्रदेश में एक बहुत बड़ा साँप है जिसकी वजह से लोग बहुत ज्यादा तकलीफ में हैं। आप उस प्रदेश में पधारें और उस भयानक साँप के संकट से लोगों को राहत दिलायें। अगर आप उस संकट से हमें मुक्त कराने में सफल हो गये तो हम लोग आपको उस प्रदेश का युवा राजा मान लेंगे। खरौंः नांः ने अपना धनुष–बाण निकाला और उसे लेकर वो गाँववालों के साथ चल पड़ा। जिस जगह पर साँप ने उत्पात मचा रखा था जब वो वहाँ पहुँचा, खरौं नांः उस गुफा के सामने खड़ा हो गया जहाँ से गुफा के द्वार से साँप निकला करता था। साँप हर रोज की तरह आदमियों को खाने के लिए जब गुफा से बाहर निकला और जब गुफा के द्वार पर आया तो गुफा के द्वार पर तैयार खड़े खरौंः नांः ने अपने दाँव से उस पर वार किया और साँप वहीं पर मर गया। तभी लोगों ने खरौंः नांः को किये हुए वादे के अनुसार उसे उस प्रदेश का राजा बना दिया और वो राजा बन गया।

इस तरह जब वो राजा बन गया तो उसने बूढ़ी और उसकी पोती को अपने पास में रख लिया। पोती को उसने दुजन् यानी महारानी बनाया और जब यह कार्य सम्पन्न हो ही रहा था तो उसको विचार आया कि उसे अपने बड़े भाई खरौंः जांः को भी खोजना चाहिए और इसलिए उन्होंने अपना धनुष–बाण और अपना दाँव लिया और एक नाव पर इरावदी नदी के बहाव को चीरते हुए आगे बढ़े।

एक दिन खरौंः नांः ने अपनी किश्ती एक जगह लगायी। अभी वो अपने बड़े भाई को खोज रहा था तभी उसने देखा कि एक बन्दरिया दोनों भाइयों के सोने से भरे हुए थैले को पीठ पर लटकाये हुए झींगा पकड़ती हुई दिखायी दी। खरौंः नांः ने अपना तमान दाँव निकाला और उस बन्दरी को मारकर जो सोने

से भरा हुआ थैला था उसे ले लिया और उस नाले के अनुसार ऊपर की ओर आगे बढ़ा। दूसरी ओर से नीचे की ओर आ रहे अपने भाई से उसकी भेंट हो गयी। बड़े भाई खरौं: जां: ने छोटे भाई खरौं: नां: को देखकर कहा, "अरे भाई छोटे तुम सोने का थैला उठा लाये और अपनी भाभी को नहीं लाये।" उसने यह पूछा तो खरौं: नां: ने कहा, "नहीं भाभी तो मुझे दिखायी नहीं दी। एक बन्दरिया हम दोनों भाइयों के इस सोने से भरे हुए थैले को पीठ पर लटकाकर गोल–गोल झींगे पकड़कर खा रही थी। उसे देखकर मैंने तलवार से उसे मार डाला और उसी से यह थैला मैंने लिया है।" तभी खरौं: जां: ने कहा, "अरे, वही तुम्हारी भाभी है भई। इस इलाके में कोई आदमी तो था नहीं इसलिए मैंने इस बन्दरी से ही शादी कर ली थी और इसी जंगल में रहने लगा था। अब तुमने अपनी भाभी को मार डाला है। बताओ मैं अब क्या करूँ।" यह कहकर वो रोने लगा। खरौं: नां: को बड़ा दुख हुआ। बड़े भाई से उन्होंने कहा, "मेरा जो प्रदेश है वहाँ बहुत–सी लड़कियाँ हैं, जिस लड़की से आप चाहें शादी कर सकते हैं।" उन्होंने उसे इस तरह समझाया–बुझाया और अपने साथ उसको भी अपने प्रदेश वापस लेकर आया।

प्रदेश में पहुँचकर खरौं: नां: ने अपने बड़े भाई खरौं: जां: से कहा, "गाँव में तुमको कई युवतियाँ मिलेंगी। आप जिस युवती को पसन्द करें तो उसकी ओर उंगली से इशारा कर दें कि मैं इस युवती से विवाह करना चाहता हूँ और वो आपको मिल जायेगी।" लेकिन खरौं: जां: को कोई भी युवती पसन्द नहीं आ रही थी क्योंकि खरौं: जां: को अपने छोटे भाई खरौं: नां: की पत्नी जोकि बड़ी रूपवान थी वही पसन्द आयी हुई थी।

इस तरह अपने भाई की बीवी से ही प्यार कर बैठनेवाले खरौं: जां: ने अपने छोटे भाई खरौं: नां: को किसी तरह भी मारने की योजना बनायी। एक दिन उसने देखा कि एक बहुत बड़ी खाई है, बहुत गहरी खाई है तो उसने सूखे पत्ते और सूखी लकड़ियाँ और कागज आदि से उस गड्ढे के सिरों को ढक दिया और छोटे भाई के पास जाकर कह दिया कि इस खाई के अन्दर एक भालू बैठा है और छोटे भाई से कहा कि तुम जाकर उस भालू को मारकर खदेड़कर ले आओ।

खरौं: नां: जोकि अपने बड़े भाई की बात पर यकीन करता था खरौं: जां: द्वारा रखे हुए घास और सूखी लकड़ियों इत्यादि से ढके हुए प्रवेश द्वार के ऊपर भालू को मारने के लिए जैसे ही कूदकर चढ़ा तो वो एक बहुत ही गहरी खाई में जाकर गिर गया। खरौं: जां: ने ऐसा अभिनय किया कि जैसे उस दृश्य को

देखकर उसे बहुत ही दुख हुआ हो और वो अपने घर लौट गया और भाभी से बोला, "उसका छोटा भाई जंगली भालू को काटने के लिए एक गहरी खाई में जाकर गिर गया और गिरकर वहाँ मर गया है।"

खरौं: नां: की पत्नी बड़ी विचारवान थी विद्वान थी, मटर के दानों को लेकर वो उस खाई के पास गयी जहाँ उसका पति गिर गया था और वो मटर के दाने उसने नीचे गिरा दिये।

खरौं: जां: जोकि इस बात पर खुश हो रहा था कि मेरी योजना अब सफल होनेवाली है। अपने छोटे भाई खरौं: नां: की पत्नी से बोला, "मेरा छोटा भाई मारा गया है और मैं खुद दुखी हूँ और मेरा फर्ज बनता है कि मैं अपनी साली को सहारा दूँ और उसके जीवन में फिर से खुशियाँ लाऊँ।"

खरौं: नां: की पत्नी बहुत सूझ–बूझवाली थी। खरौं: जां: से कहा, "यह आपका जो प्रस्ताव है यह कछिन् रीति–रिवाज के अनुकूल होने के कारण मैं उसे अस्वीकार नहीं करना चाहती लेकिन जब तक तीन वर्ष पूरे नहीं हो जाते मैं चाहती हूँ कि आप इस बात का जिक्र भी न करें, ताकि लोग हमें अपमानित न करें और एक बात और है, जो मुझे सहारा देना चाहता है वो उस धनुष–बाण का जिसका प्रयोग मेरे पति करते थे अगर उस धनुष पर बाण चढ़ा पाओगे और चला पाओगे तभी मैं आपके प्रस्ताव को स्वीकार कर पाऊँगी और वो भी अभी नहीं तीन वर्ष बाद, इसलिए मेरे पति का देहान्त हुए जब तीन वर्ष पूरे हो जायेंगे उसी दिन ही हम एक धनुष यज्ञ करेंगे। धनुष–यज्ञ में यदि आप धनुष पर बाण चढ़ाने में सफल हो गये तो मैं आपसे शादी कर लूँगी।" खरौं: जां: ने मन में सोचा जिस धनुष–बाण को मेरा भाई प्रयोग करता रहा है और जिस पर वो मेरा भाई बाण चढ़ा सकता था भला उस धनुष पर मैं क्यों न बाण चढ़ा पाऊँगा। ऐसा सोचकर उसने उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

जब तीन साल पूरे हुए तो खरौं जां: ने धनुष–यज्ञ रचाया। खरौं: जां: ने धनुष–यज्ञ से पहले यह देखने के लिए कि क्या मैं इस धनुष पर बाण चढ़ा पाऊँगा या नहीं, अकेले सब लोगों की नजर की ओट में धनुष पर बाण चढ़ाकर देखा तो उसकी हैरानी की सीमा न रही। जब उसने देखा कि जो उस धनुष की रस्सी है उसको वो एक इंच भी नहीं खींच पाता था। इसलिए खरौं: जां: ने जब धनुष–यज्ञ उत्सव शुरू किया तब उसने यह घोषणा की कि प्रदेश में कोई भी व्यक्ति इस धनुष पर बाण चढ़ाकर देख सकता है और जो भी व्यक्ति धनुष पर बाण चढ़ा पायेगा तो वो खरौं: नां: की पत्नी से विवाह कर सकता है तो उसने यह घोषणा की। प्रदेश में अपने बल पर भरोसा करनेवाले जितने भी लोग थे

जितने भी मर्द थे उन्होंने आकर धनुष पर बाण चढ़ाया पर कोई भी व्यक्ति उस धनुष पर बाण चढ़ाने में असमर्थ रहा। जब खरौं: जां ने देखा कि कोई भी बाण नहीं चढ़ा पा रहा है तो उसे बड़ी ही प्रसन्नता हुई। कोई भी अगर उस धनुष पर बाण को न चढ़ा पाया तो कछिन् रीति–रिवाज के अनुसार साली पर उसका ही अधिकार होगा।

सूरज डूबनेवाला था। किसी मर्द ने भी धनुष पर बाण नहीं चढ़ाया था। अपने आपको बलवान और शूरवीर समझनेवाले निराश हो चुके थे। उनका हौंसला पस्त हो चुका था। खरौं: जां: अकेले ही अपने विचारों और अपनी कल्पनाओं में खोया हुआ था और कुछ देर बाद ही जिस साली पर अधिकार जमाकर उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करना था उसके बगल में बैठकर वो धनुष को देख रहा था। तभी लाल मिर्च से लथपथ और गूँथे हुए बालोंवाला एक आदमी वहाँ पहुँचा। वो व्यक्ति सीधा उस धनुष–बाण के पास गया और बोला, "मैं धनुष पर बाण चढ़ा सकता हूँ। सिर्फ चढ़ाना ही क्या तुम जहाँ कहो मैं वहाँ निशाना भी मार सकता हूँ इसलिए मुझे इसकी अनुमति दी जाये।" खरौं: जां: ने सोचा जिस धनुष पर कोई बाण तक नहीं चढ़ा पाया तो यह क्या कोई अद्‌भुत् आदमी थोड़े ही है, भला यह क्या धनुष पर बाण चढ़ा पायेगा। उसे इस बात का विश्वास था इसलिए उसने एक तीर नियुक्त किया और यह भी कहा कि तीर लो इस पर चढ़ाओ और फिर जहाँ चलाना चाहते हो चला सकते हो। बड़े–बड़े बालों और बड़ी–बड़ी मूँछोंवाले उस व्यक्ति ने धनुष लिया और खरौं: जां: की ओर देखकर बड़े आराम से धीरे–से चढ़ाया और आराम से बाण चला दिया। यह सब देखकर कि जो आगन्तुक था उसने धनुष पर बाण चढ़ा दिया। यह सब बड़ी हैरानी के साथ देखते–देखते वो हैरानी में खो गया कि अचानक उस आगन्तुक के द्वारा छोड़ा गया तीर उसके शरीर के आर–पार कर गया और वो वहीं मर गया।

वास्तव में बड़े–बड़े बालों और बड़ी–बड़ी मूँछोंवाला जो व्यक्ति था वो और कोई नहीं था अपनी शक्ल बदलकर आया हुआ खरौं: जां: का छोटा भाई खरौं: नां: था, खरौं नां: उस खाई से उन मटर की बेल के सहारे धीरे–धीरे ऊपर चढ़ता जिस दिन धनुष–यज्ञ हो रहा था उन दिन वो ऊपर आया था। इस तरह खरौं: नां: और उसकी सयानी पत्नी उस प्रदेश में दुजा और दुजन के रूप में एक लम्बे समय तक खुशी–खुशी राज्य करते रहे और अपना जीवन सफल बनाते रहे।

दामाद

पुराने ज़माने की बात है कि एक बहुत ही सयाना व्यक्ति एक गाँव में रहता था। वो कोई काम नहीं किया करता था। बहुत–सी जगहों में भ्रमण किया करता था और धोखा देकर, झूठ बोलकर अपने जीवन को आगे बढ़ानेवाला व्यक्ति था।

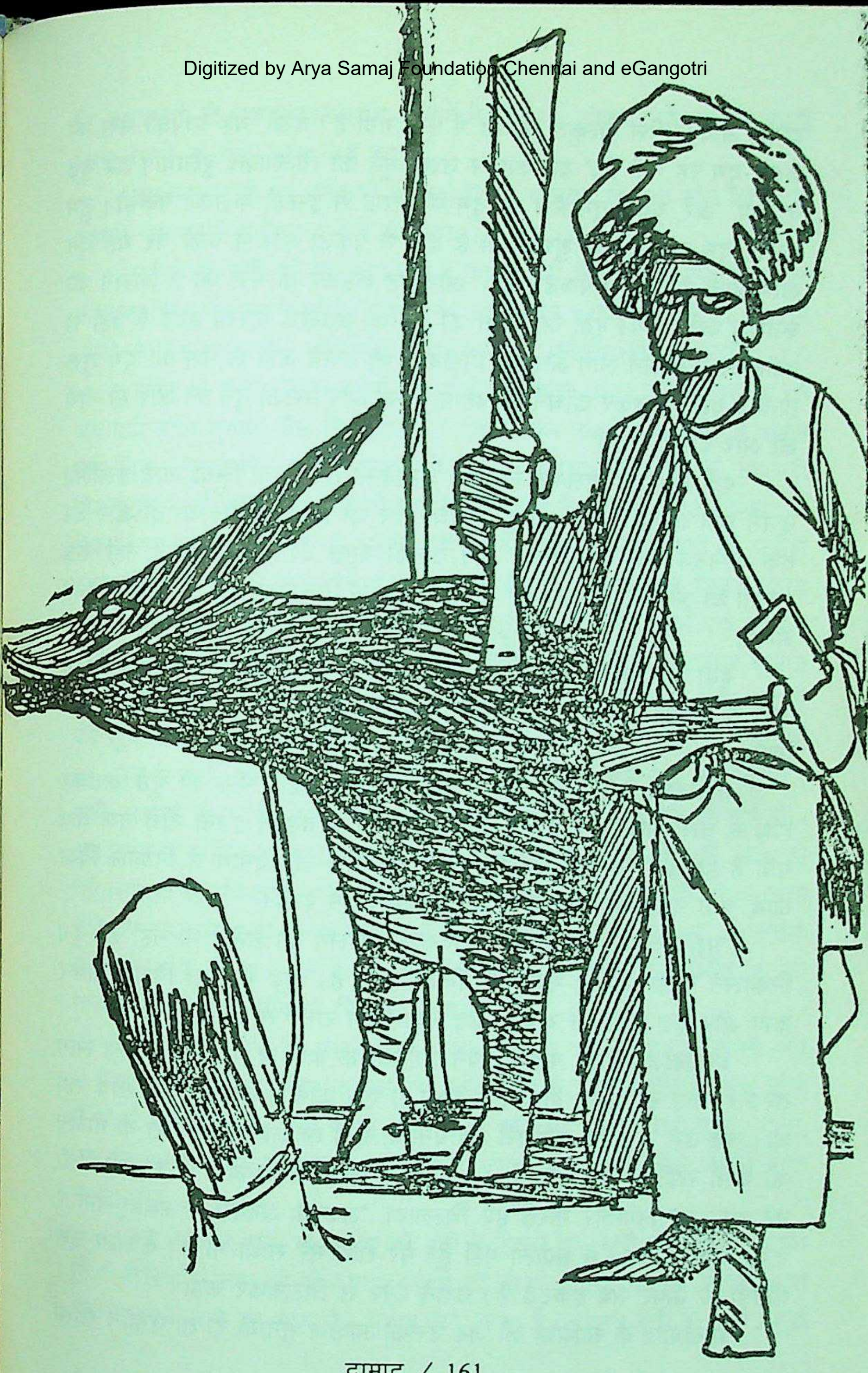
एक दिन वो एक मैदानी इलाके में पहुँच गया। उसने किसी के घर से एक भैंस चुरायी और एक पहाड़ी में उस भैंस को ले गया और वहाँ उस भैंस को मार डाला। उसके साथी उस मरी हुई भैंस के दस टुकड़े कर रहे थे। धोखेबाज उन्हें किसी भी तरह की मदद न करके उनका हाथ न बंटाकर बैठकर देखता रहा। जब मरी हुई भैंस के उन्होंने टुकड़े–टुकड़े कर दिये। उसने भैंस की दुम और भोजन की थैली को लेकर उस भोजन की थैली को नाले के पास छिपाकर रखा और उसकी जो दुम थी उसे उसने एक खेत में गाड़ दिया।

उसके बाद वह भैंस के मांस को बनाकर खाने के लिए कहकर दूसरी ओर चला गया कि वो बर्तन लेकर आयेगा। बर्तन जो उधार पर देनेवाले थे तो उसने उससे कहा कि उसका नाम मनीला है। मनीला का मतलब कछिन् भाषा में बीता साल होता है।

धोखेबाज बर्तनों को उठाकर वापस आ रहा था तो उसका सामना उस भैंस के मालिक से हुआ, "अरे, युवक क्या किसी भैंस को तुमने इधर देखा है?" उस बूढ़े ने यह पूछा तो मनीला ने उत्तर दिया, "देखा है दादा। एक भैंस एक झील में कीचड़ में फँसा हुआ देखा था मैंने।" उसनें बूढ़े को उत्तर दिया।

जब बूढ़े ने कहा कि मेरा भैंस जहाँ कीचड़ में फँसा हुआ है वहाँ मुझे जल्दी से छोड़ आओ। तो धोखेबाज ने जहाँ भैंस की भोजन की थैली और भैंस की दुम दबायी थी उस जगह पर वो उसको ले गया। बूढ़ा उस जगह पर जहाँ उसका भैंस था वहाँ जल्दी से जाना चाहता था और उसने जो टोपी पहन रखी थी वो नीचे गिर गयी तो उसको फिर से उठाने तक का उसको याद नहीं रहा।

बूढ़े से पहले धोखेबाज मनीला था। उसने कहा, "जल्दी–जल्दी आइये



दादा। आपका भैंस बिल्कुल कीचड़ में फँस गया है। देखो, यह आपकी भैंस की केवल दुम रह गयी है।" यह कहकर उसने बूढ़े को चिल्लाकर बुलाया। तब बूढ़े ने कहा, "अरें, युवक तुम भैंस की दुम की तरफ से इसको कसकर पकड़ो। तुम इसकी दुम को जहाँ से शुरू होती है वहाँ से पकड़ो और मैं जहाँ पर यह दुम खत्म होती है वहाँ से पकड़ता हूँ।" और यह कहकर वो भैंस को निकालने की कोशिश करने लगे। बूढ़ा जहाँ भैंस की दुम का आखिरी हिस्सा होता है वहाँ से पकड़कर निकालने लगा और जो धोखेबाज था उसने जहाँ से भैंस की दुम शुरू होती है वहाँ पकड़कर खींचने का बहाना किया और उसकी दुम को और भी नीचे की ओर दबाने लगा।

बूढ़े का बहुत दिल था कि भैंस को किसी तरह बचा लिया जाये इसलिए उसने बड़ी ताकत लगाते हुए दुम खींचा और जो कि धोखेबाज था वो और देर तक अभिनय नहीं कर सकता था। उसको बहुत देर तक रोककर नहीं रख सकता था और भैंस की जो दुम थी वो कीचड़ से निकलकर बूढ़े के हाथ में चली आयी।

बूढ़ा जो शक्ति लगाकर काम कर रहा था अचानक दुम उसके हाथ में आने से वह अपने–आप को संभाल नहीं पाया और काफी दूर औंधे मुँह जाकर गिरा।

धोखेबाज ने बूढ़े को उठाया और उठाकर कहा, "भैंस की पूँछ कटकर हाथ में चली आयी है। यह जो भैंस है यह तो कीचड़ में इतनी नीचे तक धंस गयी है कि अब हमें यही चाहिए कि इसकी खोज को दिमाग से निकाल दिया जाये, क्यों दादा यह ठीक है।" यह प्रस्ताव उसने रखा।

"मुझमें तो अब जमीन को खोदकर निकालने की शक्ति भी नहीं है। दुम निकालने में ही अब तो मेरी जान निकल गयी है।" बूढ़े ने बहुत निराश होकर कहा और उस रास्ते से वापस लौट गया जिस रास्ते से वो आया था।

धोखेबाज मनीला पतीले अपने साथियों के पास ले गया। जब अन्य लोग तरकारी बना रहे थे तो वो उदास चेहरे से एक कोने में बैठकर कुछ सोच रहा था। जब उसे लगा कि तरकारी अब बननेवाली है तो जहाँ उसने भैंस के भोजन की थैली रखी थी वो वहाँ गया। उसने एक डण्डा लिया और भोजन की थैली को बार–बार लगातार मारते हुए चिल्लाया, "अकलौः अकलौः।" अर्थात् बाप रे बाप ! बाप रे बाप ! मैं अकेला नहीं हूँ। मेरे साथ मेरे साथी भी हैं। वे लोग उस पहाड़ी के ऊपर सब इकट्ठे हैं। उसने जोर से चिल्लाकर कहा।

धोखेबाज के साथियों को जब उसकी आवाज़ सुनायी दी तो उन्होंने सोचा

कि वास्तव में ही पकड़नेवाले लोग आ गये हैं और यह सोचकर वो वहाँ से अपनी जान बचाने के लिए भाग खड़े हुए।

धोखेबाज पके हुए तरकारी के पतीलों को उठाकर ले गया और एक–एक पहाड़ी पर उसने पतीला जमीन में दबाया।

पतीले के मालिकों को जब पतीले वापस नहीं मिले तो वे गाँव के प्रधान के पास शिकायत करने पहुँचे। प्रधान ने पूछा, "कौन इस समय पतीलों को तुम लोगों से लेकर गया है?" गाँववालों ने उत्तर दिया, "मनीला नाम का व्यक्ति था।"

प्रधान ने कहा, "जिन बर्तनों को कोई गये साल उधार लेकर गया था तो अब वही बर्तन तुमको कैसे मिल जायेंगे?" यह कहकर उसने गाँववालों को वापस भेज दिया। दूसरे दिन मनीला एक ऐसी बस्ती में पहुँचा जहाँ मांस की तरकारी मिलने की कोई सम्भावना नहीं थी क्योंकि उस गाँव में पशुओं का एक प्रकार से अकाल था। जब इस बात की उसको जानकारी मिली तो उसने वहाँ जो पतीले तरकारी के जमीन में गाड़ रखे थे उन सबको बेचने के लिए उसने विचार किया और उसके बारे में सोचा। अचानक लोगों ने सुना कि उनके गाँव में एक पण्डित ज्योतिषी आया हुआ है। लोग ज्योतिषी के पास जाकर बोले, "महाराज कृपया यह बतायेंगे कि हमें गोश्त कैसे मिल सकता है?" धोखेबाज ने जिन–जिन पतीलों को खुद जहाँ–जहाँ दबा रखा था उस जगह को बताया और कहा, "उन जगहों पर, उन स्थानों पर खुदाई शुरू कीजिए। आप लोगों को बनी बनायी और पकी–पकायी तरकारी मिलेगी। बिल्कुल तैयार मिलेगी।" यह उसने घोषणा की। इस तरह तीन दिन बाद जब धोखेबाज के द्वारा छिपाए हुए पतीले भी खत्म हो गये, समाप्त हो गये और ज्योतिषी की जो भविष्यवाणियाँ थीं उन पतीलों के खत्म होने के साथ–साथ ही गलत सिद्ध होने लगीं। जब उसके झूठ के बारे में, उसके ढोंग के बारे में सब लोगों को पता चला तो उन्होंने उस धोखेबाज को मार–पीटकर अपने गाँव से निकाल दिया।

धोखेबाज भाग्य के सहारे जहाँ भाग्य ले जाये, इस हिसाब से अपने गाँव से निकल पड़ा और चलता–चलता एक दूसरे गाँव में पहुँचा। गाँव के एक कोने में उसने देखा कि एक बूढ़ा रस्सी बना रहा है इसलिए उसने उससे पूछा, "दादा, एक बूँद पानी तो पिलाइये।" उसने अभिनय करते हुए यूँ कहा जैसे कि वो बहुत प्यासा हो।

बूढ़े ने कहा, "घर के अन्दर जो बूढ़ी है उससे तुम पानी माँगकर पी सकते हो।" धोखेबाज जब घर के अन्दर पहुँचा तो बोला, "दादा ने मुझे आपके पास पचास रुपये लाने को भेजा है। मैं वह लेने आया हूँ।" उसने बूढ़ी से कहा। बूढ़ी

ने न तो उसको पैसे दिये और न ही कुछ कहा और उसकी ओर इस तरह देखने लगी कि जैसे उसको उस पर बिल्कुल विश्वास न हो।

तभी धोखेबाज बूढ़े के पास वापस लौट आया और उसने बूढ़े से कहा, "दादा, तुमने कहा था कि मुझे दे दो। क्यों कहा था कि नहीं? दादा बोलो।" उसने जोर से आवाज़ निकालकर पूछा।

"हाँ, हाँ दे दो।" बूढ़े ने कहा। यह सुनकर बूढ़ी ने पचाय रुपये धोखेबाज को दे दिये।

जब धोखेबाज घर से गया तो उसने बूढ़े की ओर देखा और बूढ़े ने भी उसकी ओर देखा तो बूढ़े ने देखा कि वो अपने हाथ में कुछ पकड़कर ले गया है और तब उसने बूढ़ी से पूछा कि तुमने उस आदमी को क्या दिया था? "आपके आदेशानुसार पचास रुपये मैंने उसको दिये हैं।" बूढ़ी ने कहा।

बूढ़े ने कहा, "इस नीच व्यक्ति ने हम लोगों को धोखा दिया है। आओ जल्दी–जल्दी इसका पीछा करते हैं।" यह कहकर बूढ़ा उसके पीछे–पीछे दौड़ते–दौड़ते गया।

तभी बारिश बहुत जोर से आने लगी। धोखेबाज को बहुत ठण्ड लगने लगी और वह एक शिकारी के रसोईघर में घुसकर हाथ तापने लगा। बूढ़ा और बूढ़ी जोकि धोखेबाज के पीछे–पीछे आ रहे थे वो धोखेबाज के पास पहुँचे और धोखेबाज से उन्होंने कहा, "तुम हमारे पैसे वापस करो।" तब धोखेबाज ने कहा, "मुझे बहुत सर्दी लग रही है। मैं और आगे नहीं दौड़ पाऊँगा। मुझे थोड़ी देर तक आग ताप लेने दो और उसके बाद में दूँगा।" बूढ़ा और बूढ़ी दोनों एक तो बहुत थक गये थे और दूसरा बहुत सर्दी भी लग रही थी इसलिए वे वहाँ बैठकर आग तापने लगे। आग की गरमाहट के कारण और बहुत थके–मांदे होने के कारण बूढ़ा और बूढ़ी कुछ ही समय में झपकी लेने लगे और कुछ समय में ही सो गये। धोखेबाज ने इस समय का फायदा उठाकर जब बूढ़ा और बूढ़ी सो रहे थे उसने बाहर बँधे हुए घोड़े को खोला और उस पर सवार होकर वहाँ से चुपचाप भाग खड़ा हुआ।

धोखेबाज ने अपने भाग्य पर निर्भर करते हुए यह फैसला किया कि उसका भाग्य जहाँ उसे ले जायेगा वो वहाँ चला जायेगा। इसलिए वो अंधाधुंध घोड़े को भगाता चला गया और भगाते–भगाते धोखेबाज एक महल में पहुँचा। उसने घोड़े को एक जगह पर बाँध दिया और नदी के किनारे पर खड़ी हुई नाव पर सवार हो गया और पतवार लेकर स्वयं ही नाव खेने लगा। जिस इलाके में यह धोखेबाज नाव की सहायता से पहुँचा था वहाँ एक रिवाज था कि उस प्रदेश में

या गाँव में जो मेहमान आये उस मेहमान को हर गाँववाला एक–एक गिलास पानी पिलाया करता था यानी हर घर से पानी पिलाने की प्रथा थी। इसलिए घर के मालिक उसे पानी पिलाने के लिए आये। धोखेबाज को जितना पानी पीने के लिए दे रहे थे उसको न पीकर नाव में जो पानी था उसको छेड़ता हुआ खेल रहा था। जो कोई भी उसका नाम पूछता तो वो अपना नाम नईं थीवा बताता। इसका मतलब होता है दामाद। जब महाराज की बारी आयी तो उन्होंने भी उसे पानी पीने के लिए दिया तो उसने वो पानी भी नहीं पिया और जब महाराज ने उससे उसका नाम पूछा तो उसने बताया नईं थीवा मतलब मेरा नाम दामाद है। आखिर में पानी पिलाने की बारी महाराज की अकेली बेटी राजकुमारी की थी। धोखेबाज को राजकुमारी जब पानी पिला रही थी तो धोखेबाज उसे घूरता रहा। राजकुमारी को भी मेहमान को पानी पिलाने के लिए नाव के ऊपर तक चढ़ना पड़ा इसलिए जैसे ही राजकुमारी नाव पर आयी तो धोखेबाज उसे नाव में बिठाकर ले गया। तब महाराज चिल्लाये, "मेरी बेटी को धोखेबाज चुरा ले गया।" बस मात्र वो चिल्लाता ही रहा और कुछ नहीं कर पाया। महाराज की चीख के कारण जो दास–दासियाँ नदी के किनारे पर आयी हुई थीं नदी के किनारे इकट्ठी हो गयीं। राजकुमारी को किसने चुराया है उन्होंने पूछा। "नईं थीवा ! नईं थीवा !" महाराज ने उत्तर दिया। जब राजकर्मचारियों ने महाराज के उत्तर को सुना तो बोले, "जब दामाद ही बेटी को चुराकर ले गया है तो इसे चुराना नहीं कहते। यह तो नाव पर सैर–सपाटे के लिए, जल–क्रीड़ा करने के लिए निकले हैं।" यह कहकर धोखेबाज का पीछा नहीं किया और अपने–अपने घरों को लौट गये।

इस तरह धोखेबाज महाराज का दामाद बन गया और इस तरह उनकी बेटी को अपनी पत्नी बनाकर अनजान दिशा की ओर चला गया।

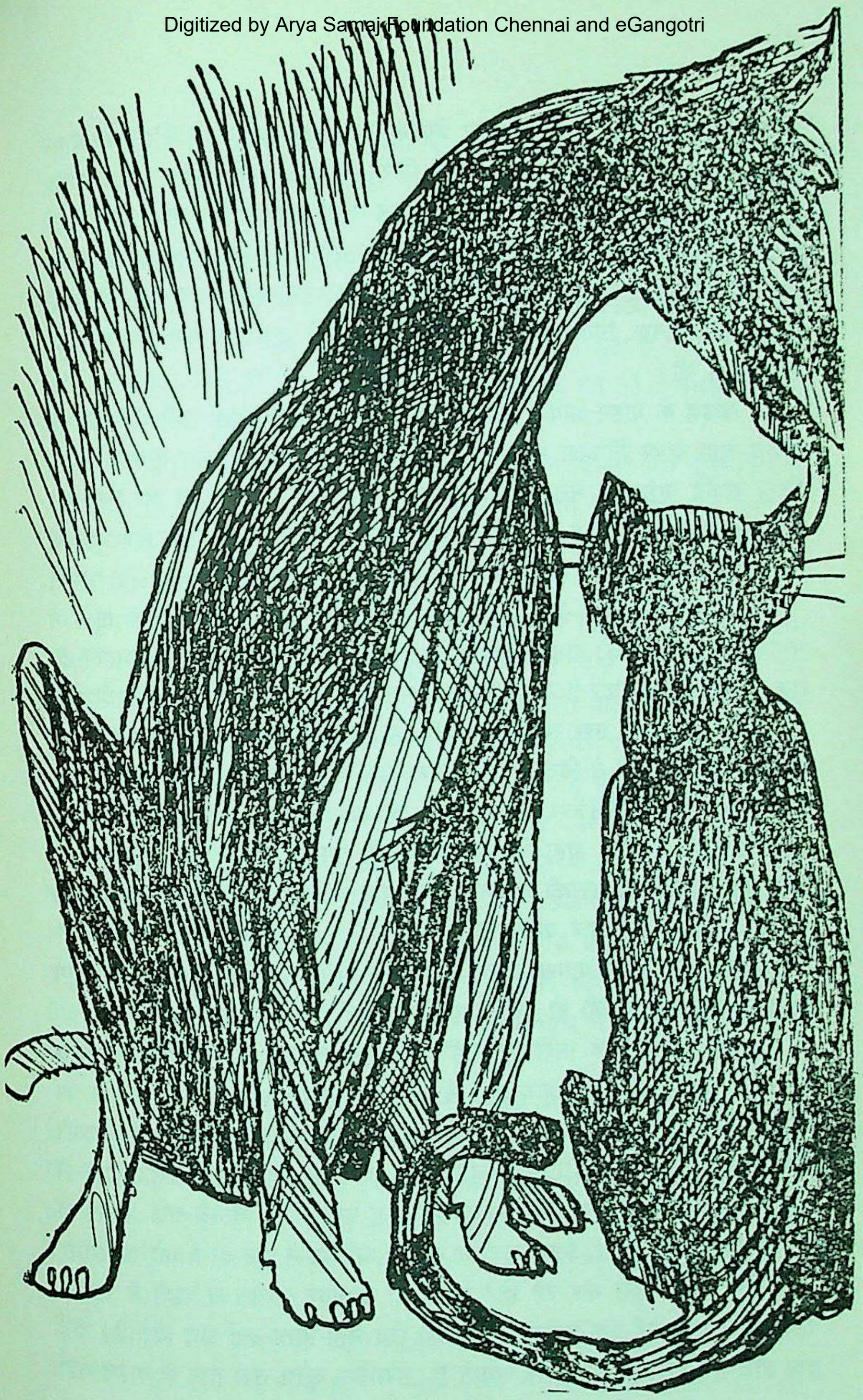
कुत्ता और बिल्ली

पुराने ज़माने में कुत्ता और बिल्ली दोनों ऐसे जानवर थे जोकि लोगों के घरों में रहते थे और इसलिए इन दोनों को पालतू जानवर माना जाता था। यह दोनों आपस में कभी शत्रु नहीं हुए और इनकी आपस में काफी बनती थी।

एक दिन घर के मालिक ने इन दोनों को बुलाकर कहा, "सुनो कुत्ते और बिल्ली। जब से तुम लोग मेरे घर आये हो तब से ही मैं तुम लोगों को भोजन और मांस–मछली इत्यादि खिलाता आ रहा हूँ। तुम लोगों का भी फर्ज बनता है कि कभी–कभार तुम लोग भी मेरे लिए भोजन लाकर खिलाओ। जाओ आज तुम लोगों को मैं छुट्टी देता हूँ कि घूमो–फिरो और मुझे भोजन खिलाने का प्रबन्ध करो।"

जब मालिक ने ऐसी बात कही तो कुत्ता और बिल्ली एक–दूसरे का मुँह देखने लगे लेकिन उनमें इतनी हिम्मत नहीं हुई कि वो मालिक की आज्ञा का विरोध करें या मना कर दें। इसलिए भोजन और मांस–मछली की तलाश में वे जंगल की ओर गये। जंगल में पहुँचकर उन्होंने भोजन आने का काफी इन्तजार किया। काफी देर तक खोजने के बाद जंगल में एक जगह जमीन के भीतर जानवरों को फँसाने के लिए शिकारियों द्वारा लगा हुआ जाल उन्होंने देखा तो कुत्ते को लगा कि मालिक के लिए कोई–न–कोई शिकार मिलेगा इसलिए वो बड़ा प्रसन्न हुआ। बिल्ली भी बड़ी प्रसन्न थी लेकिन वे वहाँ बैठकर भी उछल–कूद करते रहे।

इसके बाद कुत्ते ने बिल्ली से कहा, "मित्र, तुम इस क्षेत्र पर बैठकर इन्तजार करो और मैं इस खड्ड में जाकर देखता हूँ और इधर अगर कोई शिकार आये तो उसे छोड़ना नहीं।" और यह कहकर कुत्ता खड्ड में चला गया। कुत्ते के निर्देशानुसार बिल्ली जाल पर बैठी हुई ध्यान रख रही थी। खड्ड में घुस गया कुत्ता खड्ड में घुसकर एक शिकार ढूँढकर मारकर बाहर लेकर निकल आया लेकिन कुत्ता उस जगह पर नहीं निकला जहाँ पर बिल्ली बैठकर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। बिल्ली जहाँ थी वहाँ एक ऐसा छेद था जहाँ कोई खतरा



नहीं था। सफेद चूहा वहीं से बाहर निकला। तब तक कुत्ता भी भीतर से बाहर आ चुका था। सफेद चूहे ने भागना शुरू किया तो कुत्ते ने भी उसका पीछा करना शुरू किया। जब कुत्ता सफेद चूहे को पकड़ने में कामयाब नहीं हुआ तो इस सारी घटना की ओर बिल्ली का ध्यान नहीं गया। बिल्ली उस सफेद चूहे का इन्तजार कर रही थी जो उस द्वार से अचानक बाहर निकलेगा और उसने अपनी सारी एकाग्रता अचानक निकलकर आनेवाले शिकार को अचानक पकड़ने के लिए लगा रखी थी।

खड्ड के बाहर आकर जब कुत्ते ने देखा तो बिल्ली वहाँ नहीं थी और जो सफेद चूहा बाहर निकला था वो भी कहीं नजर नहीं आता था। कुत्ते ने सोचा जिस सफेद चूहे को मैंने बाहर निकलवाया था बिल्ली वास्तव में उसी को पकड़कर कहीं ले गयी है और उसने मेरी तक प्रतीक्षा नहीं की और अब मुझे भी उसके पीछे–पीछे जाना पड़ेगा यह सोचकर वो दौड़कर सीधा घर लौट गया।

बिल्ली वहीं बैठी–बैठी इस बात की प्रतीक्षा कर रही थी कि कुत्ते ने भगाकर सफेद चूहे को बाहर निकाला है, वो अभी आनेवाला ही होगा। काफी देर तक बिल्ली प्रतीक्षा करती रही और उसने काम में काफी उस्तादी दिखायी और पूरी एकाग्रता से वो उस स्थान पर बैठी रही। उस छेद द्वार से तनिक भी नहीं हिली जहाँ उसे कुत्ते ने बिठाया था। सारा दिन वो वहाँ प्रतीक्षा करती रही। जब शाम होनेवाली थी तो जिस छिद्र द्वार पर वो रखवाली कर रही थी, प्रतीक्षा कर रही थी उसमें से एक चूहा निकला और तभी बिल्ली ने अचानक ही उस पर धावा बोल दिया और उसको मुँह में दबाकर घर ले आयी। वास्तव में उस बिल्ली का कुत्ते को भी इन्तजार करना चाहिए थी।

जब बिल्ली घर वापस पहुँची तो कुत्ते ने पूछा, "तुम अच्छी नहीं हो। तुम बहुत घटिया स्वभाव की हो। तुम अकेले शिकार पकड़कर छिपी बैठी थीं।"

"मुझे तुमसे कोई नाराजगी नहीं है। तुम्हीं नाराज होकर किसी से कुछ कहे बिना यहाँ दौड़े चले आये हो। मैं तुम्हारे आदेशानुसार उस छिद्र द्वार पर शिकार आने की प्रतीक्षा करती रही। सारा दिन बीत गया कोई बाहर नहीं आया। शाम के समय यह एक छोटा–सा चूहा आया और यह मैं पकड़कर सीधा घर ले आयी। इस बारे में तुम क्या कहना चाहते हो।" कुत्ता और बिल्ली एक–दूसरे के बारे में इतना बोल रहे थे जिसे सुनकर उसके मालिक ने उन दोनों को समझाया, "तुम दोनों क्यों बहस कर रहे हो? देखो जो जानवर जमीन में रहते हैं उनका बाहर आने का कोई एक रास्ता या एक ही छेद नहीं होता कई छेद होते हैं। कई द्वार होते हैं जिनसे वे बाहर आ सकते हैं। इसलिए कुत्ता उस द्वार से बाहर नहीं

आया जहाँ बिल्ली रखवाली कर रही थी। बिल्ली दूसरे छेद से कुत्ते के बाहर निकल जाने की बात समझ नहीं पायी इसलिए सारा दिन वहाँ शिकार की तलाश में बैठी रही। बिल्ली वहाँ प्रतीक्षा करके दुश्मन को अपने कब्जे में करने के लिए प्रयत्न करती रही लेकिन कुत्ता जब दूसरे द्वार से बाहर निकल आया तो कुत्ते को बिल्ली दिखायी नहीं दी और उसने सोचा कि बिल्ली वापस दौड़ गयी है और इसलिए कुत्ता वहाँ से पहले दौड़ आया। यह जो चूहा है, यह जो शिकार तुम मेरे लिए लायी हो यह बहुत छोटा है इसे तुम ही खा लो।" मकान मालिक ने बिल्ली को अनुमति दी।

इस तरह मालिक ने सब कुछ समझाया लेकिन बिल्ली और कुत्ते फिर भी चुप नहीं हुए। एक–दूसरे को क्षमा करने के भाव उनमें नहीं आये। वो लगातार बहस करते रहे। बिल्ली भी कुत्ते पर अपना क्रोध दिखाने लगी और कुत्ता भी बिल्ली को काटने के लिए तैयार था।

तभी मालिक ने चिल्लाकर कहा, "तुम कुत्ते और बिल्ली लगता है कि तुम दोनों की कभी निभेगी नहीं। मेरी अनुपस्थिति में तुम दोनों एक–दूसरे पर वार करोगे और एक–दूसरे को मार डालोगे। तुम लोग मेरी बात मानोगे तो सन्तुष्ट होगे। मैंने तुम लोगों को अभी कितना समझाया है इसके बावजूद भी तुम लोग इतना झगड़ रहे हो। तुम लोगों को मैं मना कर रहा हूँ और इसके बाद भी मैं तुम लोगों को और समझा दूँगा और तुम लोगों को मेरी बात माननी होगी।" बिल्ली ने उत्तर दिया, "मालिक, आप जो व्यवस्था करेंगे हम उसे मानेंगे।" कुत्ते ने भी कहा, "मालिक, आप जो नियम लागू करेंगे उसका हम पालन करेंगे और उसके विरुद्ध नहीं जायेंगे और सब कुछ आपकी पसन्द के अनुसार होगा।" तभी मालिक ने कहा, "तुम कुत्ते शरीर में बड़े हो। तुम्हारी शक्ति भी ज्यादा है। तुम तेज ही नहीं दौड़ते बल्कि बड़े ही फुर्तीले भी हो।" कुत्ते ने कहा, "मालिक, आप जो कुछ कह रहे हैं वे सारे गुण मुझमें हैं।"

"अगर यह बात सच है तो तुम कुत्ते जोकि शरीर में बहुत बड़े हो और ज्यादा शक्तिशाली हो और ज्यादा तेज दौड़ सकते हो और दुश्मन से मुकाबला करके उससे बच भी सकते हो। इसलिए तुम्हें घर के बाहर जाना होगा। बिल्ली जो है तेज दौड़ती तो है लेकिन शरीर में छोटी है। उसकी ताकत में भी कमी है और वो दुश्मन का मुकाबला भी नहीं कर सकती इसलिए उसे घर में ही रहना चाहिए।" मालिक ने निर्णय दिया।

इसलिए उस समय से लेकर आज तक कुत्ता घर से बाहर और बिल्ली घर के अन्दर रहने लगे। वे लोग शुरू में एक–दूसरे से प्यार और मोहब्बत से रहते

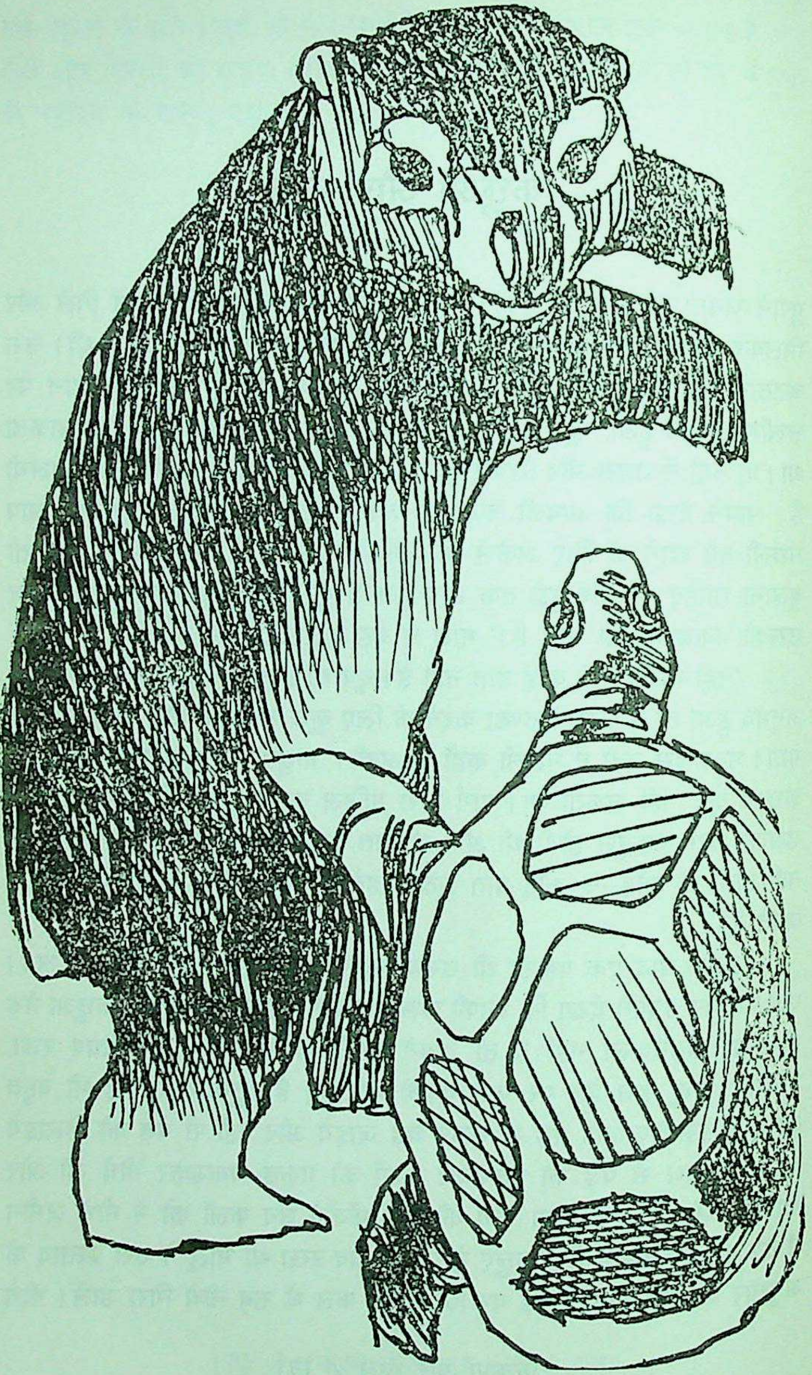
थे पर मालिक द्वारा व्यवस्था करने के बाद उनका वो प्यार नहीं रह पाया और एक–दूसरे के प्रति शत्रुता के भाव उन्होंने रख लिए जो आज तक कायम हैं और कुत्ते और बिल्ली की शत्रुता आज तक कायम है। भले ही वो एक ही घर के एक ही मालिक के पालतू पशु हों।

कछुआ और भालू

पुराने ज़माने की बात है। एक भालू और एक कछुआ एक जंगल में मिले और मिलकर भोजन की तलाश में निकले। नदी के किनारे एक चट्टान थी। उस चट्टान को पार करके जाना था। भालू एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर छलाँग लगाता हुआ, कूदता हुआ आगे चल रहा था। कछुआ कूद नहीं सकता था। वो नदी में उतरा और तैरकर गया। भालू ने उससे कहा, "आप बहुत लालची हैं। आपने देखा कि आपकी नजर में कोई मछली आ गयी तो इसलिए आप मछली को खाने के लिए अकेले ही पानी में चल पड़े। कम–से–कम मुझे तो बुलाना चाहिए था और मुझे तक आप बुलाना भूल गये। आप अकेले ही जाकर उसको पकड़कर खा आये हैं।" भालू ने यह बात कछुए से कही।

"नहीं दोस्त ऐसी कोई बात नहीं है। धूप थी इसलिए पीठ पर गरमायी का अनुभव हुआ तो मैं उसको ठण्डा करने के लिए कुछ समय के लिए पानी में चला गया। भला इस नदी में मछली कहाँ से आयी।" कछुए ने सफाई दी। वास्तव में कछुआ कूद नहीं सकता था। मार्ग द्वारा मंजिल तक पहुँचने की बात बताने में उसको शरम महसूस होती थी और वो बात कछुआ छिपा गया। जिनमें शक्ति नहीं होती वो कोई–न–कोई बात झूठी कहते हैं और बहाना करने की कोशिश करते हैं।

इसके बाद एक पहाड़ी थी उसके ऊपर चढ़कर वो भोजन खोजने लगे। एक पेड़ पर उन्होंने देखा कि काफी फल पके हुए हैं इसलिए क्योंकि कछुआ पेड़ के ऊपर चढ़नेवाला नहीं है तो उसने अपने बुद्धिबल से एक प्रस्ताव रखा, "मित्रवर भालू, इस पेड़ पर फल काफी पके हुए हैं। तुम्हारी ऊँचाई भी बहुत अच्छी है इसलिए आप पेड़ के ऊपर चढ़ जाइये और वहाँ से पेड़ को हिलाइये या अपने हाथ से पेड़ को पकड़कर फलों को पकड़–पकड़कर नीचे की ओर फेंकिये। जो–जो फल आप नीचे की ओर फेंकेंगे उन फलों को मैं नीचे जमीन में ढेर बनाकर रखता हूँ।" कछुए ने जो प्रस्ताव रखा था भालू ने उस प्रस्ताव के अनुसार पेड़ पर चढ़कर पेड़ पर जितने भी फल थे सब नीचे गिरा डाले। नीचे



जो कछुआ था जितनी तेजी के साथ फल गिर रहे थे वो अपने शरीर में से सिर को बाहर निकालने में असमर्थ था। भालू ने पेड़ पर बैठकर पेट भरकर फल खाये।

एक दिन भालू ने कछुए के पीठ के मोटे छिलके को हाथ से मारते हुए कहा, "भले आदमी इस छिलके को किसलिए तुमने अपनी पीठ पर लाद रखा है?" भालू के पूछने पर कछुए ने उत्तर दिया, "भालू तुम बड़े मूर्ख हो। इतना भी नहीं समझते हो कि हर कोई एक सामान अपने साथ में रखता है जोकि बहुत काम में आता है। मैंने यह खाल यह छिलका अपनी पीठ से इसलिए लगा रखा है कि यह बहुत काम आता है।" कछुए ने उत्तर दिया।

कुछ देर बाद तूफान और मूसलाधार बारिश एक साथ आनी शुरू हो गयी और पेड़ों से पेड़ों के छिलके, पेड़ों की टहनियाँ भालू के सिर पर गिरे। "बाप रे बड़ी दर्द हुई। बड़ी सर्दी लग रही है।" भालू यूँ चिल्लाने लगा। कछुए ने अपना सिर अपने छिलके के अन्दर कर लिया और हँसकर कहा, "वाह ! वाह ! खूब गहरी नींद आती है। हाँ, तो भालू महोदय अब बताओ कि कौन मूर्ख है? एक वस्तु किसी के लिए बहुत ही लाभदायक हो सकती है और दूसरे के लिए बिल्कुल व्यर्थ। इस बात को हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।"

खजाना

किसी समय की बात है एक गाँव में रनवा और खौः खाई नाम की एक दम्पति थे। वे काफी गरीब थे और न ही उनके कोई सन्तान थी। उन्हें बाकी तो सन्तोष था लेकिन सन्तान न होने का अवश्य ही दुख था। पत्नी अक्सर कहा करती थी कि हमारे कोई सन्तान नहीं है। आगे चलकर हम लोगों का क्या होगा ? कौन हमारी देखभाल करेगा और कौन हमारी सेवा करेगा। यह कहकर वो काफी निराश हो जाया करती थी।

पति बड़ा ही गम्भीर किस्म का व्यक्ति था। धन–दौलत और सन्तान न होने पर भी उसे दुख नहीं था। चिन्ता नहीं थी। उसे सन्तोष था । बस उसकी हमेशा यही कोशिश रहती थी कि वो हमेशा जो काम करता आ रहा है उसे करे और अच्छे ढंग से करे और यही वजह थी कि जो काम वो करता था वो काम कभी नुकसान देनेवाला नहीं था। पति–पत्नी को खाने और पहनने के लिए अच्छा मिल जाता था और वो कुछ जमा भी कर लेते थे लेकिन पति रनवा जब भी अपनी पत्नी की निराशापूर्ण बातें सुनता तो वो कभी–कभी अपने आपसे ही पूछ लेता था क्या जीवनभर उनकी यही हालत रहेगी? जब उसको कोई उत्तर नहीं मिलता तो वो सोचता था क्यों न जो ज्योतिषी हैं उनसे यह सारी बातें पूछी जायें। इसलिए वो एक ऐसे ज्योतिषी के पास गया जो इस बात के लिए प्रचलित था कि जो भी वो कहेगा सच कहेगा। ज्योतिषी ने रनवा की जन्मपत्री देखी और बड़ी सावधानी के साथ हिसाब लगाया ताकि कोई बात गलत न हो और आखिर में उसने भविष्यवाणी की, "तुम्हें जरा भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारी जन्म–कुण्डली बहुत अच्छी है। कुछ ही दिनों में तुम्हें एक खजाना मिलेगा। बिल्कुल अचानक और लगेगा कि तुम्हारे ऊपर सोने–चाँदी, हीरे–जवाहरात की बरसात हो रही है।" इस भविष्यवाणी को सुनकर रनवा बहुत खुश हुआ और उसने ज्योतिषी महाराज को दान–दक्षिणा दी और प्रणाम किया तथा घर लौट आया।

घर पहुँचकर रनवा ने अपनी पत्नी को ज्योतिषी महाराज द्वारा बतायी गयी



सारी बातें बतायीं और उसने उससे कहा कि मैं खुद भी महसूस करता हूँ कि उनकी भविष्यवाणी सत्य होगी।

पत्नी तुरन्त बोली, "अब कोई चिन्ता की बात नहीं है। जन्मपत्री अच्छी है और जो हमारे पास सामान है उस सामान में ऐसे वृद्धि होगी अचानक जैसे हीरे–जवाहरात, सोने–चाँदी के होने से होती है।" तब उसे इस बात पर विश्वास नहीं था कि अचानक ही उनके हाथ कोई इतना बड़ा खजाना लग जायेगा और वो अमीर हो जायेंगे। वो यह सोचते कि यह सोना–चाँदी हमें कौन देगा? कोई हम पर दया करके देगा। शायद ज्योतिषी महोदय ने भी हमारे साथ मजाक की हो और ऐसी बात कही हो। पत्नी जहाँ निराशा में बातें करती थी लेकिन पति रनवा को पूर्ण आशा थी । उसे ज्योतिषी महोदय की भविष्यवाणी पर जरा–भी शक नहीं था। बस वो प्रतीक्षा कर रहा था उस समय की जब उसके भाग्य के द्वार खुलेंगे और जब उसके भाग्य में दौलत होगी और वो आयेगी।

एक रात रनवा घर से बाहर निकलकर टहलने गया तो उसने देखा कि जहाँ वो टहल रहा है वहाँ से थोड़ी ही दूर पर आग की तरह चमकती हुई वस्तु अचानक जैसे उसने देखी हो। उसके बारे में विशेष रूप से उसको कोई परेशानी नहीं हुई, जहाँ से उसने देखी थी वहाँ दौड़कर गया और उसने अपनी कमीज उतारी और उस पर ढक दी।

सुबह होते ही रनवा उस जगह को उस वस्तु को देखने गया जिसको उसने कमीज से ढक दिया था और वो रात को जैसे रखी हुई थी वैसी वहाँ नहीं थी। शायद उस कमीज के एक हिस्से को कोई खींचकर ले गया था जोकि एक खड्डे के पास पड़ी थी। रनवा ने उस खड्डे को अच्छी तरह देखा और समझा जिसके पास उसकी कमीज पड़ी थी और अच्छी तरह उसको याद करके वो घर लौट आया।

यह वो समय था जब रनवा के घर में कोई मेहमान आया हुआ था। यह मेहमान उस दिन सुबह–सुबह उसके घर आया हुआ था। रनवा अभी यात्रा से वापस ही लौटा था तो उसने मेहमान को बताया कि उसने कल रात क्या देखा है। सुबह वह जब उसे देखने गया तो वो वहाँ देखता है कि वहाँ कोई आश्चर्यजनक घटना हुई हो। ऐसा लगता था। अब अगर जो मुझे सपने में खजाना दिखायी दिया और वो खजाना वहाँ है जो सुबह जैसे मुझे लगा तो उसे जाकर यदि खोदें तो खजाना जरूर हासिल हो सकता है। ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। अगर आपको वहाँ खजाने में सोना और चाँदी मिले तो उस सोना और चाँदी का आधा हिस्सा आप मुझे दीजिए और आधा हिस्सा आप लीजिए।

रनवा ने अपने मेहमान के सामने अपने अतिथि के सामने यह प्रस्ताव रखा।

अतिथि जाने के लिए राजी हो गया। अतिथि को कहानी सुनने के बाद लालच आया कि वो समय बर्बाद नहीं करेगा। उसी दिन वो खजाने को खोदने जायेगा। वो गया और उसने काफी गहरे स्थान पर खुदाई की तब उसे एक घड़ा दिखायी दिया। घड़े का मुँह देखकर उसे और भी उत्साह हुआ। उसने और शक्ति लगाकर और उत्साह से पूरी ताकत लगाकर खुदाई शुरू की। धीरे–धीरे एक काफी बड़ा घड़ा प्रकट हुआ, उसने घड़े का ढक्कन खोलकर देखा।

क्या उसमें सोना–चाँदी था ? कौन–सी चीजें थीं उसमें ? न उसमें सोना था, न चाँदी थी। उसमें पानी भरा हुआ था। तब भी उस अतिथि को निराशा नहीं हुई। उसने उस घड़े को उस खड्ड से बाहर निकाला और चुपचाप उठाकर ले गया और घर में उसने संभालकर रख लिया। लेकिन रनवा पति–पत्नी से छिपाकर वो उस घड़े को घर में लाया। रनवा पति–पत्नी को उसने बताया कि खुदाई से उसे कोई वस्तु प्राप्त नहीं हुई है। जब मेहमान वापस लौटा तब अँधेरा हो रहा था इसलिए उसने रनवा से अनुमति ली और उसी घर में सोया, नाम के लिए सोना था यह, उसे नींद नहीं आ रही थी और वो चाहता भी नहीं था कि उसे नींद आ जाये। उसने उससे पहले रनवा से चोरी से पानी का घड़ा जिसको उसने जमीन में से खोदा था उस घड़े को अपनी चारपाई के पास रखा था। उसे अभी तक यही यकीन था कि हो न हो इस घड़े में जो पानी है वो खजाना है और सोने–चाँदी में बदल जायेगा और वो उस लालच भरे दिल से उस पानी से भरे घड़े की ओर देखता रहा।

आधी रात का समय हो गया लेकिन अभी तक वो सोया नहीं था। वो एकटक नजर से उस घड़े की ओर ही देखता रहता था। लेकिन पानी का घड़ा पानी का घड़ा ही रहा वो सोने या चाँदी का घड़ा नहीं बना। काफी समय जब गुजर गया और प्रभात का समय जब हो गया तो उसे बहुत क्रोध आया और उसने पानी के घड़े को गिरा दिया और रनवा से कुछ कहे बिना उस घर से उठकर चल दिया। उस घड़े में पानी की एक बूँद भी नहीं रही। सारा पानी जमीन पर गिर चुका था।

सुबह होते ही रनवा कमरे में गया जहाँ मेहमान सो रहा था। उसे वो मेहमान वहाँ नहीं मिला जिस बिस्तर पर मेहमान सोया हुआ था। उसके बगल में चाँदी चारों तरफ फैली हुई थी। मेहमान ने कहा था कि उसे कुछ नहीं मिला अब यहाँ बहुत से रुपये दिखायी दे रहे थे। यह देखकर रनवा को बहुत हैरानी हुई।

मेहमान जहाँ जा सकता था रनवा अन्दाजे से उसके पीछे–पीछे गया। काफी दूर पर धुँधला–सा मेहमान समझा जानेवाला व्यक्ति जाता हुआ दिखायी दिया। उस मेहमान ने भी रनवा को मुड़कर देखा और उसने यह भी देख लिया कि रनवा उसके पीछे–पीछे आ रहा है। रनवा ने पूरी ताकत से उसका पीछा किया। मेहमान सोचने लगा कि मैंने इसके घर में पानी गिरा दिया था और इसी बात पर नाराज होकर यह मेरे पीछे–पीछे आ रहा है और यही सोचकर वो दौड़ खड़ा हुआ। इस तरह रनवा मेहमान के पास नहीं पहुँच सका और आखिरकार उसे मुड़कर घर लौटना पड़ा।

घर पहुँचकर उसने देखा कि चारों तरफ रुपये बिखरे हुए हैं। उसने सारे रुपये उठाए और रनवा और खौंः खाई दम्पति उस दिन से लेकर धनवान हो गये। दौलतमन्द हो गये। मानो जैसे उनके आँगन में सोने–चाँदी की वर्षा हुई हो। पर अफसोस इस घटना के बारे में उस अतिथि आगन्तुक मेहमान को जरा–सा भी पता नहीं चला, जिसे रनवा आधा खजाना देना चाहता था।

पत्नी चाकर

पुराने ज़माने की बात है एक गाँव था। उसमें एक तौटौं नाम का आदमी था। तौटौं एक बड़ा ही पागल किस्म का आदमी था। वो अपनी पत्नी की कमाई बैठकर खाया करता था और खुद कभी काम नहीं करता था। उसके व्यवहार से उसकी पत्नी भी निराश हो चुकी थी। एक दिन उसकी पत्नी ने उसे बुलाया और कहा, "क्या आप जीवन भर पत्नी की कमाई पर ही निर्भर रहते रहोगे। दूसरों की तरह क्या काम करना नहीं चाहोगे और यदि आप काम करेंगे तो घर में सब्जी–भाजी का खर्चा ही निकल आयेगा और यह भी नहीं कर सकते तो ऐसा करो जो चिड़ियाँ हैं, पक्षी हैं उनको जाल लगाकर पकड़ो, कुछ तो उद्यम करो।" उसने कहा तब तौटौं ने उत्तर दिया, "मैं जाल लगाना नहीं जानता। तुम मुझे सिखा दो।" तभी पत्नी ने उससे चिढ़कर कहा, "देखो, जाल का मतलब ऐसा होता है । जो तुम अभी खड़े हो न तुम अपने पाँव को जरा झुकाओ यह...और उन दोनों के बीच में जो जगह है उसमें रस्सी डाल दो और छत जैसी जगह में जाकर जाल लगाओ।"

पति ने पत्नी की बात को झट मान लिया और दूसरे दिन जैसे ही सुबह हुई वह घर की छत पर चढ़ गया और अपने पाँव की उंगलियों और सिर के बीच में रस्सी डालकर बैठा रहा। पत्नी ने सुबह होते ही खाना तैयार करके परोसकर आवाज़ दी। उसने छत के ऊपर से आवाज़ सुनी और उसने देखा कि घुटने को टेढ़ा किये हुए, जाल की तरह उसका पति औंधा लेटा हुआ है इसलिए पत्नी ने उसको गालियाँ देकर बुलाया और उसने जाल कैसे बनाते हैं। कैसे लगाते हैं। सब कुछ उसको सिखाया और फिर उसको कहा, "गाँव के नजदीक में जंगल है। उस जंगल में जाकर जाल लगाना चाहिए।" सुबह उसने भोजन किया और पत्नी के आदेशानुसार जैसा कि पत्नी ने उससे कहा वहाँ जो जंगल था उसमें जाल लगाने के लिए जाल बनाकर ले गया और वहाँ जाल लगाकर आ गया। दूसरे दिन वो अपने जाल को देखने गया और भाग्यवश जाल में एक हिरन फँसा हुआ था। लेकिन उसने कभी भी हिरन नहीं देखा था इसलिए उसने समझा कि दुआ



राजा का कोई बछड़ा आकर फँस गया है और खोलकर घर जाने के लिए कह दिया। जब घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने कहा, "अरे ! तुमको इतना भी नहीं मालूम कि यह कौन–सा जानवर है ?" उसने कहा कि यह कौन–सा जानवर है यह तो मैं नहीं जानता। हमारे गाँव के जो दुआ राजा हैं उसके बछड़े से मिलता–जुलता उसी की तरह बड़े–बड़े सींग निकले हुए हैं। यह मैंने देखा और मैंने उसको जाल से निकाल दिया। तभी पत्नी ने कहा, "तुम कितने पागल हो जिसका कोई हिसाब नहीं है, भला बछड़े के कहाँ ऐसे सींग होंगे, उसके कहाँ टेढ़े–मेढ़े सींग होंगे। वह हिरन है। जब तुमको लाल–लाल, पीला–पीला, जानवर दिखायी पड़े तो तुम उसको जकड़ लेना और उसको रस्सी से बाँध लेना।" यह समझाकर घर लौट आयी।

दूसरे दिन तौटौं यह देखने के लिए गया कि उसमें कोई हिरन फिर से तो नहीं फँस गया तो उन्होंने देखा कि वहाँ एक आगन्तुक ऋषि थे, वो आगन्तुक ऋषि शौच से निपटने के लिए पास की झाड़ी में गये और जैसा कि वहाँ पर जाल लगा हुआ था वो उसमें फँस गये। ऋषि ने बहुत समझाया पर वो नहीं माना। उसको रस्सी से बाँधकर घर उठाकर ले गया। घर पहुँचकर तौटौं की पत्नी ने देखा कि ऋषि महाराज को रस्सी से बन्द करके उसका पति उठाकर ला रहा है तो वो बोली, "तुम ऋषि को क्यों पकड़कर लाये हो। अब तुमको बहुत पाप लगेगा। जल्दी से इनको मुक्त करो। जल्दी से इनको छोड़ो।" पत्नी के आदेशानुसार पति ने कहा, "तुम्हीं ने तो कहा था लाल–लाल, पीला–पीला कुछ दिखायी दे तो उसको बाँधकर ले आना और लौटकर वापस आ जाना। तुम्हीं ने पकड़ने के लिए कहा था और तुम्हीं छोड़ने के लिए कह रही हो। मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आती।" तौटौं की पत्नी ने कहा, "अरे ! तुम्हें जो पकड़कर लाने को कहा था वो पशु था और पशु को पकड़कर ही लाने को कहा था और यह तुम आदमी को पकड़कर लाये हो। आदमी इतने श्रेष्ठ और महान् होते हैं। उन ऋषियों में से तुम एक ऋषि को पकड़कर ले आये हो।" यह बात कहने पर तौटौं ने कहा, "हाँ, गलती तो इन्सान से हो ही जाती है। चलो यह मेरी गलती रही इसको गलती मानो और मुझे माफ करो।" यह कहकर वो ऋषि महाराज के सामने बैठ गया और श्रद्धापूर्वक उनको सादर प्रणाम किया। प्रणाम करने के बाद उसे छोड़ दिया।

दूसरे दिन सुबह फिर तौटौं उठा। वहाँ वो देखने गया कि कोई जानवर फँसा तो नहीं। जाकर देखा तो लाल–लाल रंग का एक शेर फँसा हुआ था, अब पति को बस इतना ही ध्यान रहा कि पत्नी ने कहा था लाल–लाल, पीला–पीला

हो उसको प्रणाम करना चाहिए और अपनी पत्नी की आज्ञानुसार वो लाल–लाल रंगवाले शेर के सामने बैठकर उसको प्रणाम करने लगा और मुँह से बोला, "बहुत क्रोधित मत होओ् जी। अबं आपको दूसरी बार हम नहीं पकड़ेंगे।" वो यही कहता–कहता दोहराता रहा। दोपहर खाने का समय जब हुआ तो तब तक पति नहीं लौटा तो तौटौं की पत्नी उसकी तलाश में बाहर निकली और उसने देखा कि जाल के पास बैठा उसका पति शेर को प्रणाम कर रहा है। और तब वो अपनी छाती पीटकर खुद पति देव तक जल्दी–जल्दी वहाँ से दौड़ी और दौड़ते–दौड़ते पति का हाथ खींचकर उसे भी अपने साथ ले आयी। पत्नी ने पति से कहा, "तुम न तो जाल लगा सकते हो और न ही तुम आज तक कोई काम ठीक से कर पाये हो। चलो अब तुम जाल लगाना बन्द करो और अब से तुम व्यापार कर लो।" पत्नी ने पति से यह प्रस्ताव रखा। पति ने पूछा कि यह व्यापार क्या होता है ? कहाँ जाकर व्यापार करना होता है ? इस पर पत्नी चिढ़ गयी और उसने गुस्से में कहा, "हाँ, जिस ओर तुम्हारा मुँह हो उसी ओर तुम चल दो और उसी ओर चलते–चलते व्यापार करना शुरू कर दो।"

जब पत्नी पानी भरने के लिए नदी की ओर गयी थी तो उसने पति को बेचने के लिए कुछ सामान दिया और सौ रुपये थैले में डालकर वो थैला पति को पकड़ा दिया और जिस तरफ उसका मुँह था वह उस तरफ चल पड़ा। रास्ते में नदी से वापस आ रही उसकी पत्नी से उसकी भेंट हुई और उसकी पत्नी ने उससे पूछा, "तुम कहाँ से होकर आ रहे हो ?" उसके पति ने समझा कि मैं दूसरे मोहल्ले में हूँ, दूसरे इलाके में हूँ इसलिए उसने उत्तर दिया और पहले अपने मन में सोचा, "अरे ! यह इलाका भी कमाल है कि यहाँ भी मेरी पत्नी से मिलती–जुलती महिला है और उसी से मिलती–जुलती उसकी आवाज भी है।" जब यह बात पत्नी ने सुनी तो वह बहुत निराश हुई और उसने अपने पति से कहा, "क्या आप पागल हो गये हैं ? आपने क्या समझा कि आप किसी और देश में पहुँच गये हैं। ऐसी बात आपने क्यों की है ?" यह कहकर उसे दूसरे गाँव या शहर जाने का रास्ता उसने दिखाया।

पति बड़े निराश मन से घर से बाहर निकला और एक गाँव में पहुँचा। वो उस समय गाँव में पहुँचा जब एक घर में एक ऐसे बूढ़े की मौत हुई थी जिसका कोई रिश्तेदार नहीं था। जिसको सब गाँववाले मिलकर आखिरी अर्थी का क्रियाकर्म करने जा रहे थे। तौटौं ने जब यह देखा कि गाँववाले उस बूढ़े की लाश को उठाकर ले जा रहे हैं तो तौटौं ने वह लाश सौ रुपये में खरीद ली और उस लाश को खरीदकर उस रात को उसने उसी गाँव में विश्राम किया। दूसरे

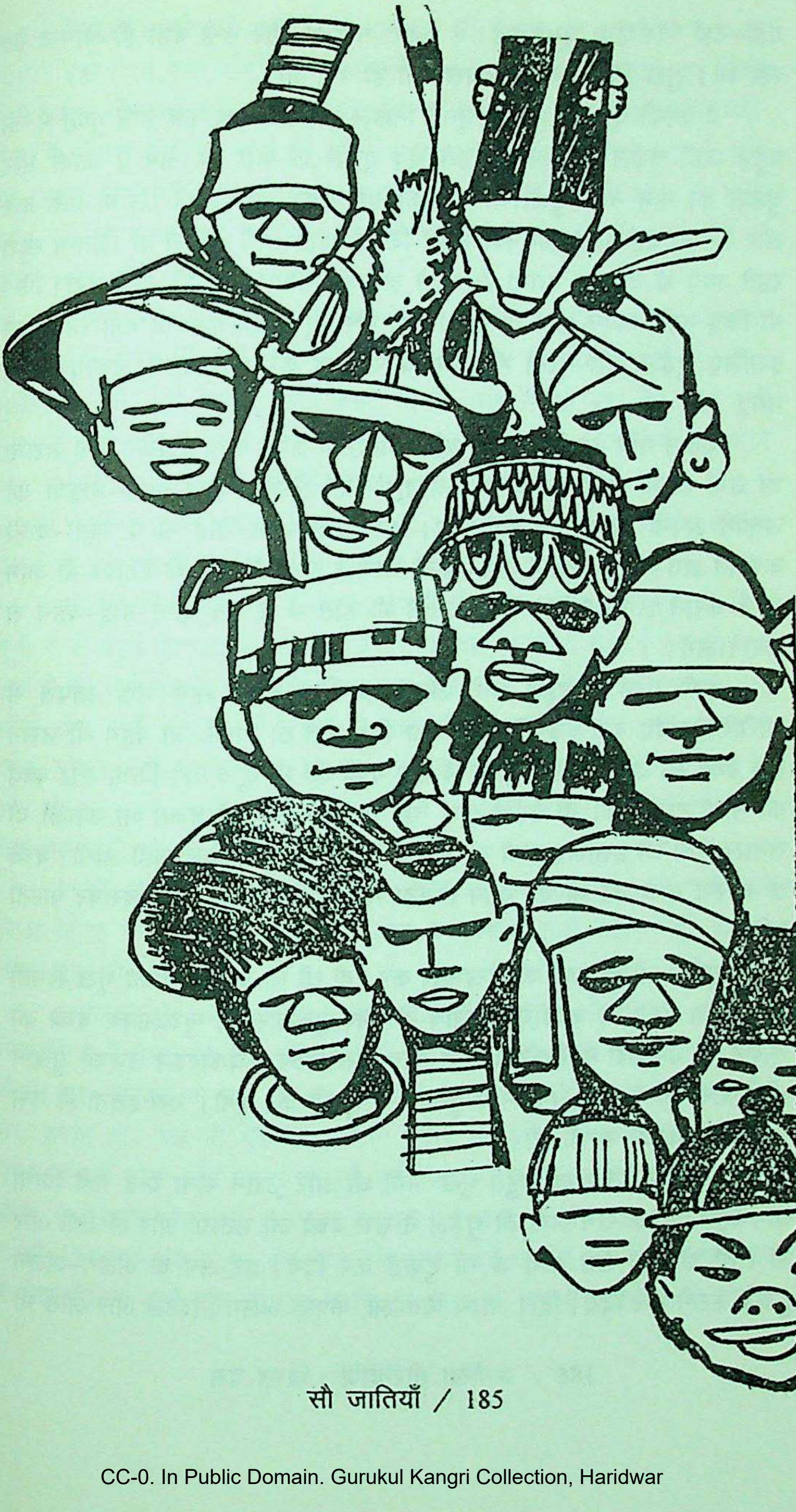
दिन वो लाश को उठाकर उसी रास्ते से आगे बढ़ा। उसने सड़क के बीच में अंर्थी रख दी और प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर बाद कम–से–कम बीस बैलों के साथ एक मण्डली उस रास्ते से गुजरी और तब तौटौं ने उनसे कहा, "आप लोग जरा अपने बैलों को ख्याल से चलायें। मेरे दादा की तबीयत जरा ठीक नहीं है और हम उनको जरा विश्राम दे रहे हैं।" उसने यह चिल्लाकर कहा। इससे पहले कि व्यापारी बैलों को संभालते उन सबने मिलकर बूढ़े की लाश को, बूढ़े की अर्थी को दबा दिया और उसके ऊपर से निकल गये। व्यापारियों के बैलों के दबा देने की वजह से उसके दादे की मृत्यु हो गयी है इसलिए इन बैलों के साथ जितना सामान आप लोग लाये हैं यह सब इसके एवज में, इसकी मौत के बदले में आपको देना होगा। उसने इसकी माँग की, व्यापारियों ने खुद देखा कि उनके बैलों ने एक आदमी को दबाया है इसलिए वो कुछ नहीं बोल सके और मुआवजा देने के लिए उन्हें विवशता से तैयार होना पड़ा और उनके पास में जो कुछ था उन्होंने उसे दे दिया।

इस तरह उन बैलों को और सामान को तौटौं ले गया और उसे पत्नी को जाकर उसने दिया जो उसे बहुत मूर्ख समझती थी। वह सारा सामान सारे बैल और सारा रुपया इतना अधिक था कि उसकी पत्नी ने कभी सोचा भी नहीं होगा कि उसके पति जैसा निखट्टू इस तरह का कोई अद्भुत चमत्कार कर सकता है। अब उसे पति से कोई शिकायत नहीं थी। अब फिर पति पहले जैसा मस्ती करने लगा। ऊट–पटाँग हरकतें करने लगा लेकिन क्योंकि अब पत्नी को यह पता था कि अब कोई जरूरत पड़ने पर यह ऐसा कोई काम कर सकता है जो कोई दूसरा नहीं कर सकता इस वास्ते वो खुश थी और उस खुशी में पति कैसा भी हो उसे भी खुश रखने की पत्नी पूरी कोशिश करने लगी और इस तरह उनका जीवन बड़े अच्छे ढंग से खुशी–खुशी बीतने लगा।

सौ जातियाँ

बर्मा में रहनेवाली कछिन् ज़ातियाँ यह मानती हैं कि सबसे पहले इस सृष्टि को इंगौं वमगौं: देवराज ने रचा था और सबसे पहले उन्होंने जो सृष्टि रची यह सृष्टि बनायी, यह दुनिया बनायी, यह संसार बनाया उसमें फसलें नहीं उग सकती थीं क्योंकि धरती अभी उपजाऊ नहीं थी। पानी नमकीन था और पानी पिया नहीं जा सकता था और जितने भी पेड़–पौधे और झाड़ियाँ थीं अधिकतर काँटेदार झाड़ियाँ थीं। इसलिए एक देवता और था उस समय जिसका नाम देव कांजौं: था जिसके नौ बेटे थे। उन पर देवराज बहुत नाराज थे। उन नौ बेटों को श्राप दिया हुआ था और यह श्राप का प्रभाव था कि वो जो सृष्टि रचायी गयी थी जो अभी उपयुक्त नहीं थी, उसको नष्ट करने के लिए उन्होंने बहुत मूसलाधार अद्‌भुत बरसात करवायी।

लगातार बारिश होती गयी। यह संसार यह धरती पानी के नीचे कुछ समय तक डूबा रहा। बारिश आने से लेकर जब बारिश रुकने के आसार नजर न आये तो एक व्यक्ति जिसका नाम पोपौं: नांचा: था वो अपने बहन टांकौं: के साथ एक किश्ती बना रहा था। उन्होंने नौ मुर्गे, नौ चिड़ियाँ अपने साथ लिये और उसके बाद अपनी जान की, अपने प्राणों की रक्षा के लिए वे नाव पर चढ़कर बैठ गये। जब बारिश बन्द हुई तो भाई–बहनों ने एक मुर्गा और एक सुई को नाव से नीचे पानी में गिराकर देखा तो न मुर्गे के चिल्लाने की आवाज़ आयी और न ही सुई की किसी चीज से टकराने की आवाज़ आयी। इसलिए उन्हें मालूम हो गया कि पानी अभी गिरा नहीं है उतना ही भरा हुआ है। इस तरह हर रोज वो ऐसा करके देखते थे। एक दिन बाद भी कोई फर्क नहीं पड़ता था। दो दिन बाद, तीन दिन बाद, चार दिन बाद भी कभी उनको किसी तरह की आवाज़ नहीं आयी। जब नवाँ दिन हुआ तो उन्हें मुर्गे की बाँग भी सुनायी दी और सुई के किसी चट्टान से जाकर टकराने की आवाज़ भी उनको सुनायी दी। तब वो समझ गये कि धरती पर बिखरा हुआ जो जल है वह अब घटने लगा है। जैसे ही उन्हें पता चला कि पानी गिर रहा है तो दोनों भाई–बहनों ने नाव त्याग दी और वे



यहाँ–वहाँ दिशाहीन घूमते रहे। वे थकते नहीं थे और उन्हें बड़ा ही आनन्द आ रहा था। सुख मिल रहा था। प्रसन्नता हो रही थी।

वे काफी दूर तक घूमते–घूमते निकल गये और अचानक ऐसी गुफा में जा पहुँचे जहाँ चुड़ैल पति–पत्नी रहते थे। चुड़ैल के पति का नाम ऐं कावा और चुड़ैल का नाम नमौं: टुखां था। उनको यह समझ नहीं आयी कि वो क्या करें और उनको यह भी समझ नहीं आयी कि वो कहाँ जायें। पहले वो जितना खुश रहते आये थे वो अब उतना ही डरने लगे थे लेकिन फिर भी दौड़े नहीं। फिर भी छिपे नहीं। अपने आप गम्भीर बनकर जैसे कुछ नहीं हुआ वो वहीं रहने लगे इसलिए चुड़ैल पति–पत्नी भी दोनों बहन–भाई को अपने साथ जबरदस्ती ले गये।

चुड़ैल पति–पत्नी ने दोनों बहन–भाई को अपने साथ रखकर उन्हें डराना या उन्हें किसी तरह का कष्ट देना शुरू नहीं किया। दोनों बहन–भाइयों को उन्होंने अपना नौकर बनाकर रखा। उन दोनों बहन–भाई से वे खेती–बाड़ी करवाने लगे। पेड़ कटवाने लगे। पानी भरवाने लगे और घर के जितने भी काम थे वे कराने लगे। दैनिक कार्य जितने भी होते थे वे उन दोनों भाई–बहन से कराने लगे।

इसी तरह वे रहते आये और एक दिन दोनों बहन–भाई आपस में शारीरिक संबंध बना बैठे और जब कुछ दिन बीते तो टांकौं: जो बहन थी उसने एक बच्चे को जन्म दिया। चुड़ैल ने उस बच्चे का भी कुछ नहीं किया और बच्चे की माता टांकौं: को भी उसने कुछ नहीं कहा। बल्कि जो बच्चा था उसको वो संभाल लेती थी इसलिए बच्चे की माँ के काम में कोई रुकावट नहीं आयी। बच्चे के कारण बच्चे की माँ का काम बिगड़ा नहीं वो अपने काम को बराबर करती रही।

चुड़ैल जोकि बच्चे की देखभाल कर रही थी तो जब बच्चे को भूख लगती और बच्चा रोता तो बच्चे को सुलाने के लिए पुचकारकर, फुसलाकर बच्चे को सुलाने की कोशिश नहीं करती। इस तरह फुसलाकर, पुचकारकर उसको सुलाने की बजाय 'नौ रात के अन्त में मैं तुम्हारे नौ टुकड़े कर दूँगी।' बस इतना ही उसे डराया–धमकाया करती थी।

एक दिन बच्चे को बहुत भूख लगी थी और उसने रोना बन्द नहीं किया था। बहुत अधिक रोने लगा तो चुड़ैल ने उस बच्चे को उठाया और ले गयी और नौ रातों के बाद उस बच्चे के नौ टुकड़े कर दिये। हर अंग के अलग–अलग टुकड़े उसने कर दिये। दिल अलग निकाला, फेफड़े अलग निकाले और आँत भी

अलग निकालीं। हड्डियाँ अलग कर दीं और जो दिमाग था उसको अलग कर दिया। इस तरह सारे अंग अलग–अलग करके उसने सारी जगहों पर बिखेर दिये। कुछ माँस को उसने फेंका नहीं और वो उसे लेकर घर वापस लौट गयी। गुफा में जाकर बच्चे के मांस को उसने अच्छी तरह पकाया। बच्चे का जो झूला था उसको झूले की तरह ही रखा। उसके बीच में एक लकड़ी डाल दी ताकि ऐसा लगे कि बच्चा झूले में कम्बल के नीचे सो रहा है और लकड़ी के टुकड़े को उसने कम्बल से ढक दिया।

टांकौंः जंगल से खेती–बाड़ी करके थकी–माँदी घर लौटी। घर पहुँचकर उसे अपना बच्चा दिखायी नहीं दिया तो उसने पूछा कि मेरा बच्चा कहाँ है ? चुड़ैल ने सत्य नहीं बताया और कहा, "बच्चा झूले में सो रहा है। क्या तुम्हें दिखायी नहीं देता। जाओ जाकर चुपचाप भोजन कर लो और बच्चे को सोने दो।" उसने झूले की ओर उंगली दिखाते हुए झूठ कहा। बच्चे के रूप में एक लकड़ी को कम्बल से ढंककर रखा हुआ था और टांकौंः ने समझा शायद उसका बच्चा ही सो रहा है इसलिए वह चुपचाप भोजन करने लगी।

जब उसने भोजन कर लिया तो टांकौंः ने बच्चे को दूध पिलाने के लिए झूले में से बच्चे को उठाना चाहा तो देखा कि यह बच्चा तो नहीं है यह तो एक लकड़ी है। तभी टांकौंः को सच्चाई का पता चला और इस तरह अचानक उसकी आँखें खुल गयीं और उसने चुड़ैल से सारी बात जाननी चाही। तभी चुड़ैल ने कहा, "तुमने अभी–अभी अपने बेटे का मांस खाया है। तुम नहीं जानतीं क्या ?" और वो अट्टहास मारकर बड़े भयानक ढंग से हँसने लगी। जैसे ही टांकौंः ने यह बात सुनी तो वो बेहोश होकर गिर पड़ी।

टांकौंः की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। अचानक वो बेहोश हो गयी और जिस जगह पर वो गिरी थी उसी जगह पर बेहोश पड़ी रही। वहाँ से वह हिल–डुल भी नहीं सकती थी।

जब उसे होश आया तो वो आधी पागल–सी हो चुकी थी। उसके आँसू जो गिर रहे थे वे थमने का नाम ही नहीं लेते थे। वह अपनी छाती पीट रही थी और चीखें मार–मारकर रो रही थी और बेटे को याद कर रही थी। मेरा बच्चा दो। मेरा बच्चा दो। यह भी मुँह से आवाज़ देकर चीखती–चिल्लाती इधर दौड़ती उधर दौड़ती शोक और वेदना में डूबी हुई थी। इस तरह उसे शोक, वेदना और पीड़ा में देखकर देवताओं के राजा देवराज को उस पर दया आ गयी और वो टांकौंः के सामने प्रकट हुए और बोले, "मैं तुम्हारे बेटे को फिर से जिन्दा नहीं कर सकता लेकिन तुम्हें एक सौ एक जाति की माता के रूप में स्थान तो दे सकता

हूँ। तुम देखो मैं तुम्हारे लिए क्या करता हूँ।" इस तरह कहने के बाद जितने भी रास्ते–गलियाँ थे, उन सब गलियों–रास्तों से एक अलग–अलग किस्म के आदमी प्रकट होने लगे और देखते–देखते कई किस्म के लोग, कई जाति के लोग वहाँ सामने उपस्थित हो गये। उस समय से लेकर संसार में कछिन्, छिन्, यामा, करिन्, मौनइ इत्यादि एक सौ एक जातियाँ प्रत्यक्ष रूप में स्थापित हो गयीं।

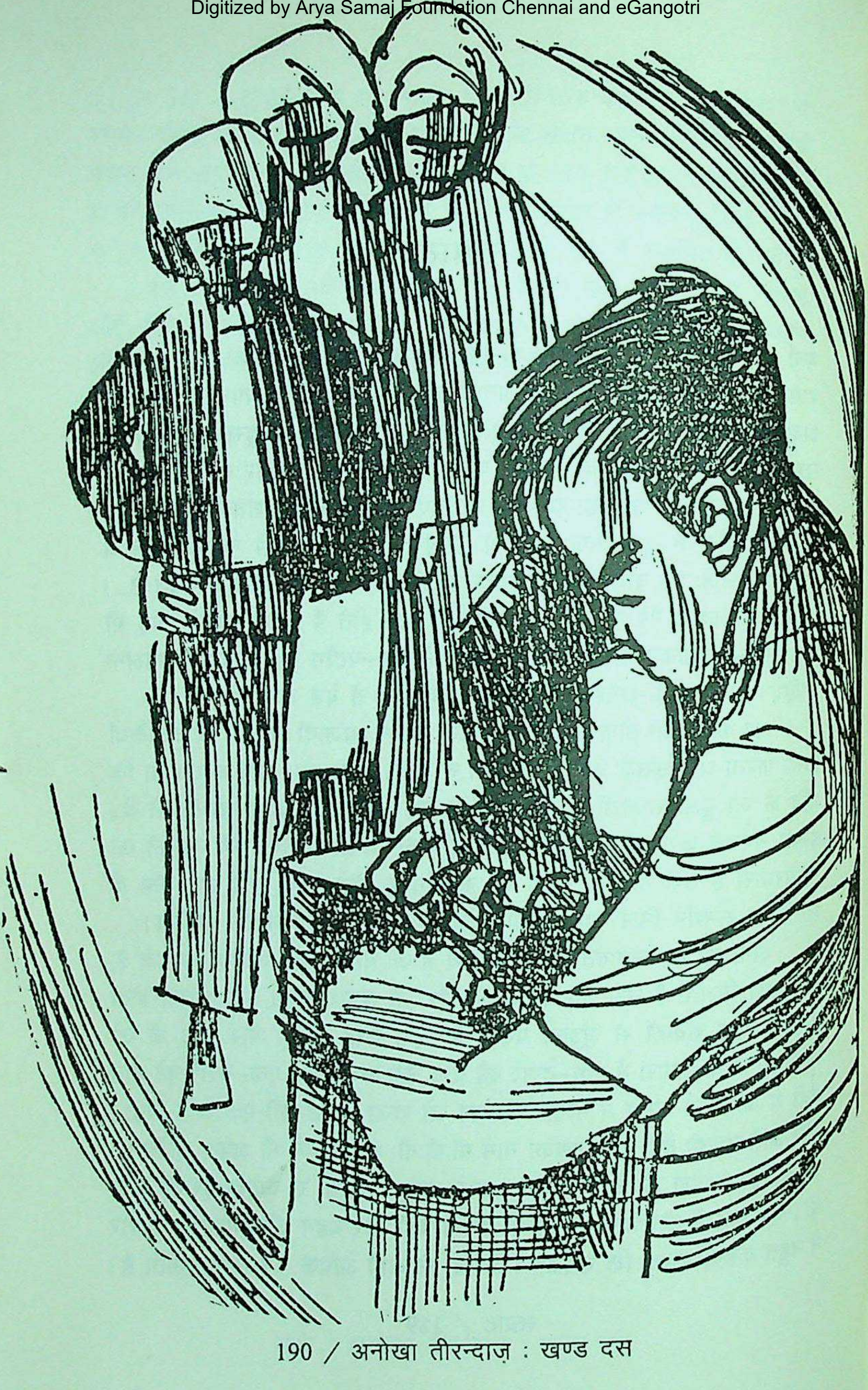
इस तरह टांकौः की सन्तान एक बेटे के ही खून, माँस, हृदय, फेफड़े, आँतें, दिल इत्यादि से सौ जातियाँ बनीं और सारी जातियाँ कछिन् भाई–बहनों की तरह, रिश्तेदारों की तरह प्यार से रहने लगीं।

सम्राट

बर्मा के कछिन् प्रदेश के किसी इलाके में एक गाँव था जिसका नाम था सेंग रागा। उसमें कौंजैः नाम का एक अनाथ लड़का रहता था। बचपन से ही उसमें अद्भुत योग्यताएँ थीं। उसमें अद्भुत शक्तियाँ दीखती थीं इसलिए लोगों ने उसका नाम कौंजैः रखा था। कौंजैः के माता–पिता नहीं थे और वो अपनी दादी के साथ रहकर ही पल रहा था और इसलिए वो आजादी से बातचीत करता था और जो गाँव के दुआ राजा होते थे वो इस बात पर उससे नाराज रहते थे इसलिए कौंजैः को दादी यह समझाया करती थी, "मेरे पोते एक कहावत है...। इसका मतलब है मेरे पोते कि देश के जो राजा होते हैं उनके सामने कोई भी बात सोच–समझकर करनी चाहिए। बात को ऊट–पटाँग मुँह से नहीं निकालना चाहिए। बिना सोचे–समझे बात मुँह से निकालने से बड़े कष्ट होते हैं।"

पर कौंजैः जो ठीक समझता था उसी प्रकार आजादी से उस पर चुटकियाँ कसा करता था। उसके बारे में आजादी से बोला करता था। यही कारण था कि गाँव के जो दुआ राजाओं के रिश्तेदार थे या कर्मचारी थे वो इससे चिढ़ते थे। इससे नफरत करते थे और उन्हें इस बात की चिन्ता थी कि कहीं इसकी जो विचारधारा है उसे गाँव के लोगों का समर्थन न मिले, यदि कहीं उसे गाँव के लोगों का समर्थन मिल गया तो वो देखते–ही–देखते नेता न बन जायेगा।

अभी जो यह कहावत है इसका अर्थ है जो बन्दर बहुत अधिक चालाक है, उसे बाण मिलता है उसे तीर लगता है और जो अनाथ बहुत ज्यादा तेज होता है उसे बहुत संकटों से जूझना पड़ता है। इस तरह कौंजैः और दुआ के जो कर्मचारी थे वो आपस में एक–दूसरे को देख नहीं सकते थे। एक–दूसरे को भाते नहीं थे और ऐसे समय में मौंगौः गाँव का जो राजा था उसकी एक अति विद्वान और अति प्रभावी बेटी थी जिसका नाम मौःगौःनौः था। उसमें भी अपार शक्ति थी वह भी दुआ राजा की बेटी थी और अपने सम्पूर्ण भाइयों से ज्यादा इसकी बुद्धि थी। बड़े भाइयों और पिताश्री को भी अपनी बेटी और बहन की प्रशंसा में दरबार में बहुत कहना पड़ता कि उनकी बेटी मर्दों से कहीं अधिक दम–खम रखती है।



उनसे कहीं अधिक बहादुर और साहसिक है और उनसे कहीं अधिक समझदार और विद्वान है।

एक दिन मौंगौंः के राजा ने अपनी मौंः गौंः नौंः को अपने पास बुलाया और कहा, "बेटी, तुम पढ़ी–लिखी हो। बुद्धिमान हो और बहुत तेज दिमाग रखती हो और अब तुम जवान हो चुकी हो। तुम्हारे बड़े भाई का विवाह हो चुका है। लेकिन जहाँ तक तुम्हारा सवाल है तो तुम्हारा प्रभाव बड़े–बड़े पुरुषों से बड़े–बड़े योद्धाओं से ज्यादा है इसलिए कोई भी तुमसे शादी करने आगे नहीं आता और प्रस्ताव भी नहीं दे रहे। इसलिए मैं तुम्हें बहुत धन और दास–दासियाँ दे देता हूँ। तुम अपने लिए उचित पति खुद ही खोज लो।" पिताश्री की बात सुरकर बेटी ने कहा, "ठीक है पिताजी, मेरे साथ जीवन भर रहनेवाले व्यक्ति को, जीवनभर मेरा साथ निभानेवाले व्यक्ति को मुझे ढूँढना होगा इसलिए मैं ऐसे ही व्यक्ति को जीवन–साथी बनाना चाहूँगी जो कम–से–कम मुझसे अधिक समझदार और बुद्धिमान हो और आपने यह मेरे दिल की ही बात की है कि मैं अपना पति अपनी मर्जी से खोजूँ इसलिए आपकी अनुमति के लिए मैं आभारी हूँ।" बेटी ने महाराज से विनम्र निवेदन किया।

मौंः गौंः दुआ राजाजी ने अपनी बेटी को एक पानदानी बनाकर दी जोकि लकड़ी से बनी थी लेकिन जिसमें गोल घेरा बना रखा था और जिसे खोल पाना ही कोई आसान काम नहीं था। उन्होंने कहा, "बेटी, मैं यह पानदानी तुम्हें देता हूँ। पानदानी में मैंने एक चाबी अन्दर से लगा रखी है। मुझे लगता है जो भी व्यक्ति इस पानदानी को खोल पायेगा वो तुमसे अधिक बुद्धिमान होगा। तुम यह पानदानी लो और अपने भविष्य के लिए एक ऐसा व्यक्ति चुन लो जिससे तुम पति के रूप में शादी कर सकती हो।" यह कहकर उन्होंने पानदानी दी, दास–दासियाँ दीं और काफी धन दिया और बेटी को भ्रमण के लिए आज्ञा दी। जब मौंः गौंः दुआ महाराज ने बेटी को विदा किया तो कौंजैंः को भी उसके गाँव से राजकर्मचारियों ने पकड़कर झरने के पास एक पेड़ की टहनी पर एक टोरी में डालकर बाँध रखा था। उसकी दादी चोरी–चोरी वहाँ जाती थी ताकि उसे कोई देख न ले और उसे भोजन वगैरा पहुँचाया करती थी। उसी समय दुआ राजा की बेटी मौंः गौंः नौंः कई गाँवों में राज्यों में भ्रमण करती हुई लकड़ी की अपनी पानदानी को साथ में लेकर ढोल–मंजीरा बजाते हुए अपने पति की तलाश में आ रही थी और वो उस गाँव में जहाँ पर कौंजैंः को बन्दी बना रखा था वहाँ पहुँची।

कौंजैं के गाँव के जो युवक थे दुआ राजा की बेटी को पाने के लिए उसकी

पानदानी को खोलने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन उसे खोलने में कोई भी सफल नहीं हो पाया था। गाँव के बड़े–बूढ़े भी पानदानी खोलने के लिए कोशिश करके आजमाने लगे। ढोल–मंजीरे की आवाज़ को सुनकर कौंजैः ने भोजन लायी हुई अपनी दादी से पूछा, "क्या बात है गाँव में से ढोल–मंजीरे की आवाज़ें कैसी आ रही हैं, यह कैसा उत्सव है ?" तब दादी ने बताया कि दुआ राजा की बेटी अपने पति की तलाश में निकली है और उसके पास में एक लकड़ी की पानदानी है और जो भी उस पानदानी को खोल पायेगा वो उसे अपने भावी पति की हैसियत से उसका चयन करेगी और अभी तक कोई भी उसे खोलने में सफल नहीं हो पाया है इत्यादि। सारी बातें दादी ने पोते को बतायीं।

तभी कौंजैः ने दादी से कहा, "आप गाँव लौट जायें, उस पानदानी को मैं भी खोलकर देखना चाहता हूँ यह कहकर आप इसकी अनुमति दुआ राजा के कर्मचारियों से लेकर मुझे दे दें।" यह उसने दादी से जिद की। जब दादी अपने पोते को समझाने में असमर्थ रही तो वह गाँव गयी और दुआ राजा के कर्मचारियों से अनुमति माँगी।

गाँव के राज्य कर्मचारियों को पता था कि गाँव के जितने भी पुरुष हैं जितने भी युवा हैं सबने पानदानी को खोलने की कोशिश की और कोई भी सफल नहीं हो पाया इसलिए यदि **कौंजैः** उस पानदानी को खोलकर देखना चाहता है तो इसमें कोई हर्ज नहीं है। ऐसा सोचकर उन्होंने उसके लिए अनुमति दे दी। अनुमति देने के बाद उन्होंने कौंजैः को जहाँ बन्दी बनाकर रखा था, छोड़ दिया और गाँव लेकर आये और पानदानी खोलने के लिए उसे राजा की बेटी के पास भेज दिया। जब कौंजैः राजा की बेटी के सामने उपस्थित हुआ तो उसने पानदानी को थामे हुए रखा। झरने के पास जो पेड़ था उसके ऊपर हर रोज आकर गैंथौः गैंथौः कहकर चिल्लानेवाले बूढ़े बन्दर द्वारा निकाली हुई आवाज़ को उसने याद किया। इसलिए कौंजैः ने उस पानदानी को घुमाकर खोलने का इरादा किया और उसको यह यकीन था कि खींचने पर इसका ढक्कन नहीं खुलता। इसका मतलब है कि इस पानदानी में इसने लकड़ी की चूड़ियाँ बनाकर रखी हुई हैं और उसी चूड़ियों की वजह से ही वो नहीं खुल पा रही होगी, उसका अन्दाजा ठीक निकला और कौंजैः को राजा की बेटी ने जो पानदानी दी पहले उसने बाएँ और दाएँ ओर खोलकर देखा और बिल्कुल चूड़ियाँ बनाकर बनाया हुआ था। उसने घुमा–घुमाकर जब पानदानी खोली तो बडी आसानी से खुल गयी और इसके बाद राजकुमारी ने उसको अपने भावी पति के रूप में स्वीकार कर लिया और दुआ राजा ने अपनी बेटी का विवाह **कौंजैः** के साथ कर दिया।

और जब राजा का देहान्त हुआ तो देश की जनता ने कहा कि कौंजैः एक बहुत ही विद्वान्, समझदार और अच्छा पुरुषार्थी है तो लोगों ने आम सहमति से उसे अपना राजा बना लिया। सब लोगों ने उसे...बना दिया, यह कछिन् शब्द है जिसका अर्थ होता है कि जनता के आम मत से चुना गया व्यक्ति, तो सबसे बड़ा शासक उसे बनाया गया था। तो वो सम्राट या सबसे बड़ा राष्ट्रपति हुआ।

एक अनाथ बच्चा, एक गरीब बच्चा अपने बुद्धिबल से राज्य की कृपा से किसी तरह आगे चलकर एक सम्राट या राष्ट्रपति बना। यह क्या कोई कम दिलचस्प गाथा है और जिस व्यक्ति का नाम कौंजैः था उसका शायद अपने जीवन में अपने नाम का भी काफी प्रभाव था क्योंकि कछिन् भाषा में कौंजैः का मतलब होता है बहुत अधिक तेज।

देवराज की रानियाँ

इस संसार को बनाने के बाद टें: टौंग वामगान् वहाँ के जो देवता थे वो इस मानव लोक के सबसे कोने में मांजेन पहाड़ी की चोटी पर एक देवमहल बनाकर रह रहे थे। देवराज वहाँ से मानव लोगों पर दया करुणा रखते हुए उनकी रक्षा किया करते थे। उनकी देखभाल किया करते थे। उनको मार्ग बताया करते थे।

कई वर्षों तक अकेले रहने के बाद उनको महसूस हुआ कि अकेलापन ठीक नहीं है। अब अपने लिए भी एक प्रेमिका यानी रानी की खोज करनी पड़ेगी। इसलिए उनके मन में देवरानी को खोजने की इच्छा जाग उठी। एक दिन देवराज अपने महल के ऊपर से सुन्दर बर्मा के दृश्यों को देख रहे थे तब उन्होंने देखा जब इरावदी में एक वस्तु पर सूरज की किरणें जाकर गिरती हैं तो बड़ी तेजी के साथ में रोशनी उठती है। अब देवराज को यह तो पता नहीं था कि वो कैसी वस्तु है इसलिए उसके बारे में पूछताछ करने के लिए, पता करने के लिए उन्होंने अपने दूत के रूप में पलौंः नाम के अपने दास बाज पक्षी को भेजा कि जाओ और पता करके आओ कि वह निस्कारें मारनेवाली, रोशनी पैदा करनेवाली वस्तु क्या है ?

इन्द्र देवता का दूत पलौंः वहाँ गया और उसने जाँच की। वापस लौटकर उसने महाराज को बताया, "यह जो बर्मा देश में उत्तर से दक्षिण की ओर जो इरावदी नदी बह रही है उस इरावदी नदी के बीच में एक वस्तु है। वो कोई मृत वस्तु नहीं है। वो एक बहुत ही बड़ी मगरमच्छनी है जिसका नाम करान है और वो करान मगरमच्छनी धूप सेंकने के लिए बाहर निकलती है और धूप सेंका करती है और धूप सेंकती हुई जब वो जल–क्रिया करती है तो उसके शरीर पर जब धूप बहुत तेजी से लगती है तो वो निस्कारें मारती है।" उसने यह देवराज को बताया तो देवराज इन्द्र बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने मगरमच्छनी करान को अपने महल में लाने की आज्ञा दी।

जब देवमहल में करान मगरमच्छनी पहुँची तो कोई भी वहाँ आकर डकार लेना, उल्टी करना इत्यादि कोई नहीं करता था। उसके पास कोई नहीं जा



सकता था क्योंकि मगरमच्छनी करान के शरीर से जो बदबू निकल रही थी वो बहुत ही बुरी बदबू थी। देवराज को भी बताया गया कि मगरमच्छनी के शरीर से एक बहुत ही बुरी तरह की आवाज़ निकलती है और बुरी बदबू भी निकलती है।

तभी इन्द्र देव महाराज ने अपने दास–दासियों से व अपने कर्मचारियों से कहा, "मगरमच्छनी को लाते समय महल के सामने जो कंफाइंग नाम की घास उगी है उसके बीच से उसे लाया जाये ताकि उसका शरीर उस घास से अच्छी तरह धुल जाये। इस तरह उस घास के माध्यम से ही उसे लाया जाये।" करान महाराज की आज्ञानुसार घास इत्यादि से निकलकर आगे बढ़ी और राजमहल में उसने प्रवेश किया। महाराज की इच्छानुसार यह कार्य हुआ था और जो करान के शरीर में से बदबू निकल रही थी वो खत्म हो गयी और उसकी जगह अब खुशबूदार महक निकलने लगी इसलिए महाराज को मगरमच्छनी करान बहुत पसन्द आयी और उन्होंने उसे अपनी देवरानी बना लिया।

यह प्रथा अब तक समाप्त नहीं हुई। जब नयी दुल्हन को नये घर में प्रवेश करना होता है तो शरीर की पवित्रता के लिए उसे अपने–आपको कंफाइंग घास से छुआकर गुजरना होता है। अब यह प्रथा आज भी कछिन् प्रदेश में प्रचलित है और हर कछिन् दुल्हन इस प्रथा का पालन करती है।

लेकिन मगरमच्छनी को देवरानी के रूप में बहुत लम्बे समय तक सुख प्राप्त नहीं हुआ। एक बच्चे को जन्म देते ही उसका देहान्त हो गया। उसकी आत्मा जिसका नाम फीं: था वो और कहीं नहीं गयी। वो तीन भ्रमण के लिए चली गयी इसलिए तीन युवतियों के जो पाँव हैं वो कहते हैं कि बड़े नहीं हैं और मगरमच्छ के पाँव की तरह छोटे होते हैं।

टौंग वामगान देवराज को रोज रात को बहुत दुख होता। बहुत पीड़ा हुई, शोक हुआ पर जैसे कहते हैं कि विदुरों के स्वभावानुसार एक पेड़ के गिर जाने पर दूसरे पेड़ को लगाया जाता है, अपनाया जाता है उसी तरह उन्होंने और दूसरी रानी को लाने का फैसला किया।

महारानी करान के जो माता–पिता थे उन्होंने मात्र करान को ही जन्म नहीं दिया था उनके काफी सन्तानें हुईं थीं इसलिए करान की छोटी बहनें बहुत सारी थीं इसलिए देवराज ने करान की छोटी बहन शंगु के साथ सम्बन्ध स्थापित करने का फैसला किया और उसके माता–पिता के पास सन्देशा भिजवाया। माता–पिता ने कहा कि देवराज के भाग्य में पत्नी सुख नहीं इसलिए वो अपनी बेटी का विवाह करने से इन्कार करने लगे या करना चाहते थे। पर देवराज के

भय से उन्होंने अपने आपको सुरक्षित महसूस नहीं किया इसलिए उनकी हिम्मत नहीं हुई कि वो बात देवराज से कहें और उन्होंने यह बात अपनी बेटी पर छोड़ दी लेकिन शंगु भी महाराज से विवाह के प्रस्ताव को अस्वीकार नहीं कर सकती थी इसलिए वह वहाँ से दौड़ गयी ताकि इन्द्र महाराज के प्रभाव से मुक्त रहे। शंगु बेचारी एक जगह से दूसरी जगह तक दौड़ती रही लेकिन आखिरकार उसका बर्मा के कई हिस्सों में घूमते–फिरते बर्मा में ही देहान्त हो गया।

जब दूसरी रानी को प्राप्त करने में देवराज सफल नहीं हुए तो उन्होंने करान की जो तीसरी बहन थी उसको रानी बनाने की बात सोची लेकिन उसमें भी वे कामयाब नहीं हुए। जब भी वे करान के परिवार में से रानी बनाने की बात सोचते तो वह वहाँ से दौड़ जाती और दौड़ते–दौड़ते, भागते–भागते ही उनका अन्त हो जाता। यह जो शंगु की तीसरी बहन थी जिसका नाम इंकोरी था वो शान प्रदेश की ओर दौड़ी। जो चौथी बहन थी वह चीन में दौड़ गयी और चीन में ही उसका देहान्त हुआ। पाँचवीं बहन तूनतौः ग्रेनवो अपनी बहनों जैसी नहीं थी। उसने अपने प्रदेश में ही नहीं विदेशों में भी जाकर अपनी जान बचाने की सोची इसलिए सारे विश्व में वह गयी और वो भारत में जाकर मारी गयी।

छठी बहन सौतू जिसका नाम असली था वो भी कई देशों में घूमती रही और चीन में जाकर उसका देहान्त हुआ और वो चीन में एक सुअर बनी। इसलिए चीन में सुअर का माँस बड़ा ही मशहूर है। सातवीं बहन का नाम था जुमदी। वो भी चीन दौड़कर गयी। वो जब पैदल दौड़कर जा रही थी तो उसे बहुत पसीना निकला। जैसे ही उसका पसीना जमीन पर गिरता था वहाँ एक खूंब निकल आती थी। पसीनों की बूँदों से ही खूंबें निकलने लगीं। अब पसीने की बूँदें क्या कभी–कभी वो जहाँ सूखतीं थीं, वहाँ गर्म पानी का एक कुआँ अपने–आप बन जाता था और जहाँ–जहाँ वो शौच जाती थी वहाँ–वहाँ एक नमक का ढेर लग जाता था।

आखिर वह यूरोप की ओर पहुँच गयी और यूरोप के देशों में भ्रमण करती रही और वहीं उसका देहान्त हुआ। उसका जो शरीर था वह बहुत बड़ी नमक की खान बन गया इसलिए आज भी यूरोप से नमक सारे देशों में भेजा जाता है।

सबसे छोटी बहन जिसका नाम था कटाठिन् गौमांः वह विश्व के इस संसार के बिल्कुल बीचोंबीच में मरी और उसके जो खून और दाँत थे वो जितने भी प्राणी हैं सारे उनके अंग बन गये जैसे हृदय, फेफड़ा, आँतें इत्यादि। मनुष्यों

में उसने जगह पा ली और एक–दूसरे के साथ लोगों ने रिश्ते जोड़ने शुरू कर दिये और इसलिए लोगों में आपसी प्रेम, आपसी सम्बन्ध स्थापित हुए और लोग सारे विश्व में, सारी दुनिया में अमन, चैन और सुख से अपना–अपना जीवन व्यतीत करने लगे।

न्याय विधि

बर्मा के छिन् प्रदेश में एक जाति है जिसे खाऊँसे जाति कहते हैं। यह एक अजीब जाति मानी जाती है और उनके तौर–तरीके बहुत दिलचस्प हैं। न्याय से सम्बन्धित निर्णय देने का उनका अपना एक विशिष्ट ढंग है जो आज भी चालू है।

इस न्याय प्रणाली को क्रिश्चियन धर्म को न माननेवाले खाऊँसे छिन् जाति के लोग जो देवी–देवताओं और अन्य पद्धतियों में विश्वास रखते हैं आज भी इस मान्यता के अनुसार झगड़े निपटाया करते हैं।

खाऊँसे छिन् जाति में जायदाद का झगड़ा निपटाने में माँ–बाप की जायदाद को जब बाँटकर लेते हैं तो बड़े बेटे को जायदाद का कुछ हिस्सा मिलता है। जो सबसे छोटा बेटा होता है उसे माँ–बाप की अधिकतम जायदाद मिलती है। बीचवाले बेटे को जायदाद में से कुछ नहीं मिलता।

जायदाद बाँटते समय बड़े और छोटे बेटे को ही माँ–बाप की जायदाद पाने का हक रहता है। बीच के बेटे को माँ–बाप की जायदाद में से हिस्सा इसलिए नहीं दिया जाता क्योंकि वह माता–पिता की बात नहीं सुनता; माता–पिता की आज्ञा के विरुद्ध चलनेवाला बेटा होने के कारण उसे इस हक से वंचित कर दिया जाता है।

अगर बीचवाला बेटा बहुत सयाना है और माता–पिता को उम्र भर कमाकर खिलाता है तो भी उसे बदमाश बेटा ही माना जाता है और बीचवाले बेटे से सम्बन्धित एक कहानी जो प्रचलित है वह यूँ है।

कई वर्ष पहले की बात है। उत्तर–पश्चिमी पर्वत श्रेणी के एक स्थान में छिन् जातियों के साथ खाऊँसे छिन् जाति को एक साथ मिलाकर शासन करनेवाले दक्षिण प्रदेश के एक महाराज थे।

दक्षिणी महाराज के यहाँ तीन अद्‌भुत शक्तिशाली बेटे थे। दक्षिण प्रदेश के महाराज खुद भी बहुत अच्छे खिलाड़ी थे, बड़े ही शक्तिशाली और विशेष रूप पर युद्ध की व्यूह–रचनाएँ, तलवारबाजी, भाला आदि में वह भी माहिर थे और उनका



मुकाबला कर पानेवाला कोई नहीं था। जिस इलाके में वह राज्य करते थे उस राज्य के बारे में यह प्रसिद्ध था कि जिन इलाकों में उन्होंने राज्य किया है उन इलाकों में वे पूर्ण रूप से शक्तिशाली रहेंगे। कोई भी उन्हें लड़ाई में जीत नहीं सकेगा। महाराज इस तरह से प्रतापी समझे जाते थे और कोई भी जो उनके राज्य में आता था वह दक्षिणी महाराज की बात को टाल नहीं सकता था।

इसी तरह ज़िस इलाके में महाराज का प्रताप था उस इलाके में रहनेवाले छिन् जाति के लोग बड़े मिलजुलकर रहते थे और कई साल तक एकता बनाए हुए चले आ रहे थे। इसलिए उन्हें जंगल की सारी विद्याएँ आती थीं। तीनों भाइयों ने मिलकर एक जगह रहने का निश्चय किया। इस तरह उन्होंने जब वहाँ एक साथ रहने का सलाह–मशवरा किया तब सबसे बड़े भाई ने अपने दोनों छोटे भाइयों से कहा, "अब हम लोग ऐसी अवस्था में हैं कि जवानी में कदम रखकर अपने शरीर के बाहुबल से तथा अपने बल–बुद्धि और निष्ठा के भरोसे हम लोग कुछ अपने हाथ–पैर से मेहनत करके अपना पेट पाल सकते हैं और इतना ही नहीं अब हम युद्ध के सारे व्यूह जानते हैं। तलवारबाजी, भालाबाजी और अधिक तौर पर युद्ध कैसे लड़े जाते हैं यह सारी चीजें हम सीख चुके हैं। लेकिन हमारे पिता का देहान्त यदि हो जाता है तो हमारे पिता की जितनी भी यादें थीं और जितना भी उनका प्रदेश रहा है उस प्रदेश को हम लोगों को आपस में बाँटकर उस पर शासन करना है। और यह जो प्रथा है हम लोग तीनों भाई इस प्रथा को मानेंगे लेकिन मेरी जो इच्छा है वो इस तरह है कि हमारे जैसे बलवान लोग जो हैं यह थोड़ा–सा जो प्रदेश हमारे पिताजी का था तीनों भाई आपस में बाँटकर अगर शासन करें तो यह मुझे कोई उचित नहीं लगता। जब हम लोगों में शक्ति है, सामर्थ्य है और ताकत है तो हम नये–नये इलाकों की खोज करेंगे। ऐसा मुझे लगता है। तुम लोग बताओ कि तुम लोगों को यह प्रस्ताव कैसा लगता है ?"

तभी मंझले भाई ने कहा, "मेरी भी इच्छा आपकी ही तरह है और मैं भी बिल्कुल आपकी ही तरह सोचता हूँ। अगर मुझे अपनी बात कहने की इजाजत है तो मैं कहना चाहता हूँ। वैसे भी जब पिताजी नहीं तब हम लोगों में जो परम्परा रही है उसके अनुसार जो पिता का प्रदेश है उसको उसके जितने भी बेटे हैं वो अपने–अपने हिस्से के अनुसार आपस में बाँटकर राज्य करने की जो प्रथा है उसका विद्रोह करें और हममें से हर एक व्यक्ति अपना–अपना राज्य खोजे और उन इलाकों में शासन करे और इस तरह करने का तो मैंने निर्णय भी ले रखा है।"

बीचवाले की बात को सुनकर बड़े भाई को और भी उत्साह हुआ और बात

बहुत पसन्द आयी और उसने कहा, "जितने भी देवी–देवता हैं वो सब तुम्हारी रक्षा करें।" इस प्रकार उसने उसे आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम्हारी बात मुझे मान्य है।

सबसे छोटा भाई जो था उसने कहा, "सच्ची बात तो यह है कि मेरी इच्छानुसार मैं अपने माता–पिता से अलग नहीं रह सकता क्योंकि मैं माता–पिता से बहुत प्यार करता हूँ लेकिन माता–पिता का देहान्त भी यदि होगा तो मैं माता–पिता के जो उपदेश थे, उनकी जो मनोकामनाएँ थीं उनको मानना चाहता हूँ और उनको मान रहे एक बेटे की हैसियत से ही मैं जिन्दा रहना चाहता हूँ। और माता–पिता के आदेशानुसार माता–पिता का जो प्रदेश है, हमेशा जो चलता आया है उसमें काम करके मैं शासन करके आराम से रहना चाहता हूँ। लेकिन क्योंकि आप दोनों का जो प्रस्ताव है वह बल से परिपूर्ण होनेवाले मर्दों के लिए सर ऊँचा उठाकर चलनेवाला प्रस्ताव है। मैं माता–पिता से अलग नहीं होना चाहता हूँ और जोकि आप लोगों ने कहा है उसकी पूर्ति के लिए मैं आप लोगों के साथ चलने के लिए तैयार हूँ। आप जो भी कहेंगे उसको मानने के लिए तैयार हूँ।"

इस तरह दोनों छोटे भाइयों की बात जानने और अपनी इच्छा जान लेने के बाद बड़े भाई ने कहा, "मुझे आज दोनों भाइयों की बात मालूम हुई है। इस बात को जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई है। मेरी जो योजना है उसे मेरे दोनों भाई मानते हैं। इस बात को भी देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई है और उन्होंने मुझे अपनी इच्छा भी बतायी है और किसी बात को भी उन्होंने मुझसे छिपाने की कोशिश नहीं की। इसी बात की मुझे और भी खुशी है। हम अपने पिताजी से न्याय करायेंगे और आज से सातवें दिन से हम लोग जो जगह हमको पसन्द होगी वहाँ नया राज्य स्थापित करेंगे।"

तभी छोटे भाई जो थे उन्होंने अपने सबसे बड़े भाई से कहा, "भैया, आप हम दोनों से अधिक अच्छी तरह पिताजी को समझा सकते हैं। हमने जैसा फैसला किया है कि हम नया राज्य स्थापित करेंगे तो आप पिताजी से कहकर नया राज्य स्थापित करने की बात को मनवा लें।"

बड़े भाई ने कहा, "ठीक है। मैं इस मामले के बारे में पूरी जिम्मेदारी लेता हूँ और तुम लोगों को कोई चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। पर तुम लोगों को जो तैयारी करनी है वो तुम लोग अपनी पूरी तैयारी कर लो। जो–जो काम करना है उसको पूरा करो।" यह कहकर वह पिताजी से अनुमति लेने के लिए गया।

सातवें दिन बाद पिताजी ने तीनों बेटों को अपने सामने बुलाया और उनसे कहा, "तुम तीनों ने मिलकर जो योजना बनायी है वो उचित है और जो तुमने अनुमति माँगी है वो अनुमति मैं तुम्हें देता हूँ। तुम लोगों ने अपनी–अपनी पसन्द के अनुसार जो भी इलाके खोजे हैं या तय किये हैं, उसके बारे में तुम लोग मुझे पूरी जानकारी दोगे और आप लोगों ने कोई ऐसा इलाका चुना जो अपनों के लिए ठीक नहीं होगा तो फिर तुम लोग इसी इलाके को, मेरे इलाके को हमेशा की तरह फिर से परम्परागत ढंग से इसको आपस में बाँट लोगे और उस पर राज्य करोगे।" पिताजी ने यह कहा।

तीनों राजकुमार ने पिताजी से बहुत शीघ्र आकर भेंट करने की बात कही और वो तीनों अपने–अपने राज्य स्थांपित करने के लिए निकल पड़े। अपने–अपने ढंग से तीन रास्तों पर अलग–अलग अपने कुछ सिपाहियों के साथ निकल पड़े।

इस सबकी खोज में जो सबसे छोटा बेटा था वो पहले से ही मूल रूप से ही माता–पिता से अलग नहीं होना चाहता था लेकिन क्योंकि वो दोनों बड़े भाइयों की बात को मोड़ नहीं सकता था इसलिए उसको मजबूरी में नया कार्य करने की मजबूरी आ गयी थी। जो काम मजबूरी में किया जाता है और जिसको पूरे दिल से नहीं किया जाता है वो कार्य कभी पूरा नहीं होता। उसी प्रकार सबसे छोटे बेटे ने बड़े भाइयों की बात को न टालने के लिए मजबूरी में हाँ की थी इसलिए कुछ दूर गया और नये–नये मार्ग खोजता रहा पर उसके मन में माता–पिता की याद बनी रही। उसे माता–पिता की बहुत याद आ रही थी इसलिए वो वापस लौट आया और लौटकर आकर घर में बैठ गया।

घर पहुँचने के बाद उसने कहा, "मैं आप लोगों को बहुत याद करता था इसलिए बड़े भाइयों की तरह नया जो प्रदेश है उसकी खोज किये बिना मैं घर वापस लौट आया और वास्तव में मेरा जो विचार है वो भी ऐसा है कि मैं उम्र भर अपने माता–पिता की सेवा करूँगा और जहाँ मेरे माता–पिता रहेंगे उसी प्रदेश में जीवनभर अपना जीवन व्यतीत करना चाहता हूँ इसलिए वापस लौट आया हूँ।"

काफी समय बीत जाने पर नये इलाके की खोज में जानेवाले दोनों बेटे भी वापस आ गये। वो लौट आये तो अपने–अपने पसन्द के जो प्रदेश हैं उसके बारे में माता–पिता को बताया।

सबसे पहले सबसे बड़े बेटे ने जो प्रदेश पसन्द किया था उसके बारे में बताया। उसने बताया, "मैंने जिस इलाके का चुनाव किया है वो इलाका आपके इलाके की तरह पहाड़ी इलाका नहीं है बल्कि एकदम मैदानी इलाका है और मैंने

सोचा कि उस मैदानी इलाके में अपना पता–ठिकाना बनाया जाये और वहाँ अपने इलाके का अपने शहर का निर्माण किया जाये और वहीं खेती–बाड़ी करके रहा जाये क्योंकि वहाँ पानी इत्यादि पूर्ण रूप से प्राप्त है।"

बीचवाले बेटे ने कहा, "मैंने जो इलाका पसन्द किया है वो बड़े भैया के इलाके की तरह मैदानी इलाका तो नहीं है। मुझे शिकार का शौक है और मैंने उस इलाके का चयन किया है जहाँ पर शिकार काफी मात्रा में मिलें। काफी बड़ा जंगल है। यह जो पहाड़ी इलाका है इस जंगल का बहुत ही अहम और घना इलाका है जहाँ बहुत बढ़िया ढंग से शिकार किया जा सकता है। वो इलाका मैंने चुना है।"

तभी पिता ने सबसे बड़े बेटे से कहा, "बेटे, देखो तुम सबसे बड़े हो। तुमने जो इलाका चुना है वो वहाँ रहने के लिए ठीक है और उसे नया इलाका बनाने के लिए वो काफी उचित है, अपनी ताकत और अपनी लगन से तुम इसको जाकर उन्नत कर सकते हो। तुम वहाँ जाओ और जाकर मेहनत करो और उसको बनाओ। लेकिन तुम वहाँ एक नयी जगह, नया प्रदेश बनाकर रहने जा रहे हो तो तुम्हारा माता–पिता के प्रति जो कर्तव्य है उससे तुम एक प्रकार से जीवन–भर के लिए मुक्त हो जाओगे और इस तरह मुक्त हो जाने की वजह से तुमको माता–पिता की जायदाद जो है उसमें से हिस्सा नहीं मिलना चाहिए। नया राज्य स्थापित करने के लिए जायदाद थोड़ी–सी दी जायेगी ताकि तुम्हें अपना खानदान याद रहे। अपना परिवार याद रहे और जो कुछ तुम लोगों को दिया जायेगा उसको लेकर अपना नया राज्य स्थापित करने के लिए रवाना हो जाओ।"

उन्होंने बीचवाले जो बेटे थे उसने जो प्रदेश पसन्द किया था वो उचित नहीं था। इसलिए उसे अनुमति नहीं मिली, लेकिन क्योंकि माता–पिता इसकी अनुमति नहीं दे सकते लेकिन बेटे ने अपना प्रदेश अलग से बनाने का फैसला कर लिया था। माता–पिता की अनुमति न मिलने पर भी वह वहाँ जाकर रहेगा। ऐसा बीचवाले बेटे ने सोचा।

तभी महाराज को बहुत क्रोध आया और उन्होंने कहा, "तुम मेरे आदेश का विरोध कर रहे हो। ठीक है तुम जाना चाहते हो तो जाओ लेकिन तुम्हें मेरे खजाने से एक दमड़ी भी नहीं मिलेगी। कोई पैसा–वैसा तुमको नहीं मिलेगा। तुम माता–पिता की बात को न माननेवाले एक धूर्त पुत्र हो। और जो यह सबसे छोटा बेटा है यही बस एक ऐसा बेटा है जो अपने माता–पिता के साथ रहना चाहता

है। उनकी सेवा करना चाहता है और इतना ही नहीं वो हमारे जो खानदानी काम हैं उनको भी बड़े ध्यान से बड़े सुरक्षित ढंग से संभालता हुआ रहना चाहता है। उसे अपने माता–पिता से बहुत प्यार है। और इसे अपने माता–पिता के राज्य से भी बहुत प्यार है। इसलिए हमारे राज्य की जो जायदाद है और राज्य है वो हमारे सबसे छोटे बेटे को ही दिया जायेगा।" यह उन्होंने फैसला किया।

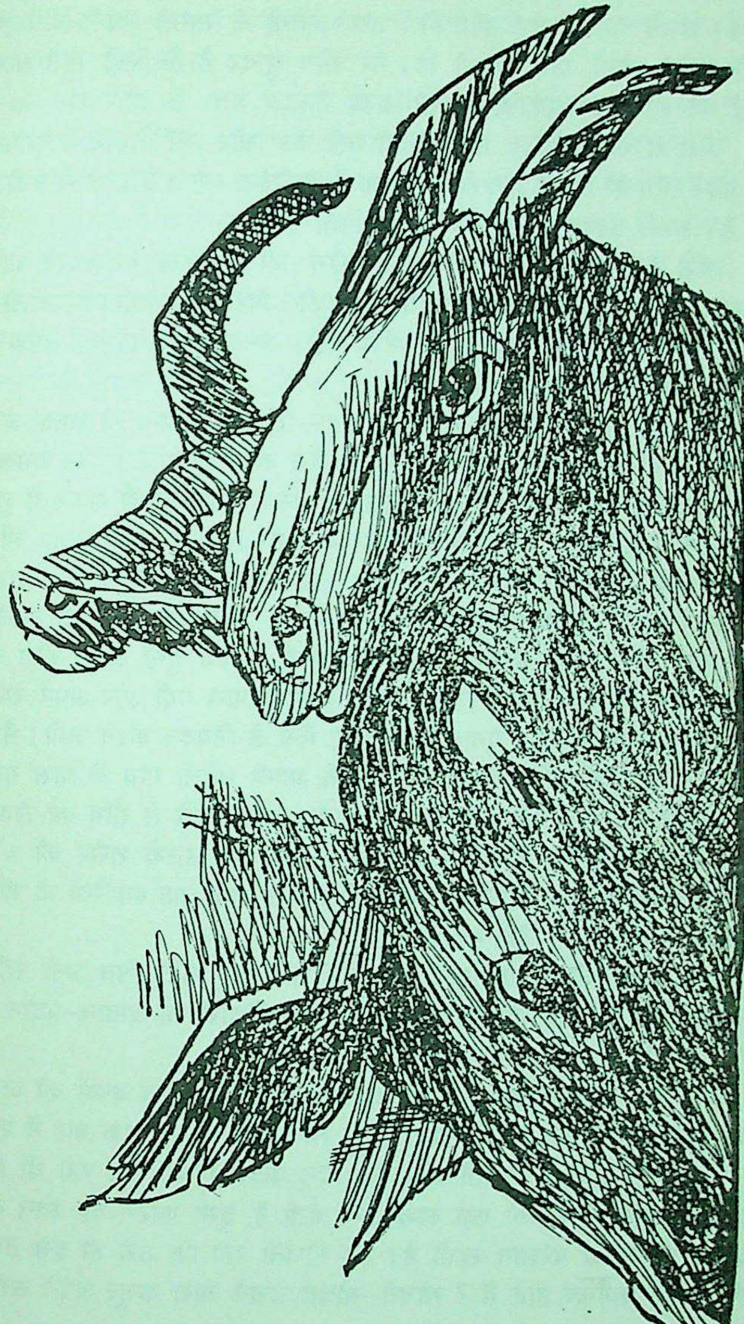
नोट–आज बर्मा में जितनी भी छिन् जाति हैं वो विशेष रूप से जो खौंचां: जाति है वो सब न्याय की विधि के रूप में, बँटवारे की विधि के रूप में इसी विधि को मानते हैं और तभी से यह मानते आ रहे हैं और माता–पिता के राज्य, माता–पिता के जायदाद में से, बीचवाले बेटे को बिल्कुल भी जायदाद में से कुछ भी लेने का हक नहीं है क्योंकि उसने यह कहा कि माता–पिता को अगर मंजूर नहीं है तब भी करेगा। माता–पिता की बात को न माननेवाले नालायक बेटे को कौन एक दमड़ी भी देना चाहेगा। सबसे छोटा बेटा जो है वो मात्र माता–पिता की ही इच्छापूर्ति और सेवा करना चाहता था और उसे अपने माता–पिता से और अपने माता–पिता द्वारा स्थापित किये हुए राज्य से पूरा लगाव है इसलिए माता–पिता की जितनी भी जायदाद है वो उसे ही मिलेगी। उसे ही दी जायेगी। यह फैसला दिया गया और यह बँटवारे की जो विधि है उसी को आधार बनाकर खौंचां: जाति के लोग आज भी इसी विधि को मानकर चलते हैं।

गाय और बकरी

पुराने ज़माने की बात है। एक बकरी और एक गाय में बहुत प्यार था। वह सदा साथ आती–जातीं और चरा करती थीं, पर उनके लिए भरपूर घास कभी एक जगह नहीं मिलती थी, इसलिए उन्हें एक जगह से दूसरी जगह, घास की तलाश में लगातार भटकना पड़ता था। सुबह के समय जब घास चरने जाते, तो पेट भरने से पहले ही घास खत्म हो जाया करती। तब उन्हें शाम के समय घास के लिए किसी नई जगह की खोज में जाना पड़ता था।

एक दिन मैदानी इलाके में जब घास समाप्त हो गयी, तब उन्हें पहाड़ी क्षेत्र में जाना पड़ा। बकरी पत्थर की चट्टानों पर आसानी से कूदकर चढ़ ग़यी, लेकिन गाय उस हर स्थान पर जाने में असमर्थ थी, जहाँ बकरी पहुँच रही थी। आखिरकार गाय पहाड़ के नीचे हैरान होकर खड़ी रह गई, तब बकरी ने आवाज़ दी–"दीदी ! आप ऊपर क्यों नहीं आ रहीं ? मुझे लगता है कि तुम अपने टेढ़े–मेढ़े सींग का भार उठा नहीं सकती हो और इसीलिए ऊपर नहीं आ रहीं या फिर इस वजह से ऊपर आने की हिम्मत नहीं करतीं कि कहीं सींग टूट न जायें ?" गाय ने उत्तर दिया–"नहीं बहन, ऐसी कोई बात नहीं। वास्तव में मैं ऊपर चढ़ना नहीं चाहती। इसीलिए ऊपर चढ़ने की कोशिश नहीं की।" यह सुनकर बकरी बोली–"झूठ मत बोलो दीदी, मैं जानती हूँ, आपका ऊपर न आना मात्र आपके द्वारा अपने सींग का भार न उठा पाना है। दीदी, अगर वास्तव में मेरी कही बात सच है तो आप अपना सींग मुझे देकर मेरा सींग ले सकती हैं। मैं शरीर से छोटी हूँ, पर अच्छी ताकत रखती हूँ।" यह कहकर उसने जरा–सी उछल–कूद की फिर अपना सींग निकालकर गाय को देते हुए कहा–"लीजिए दीदी, इस सींग को आप लगाइये और अपना सींग मुझे दे दीजिए।" गाय को बकरी की हरकत पसन्द नहीं आयी। वह उसके सींग वाले प्रस्ताव को भी पसन्द नहीं कर रही थी, लेकिन क्योंकि बकरी ने उसे कुछ बोलने का अवसर ही नहीं दिया था और अपना सींग निकालकर उसके हाथ में सीधे ही थमा रही थी, अतः स्वयं का मन न होते हुए भी उसने भी अपना सींग बकरी के हाथ में दे दिया।

गाय से प्राप्त हुए सींग के कारण बकरी बड़ी प्रसन्न दिखने लगी। उसने गाय का सींग सामने की ओर घुमाकर लगा लिया। बकरी ने मन–ही–मन सोचा,



अब मामला ठीक है; मुझे अच्छा सींग मिल गया। चेहरे के सामने नुकीला फैला कर लगाया गया यह सींग अन्य जानवरों पर डींग मारने के लिए बड़ा उपयुक्त रहेगा। उसने ऐसा विचारा और फिर उसने लोगों के सामने अपनी डींगें भी मारीं–"ओये लोगों, जरा बताओ तो। मेरे सींग सुन्दर हैं कि नहीं ? है भला कोई मेरे सींगों का मुकाबला करने वाला ?"

भैंसे से भेंट होने पर, भैंसे को भी यही कहा और उसे चिढ़ाया–"आपने तो अपने सींग को अपनी ओर ही मोड़ रखा है, वह मोटा–मोटा और गोल–मटोल भी है। इससे आपकी मूर्खता ही स्पष्ट होती है ?"

भैंसे ने उत्तर दिया–"कौन मूर्ख है, कौन नहीं ? इसका फैसला तो आगे चलकर हो जायेगा।" भैंसे के उत्तर से बकरी की त्यौरियाँ चढ़ गयीं। वह बोली–

"आगे–पीछे की बातें मत करो भैंसे भाई ! अगर किसी बात को समझना ही है, तो अभी ही समझ लेते हैं ?"

भैंसे ने चुनौती स्वीकार करते हुए कहा–"ठीक है ! अभी ही समझ लेते हैं। अब मैं जैसे बताता हूँ, जैसे मैं कहता हूँ, वैसे करके दिखाओ।" यह कहकर भैंसे ने उससे झाड़ियों के जंगल में घुसने के लिए कहा। बकरी अकड़ती हुई जंगल में घुसी, तभी सामने फैलकर बाहर की ओर निकला हुआ उसका सींग झाड़ियों के जंगल में, घास के बीच फँस गया और बकरी दौड़ने में असमर्थ हो गयी। बकरी की हालत देखकर भैंसे ने कहा–"क्यों बहन अहंकारी बकरी, कहो तुम्हें अपनी सही पहचान हो गयी या नहीं ? क्या तुम्हें अपने सींग के बारे में अभी भी कोई भ्रम है।" तब बकरी भैंसे के पास गयी और अपने सींग को, अपने शरीर की ओर घुमा देने के लिए भैंसे से निवेदन करने लगी। भैंसे ने कहा–"मैं ऐसा नहीं करूँगा।" तब बकरी अपनी सहेली गाय के पास गयी और उससे बार–बार यही अनुरोध करने लगी। गाय बकरी से सींग को लेकर पहले ही नाराज़ थी। इसलिए उसने उसके सींग को उसके शरीर की ओर घुमा तो दिया, पर कुछ अधिक मोड़ दिया। तब से आज तक बकरियों के सींग पीछे की ओर मुड़कर टेढ़े बने होते हैं।

इस तरह बकरी और गाय हर रोज सदा की भाँति मित्र बनी रहीं। अपनी–अपनी मुश्किलों के बारे में एक–दूसरे से विचारों का आदान–प्रदान वे किया करतीं।

बकरियों के चार स्तन हुआ करते थे और वह चार–पाँच बच्चों को जन्म देकर पाल सकती थी, जबकि गाय के दो स्तन होते थे और एक बार में एक ही शिशु को जन्म दे सकती थी। एक दिन बकरी विचार कर रही थी कि वह दो या तीन बच्चों को एक साथ ज़न्म देती है, इसी कारण वह स्तन की थकावट से ज्यादा परेशान रहती है। वह सोचती रही कि उसे ही इस तरह बच्चे अधिक क्योंकर होते हैं ? सोचते–सोचते उसने सारा कसूर अपने स्तनों

पर डाल दिया। तब एक दिन उसने अपने आप से कहा, मैं समझ गयी राज़ की बात। मेरे चार स्तन हैं, इसीलिये जब भी बच्चे होते है, तो उनकी संख्या तीन–चार हो जाती है।

अब वह गाय से स्तन बदलने के लिए प्रार्थना करने लगी। गाय ने कहा–"स्तनों की अधिक संख्या के कारण संतान की उत्पत्ति अधिक होती है, ऐसा मैं नहीं समझती।" पर बकरी नहीं मानी। बार–बार एक ही प्रार्थना करती थी कि हम आपस में स्तन बदल लें। गाय ने अंततः अपने दोनों स्तन निकालकर बकरी को दे दिए और बकरी के चारों स्तनों को अपने शरीर में लगा लिया, लेकिन यह करने पर भी बच्चों के जन्म में किसी तरह का अन्तर न आया। इतना अवश्य हुआ कि गाय के स्तनों की संख्या चार हो गयी और बकरियों के स्तनों की संख्या केवल दो रह जाने से स्तनों में दर्द होने का उसका कष्ट और बढ़ गया।

सैनिक चक्रव्यूह

पुराने ज़माने की बात है। बर्मा की उत्तर पश्चिमी पर्वत श्रेणी में खौंसे जाति रहा करती थी। इन्हीं में छिन् और सान जाति का भौंहैं नाम का सरदार सेनापति हुआ करता था। भौंहैं अपने कुछ आदमियों के साथ बर्मा के उत्तर पश्चिम पर्वत श्रेणी में रहने के बावजूद, छिन्डिव्न नदी के पास बड़ी–बड़ी लकड़ी की गेलों को काटकर, नावों और किश्तियों से नदियों और नालों में एक जगह से दूसरी जगह बड़ी आसानी से आया–जाया करता था।

इस तरह नदी–नालों के जल प्रवाह का विशेषज्ञ भौंहैं घने जंगलों में रहने वाले खौंसे छिन् जाति के लोगों पर बार–बार, अचानक हमला बोल दिया करता था और उनसे चावल, धान, भैंस, बैल, गाय, सुअर इत्यादि सामान और पशु लूटकर ले जाया करता था।

बार–बार आक्रमण करने वाले भौंहैं को खौंसे जाति मिट्टी में मिला देना चाहती थी, पर उनकी उस पर कुछ पेश नहीं चलती थी। भौंहैं का गाँव नाले के दूसरे किनारे पर था और खौंसे लोग तैरना नहीं जानते थे। इतना ही नहीं वे जल के प्रवाह से बड़े ही भयभीत हो उठते थे। इस कारण वे कुछ करने में असमर्थ थे।

भौंहैं लोगों को जब भी यह मालूम होता था कि घने जंगल के लोग उन पर आक्रमण करने आये हैं, तो वे उनका कभी प्रत्यक्ष रूप से मुकाबला नहीं करते थे। वे नाले के दूसरी ओर, अपनी नावों में बैठकर, उनसे बचकर चले जाया करते थे।

भौंहैं का यह चक्रव्यूह इसलिये हुआ करता था कि वह इस तरह के अनामंत्रित युद्ध में अपने सैनिकों को, अपने लोगों को, नाहक नहीं मरने देना चाहता था। इसलिये घने जंगल वाले खौंसे छिन् जाति के लोग भौंहैं लोगों के बार–बार आक्रमण को सहकर भी शांत रहने को विवश थे। हथियारों के बल से जीत पाना उन्हें सम्भव नहीं था। यही कारण था कि वे सब भौंहैं के पास आये और बोले–अब हम एक–दूसरे से लड़कर जीवन नहीं गुज़ार सकते। हमें शान्तिपूर्वक रहना पसन्द है। आइये हम बैठकर अपना–अपना इलाका, अपना–अपना प्रदेश तय कर लें और तय करने के बाद आप अगर फिर से हम पर चढ़ाई नहीं करेंगे, तो हम लोग हर साल अपनी ओर से भैंस, बैल, सुअर, लारू, धान, चावल



इत्यादि वस्तुओं को उपहार स्वरूप भेजा करेंगे।

भौंहैं ने प्रस्ताव पर विचार किया। उसने सोचा कि जरूरत के अनुसार माँग करने पर अगर मिल जाये तो मेरे अपने आदमी भी नहीं मारे जायेंगे और मुझे अपने लिए भी लड़ने की आवश्यकता नहीं होगी। इस तरह युद्ध से मुक्ति मिल जायेगी। यह सोचकर उसने विचारपूर्वक अपनी माँगें रखीं और दोनों पक्षों के लिए प्रदेश निर्धारित करने की स्वीकृति दे दी।

जिस दिन प्रदेशों की सीमा तय की गयी, उस दिन भौंहैं ने उत्तरी दिशा में एक भैंसे की बलि चढ़ाकर, शाम के समय उस भैंसे को पानी में प्रवाहित करने की बात कही और कहा कि रात भर बहते–बहते भैंसे का सिर जहाँ पहुँच जायेगा, उस जगह तक के इलाके को प्रदेश की सीमा माना जायेगा।

घने जंगल के खौंसे जाति वाले भौंहैं की बात मानते रहे। लेकिन अब तक खौंसे जाति वालों ने भौंहैं नाम के व्यक्ति को प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं था। जब भी पूछा जाता कि भौंहैं कहाँ है ? तब इतना ही बताया जाता कि भौंहैं साथ नहीं आये। वह सरदार हैं, नायक हैं और वह मात्र आज्ञा ही दिया करते हैं, केवल अपने सहायकों को निर्देश देते हैं और हर बात उन्हीं से पूरी कराते हैं।

इस तरह घने जंगल वाले खौंसे जाति के लोगों ने युद्ध हारे हुओं की तरह, विजेता की हर बात को स्वीकार कर, शाम के समय सूरज डूबने के बाद भैंसे के सिर को नाले के जल में बहा दिया।

लेकिन रात के समय भौंहैं के लोग आये और नाले के बीच में नाव से यात्रा करके अपने मनपसन्द स्थान तक भैंसे के सिर को खींचकर ले गये और उसे पेड़ों में फँसा दिया गया। फिर सुबह के समय युद्ध में हारे हुए खौंसे जाति वालों के साथ आकर, बहुत अधिक हैरान होने का नाटक करते हुए, अपने प्रदेश की सीमा निर्धारित कर दी।

युद्ध हारे खौंसे जाति वालों को शक हुआ फिर भी उन्होंने अपनी स्वीकृति दे दी। वे हर साल भौंहैं के पास तय किये उपहार भेज दिया करते थे।

इस तरह उपहार भेजने का निश्चित उद्देश्य भी था और वह था कि भौंहैं इत्यादि के आक्रमण करने की रीति–नीति तथा नदी और नालों में नावों से आसानी से आ–जा सकने की प्रक्रिया को अच्छी तरह सीखा जा सके और उसी समय में, युद्ध में विजयी होने के तकनीकी ज्ञान को समझा जा सके।

इस तथ्य को भौंहैं ताड़ गया था। तब उसने विचार कर कि जंगलों से खौंसे जाति के लोग अवश्य आयेंगे, इस बात की जानकारी प्राप्त की और अपने लोगों को आदेश दिया कि तम्बाकू के पत्ते जितनी अधिक मात्रा में इकट्ठे हो सकें, इकट्ठे किये जायें। और उन पत्तों से, लम्बाई तीन गज तथा चौड़ाई एक गज वाले पैर की शक्ल बनाई जाये। यह कार्य उसके सैनिक चक्रव्यूह

का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। और जैसा कि उसने सोचा था कि युद्ध में हारने वाले एक दिन लड़ाई करने के लिए अवश्य आयेंगे, तो उसने देखा कि वह वास्तव में आये। तब भौंहें ने, पन्द्रह–सोलह गज की ऊँचाई पर टहनियों के बीच पानी में भिगो कर खड़े करके रखे तम्बाकू के पत्तों को, दुश्मन के आने वाले रास्तों में खड़ा कर दिया। इसके साथ ही उस रास्ते में बाँस के पेड़ों के जो झुण्ड झुके हुए थे, उन बाँसों को उनकी अधिकतम ऊँचाई तक अच्छी तरह साफ करके चोटियों पर डंक्कियाँ लगाकर रख दिया गया।

आदमी के पैर की तरह पहले बनवाई गयी चौड़ी इन पट्टियों को कीचड़ के स्थान पर यूँ रख दिया गया कि देखने में लगे कि जैसे आदमी चल रहे हैं अथवा देखने में यह लगे कि ये पाँव के निशान आदमियों ही के हैं। इसके बाद उसने अपने आदमियों को आदेश दे दिया कि शत्रु पीछा करे तो उसका मुकाबला न करें। साथ ही कहा कि बूढ़े और बूढ़ियों को कीचड़ में फँसाकर रखी गई आदमियों के पाँव की तरह आकृतियों के आस–पास रहने दें। दुश्मन यदि उन पाँव के निशानों के बारे में पूछें तो क्या उत्तर दें, यह भी सिखा दिया गया। इस तरह बूढ़े–बूढ़ियों को उनके कर्तव्य ठीक प्रकार समझाकर रास्ते भर में तैनात कर दिया गया।

भौंहें ने अपनी पत्नी को भी कर्तव्य–पालन का आदेश दिया।

भौंहें के लोग अब दुश्मन नाले के दूसरे किनारे जाकर हमला नहीं बोल रहे थे। वह अपने किनारे की ओर अपनी नावों और किश्तियों सहित, परिणाम का इंतजार करने लगे।

दुश्मन जब किनारे पर पहुँचे, तो वहाँ उन्होंने आदमी के विशाल पदचिन्ह देखे। और उन पर धावा न बोलने वाले बूढ़ों से उन्होंने पूछा कि ये पाँवों के निशान किसके हैं ?

बूढ़ों ने वही उत्तर दिया जो कि उन्हें भौंहें ने सिखाया था। उन्होंने कहा कि ये पाँव के निशान उनके सेनापति भौंहें के हैं। वह खुद सैनिक चक्रव्यूह का निर्देशन और अध्ययन करने के लिए आये थे और अब लौट गये हैं।

बहुत बड़े, विशाल पाँव के निशान देखकर दुश्मन बहुत डर गये। कुछ लोगों ने कहा बिना लड़े ही लौट पड़ना चाहिए। लेकिन गाँव के भीतर आगे चलने के लिए जब नायक ने आदेश दिया तो वह सब आगे बढ़े। उन्होंने पन्द्रह–सोलह गज की ऊँचाई से गिर रहे एक–एक बूँद पानी को देखा, जो कि तम्बाकू के पत्तों से टप–टप गिर रहा था। उन्होंने चोटी पर डंक्की लगाये हुए बाँस की झाड़ियों को देखकर पास बैठे बूढ़ों से पूछा। बूढ़ों ने बताया कि तम्बाकू के पत्ते वो हैं, जिन्हें भौंहें ने मुँह में रखा हुआ था और फिर गला साफ करने के लिए थूककर बाहर निकाल दिया था। यह बाँस की जो छड़ियाँ काटी हुई हैं, वह इसलिये कि भौंहें की ऊँचाई इनसे कहीं ऊँची थी और ये बाँस

की छड़ियाँ उसके चलने में रुकावटें पैदा करती थीं।

दुश्मन पेड़ों पर चढ़े और तम्बाकू के पत्तों के ढेरों का निरीक्षण किया। उन्हें वहाँ तम्बाकू के पत्तों के विशाल ढेर लगभग एक बीसे जितने नज़र आये। यह देखते ही वे सब बहुत ही भयभीत हो उठे और वहाँ से दौड़ खड़े होने की योजना बनाने लगे लेकिन जो नायक था, उसने कठोरतापूर्वक आदेश दिया कि गाँव में प्रवेश करना ही होगा। वे सब डरते–डरते गाँव में प्रवेश करने लगे। यह देखकर भौंहें ने जल्दी–जल्दी अपने सारे कपड़े उतार दिये और नग्न शरीर के साथ, पत्नी की छाती से लगकर, शिशु की तरह माँ का दूध पीने का नाटक करने लगा। दुश्मन जब घर में प्रवेश कर गये और घर को चारों ओर से उन्होंने घेर लिया तो भौंहें की पत्नी ने भौंहें के सिखाये अनुसार कहा–"भौंहें घर पर नहीं है।"

तब दुश्मनों ने स्तनपान करते हुए व्यक्ति की ओर उँगली से इशारा करते हुए पूछा–"यह कौन है ? "भौंहें की पत्नी ने उत्तर दिया–"यह मेरा छोटा बेटा है।" शत्रु, जिन्होंने भौंहें को कभी नहीं देखा हुआ था, मन ही मन सोचने लगे कि अगर भौंहें का लड़का ही इतना बड़ा है तो भौंहें खुद कितना विशाल, कितना शक्तिशाली होगा इसका कुछ तो अनुमान हो सकता है। उन्होंने वे बातें भी सोचीं, जिन्हें उन लोगों ने रास्ते में देखा था। अब उन्हें वहाँ से जल्दी से जल्दी जान बचाकर भागने में ही अपना भला दिखा और वह सब जान बचाकर भाग खड़े हुए।

भौंहें ऐसा ही सेनापति था, जिसने इस तरह के सैनिक चक्रव्यूहों के प्रयोग से अपने आपको अपने शत्रुओं में बहुत चर्चित और प्रसिद्ध कर रखा था। उसने अपने इन चक्रव्यूहों के बल पर ही, जीवन भर अपना झण्डा ऊँचा रखा और उसे कभी झुकने नहीं दिया।

भूत नगरी से लौटने वाला

किसी समय की बात है। एक देश में एक ऐसा राजा था, जिसे राज्य करते हुए काफ़ी समय हो चुका था, पर उसे किसी बात में भी खुशी हासिल नहीं होती थी और वह हमेशा किसी–न–किसी शोक और चिन्ता में डूबा रहता था। इसका मुख्य कारण यह था कि महाराज की सगी बड़ी बहन को भूत उठाकर किसी अन्जान स्थान को ले गये थे।

एक़ दिन महाराज ने देश में ढिंढोरा पिटवाया कि जो भी व्यक्ति भूतों की कैद से उनकी बहन को छुड़ा लाने में सफल होगा, महाराज उसे उचित पुरस्कार प्रदान करेंगे। उस मुनादी को सुनकर एक युवा ईमानदार किसान मौं: ठें साँ ने महाराज से कहा कि–"मैं यह काम अपने हाथों में लेना चाहता हूँ" और महाराज से अनुमति पाकर वह भूतों की नगरी की ओर प्रस्थान कर गया।

भूतों की नगरी में जब वह पहुँचा, तब भूत भोजन की तलाश में कहीं गये हुए थे। इस कारण वह आसानी से महाराज की बड़ी बहन के पास पहुँचने में सफल हो गया। युवा किसान ने उन्हें बताया कि वह उन्हें वापिस महाराज के पास ले जाने के लिए आये हैं। महाराज की बहन ने कहा कि उसे चलने में बड़ी प्रसन्नता होगी। अभी वह बातचीत कर रहे थे कि भूत वापस लौट आया। तब महाराज की बहन ने युवा किसान को एक बड़े से सन्दूक में छुपा दिया। भूत ने आते ही गरज कर कहा, आदमी की महक आ रही है। इस पर बहन बोली–मैं भी मानव हूँ। यह महक मुझसे आ रही होगी। इस तरह झूठ बोल कर उसने भूत को शान्त किया। कुछ देर बाद, थका हुआ भूत गहरी नींद में सो गया। भूत के सो जाने के बाद बहन ने चोरी से छुपाकर रखे उड़न खड़ाऊँ युवा किसान को दिये। युवा किसान ने उड़न खड़ाऊँ पहन लिए और महाराज की बहन को साथ लेकर आकाश मार्ग से धरती पर वापस लौट आया। बिना किन्हीं भूतों के संकट से वह मानव लोक वापस पहुँच गये। जैसे ही वह अपनी राजधानी के बाहर पहुँचे, तो यह खबर तेजी से फैल गई कि राजबहन जी लौट आयी हैं। उन्हें देखने के लिए बहुत बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी। जब विशाल भीड़ उन्हें देख रही थी, तो महाराज के सगे बेटे जो कि बहुत ही नीच थे, उन्होंने युवा किसान को अपना बन्दी बना लिया और ऐसा नाटक किया, जैसे कि वह खुद अपनी बुआ को लेकर आये हों। लेकिन महाराज की बहन



ने कहा--"मुझे लाने वाला इन राजकुमारों में से कोई भी नहीं है। कृपया मेरे सामने उसे पेश करें जो मुझे लेकर आया है।"

महाराज ने कहा कि–"हम उचित प्रबंध करेंगे" और बड़ी बहन के लौटने की खुशी में सात दिनों तक खुशियों का त्यौहार सम्पन्न किया गया। शहर के द्वार पर एक छोटा–सा द्वार बनाया गया, जिसमें से एक बार में केवल एक व्यक्ति ही अन्दर प्रवेश कर सकता था। उस प्रवेश द्वार के सामने महाराज और उनकी बहन एक बहुत ऊँचे मंच पर खड़े होकर आने–जाने वालों को बड़े ध्यान से देख रहे थे। सातवें दिन युवा किसान, जो बन्दीगृह से किसी तरह छूट गया था, अन्य लोगों की भाँति त्यौहार में शामिल होने के लिए महल में प्रवेश करने लगा। जैसे ही राजबहन ने युवा किसान को देखा, वह तुरंत मंच के नीचे उतर आयीं और युवा किसान का हाथ पकड़कर, उसे महाराज के पास ले आयीं और बोलीं–"महाराज भूत लोक से जब हम लोग लौट रहे थे तो इस युवक की लुँगी के कुछ हिस्से को मैंने कैंची से काटकर अपने पास रख लिया था।" महाराज ने सम्भालकर रखे हुए एक लुँगी के टुकड़े को युवा किसान की लुँगी के साथ मिलाकर देखा, तो दोनों कपड़े आपस में मेल खा रहे थे।

महाराज ने मन–ही–मन सोचा कि यह युवा किसान किसी साधारण परिवार का होने पर भी बहादुर ही नहीं ईमानदार है और मेरे परिवार का शुभचिन्तक है, जबकि मेरे अपने बेटों में इन गुणों का अभाव है। मेरे देश को मेरे बाद एक ऐसे ही आदर्शवादी राजा की आवश्यकता होगी। यही सोचकर उन्होंने युवक किसान का विवाह अपनी बहन राजकुमारी से किया और उसको युवराज बनाकर देश का शासन कार्य अच्छी तरह सीखने में पूर्ण रूप से मन लगाने को कहा। इस तरह युवा किसान युवराज बनकर देश का प्रशासन सीखता रहा और समय आने पर महाराज बनकर पूरे राज्य का दायित्व श्रेष्ठ ढंग से उसने निभाया।

ताबीज

पुराने ज़माने की बात है। एक छोटा–सा गाँव था। वहाँ एक युवक रहता था। युवक के पास अपनी कोई ज़मीन नहीं थी और वह घने जंगलों में जहाँ वो ज़मीन पहाड़ी इलाके में होती थी वहाँ खेती–बाड़ी कर लिया करता था। और लोगों की तरह मेहनत करके अपना पेट पालता था। बड़ी मुश्किल के साथ उसका गुजारा चलता था। उसके पास कभी कोई पैसा नहीं हुआ, और वह हमेशा ही बड़ा गरीब रहा। वो इलाका वैसे चाय की खेती करने वाला इलाका था, माघ का महीना जब आता और चाय के सबसे पहले और सबसे अच्छे कोमल सूफी पत्ते जब निकलते तो उस समय वह अपनी खेती–बाड़ी बन्द करके लोगों के लिये चाय के पत्ते तोड़ा करता था। भले ही कितनी भी मूसलाधार बारिश हो, वह काम करता था और एक बात और भी, जब बारिश काफी तगड़ी ह़ोने लगती थी तो वह अपने घर लौट जाया करता था, और गाँव के पास में ही वह कृषि की ज़मीन पर मज़दूरी कर लिया करता था।

एक बार जब अभी चाय की पहली पत्तियाँ निकली ही थीं, वह मज़दूरी करने के लिए अपने साथ अपनी पत्नी को भी ले आया लेकिन अब उसके पास रहने का कोई ठिकाना नहीं था और वह गलती से अपनी पत्नी को अपने साथ ले आया था। इसलिये एक आश्रम में कुछ लोगों के साथ उसने अपनी पत्नी को रखा।

जब वह चाय के बागानों में पहुँचा तो वहाँ के जो नौजवान लोग थे उन लोगों को कहता कि मेरे पास एक ताबीज है जो उसे एक महात्मा ने दिया था और वह ताबीज अपने मित्रों को दिखाया करता था। वास्तव में युवक बातचीत करने में बड़ा ही निपुण था, लोगों को अपनी बातों में लगा सकता था। वह ऐसी बातें किया करता था कि लोगों को उसकी बातों पर एकदम से यकीन होता था। बातों–बातों में ही उसने लोगों में यह प्रचार प्रसार कर दिया कि उसके पास जो ताबीज हैं वह बड़े प्रभावी हैं, उसने गाँव वालों से कहा कि एक दिन मैं अपने ताबीज के प्रभाव को आप लोगों को दिखाऊँगा।

एक दिन उसने जो क्वांरे और जवान लड़के थे उन सबको उसने इकट्ठा किया और कहा–"कि तुम मेरे पराक्रम को देखो।"

नौजवान युवक बहुत खुश थे, रात का जब समय हुआ तो युवक आश्रम



में गया जहाँ उसकी पत्नी रह रही थी, और उसने जाते ही अपनी पत्नी से ऐसा व्यवहार करना शुरू किया, ऐसी बात करनी शुरू की जिससे उस युवक को इस तरह देखकर उसके नौजवान दोस्त बहुत प्रभावित हुए और नौजवान लड़कों ने देखा कि वह रात के बारह बजे तक बात करते रहे हैं और फिर अचानक वह महिला, वह युवती युवक के पीछे–पीछे चल पड़ी है। यह सब नौजवानों ने देखा, क्वांरे युवक इस बात को देखकर बहुत ही हैरान हुए और सुबह जब हुई और जब वह युवक वापस लौटा तो युवक का जो ताबीज था उस पर युवकों को बहुत ही ज्यादा विश्वास हुआ। और इतना ही नहीं उस ताबीज पर उन लोगों ने बहुत ही मन्सूबे बनाये और उस युवक के पास जो ताबीज थे उनको बहुत ही अच्छी कीमत पर एक–दूसरे से बढ़–चढ़कर बड़े उत्साह के साथ खरीदा, युवक ने अपने सारे ताबीज अच्छे दामों पर बेच दिये और उसे अच्छे पैसे मिल गये और तब वह अपनी पत्नी को वहाँ से लेकर और दूसरी जगह चला गया।

तेल की लकड़ी

पुराने ज़माने की बात है, वो देवता जो कि वृक्षों के रखवाले होते हैं, वह खुशबूदार और सुन्दर वृक्षों को चुनने के लिए सभा किया करते थे, उस अधिवेशन में तेल की लकड़ी के पेड़ की रखवाली करने वाले देव महोदय भी शामिल हुआ करते थे।

तभी तेल की लकड़ी ने अपने बारे में कुछ अधिक प्रशंसा करने के बारे में सोची और वह बोली कि मेरे जो पत्ते होते हैं इनकी जो नोंक होती है, वह सुइयों की तरह हमेशा तेज़ होती है, मेरे पेड़ से जो तेल निकलता है उससे लोगों को बड़ा लाभ होता है। इसलिये मेरा पेड़ मुझे सबसे ज्यादा सुन्दर लगता है। और मैं ही वह वृक्ष हूँ जो सबसे सुन्दर कहलाने योग्य है। तेल की लकड़ी वाले वृक्ष ने अपने बारे में झूठी प्रशंसा की और अहंकार से कहा। तेल की लकड़ी के वृक्ष की बात को सुनकर तेज़ पत्ते ने कहा, लाल चन्दन, सफेद चन्दन आप सबमें से किसी ने भी अपने बारे में झूठी प्रशंसा कभी नहीं की है, आज यह तेल की लकड़ी के वृक्ष ने अपने बारे में इतनी झूठी बातें जो कहीं इससे लगता है कि इसको हमारे साथ नहीं रहना चाहिए। हम लोग इसके साथ नहीं रहेंगे, इसको अलग से रहना चाहिए और जो सर्द इलाका है वहाँ इसको भेज देना चाहिए और वहीं इसको रहना चाहिए। यह कहकर सब लोगों ने तेल की लकड़ी के वृक्ष को अपने इलाके से निकाल दिया और कहा जो नया इलाका उसके लिये तय किया गया है, वहाँ जाये।

उस समय से लेकर तेल की लकड़ी वाला पेड़ सबसे सर्दी का जो इलाका था वो वहाँ जाकर रहने लगा और वहीं वह पैदा होने लगा और यही कारण है कि यह तेल की लकड़ी का जो वृक्ष है यह एकदम सर्द पहाड़ी इलाकों में ही पाया जाता है।



अदृश्य व्यक्ति

पुराने ज़माने में एक गाँव था जहाँ एक आदमी तरह–तरह की दवाइयाँ बनाया करता था। उस आदमी को लोग हकीम मानते थे और उससे अपनी बीमारियों का हल सुलझाया करते थे। हकीम साहब का एक चेला था जो कि हकीम साहब की बहुत ही झूठी प्रशंसा किया करता था।

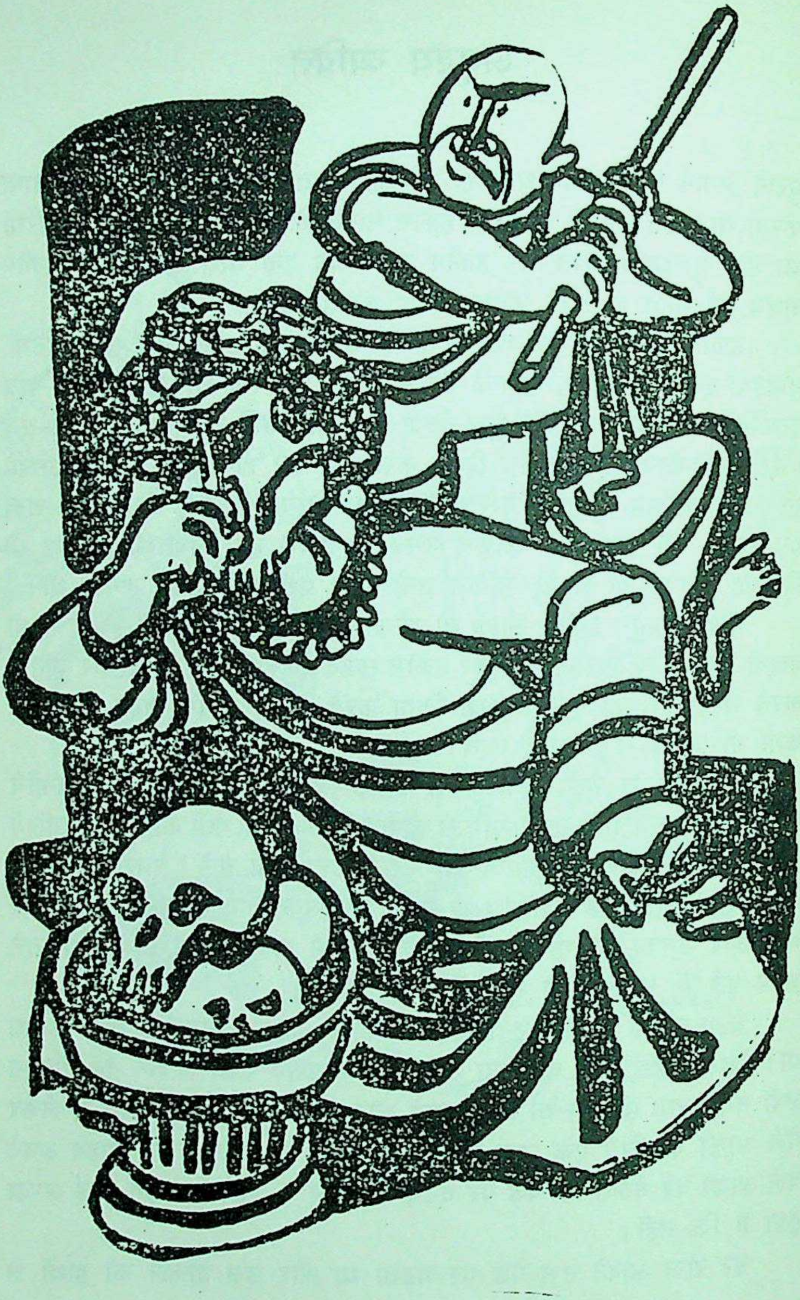
हकीम साहब की एक बड़ी ही अजीब आदत थी, उन्होंने वह सारी बूटियाँ, दवाइयाँ एकत्र कर ली थीं जिनके बारे में उन्होंने सुन रखा था। उन्होंने मंत्र–तंत्र इत्यादि का भी प्रयोग करना शुरू किया हुआ था। जहाँ से भी जो भी मंत्र–तंत्र मिल जाये वह उसका प्रयोग किया करते थे, भले ही उसके बारे में उनको ठीक से आता था या नहीं। वैसे हकीम साहब बिल्कुल अनपढ़ थे, एक भी शब्द वह पढ़ना नहीं जानते थे, लेकिन उनमें जो सबसे बड़ी खूबी थी वह यह थी कि यह अनपढ़ तो थे ही लेकिन उन्हें झूठी प्रशंसा अतिप्रिय लगती थी।

गाँव के लोग हकीम साहब के शौक से परिचित थे, उनकी इच्छा से भी बखूबी परिचित थे और जानबूझकर हकीम साहब को हकीम साहब कहकर बुलाया करते थे लेकिन वह पूरी कोशिश किया करते थे कि हकीम साहब की दवाई कभी भी प्रयोग में न लाई जाये।

एक दिन गुरु चेला दोनों जंगल में जड़ी–बूटियाँ खोज रहे थे, वहाँ उन्होंने फाक्ता का एक घोंसला देखा, जंगली फाक्ता जिसको झोः पक्षी कहते हैं। इसलिये हकीम ने अपने चेले को बुलाया और उससे कहा–"ओ चेले ! उधर देखो उधर जो दो पक्षी हैं न वह उस पेड़ के ऊपर से उड़कर गये हैं, तुम उस पेड़ पर चढ़ो और उनका जो घोंसला है उसके बीच में जाकर देखो तो वहाँ कितने अण्डे पड़े हैं, उन सबको तुम लेकर आ जाओ।"

चेला जोकि अपने गुरु हकीम की आज्ञा का उल्लंघन नहीं कर सकता था। पेड़ की चोटी पर वह चढ़ा और चढ़कर उसने देखा लेकिन वह घोंसला अभी नया–नया ही बना था और उसमें कोई अण्डे नहीं थे, उस दिन से लेकर चेले आकी के लिये एक नया काम मिल गया। हर रोज हकीम साहब अपने चेले आकी को भेजते कि पेड़ पर चढ़कर घोंसले में देखो कि अभी कोई अण्डा हुआ है कि नहीं।

हर रोज आकी उस पेड़ पर चढ़ता था और उस घोंसले को हाथों से



चारों ओर टटोल कर देखा करता था। अब इस बात की जानकारी जब उन दोनों पक्षियों को हुई तो उन्होंने उस पेड़ पर रहना छोड़ दिया और किसी दूसरी जगह पर अपना घोंसला बना लिया। आकी ने सोचा कि यदि यह सच्चाई मैं अपने हकीम को बताऊँगा तो मुझे डाँट पड़ेगी, इसलिये उसने झूठ बोलना ही उचित समझा, इसलिये उसने अपने गुरु से कहा–"हकीम साहब आज घोंसले में एक अण्डा दिखाई दिया है।" आकी ने कहा। तब हकीम ने कहा–"ठीक है बेटे जिस दिन तीन अण्डे पूरे हो जायेंगे तो हम उन तीन अण्डों के आधार पर एक बहुत अच्छी दवाई बनायेंगे।" दूसरे दिन भी चेले को जाना पड़ा और लौटकर उसने यह कहा कि आज कोई अण्डा नहीं दिया। इस तरह उसे रोज जाना पड़ता था। और जाते–जाते वह परेशानी उठाता और इससे मुक्ति पाना चाहता था। उसने सोचा–भई मैं तो हकीम साहब की सेवा करता–करता परेशान हो गया, अब मुझे आचार्य हकीम साहब को धोखा देना ही पड़ेगा यदि मैं उसे धोखा नहीं दूँगा तो नाहक में ही मारा जाऊँगा, इसलिये उसने एक योजना बनाई। दूसरे दिन जंगल जाते समय उसने फाक्ता पक्षी के अण्डे जितना एक गोल–सा पत्थर उठाया और अपने साथ ले गया। आकी जंगल से लौटकर आया तो अण्डे जैसी एक बहुत सख्त चीज़ पक्षी के घोंसले में मिली है, उसने आचार्य को यह बात बतायी। चेले ने हकीम साहब से कहा कि जो अण्डे उस पक्षी के थे, मुझे भूख लगी थी और उन्हें मैं खा गया, हाँ उसमें पत्थर के जैसे मिलता हुआ यह जो चीज़ है इसको मैं लेता आया हूँ, यह कहकर उसने अपने हकीम साहब के हाथ में वह पत्थर थमा दिया। हकीम साहब ने आकी द्वारा दिये गये पत्थर को ध्यान से देखा–अरे शिष्य आकी, यह तो अच्छा ही है लेकिन क्योंकि तुमने इसको पक्षी के घोंसले में से लिया है इसलिये इसको सम्भालकर रखना पड़ेगा क्योंकि इसमें कोई विशेष बात अवश्य ही होगी।

आचार्य ने पत्थर को अच्छी तरह से देखा, उसको साफ किया, जितना उसको आता था, जितना वह जानता था उतने उसने मंत्र आदि पढ़े और उसने उसको सजाया। शिष्य आकी यह सब देखकर खूब जोर से हँसना चाहता था लेकिन वह यह बात जानता था कि उसके हँसते ही सारा झूठ का समुन्दर खुल जायेगा और फिर उसको मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा इसलिये वह चाहकर भी नहीं हँस सकता था। इतना ही नहीं अपने पर भी झूठी प्रशंसा किये जा रहा था। तभी आचार्य ने पूछा–"अरे आकी ! तुम बताना क्या तुम मेरा हाथ देख सकते हो–" आकी ने सोचा अगर दिखायी दे रहा है कहूँगा तो आचार्य जी नाराज़ हो जायेंगे इसलिये उसने कहा ज़रा रुकिये मैं आपको अच्छी तरह देख लूँ। यह कहकर उसने उन्हें अच्छी तरह देखने का नाटक किया। "आचार्य मैं आपके हाथ नहीं देख सकता केवल आपका शरीर ही मुझे दिखायी दे रहा है।" आकी ने झूठ कहा, आचार्य आकी की बात को सुनकर

कुछ समय के लिए सोच में पड़ गया और उसने पूछा कि "ओ आकी ! क्या कह रहे हो, क्या तुमको मेरा हाथ दिखायी नहीं दे रहा ? केवल मेरा शरीर ही दिखाई दे रहा है, यह क्या बात है ? क्या ऐसा भी कभी हो सकता है ?" यह कहकर वह फिर कुछ सोच में पड़ गया।

एक दिन शिष्य ने गुरु को एक अच्छी सलाह दी, वह सलाह यह थी कि आचार्य स्वयं पेड़ पर चढ़ें और यह जो फाक्ता पक्षी है, इसका अण्डा जोकि वास्तव में अमूल्य है उसको अपने पास रखें, इससे देखेंगे कि आपका जो शरीर है वह अदृश्य हुआ है कि नहीं। शिष्य आकी ने जो सलाह दी उसके अनुसार आचार्य पेड़ पर चढ़ा और वहाँ चढ़कर उसने गोल पत्थर भी निकाल लिया। आकी बहुत हँसना चाह रहा था लेकिन उसका जो आचार्य है कहीं उसको पता न चल जाये यह सोचकर उसने अपने मन पर काबू पाकर रखा।

पेड़ पर बैठे आचार्य ने पूछा–"अरे! क्या तुम मुझे अभी भी देख सकते हो" और आकी को कुछ समझ में नहीं आया कि वह क्या जवाब दे, लेकिन उसने सोचते हुए कहा आपके शरीर का जो ऊपर का हिस्सा है, उतना हिस्सा नहीं दिखायी दे रहा, हाँ, आपका जो निचला हिस्सा है केवल वही दिखायी दे रहा है।

आकी की बात को सुनकर आचार्य ने अपने पाँव को पलटकर देखने के लिये ऊपर वाली जो टहनी थी उसको छोड़ दिया और वह पेड़ से नीचे गिर गया और उसकी टाँग टूट गयी। उस दिन से लेकर शरीर के जो अंग थे वह सब ठीक–ठाक थे, केवल पाँव टूटा था और वह पाँव टूटे हुए एक लंगड़े हकीम की हैसियत से मशहूर था।

तभी से लेकर शिष्य आकी ने जब भी उनसे यह कहा कि अपने शरीर को अदृश्य करने वाले हकीम साहब, जब भी वह ऐसा कहता था तो हकीम साहब को खुशी न होकर बहुत ही क्रोध आ जाया करता था। वह क्रोध में अपने शिष्य को यूँ देखता था जैसे वास्तव में उसे कच्चा ही खा जायेगा।

दो पक्षी

बहुत पहले की बात है। एक बहुत घना जंगल था, और उस घने जंगल में दो पक्षी थे। एक पक्षी का नाम ति टौउ डै. (कठफोड़ा) था और दूसरे का नाम झोः (फाक्ता) था।

झोः नाम के पक्षी में साधारण पंख थे और वह दूर तक के सफर को बड़ी तेज़ी के साथ बिना रुके उड़कर जा सकता था, बहुत ही ऊँचे पेड़ों पर अपना घोंसला बना सकता था। इसलिये हमेशा ही वह लोगों के संकट से मुक्त रहा, सुरक्षित रहा। ति टौउ डै. नाम का जो पक्षी था, वह दूर सफर तक लगातार एक ही बार उड़कर नहीं जा सकता था, बहुत ढीला था और बार–बार लोगों के संकट में फँस जाता था और बार–बार लोग उसे नष्ट करने की कोशिश भी किया करते थे।

एक दिन कठफोड़ा पक्षी महाराज इन्द्र के पास गया और उनके सामने उपस्थित होकर प्रार्थना की। वह बोला–"देवताओं के महाराज मैं आपकी सेवा में हाजिर हुआ हूँ। भगवन मुझे मानव लोक में रहते हुए बहुत ही संकटों का सामना करना पड़ता है, बहुत सी तकलीफों का मुकाबला करना पड़ता है और मेरे लिये वहाँ संकट ही संकट हैं, मेरे लिये ही क्यों भगवन मेरे जो परिवार के लोग हैं, यह जो मेरे बच्चे हैं उन सब पर मानव लोग निर्दयता करते हैं, उन सबको उनकी निर्दयता भुगतनी पड़ती है। इसलिए भगवन यह जन्म तो मैं किसी भी तरह कष्ट सह कर निपटा लूँगा, लेकिन इस जन्म के बाद जो अगला जन्म मुझे आप देंगे। भले कोई जन्म भी हो, ऐसा कुछ प्रबंध कीजिए जिससे संसार में जितने भी संकट हैं, खतरे हैं, मैं उन सबसे लड़ सकूँ और बच सकूँ और मानव जाति जिन पेड़ों का प्रयोग करती है, उन्हें अपने इस्तेमाल में लाती है, मैं उन पेड़ों का रखवाला बन सकूँ। रखवाला का अभिप्राय यह है कि उन वृक्षों को जो कीड़े–मकोड़े नुकसान या हानि पहुँचाते हैं मैं वैसे कीड़े–मकोड़ों को खा सकूँ। इस तरह मैं एक तो लोगों के संकट से बच पाऊँगा और लोगों के काम में आने वाले पेड़ों को वृक्षों को सुरक्षित रख सकूँगा, तो लोगों का प्यार भी मुझे मिल पायेगा, इन बातों के लिये जो मेरी जरूरी आवश्यकता है वह यह है कि मुझे आप एक फौलादी चोंच दें जिससे मैं यह कार्य ठीक से कर पाऊँ"।



कठफोड़ा पक्षी अपनी उम्र अपनी आयु पूरी करने के बाद जब उसकी मृत्यु हुई तो उसने जो प्रार्थना इन्द्र महाराज के सामने की थी, वो प्रार्थना उसकी पूरी हुई और दूसरे जन्म में वह मानव जाति के लिए लाभ पहुँचाने वाले पक्षी के रूप में आया।

फाक्ता पक्षी ने जब यह सुना कि कठफोड़ा पक्षी ने जो महाराज इन्द्र से प्रार्थना की थी वो पूरी हुई, तो वह भी महाराज इन्द्र के पास गया और उनके सामने प्रकट हुआ और बोला–"महाराज आपकी कृपा से मेरे ऐसे पंख हैं जो बहुत मज़बूत हैं और कितनी भी दूरी हो उसे मैं आसानी से ऊँची उड़ान भरकर पूरी कर सकता हूँ। इतना ही नहीं, आपने मुझे ऐसे गुण दिये हैं कि भले ही कितना भी ऊँचा वृक्ष हो उस पर मैं अपना घोंसला बना सकता हूँ और अपने आपको सुरक्षित रख सकता हूँ, मेरे जीवन में महाराज सुख–शान्ति और अमन–चैन है इसलिये मैं कोई विशेष आनन्द महसूस नहीं कर रहा। मैं यह चाहता हूँ कि अपने आपको सबसे विद्वान और समझदार समझने वाला मानव जो है उसको किसी तरह मैं तंग कर सकूँ, मैं मानव के लिए एक प्रकार का संकट, खतरा बनना चाहता हूँ ताकि मानव के मन में मेरे प्रति कुछ बैर हो। महाराज जब मैं अपनी इस जनम की आयु पूरी कर लूँगा और जब भी मुझे दूसरा जनम मिले, हर जनम में मुझमें कोई ऐसी शक्ति देना कि यह जो फसल मानव लगाते हैं, फसलें जो मानव पैदा करते हैं इन फसलों को मैं अपनी मर्जी से जितना चाहूँ नष्ट कर सकूँ और इतना ही नहीं जो मानव मेरी ओर आँख उठाकर देखे मैं उसकी आँखों को निकाल कर खा सकूँ, इसके लिये आप मुझे ऐसी लोहे के समान मज़बूत चोंच दें, एक फौलादी चोंच आप मुझे दीजिए।" फाक्ता ने इन्द्र महाराज से प्रार्थना की थी।

फाक्ता पक्षी की प्रार्थना को सुनकर इन्द्र महाराज ने सोचा–"यह पक्षी बहुत ही मूर्ख है, अगर इस पक्षी को फौलादी चोंच दे दी गयी तो यह सारी मानव जाति को तंग करेगा और इतना ही नहीं यदि यह लोगों को तंग करेगा तो लोगों में धरम–करम भी कम हो जायेगा।" ऐसा सोचकर महाराज इन्द्र ने फाक्ता पक्षी को उसकी माँग के अनुसार चोंच माँगने पर मोम की तरह कोमल चोंच दे डाली इसलिये मोम की तरह कोमल चोंच पाने वाले फाक्ता पक्षी को दोपहरी में जब बहुत गर्मी होती है ऐसे समय में वह कुछ भी नहीं खा सकता और पेड़ के ऊपर चढ़कर उसको समय गुजारना पड़ता है, तो उसे और कुछ सूझता नहीं जो उसकी जुबान है वह उससे आदत अनुसार कुँ–कुँ–कुँ–गुँ–गुँ–गी ही चिल्लाता रहता है।

कठफोड़ा पक्षी एक अच्छा चरित्रवान पक्षी था, वह मानव जाति पर स्नेह रखता था। उसके लाभ की उसे चिन्ता थी इसलिये महाराज इन्द्र ने उसे फौलादी

चोंच दी और उस फौलादी चोंच के आधार पर वह आज भी लोगों की सेवा कर रहा है और लोगों का सहयोग कर रहा है, लोगों की सहायता कर रहा है और लोग कठफोड़ा पक्षी को याद करते हैं, चाहते हैं।

एक दूसरा जो फाक्ता पक्षी है लोगों की फसलों को नष्ट करने वाला होने की वजह से लोग उससे घृणा करते हैं, नफरत करते हैं। आज तक भी यह फाक्ता पक्षी लोगों के संकट से नहीं बच पाते, लोग जहाँ भी फाक्ता पक्षी को देखते हैं कष्ट पहुँचाना चाहते हैं। और इतना ही नहीं फाक्ता पक्षी को मार डालना भी चाहते हैं।

ताजिन् के फूल

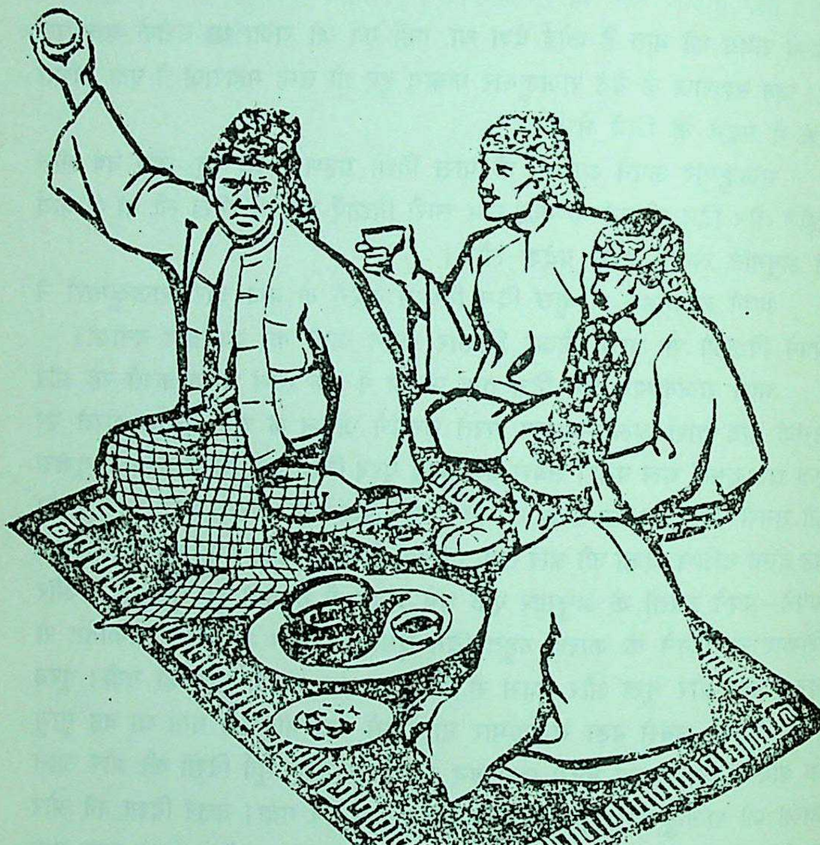
किसी समय की बात है कोई देश था, वहाँ का जो राजा था उसके चार पुत्र थे। जब महाराज के बेटे राजकुमार जवान हुए तो उन्हें महाराज ने एक उचित देश में पढ़ने के लिये भेजा।

राजकुमार अपने आचार्य के पास विद्या ग्रहण करते रहे, तीन वर्ष तीन महीने तीन दिन सीखने के बाद जब सारी विद्याएँ उन्होंने सीख लीं तो आचार्य से अनुमति लेकर अपने प्रदेश लौटे।

अपने राजमहल में कुछ दिन विश्राम करने के बाद चारों राजकुमारों ने अपने पिताश्री से आज्ञा लेकर शिकार करने जाने का कार्यक्रम बनाया।

चारों राजकुमार तीन दिन तक जंगल में एक साथ भ्रमण करते रहे और उसके बाद चारों अलग–अलग रास्ते उन्होंने जंगल के चुने, प्रत्येक रास्ते पर एक राजकुमार चल पड़ा। सबसे बड़ा भाई पूरब दिशा वाले रास्ते में गया, दूसरा जो उनसे छोटा था वह उत्तर की दिशा की ओर गया, तीसरा और सबसे छोटा वह दोनों दक्षिण दिशा की ओर तथा पश्चिम दिशा की ओर गये। चारों राजकुमार अपने–अपने रास्तों के अनुसार एक घने जंगल में भटकते हुए घूम रहे थे और शिकार न मिलने के कारण बहुत दिन घूमते रहे और आखिर में थकावट से चूर होकर और भूख और प्यास से तड़पकर उन सबकी मृत्यु हो गयी। पूरब दिशा में जो सबसे बड़ा राजकुमार या सबसे बड़ा भाई जो गया था वह मृत्यु के बाद लाल रंग का हृदय फूल बन गया और उत्तर पूर्व दिशा की ओर जाने वाला जो राजकुमार था, वह काला हृदय फूल बन गया। उत्तर दिशा की ओर जाने वाले राजकुमारों में जो तीसरा राजकुमार था, वह पीला हृदय फूल बना और सबसे छोटा राजकुमार जो था वह सफेद हृदय फूल बना।

यही कारण है कि आज भी बर्मा में जैसे ऐलाइ इत्यादि जो जातियाँ हैं इनके इलाके में काला हृदय फूल है माना जाता है। और जो पूरब की ओर के इलाके हैं जहाँ याँगना और उच्चै नागा जातियाँ रहती हैं, इन इलाकों में लाल हृदय और उत्तरी सान प्रदेश है इसमें पीले रंग का हृदय फूल और सफेद हृदय इत्यादि हैं ऐसा माना जाता है और कहा भी जाता है।



पहले ज़माने के जो लोग थे वह यह सोचते थे कि यह चार रंग के जो फूल हैं, इन फूलों को एक साथ रख पाने वाला व्यक्ति अगर कोई है तो उसके लिए यह चारों फूल जो एक साथ रखे गये हैं, वह उस रत्न की भाँति बहुमूल्य होगा, जिससे इंसान की हर इच्छा पूरी हो सकती है ऐसी मान्यता है, कोई फूलों का शौक रखने वाला व्यक्ति इन चारों किस्म के फूलों को, चारों रंग के फूलों के पौधों को मिलाकर एक नया फूल तैयार कर सके, जिसमें कि यह चारों रंग हों तो वह फूल उतना ही कीमती होगा जितना कि एक इच्छा पूर्ति करने वाला श्री रत्न होता है। ऐसी मान्यता बर्मा में आज भी पायी जाती है।

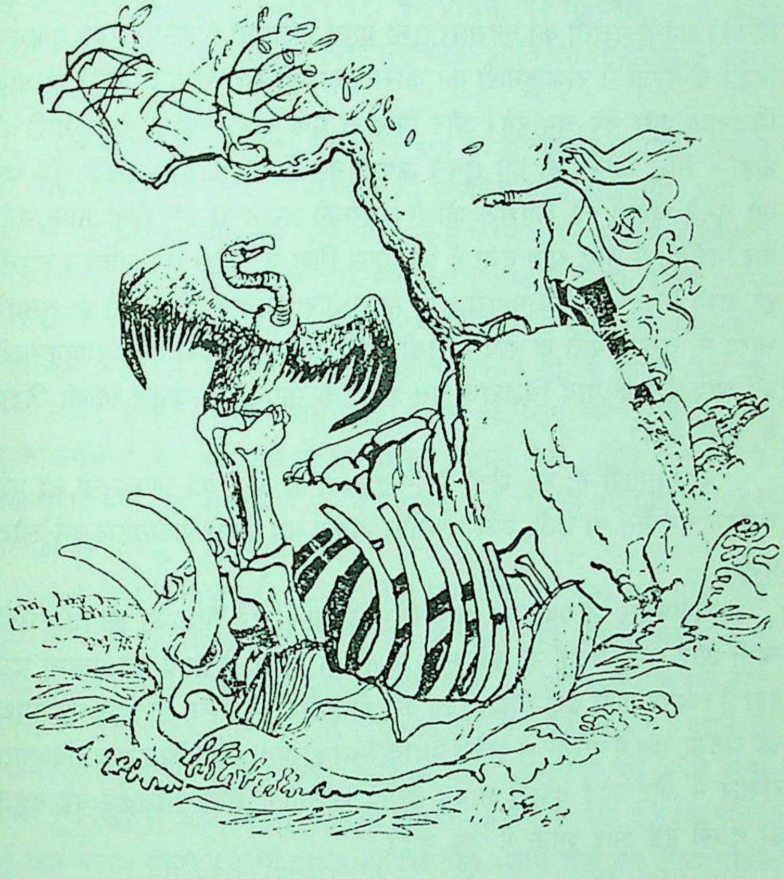
अपमान

पुराने ज़माने में कीत नाम के देश में याचा नाम का एक राजा था। उसके यहाँ एक बहुत ही सुन्दर बेटी ने जन्म लिया।

उस बेटी का नाम मैं: डौ: कैतौ रखा गया। बेटी के जवान होने पर महाराज ने उसके लिए एक शानदार महल बनवाया और बेटी उसमें रहने लगी। एक दिन राजकुमारी ने महाराज पिताश्री से आज्ञा माँगी कि वह अपने देश में घूमफिरकर देखना चाहती है, पर पिता ने बेटी को अनुमति नहीं दी। बेटी देश भ्रमण के लिए बार–बार आग्रह करती रही। आखिरकार पिता ने आज्ञा प्रदान कर दी। राजकुमारी मैं: डौ: कैतौ अपनी बहुत सी राजदासियों के साथ देश भ्रमण पर निकली और एक सुन्दर समुद्री तट पर पहुँची। समुद्र तट पर चल रही हवा के कारण लहरें उठ रही थीं और समुद्र के ऊपर आसमान में देखते–देखते बादल चढ़ आए थे। मौसम के सुहावनेपन को देखकर राजकुमारी का मन जल क्रीड़ा का हुआ। उसने वहाँ जल क्रीड़ा करने की तथा केश धोने की तैयारी की।

तभी नदी में बहते आ रहे एक मरे हाथी को राजकुमारी ने देखा। उस मृत हाथी पर एक गिद्ध बैठा हुआ था, जो हाथी के माँस को खाता चला आ रहा था। राजकुमारी जहाँ खड़ी थी, ठीक उसके पास से मरा हुआ हाथी बहता हुआ निकला, जिसे देखकर राजकुमारी को बड़ी नफरत हुई और उसने वहाँ केश धोने का अपना कार्यक्रम रद्द का दिया।

उसके बाद राजकुमारी मैं: डौ: कैतौ ने गिद्ध के लाल सिर को देखकर उपहास करते हुए कहा–"इस संसार में नीच जानवर, जिसमें गिद्ध प्रमुख हैं, इनका भोजन इतना गंदा होता है कि देखना भी उचित नहीं लगता। जो भोजन प्रकृति के विरुद्ध होता है और पूर्ण रूप से नफरत करने लायक होता है उसे ये करते हैं। मेरी जैसी राजकुमारी के लिए ऐसे भद्दे दृश्य को देखना भी बड़ा ही अभागा है, बड़ा ही घृणा से भरा है।" यह कहकर राजकुमारी



ने नफरत से एक ओर गला साफ करते हुए थूका।

मृत हाथी पर सवार होकर आ रहे गिद्ध ने जब यह दृश्य देखा तो उसने राजकुमारी से कहा—"राजकुमारी मैं गिद्ध जाति का हूँ। हमारी जाति क़िसी भी जीव की जान नहीं लेती। ना ही कोई किसी पर अन्याय कर पाने की कोशिश करते हैं। हम बिल्कुल पवित्र चीजें ही प्रयोग में लाते हैं। यह होने पर भी हमें नीच कहना, हमें नीच समझना कहाँ तक उचित है। मैं कई शक्तियों से संपूर्ण गिद्धों का राजा हूँ। मेरा अपमान करके तुमने अच्छा नहीं किया। अपनी गलती का एहसास तुम्हें बहुत जल्द हो जाएगा।" यह कहकर गिद्धों के राजा ने राजकुमारी को कोसा। अपनी बात समाप्त करने के बाद गिद्धराज कुछ देर चुप रहे। और फिर से एक बार उन्होंने राजकुमारी से कहा—"गिद्ध जाति को जो तुमने अपमानित किया है और उनके मुँह पर जो तुमने थूकने की कोशिश की है। उसकी वजह से हम तुम्हें माफ नहीं कर पायेंगे। मैं तुम्हें श्राप देता हूँ कि जिस गिद्ध जाति से तुम नफरत करती हो, उसी गिद्ध जाति के महाराज से ही तुम्हारा सम्बन्ध होगा। वो ही तुम्हारे भाग्य में, तुम्हारे पति के रूप में तुम्हें हासिल होगा।" इस तरह राजकुमारी को श्राप देने के बाद गिद्धराज मृत हाथी के ऊपर से उड़कर किसी दिशा में चला गया।

राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ ने गिद्ध राज के श्राप को जब सुना तो वह एकदम भयभीत हो उठी, और भयभीत होकर वह अपने राजमहल को लौट पड़ी।

राजमहल पहुँचकर राजकुमारी ने सोचा—"मैंने पिताजी की बात नहीं मानी और उसी वजह से अब मुझे गिद्धों के राजा के श्राप को सहना पड़ रहा है। अगर कहीं उस गिद्ध राजा का श्राप ठीक निकला, तो फिर मेरे साथ जो घटेगा, तब मैं संसार में सबसे बदकिस्मत होऊँगी। मेरे जितना बदकिस्मत संसार में और कोई दूसरा शायद ही हो सकेगा।" ऐसा सोचकर वह बहुत ही दुःखी हुई और शोक में डूब गई।

एक दिन गिद्धराज अपने आपको एक रूपवान राजकुमार के रूप में बदलकर बहुमूल्य उपहारों के साथ राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ के पिता के पास पहुँचा। और राजकुमारी का हाथ विवाह में माँगा।

उस समय राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ को गिद्धराज का श्राप लग ही चुका था लेकिन उसके पिता को यह नहीं पता था। उसके पिता राजकुमार के

रूप में आए गिद्धराज के प्रस्ताव को अस्वीकार नहीं करना चाहते थे। राजकुमार को देखकर उनके मन में लगा कि यह बात उपयुक्त है। और उन्होंने अपनी बेटी राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ का राजकुमार के रूप में आये गिद्धराज के साथ खुशी–खुशी विवाह कर दिया।

तभी राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ ने महाराज को बार–बार विवाह न करने की बात कही, क्योंकि राजकुमारी को गिद्धराज के श्राप की बात याद आ गई थी पर महाराज नहीं माने। बेटी की प्रार्थना पर महाराज ने भी कोई ध्यान नहीं दिया और उन्होंने जबरदस्ती बेटी का विवाह गिद्धराज के साथ कर दिया।

राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ पिता की बात को अस्वीकार नहीं कर सकती थी, पिता से विद्रोह नहीं कर सकती थी इसलिए जहाँ राजकुमार उसे ले गया वो उसके साथ वहाँ गई। लेकिन जाने से पहले अपने आने वाले संकटों से बचने के लिए, अपने साथ कुछ सशस्त्र सुरक्षाकर्मी ले जाने की उसने बात सोची और पिताश्री महाराज से अनुरोध किया कि एक अनजान जगह, जहाँ मुझे भेज रहे हैं, वहाँ मेरी जान को खतरा न हो, मैं अपनी जान तो बचा सकूँ। इसलिए मेरी जान बचा सकने के लिए मेरे साथ सशस्त्र सुरक्षाकर्मचारी गण के कम से कम सात जहाज भेजे जाएँ। महाराज ने राजकुमारी की यह बात मान ली और अपने यहाँ से कई सैनिकों को सात जहाजों में उनके साथ भेज दिया।

इस तरह राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ गिद्धराज के साथ चल पड़ी और कुछ दिनों में ही वह गिद्धराज के देश में पहुँच गई। तभी गिद्धराज ने कहा–"प्रिये, अभी आप हमारे देश में पहुँच चुकी हैं। आप कृपया करके कुछ समय के लिए, कुछ क्षण के लिए इसी किनारे पर प्रतीक्षा करें। पहले मैं राजमहल जाता हूँ। उचित दास–दासियों और दरबारियों को अपने साथ लाता हूँ। फिर मैं यहाँ आकर आपका स्वागत करूँगा।" यह कहकर मानव का रूप धारण किये हुए गिद्धराज वापिस फिर अपने देश को लौट गया। कुछ देर बाद लाल सिर वाला गिद्धराज असंख्य गिद्धों के साथ, असंख्य दास–दासियों, नौकर–चाकरों और राजकुमारी को मारने के लिए आकाश के मार्ग से उड़ते हुए आये। तब हमेशा सावधान रहने वाली राजकुमारी ने जब देखा कि हम पर हमला बोलने ये गिद्ध आ रहे हैं तो उसने अपने सुरक्षाकर्मियों को उन गिद्धों पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी।

राजकुमारी के सुरक्षाकर्मियों ने जितने भी गिद्ध आए, उन सबका धनुष–बाणों से मुकाबला किया। उस युद्ध में कई गिद्ध मारे गये। उस लड़ाई में बहुत से गिद्ध मारे गये। मृत गिद्ध नदी के पानी की सतह के ऊपर दूर–दूर तक मृत पड़े हुए दिखाई देने लगे। लेकिन भले ही कितने मरे हों, गिद्धों की फौज एक के बाद एक आती जाती थी और वे लड़ते जाते थे। और असंख्य गिद्धों को राजकुमारी के सुरक्षाकर्मियों ने मार डाला। फिर भी उनका मुकाबला न कर पाए और अंत में गिद्धों की चोंचें अपने शरीर में तेज गति से लगते रहने के कारण उनको अपनी जानें गवानी पड़ीं। गिद्धों ने उन पर भयंकर हमला बोल दिया था और चोंचें मार–मारकर वे उन्हें खा गए।

इस तरह राजकुमारी के सारे सुरक्षाकर्मचारी गिद्धों के हाथों सारे के सारे मारे गये। एक भी व्यक्ति नहीं बच पाया। वह सब उनके भोजन बन गए। इधर जबकि यह युद्ध चल रहा था तो राजकुमारी जहाज के एक चोटी के खम्भे में छुपी हुई थी और इस तरह वो बच गई थी। राजकुमारी मैंः डौंः कैतौ जब गिद्ध वापस लौट गए, तो जहाज के उस ऊँचे खम्भे से नीचे उतरी और अपने साथ घटित हुई घटना को एक पत्र में लिखकर अपने महाराज पिता के पास भेजा और आकर बचाने की प्रार्थना की। उस पत्र को एक डब्बे में बन्द करके उसने समुद्र में बहा दिया। तभी एक राजकुमार व्यापार करते हुए, अपने जहाजों के साथ उस ओर आया और समुद्र में राजकुमारी मैंः डौंः कैतौ द्वारा बहाया हुआ डिब्बा, जिसमें चिट्ठी थी, उसे मिला। राजकुमार ने डिब्बे में से चिट्ठी निकाली और पढ़कर देखा। उसे मालूम हुआ कि राजकुमारी कितने संकट में है तब उसने फैसला किया कि मैं राजकुमारी को बचाने जाऊँगा। वो उसे बचाने चल पड़ा। राजकुमार ने अपने धनुष–बाण तथा हथियारों को तैयार किया और चिट्ठी में जो निर्देश दिए गए थे, उसी रास्ते से राजकुमारी के पास अपने जहाजों और साथियों के साथ चल पड़ा।

कुछ ही दिनों में राजकुमारी मैंः डौंः कैतौ, जिस किनारे पर थी, राजकुमार वहाँ पहुँचा और उसने राजकुमारी के पत्र में जो निर्देश दिए थे, उसके अनुसार छुपी हुई राजकुमारी को खोज लिया।

राजकुमारी ने समझा कि उसे बचाने जो राजकुमार आया है, वह गिद्धों का राजा है। उसने प्रार्थना की कि उसकी जान बख्श दी जाये। राजकुमार ने बताया कि मैं तुम्हारा दुश्मन गिद्धराज नहीं हूँ। मैं तो अन्य देश का राजकुमार हूँ। राजकुमारी द्वारा बहाये हुए पत्र को पाकर उसके बचाव के

लिए, उसको बचाने के लिए यहाँ आया हूँ। जब राजकुमारी ने यह बात सुनी तो वह बोली—"राजकुमार जी, अगर यह बात सही है तो हमें भयानक गिद्धों के देश में रहना नहीं चाहिए। हो सके तो इसी क्षण से कूच कर देना चाहिए। यहाँ इस प्रदेश को छोड़कर निकल जाना चाहिए।"

राजकुमार ने कहा—"राजकुमारी जी, आप चिन्ता न करें। मैं पूरी तैयारी के साथ यहाँ आया हूँ। मेरे पास में एक ऐसा धनुष–बाण है, जिसके फलस्वरूप हम दुश्मन को नष्ट कर सकते हैं। हम गिद्धराज को मार कर आपको छुड़ा सकते हैं। हम कुछ देर में दुश्मन गिद्धराज को नष्ट करके दिखाऐंगे।" यह कहकर राजकुमार ने राजकुमारी को सांत्वना दी। राजकुमारी ने जब यह बात सुनी तो वह बोली—"राजकुमार जी, यदि यही बात है, तो मेरी वजह से बेमतलब यह जो लोग मारे गये, मेरे साथी मारे गये हैं। सुरक्षाकर्मचारी मारे गये हैं, इन लोगों की जो हड्डियाँ हैं, इन सबको इकट्ठी करके इनका मैं अन्तिम संस्कार भी करना चाहती हूँ।" राजकुमार ने, जो लोग मारे गये थे, सुरक्षाकर्मियों की हड्डियों को अपने साथियों के साथ इकट्ठा किया और इन सबको उन्होंने अग्नि देकर अन्तिम संस्कार किया। गिद्धराज ने जब यह देखा कि तट पर आग लगी है और धुआँ निकल रहा है तो यह जानने के लिए वह बन्दरगाह की ओर आये कि यह माजरा क्या है।

राजकुमारी ने जब बंदरगाह में आये दुश्मन गिद्धराज को देखा तो वह बहुत ज्यादा डर गई और उसने चीखकर राजकुमार को सूचित किया।

तभी राजकुमार ने अपने साथ तैयार लाए हुए धनुष–बाण से गिद्धराज पर वार किया। गिद्धराज उस बन्दरगाह में, वहीं मरकर ढेर हो गया।

जब इस दृश्य को राजकुमारी मैः डौः कैतौ ने देखा तो उसको बहुत राहत मिली, पर जो दुश्मन था, गिद्धराज, उससे उनको बहुत ही नफरत थी। उससे बहुत ही पीड़ा हुई थी। इसलिए वह अपने क्रोध को दबा ना सकी और धनुष–बाण से घायल हुए जान निकलने वाले गिद्धराज के पास आकर उसे लात मारकर पानी में गिराने की बात सोचने लगी, लेकिन राजकुमार ने उन्हें ऐसा करने से उसी क्षण रोक दिंया।

उस क्षण मरने जैसा हो रहे गिद्धराज ने जब राजकुमारी को देखा तो बोला—"मैं इस जन्म में राजकुमारी को नहीं जीत सकता, लेकिन मैं आने वाले सारे जन्मों में उसे जीत सकूँ, यह मैं प्रार्थना करता हूँ। मैं आने वाले सारे के सारे जन्मों में राजकुमारी को सदा दुःख दे पाऊँ।" उसने यह प्रार्थना

की और वह मर गया।

उस समय से लेकर राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ गिद्धराज के संकट से मुक्त हो गई। गिद्धराज के संकट से छुड़ाने वाले राजकुमार का उपकार मानकर उसने उन्हें कबूल कर लिया।

राजकुमार भी, जब से उसने राजकुमारी का पत्र पढ़ा था, तभी से राजकुमारी से उसे सहानुभूति और प्यार हो गया था। यह पुराने जन्म के कर्मों का प्रभाव ही था कि राजकुमारी पर उसने दया की, उसे प्यार किया और उसे अपना जीवन साथी बनाया।

इसके बाद राजकुमार अपने व्यापार के सिलसिले में जो उनकी यात्रा पहले से तय थी, उसके अनुसार आगे बढ़ा और बाकी की यात्रा उन्होंने अपनी रानी के साथ खुशी–खुशी पूरी की। इस तरह दोनों राजकुमारों और राजकुमारी काफी महीनों तक घूम–घूमकर व्यापार करते रहे। इस दौरान उनके यहाँ एक बेटा और एक बेटी हुई।

दो बच्चों को जन्म देने के बाद राजकुमार के व्यापार की यात्रा, जो तय की हुई थी, वो अब पूरी हो चुकी थी और अब राजकुमार अपने देश को लौटने के लिए अपने जहाज को स्वदेश की ओर मोड़ चुका था।

इसी बीच क्या हुआ कि राजकुमार के हाथ मारे गए गिद्धराज अपनी अन्तिम प्रार्थना की पूर्ति के लिए जलरक्षक के रूप में, एक दैत्य बन गया था। राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ के लिए राजकुमार के हाथ से जो गिद्धराज मारा गया था वो अब अपनी अन्तिम प्रार्थना पूरी होने के प्रभाव से ही वहाँ जल के रखवाले के रूप में पहुँच चुका था और राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ को तंग करने के अवसर की खोज में सदा रहता था। इस समय भी वो ऐसे अवसर की तलाश में था, ताकि राजकुमारी को खूब तंग किया जा सके।

एक दिन वह दुश्मन गिद्धराज जो जलरक्षक दैत्य के रूप में बदल चुका था, राजकुमार के जहाज के नजदीक आकर अपने–आपको एक बहुत बड़े कमल के फूल की शक्ल देकर, राजकुमार और राजकुमारी की आँखों के सामने, उनकी नज़र में अपने आपको ले आया।

राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ की बेटी ने जब कमल के फूल को देखा तो उसी विशाल कमल के फूल को लाकर देने की जिद्द करने लगी। माँ मैं: डौं: कैतौ ने उस कमल के फूल को जहाज पर से ही हाथ बढ़ाकर तोड़ने की कोशिश की और जैसे ही उसने यह कोशिश की तो वह जल का रक्षक

दैत्य अचानक प्रकट हुआ और उसने अपनी शक्ति द्वारा एक तूफान, एक आँधी का निर्माण किया और उस आँधी और तूफान में उसने मैं: डौं: कैतौ को जहाज के नीचे खींच गिराया। फिर अपनी शक्ति से मैं: डौं: कैतौ को बन्दरी बना दिया और उस बन्दरी को समुद्र के किनारे, जंगल में छोड़ दिया। फिर उसी समय जलरक्षक दैत्य ने राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ का रूप धारण कर लिया और स्वयं राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ की जगह जाकर रहने लगा। सारा कार्यक्रम उसने बड़ी खूबी से किया, जिससे लोगों को कुछ शंका नहीं हुई और ना ही कुछ पता चला।

(यह घटना पूरा अँधेरा छाये हुए काल में या आँधी चल रहे समय में बड़ी खूबी के साथ हुई थी। इसलिए इस सारी घटना के बारे में या सम्बन्ध में किसी को कुछ मालूम नहीं हो पाया।)

इसके बाद गिद्ध के जीवन से जलरक्षक के जीवन में बदल जाने वाले दैत्य ने मैं: डौं: कैतौ के रूप में राजकुमार के पास ही बैठकर शिशु को स्तनपान कराने का नाटक किया। शिशु राजकुमार अपनी माता के स्तनपान से डर के अलग हो जाने के कारण, स्तनपान किए बिना रोता रहा। राजकुमार ने जब वो घटना देखी तो शक हुआ कि कहीं कोई मायावी राजकुमारी के रूप में नहीं आ गया हो।

राजकुमार अपनी यात्रा के कार्यक्रम के अनुसार ही वापिस लौटा और बहुत जल्दी अपने पिताश्री के देश के बन्दरगाह में पहुँचा। लेकिन तब भी उसको मैं: डौं: कैतौ के व्यक्तित्व के बारे में कुछ शक था। इसलिए राजधानी में प्रवेश न करके बन्दरगाह में एक विशाल तम्बू लगाकर वहीं जहाज का डेरा डलवा दिया।

तभी बन्दरी के रूप में या मादा बन्दर के रूप में बदल जाने वाली मैं: डौं: कैतौ में अचानक मानव प्रवृत्ति फिर से जाग उठी और वो अपने पति और बच्चों को याद करके रोती हुई राजकुमार के देश की ओर अंदाजे से चली आयी। वो किनारे–किनारे से चली आ रही थी। आकर वह उस स्थान के नज़दीक पहुँची जहाँ राजकुमार ने अपना तम्बू लगा रखा था।

इसके बाद मैं: डौं: कैतौ के जीवन से मादा बन्दर के जीवन में पहुँच जाने वाली राजकुमारी ने जब अपने पति और बच्चों को देखा तो अपने–आप पर काबू न पा सकी, और जबरदस्ती जब वो राजकुमार के तम्बू में जा रही थी, तब उसे ध्यान आया कि उसके जीवन में और राजकुमार के जीवन में

अब अन्तर आ गया है। इसलिए उसने तत्काल राजकुमार के तम्बू में जाने का विचार त्याग दिया और वहीं पास में किनारे पर बैठकर रोने लगी।

तभी उस मादा बन्दरी ने, जो कि रो रही थी, रोते–रोते अपने पति राजकुमार को सुनाने के लिए एक बड़ा दर्दनाक संदेशा, एक गीत के रूप में गाकर सुनाया, जिसके भावार्थ इस तरह से थे–"महा उपकारी प्राणनाथ, बिगड़ी हुई किस्मत या दुर्भाग्य से मैं एक बन्दर की योनि में हूँ। मैं आपकी पत्नी एक दूसरी योनि में हूँ। इसलिए मुझे अब संसार में रहने का कोई हक नहीं है। अब मैं उस वन की ओर बढ़ रही हूँ। उस जंगल की ओर जा रही हूँ, जहाँ शेरों का राज्य है। पतिदेव, आपसे अनुरोध है, मेरे पीछे मेरे दोनों बच्चों का अच्छी तरह ख्याल रखना। (जंगल में खुशी–खुशी यहाँ–वहाँ प्रसन्नता में डूबी आवाजें सुनीं और उसी तरह ऐसे जीवों की आवाजें भी सुनीं जो उदास हैं, दुःखी हैं और जिनका मन दुःख में फट रहा है।) आप मेरे जीवन का ध्यान रखें और ईश्वर से मेरे लिए प्रार्थना करें, कि मैं फिर अच्छी योनि को पा सकूँ। अच्छे जीवन को पा सकूँ। पतिदेव आपसे अनुरोध है कि आप बौद्धधर्म के अनुसार जो तीन रत्न हैं भगवान, धर्म और संघ इन तीनों को न भूलें।" इस तरह बड़े ही दर्दनाक स्वर में मादा बन्दरी रो रही थी।

(इस रोती हुई आवाज़ को ध्यान में रखकर, लंगूर जाति के वानर भी वेदनापूर्ण, शोक और दुःख में डूबी हुई आवाज़ों को हर रोज निकाला करते थे। ऐसा पहले के पुराने करीन माना करते हैं। यह सुनने में आय़ा है।)

राजकुमार ने दर्द और वेदना में डूबे हुए मादा बन्दरी के स्वर को जब सुना तो उन्हें बड़ा दुःख हुआ। फिर मादा बन्दरी की सच्चाई को जानने के लिए, राजकुमार ने अपने बेटे और बेटी को अपने पास ऐसे स्थान पर जहाँ कोई अन्य आदमी या अन्य कुछ भी दूर–दूर तक नज़र नहीं आ रहा था, रखा और खुद छुपकर सारा दृश्य देखने लगा।

मादा बन्दर जब सुनसान जगह पर पहुँची और सुनसान ज़गह में उसने अपनी बेटी और बेटे को देखा तो जल्दी–जल्दी आई और दूध के लिए रो रहे बेटे को दूध पिलाया। दूध पिलाने की बात देखकर बेटी रानी डर गई और जब वह रोने लगी तब मादा बन्दरिया ने कहा–"बेटी रोओ नहीं, मैं तुम लोगों की सगी माँ हूँ। मैं राजकुमारी मैंः डोंः कैतौ हूँ। दुश्मन की जादुई

शक्ति ने मुझे एक बन्दर के रूप में बदल दिया है। तुम लोगों के पास, तुम लोगों की माँ के रूप में, जो व्यक्ति है वही मेरा शत्रु है।'' तभी बेटी ने कहा—''अगर यही बात है तो आप पहले की तरह हमारे साथ रह पाओ, इसके लिये हमें क्या करना होगा ?'' तभी बन्दरी ने कहा—''हाँ बेटी, अगर तुम लोग चाहते हो कि मैं पहले की तरह तुम्हारी माँ बन जाऊँ। तब तुम लोगों को चाहिए की तुम लोग अपने पिता को कहिएगा कि मछलियाँ पकड़ने वाला एक जाल बिछायें और तुम और तुम्हारे भाई दोनों को उस जाल में डालकर रखें, तब मैं उस जाल के अन्दर आऊँगी। तेरे छोटे भइया को दूध पिलाऊँगी। तभी तुम्हारे पिताजी से कहना कि वह अपने सारे सुरक्षाकर्मियों को लेकर एक साथ आयें और मुझे किसी तरह पकड़ लें। उसके बाद में तुम्हारी माता के रूप में रहने वाली नकली मैं: डौं: कैतौ के, मेरी जान के प्यासे मेरे दुश्मन के, गले के खून से मुझको मल दोगे तब मैं फिर से अपने मानव रूप में आ सकती हूँ। और फिर से जो मेरा असली रूप है, राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ का, वह मुझे मिल सकता है।'' यह कहकर मादा बन्दरी आदमियों के आने से पहले जंगल में चली गई।

मादा बन्दरी के चले जाने के बाद राजकुमार बेटी के पास आये और बेटी से सारी बात पूछी। बेटी से सारी बात मालूम हो जाने के बाद जैसे बेटी ने कहा, उन्होंने एक जाल बिछाया, उस जाल में उन्होंने बेटे और बेटी को डाल दिया। इस तरह बेटे और बेटी को डालकर वह दूर से खड़े होकर छुपकर देखने लगे।

कुछ देर बाद मादा बन्दरी वहाँ फिर आई और जाल में घुसकर अपने शिशु को दूध पिलाने लगी। राजकुमार अपने सारे साथियों के साथ मिलकर जल्दी आया और मादा बन्दरी को उन्होंने पकड़ लिया।

इसके बाद राजकुमार ने मैं: डौं: कैतौ की शक्ल में बच्चों की माँ बने हुए जलरक्षक दैत्य को मार डाला और उसके गले के खून को लेकर पहले पकड़कर रखी हुई मादा बन्दरिया को मल दिया। जैसे ही दैत्य के खून को मादा बन्दरी के शरीर से मला, वो उसी क्षण अपने पहले के रूप में, यानि राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ के रूप में बदल गई।

राजकुमार अपनी जीवन साथी राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ और बेटे और बेटी के साथ फिर से खुशी—खुशी मिले और उसके बाद अपने पिताजी के देश में उन्होंने प्रवेश किया। वहाँ बहुत बड़ा उत्सव मनाया गया। उनकी

वापिसी का जश्न हुआ।

इस तरह राजकुमार और राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ इत्यादि राजमहल में अपने बच्चों के साथ खुशी–खुशी, युवराज की पदवी लेकर युवराज की महारानी के रूप में जीवन व्यतीत करने लगी।

एक दिन राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ ने अपने पति युवराज से कहा–"महाराज मैं चाहती हूँ कि मैं एक बार अपने पिताश्री के दर्शन कर सकूँ। यदि आप अनुमति दें तो मैं कुछ दिन के लिए अपने पिताश्री से मिलने जाना चाहती हूँ।" युवराज ने कहा–"अच्छी बात है। लेकिन अगर आप अपने पिताश्री से मिलने जाना चाहती हैं तो हम कुछ दिन के लिए वहाँ चलते हैं। लेकिन मैं आपको एक बात समझाना चाहता हूँ कि आपके पिताश्री ने आपको एक बार हमारे दुश्मन गिद्धराज के हाथ में बिना कारण सौंप दिया था और उसके बाद आपको जीवन–भर कितनी तकलीफें, कितने संकट उठाने पड़े हैं, यह सब वे जानते हैं। मैं यह चाहता हूँ कि आपके पिताश्री को अपनी करनी पर पछतावा हो। इसलिए हम लोग वहाँ युवराज और युवराजरानी के रूप में नहीं जायेंगे। हमारे साथ कोई नौकर–चाकर, दास–दासियाँ या कोई वैभव नहीं होगा। हम वहाँ साधारण गरीब लोगों की भाँति जायेंगे, जैसा कि एक गरीब परिवार के सदस्य अपने घर अपने परिवारजनों से मिलने जाया करते हैं। इस रूप में वहाँ हम जायेंगे और देखेंगे कि आपके पिताश्री पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है ?" युवराज ने अपने लोगों से कहा कि कुछ दिन के लिए वह यात्रा पर जायेंगे। और इसका प्रबन्ध किया जाये।

इसके बाद राजकुमार और राजकुमारी अपने बेटे–बेटी के साथ गरीब का रूप धारण करके अपने पिताश्री के देश की ओर पैदल रास्ते से चल पड़े।

तभी देवताओं के राजा इन्द्रदेव ने फैसला किया क्यों न इस राजकुमार और राजकुमारी के मन की इच्छा को, ठीक–ठाक भाँप लिया जाये और जाँच की जाए कि यह क्या चाहते हैं ? इसलिए उन्होंने उनके रास्ते में एक विशाल नदी का निर्माण किया और स्वयं एक नाविक के रूप में वहाँ, यात्रियों का इंतजार करने लगे, प्रतीक्षारत नाविक के रूप में इंतजार करने लगे।

राजकुमार का परिवार जब नदी के किनारे पहुँचा तो उन्होंने इच्छा जाहिर की, कि वह नदी के पार जाना चाहते हैं। यह बात उन्होंने एक नाविक

के रूप में वहाँ प्रतीक्षा कर रहे, देवताओं के महाराज इन्द्र महाराज से कही।

तभी नाव के नाविक ने कहा—"मैं तुम लोगों को वहाँ छोड़ देता हूँ। लेकिन मेरे परिवार में बच्चे नहीं हुए हैं। अगर आप मुझसे नदी पार करवाना चाहते हैं, तो नदी पार करवाने के किराये के रूप में आप अपने बेटे और बेटी को मुझे दे देंगे। अगर आप मेरी शर्त पूरी कर सकते हैं तो मैं आपको नदी के उस ओर छोड़ देता हूँ।"

यह बात सुनकर युवराज बोले—"अरे नाविक, संसार में ऐसे कौन—से माँ—बाप हैं, जो अपने प्राणों से प्यारे बच्चों को दूसरों को दे सकते हैं ? और किसी चीज की जरूरत हो तो बोलो और माँगों वो हम तुमको दे सकेंगे।"

तभी नाविक ने कहा—"मुझे और कोई वस्तु नहीं चाहिए, मुझे तो केवल यह बच्चे चाहिएँ। यदि तुम लोग दे सकते हो तो मैं अभी ही तुमको नदी पार कराये देता हूँ। और यदि नहीं दे सकते तो पार कराने की मुझे जरूरत नहीं है।" उसने शर्त लगायी।

राजकुमार को ऐसा लगा कि जिस ध्येय से वो यात्रा पर निकले हैं, उसको पूरा करने के लिए शायद उनको अपने बच्चे देने होंगे, और यही सोचकर वह जोर से रोने लगे। उन्हें बड़ा दुःख हुआ, तकलीफ हुई, शोक हुआ। राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ मात्र अपने माता—पिता को प्रणाम कर आशीर्वाद लेने की इच्छा से ही इच्छा के एवज में वह अपने बच्चों को नाविक को देने की बात पर फैसला करने में असमर्थ रही। तभी राजकुमार ने अपनी पत्नी से कहा—"प्रिये ! इस मामले में जो भी होता है, होने दो, हमारे जो बच्चे हैं अपने—अपने भाग्य के अनुसार जब तक उनका जीवन है, उस बचे हुए जीवन में फिर से हमारी भेंट शायद हो सकेगी। ऐसा मुझे लगता है। हम पति—पत्नी जो आपस में एक—दूसरे को बहुत चाहते हैं और जिनके लिए सच्चाई ही सब कुछ है, अपनी उस सच्चाई और प्यार के दम पर, अपने इरादों में अटल रहें। हम अपने त्याग को इस त्याग से और मजबूत करें। और इस जन्म में ही क्यों, आने वाले जन्मों में भी एक—दूसरे का साथ देने का मार्ग प्रदर्शित करें। इसके लिए हम अपने में त्याग पैदा करें और त्याग भावना से मार्ग को प्रशस्त रखें। अभी हम जवान हैं, यदि हमें सन्तान चाहिए तो हमें सन्तान की प्राप्ति फिर से भी हो सकती है। इसलिये यह नाविक, जिसके घर में बच्चे नहीं हैं, इसको उनके जीवन में सुख शान्ति और समृद्धि

लाने के लिए हम अपने जीवन के सुंदर पुष्पों को, हम अपने इन दो बच्चों को,नाविक को दान के रूप में दें।" यह कहकर राजकुमार और राजकुमारी ने अपने दोनों बच्चे नाविक को दान दे दिये।

तभी नाविक के रूप में भेष बदल रखे इन्द्रदेव ने उन दो बच्चों को ले लिया और उचित स्थान पर उनको रखकर राजकुमार और राजकुमारी को वह जहाँ जाना चाहते थे, वहाँ छोड़ दिया।

फिर अपने प्रताप से राजकुमारी के पिता के देश को जाने वाले रास्ते को छोटा कर दिया। उस रास्ते पर राजकुमार और राजकुमारी को जाने के लिए निर्देश दे दिया।

राजकुमार और राजकुमारी को जो निर्देश दिये गये थे, उसी के अनुसार वह यात्रा पर बढ़ते गए। वो अपनी यात्रा पर लगातार बढ़ते गये। रास्ते पर राजकुमारी मैः डौं: कैतौ को हरे–भरे वन और पहाड़ों के सुहावने दृश्य दिखाई देने लगे, और पीछे जो अपनी संतान को छोड़ आये थे वो उन्हें याद करके आँसू बहाती हुई, रोती हुई उनको याद करती हुई, अपने मुँह से उनके गुणगान करती हुई, वो अपनी यात्रा पर आगे बढ़ती रही।

इस तरह राजकुमार और राजकुमारी यात्रा करते रहे और कुछ दिनों बाद राजकुमारी अपने माता–पिता के देश की राजधानी के पास पहुँच गये। राजकुमार और राजकुमारी ने शहर के बाहर बहुत बड़ी हाथियों और घोड़ों की फौजें देखीं। उन्हें देखकर वह बहुत हैरान हुए। उन्हें जोर से लग रहे नारे भी सुनाई देने लगे। वे नारे स्पष्ट नहीं थे। वो सोच में पड़ गये कि उनकी कैसी राजधानी में कौन–सी या कौन–से मामले या कौन–से आवश्यक कार्य हो रहे हैं। इस सोच और हैरानी में वह आ गये थे। इसी समय भाले वाले घोड़े पर सवार योद्धा, दो–दो योद्धा राजकुमार के सामने पहुँच गये।

उसके बाद अग्रदूत और दो योद्धा श्रद्धापूर्वक राजकुमार और राजकुमारी के सामने गये और उन्हें प्रणाम करते हुए कहा—"मालिकों, आपके आगमन के बारे में हमारे नगरवासी अच्छी तरह जानते थे। इसीलिए पिताश्री खुद अपनी फौज और पूरे सम्मान के साथ आपके स्वागत के लिए फिर से हाजिर हैं। वे आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। कृपया आप आगे पधारें। जब आप पिताजी से भेंट करेंगे सारी जानकारी आपको प्राप्त हो जायेगी।"

राजकुमार और राजकुमारी बिल्कुल आश्चर्यचकित रह गये। उन दो अग्रदूत सैनिकों ने जैसे कहा, जब वो शहर के निकट पहुँचे तो वहाँ देखा

कि सारा नगर उनके स्वागत के लिए, महाराज की देखरेख में स्वागत के लिए आया हुआ है। उनके स्वागत में आये उनके पिताश्री और महाराज के सीने के ऊपर उन्होंने अपने बेटे और बेटी को उठाये हुए देखा, जिन्हें वो कुछ दिन पहले नाविक को दान कर आये थे।

बेटी और बेटे ने निकट आकर जब अपने माता–पिता को देखा तो दादा की गोद से उतरकर अपने माता–पिता की ओर दौड़े। वो चिल्ला रहे थे "हमारे पिताश्री और हमारी माताश्री आ गये।" इस तरह खुशी के इज़हार करते हुए बच्चों ने राजकुमार और राजकुमारी को दौड़कर आलिंगन किया और उनका स्वागत किया।

अपने प्राणों से प्यारे बच्चों को देखकर राजकुमारी भी बहुत ही प्रसन्न हुई, खुशी से लगभग वह बेहोश से हो गए। उन्होंने अपने बच्चों को गोद में उठाया और उनको चूमा और अपने पिताश्री के सामने उपस्थित हुए। पिताश्री महाराज ने अपने दामाद और बेटी का बड़ी प्रसन्नता के साथ स्वागत किया और सारी बातें बताकर उन्हें पूरी शान–शौकत के साथ राजमहल ले गये।

महाराज ने उसी समय अपना दरबार लगाया। उस दरबार के बीच में, नाविक के रूप में, नाविक का रूप धारण करने वाले महाराज इन्द्र ने अपने आपको प्रकट किया और दरबारियों से बोले–"ओ उपस्थित मानवगण, ये आपके बीच में जो पति–पत्नी पधारे हैं, यह आदर्शवादी दम्पति हैं, जिनकी सच्चाई और त्याग की मजबूती, ऊँचाई की उन बुलंदियों को छूती है, जो बड़े–बड़े महात्माओं में विरल तौर पर पाई जाती है। ऐसे लोगों की देखभाल और रक्षा के लिए, साधारण व्यक्तियों की बात तो जाने दीजिए, देवताओं के राजा भी बिना किए नहीं रह सकते। आपके सामने सम्बोधन करने वाला मैं महाराज इन्द्र जिसे देवताओं के राजा के रूप में जानते हैं, इन पति–पत्नी की वृद्धि के लिए नाविक के रूप में उनके सामने उपस्थित हुआ और मैंने इनकी सन्तानों को दान के रूप में प्राप्त किया। मैंने ही इनके बच्चों को उनके दादा–दादी के पास पहुँचाया और मैंने ही इस दम्पति के बारे में आपको बताया था कि कुछ देर में ये आपके पास आ जायेंगे। मैंने कोशिश की, कि इन सत्यवादी पति–पत्नी ने जितनी तकलीफें आज तक उठायी हैं उनके स्थान पर अब इन्हें उतने ही सुख और आनन्द प्राप्त हो सकें। इसीलिए मैंने इन्हें आपके पास पहुँचाया है।

आपके सामने यह उदाहरण है कि इनकी मदद के लिए मुझे देवलोक छोड़कर मानव लोक में आना पड़ा। ऐसी परिस्थिति में मानवीयकर्ताओं, आप इस बात से सहमत होंगे, इस बात को भली–भाँति समझेंगे कि ऐसी दम्पति की मदद करना, उनका सहयोग करना कितना महत्वपूर्ण है। कितना जरूरी है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि इन्हें जिस तरह का भी सहयोग चाहिए, सहायता चाहिए, इनको प्रदान किया जाये। और आप लोगों के लिए अन्तिम सन्देश यह है कि जैसे यह दम्पति इस संसार में रहकर व्यवहार कर रहे हैं, आप भी ऐसी निष्ठा से अपना कार्य व्यापार कीजिए।'' यह कहकर महाराज इन्द्र देवलोक वापस पहुँचे।

महाराज अपनी बेटी राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ के पति राजकुमार के बारे में, उनकी सच्चाई के बारे में, यह सब नहीं जानते थे। उन्होंने यही समझा कि शायद वही राजकुमार है जिसे मैंने राजकुमारी को सौंपा था। यह गिद्धराज है। लेकिन अब वे भी सच्चाई जान गए थे। तब खुशी से स्वागत करते हुए उसने कहा—''प्रिय बेटी, उस समय जबकि एक राजकुमार ने तुम्हारा हाथ आकर माँगा था तो यदि राजकुमार को मामूली या साधारण समझकर, तुमसे विवाह न करने को कह देता तो कितनी मूर्खता होती ? अब देखो महाराज इन्द्र ने जो फरमाया है, उसके अनुसार यह राजकुमार कितना महान है। यह कितना महान इन्सान है।''

तभी बेटी मैं: डौं: कैतो ने कहा—''यह राजकुमार वह व्यक्ति नहीं है जिसके हाथ आपने मुझे सौंप दिया था, वो तो एक बहुत ही नीच, पापी, दुष्ट गिद्धों का राजा था, जिसके हाथों से मुझे इस राजकुमार ने बचाया, जोकि एक आदर्श पुरुष है।'' यह कहकर राजकुमारी ने अपनी सारी कहानी सुनाई। बेटी ने जो कहानी सुनाई उन सब घटनाओं को सुनकर, जानकर पिताश्री महाराज को बहुत ही दुःख हुआ और अन्त में दुःखी होकर महाराज ने दरबार में फरमाया—''मेरे दरबारीगण, मेरी बेटी राजकुमारी मैं: डौं: कैतौ ने गिद्ध का मजाक उड़ाने का पाप किया था। उसी पाप के कारण इन्हें यह तकलीफें उठानी पड़ीं। अब इस सारी सच्चाई को जानकर हमें बहुत बड़ा सबक मिल सकता है। वह यह है कि भले ही कोई भी हो, किसी को भी, बिना कारण बुरा–भला नहीं कहना चाहिए। उसका मजाक नहीं उड़ाना चाहिए। उसे अपने से छोटा, अपने से तुच्छ नहीं समझना चाहिए।'' महाराज ने अपने दरबारियों को यह सन्देश दिया।

उस समय से लेकर राजकुमार और राजकुमारी ने अपने पिताश्री के दो देशों के बीच हर तरह के प्रदान करवाये। फलस्वरूप, दोनों देश बहुत समृद्ध हुए। इस तरह राजकुमार और राजकुमारी अपने बच्चों के साथ दोनों ओर के अपने बुजुर्गो के साथ, सुख–आनन्द और संतोष के साथ जीवन व्यतीत करने लगे।

दो फल

पुराने ज़माने में मानव संसार में चां खुं खौउ नाम के देवता हुए हैं, जिन्हें चावल रक्षक के रूप में मान्यता प्राप्त थी। इन चां खुं खौउ देव ने मानव जाति के लिए जो सबसे पहले धान के दाने बनाये वे एक–एक सीताफल जितने हुआ करते थे।

एक दिन चावल देव और इन्द्रदेव की भेंट हुई। इन्द्र देव ने चावल देव से कहा—"संसार में, इस लोक में, मानव जाति का कल्याण करने वाला मैं इन्द्रदेव हूँ। इसलिए हर मानव का फर्ज बनता है कि मेरे प्रति श्रद्धा रखे, मेरा आदर करे।"

महाराज इन्द्र की बात सुनकर चावल देव चां खुं खौउ बोले—"इस संसार में लोगों का वास्तविक तौर पर भला करने वाले तुम नहीं हो, मैं हूँ। मैं चावल का देव हूँ इसलिए संसार में जितने भी लोग हैं, उनका यह कर्तव्य होता है कि वे मुझे अर्थात चावल देव चां खुं खौउ के प्रति श्रद्धा रखें, उसका ही आदर करें, यानि मेरा ही आदर करें।"

इस तरह इन्द्र देव और चावल देव में यह बहस छिड़ी कि इस मानव लोक का कल्याण तुमने नहीं मैंने किया है।

आखिरकार चावल देव चां खुं खौउ बहुत क्रोधित हुए और बोले—"देखिए इन्द्र महाराज जी, अगर आप बहुत प्रतापी हैं, तो आप मानव संसार में रहिए।" यह कहकर चावल देव देवलोक लौट गये।

चावल देव के देवलोक लौट जाने पर मानव लोक में चावल की फसलें बहुत कम होने लगीं, लोग अनाज न मिलने के कारण मरने लगे, भूख असह्य हो गई।

तब महाराज इन्द्र को जब कोई उपाय नहीं सूझा तो मानव लोक में फसलों का जो रक्षक था, चावल देव, उसके पास जाने से पहले उन्होंने मानव लोक में ही फसलों के रखवाले जो अन्य देव थे, उन सबकी सभा बुलाई। इन्द्र महाराज ने देवताओं से कहा—"लोगों की जो मुख्य फसल है,



उसकी देखभाल कौन कर सकेगा ?'' जितने भी अन्य देव थे, वो सब आदमियों की सेवा करने को तो तैयार थे, पर उनका मुख्य आहार बनने के लिए तैयार नहीं थे। उनका प्रधान आहार बनने के लिए किसी की भी हिम्मत नहीं हुई। तभी चीः ऐंः फल के रक्षक ने कहा—''लोगों के प्रधान आहार के रूप में भार उठाने के लिए यदि कोई तैयार नहीं है तो मैं ति औ तीः फल लोगों की इस जरूरत के लिए भार उठाता हूँ। लोगों को जिन्दा रखने के लिए मैं भार उठाता हूँ।'' उसने बढ़–चढ़कर अपनी शक्ति से अधिक बात कही।

जब ति औ तीः फल के वृक्ष के रक्षक देव की बात को धौंः तींः फल के रक्षक देव ने सुना तो वह बोला—''तुम्हारा फल तो मेरे फल से भी छोटा है। मेरे जितना मिलता भी नहीं है। तुम्हारा अपना फल भी मुझ तक भी नहीं पहुँच पाता। इसलिए मानव जाति का जो प्रधान आहार है, उसको तुम पूरा नहीं कर पाओगे। इस मामले में तुम किसी तरह भी सेवा नहीं दे पाओगे।'' यह कहकर उसने क्रोध से ति औ तींः फल के रक्षक के पेड़ को कसकर एक लात मारी।

उस दिन से उस समय से लेकर तैंः ऐंः फल के वृक्षों की हालत यों हो गई। उनकी लकड़ी सख्त होने के बावजूद वो पेड़ एक ओर से टेढ़े–मेढ़े, झुके–झुके होकर निकलने लगे, उगने लगे और पकने लगे।

फसल के रखवाले देव, मानव के प्रधान आहार के लिए किसी तरह का भार नहीं उठा सकते। जब ये बात इन्द्र महाराज के सामने प्रकट हो गई तो महाराज इन्द्र अपनी झूठी शान को भूलकर चावल के देवता के पास गये और उनसे अपनी भूल के लिए क्षमा माँगी। उनसे अनुरोध किया कि मानव जाति के प्रधान आहार के सही व्यवस्थापक आप ही हैं। आप ही आगे भी भार उठायें।

चावल देव ने इन्द्र देव की प्रार्थना के कारण चावल के एक सौ एक बीज़ फसल के लिए दे दिये। उन चावल के एक सौ एक बीजों को मानव लोक में जाकर लगाने के लिए यह भी तय कर दिया गया कि एक–एक बीज चींटीं जितना ही बड़ा हो। यह उन्होंने प्रतिज्ञा की और फरमाया—कि चावल के दाने अब लगभग भूरे रंग की चींटी के अण्डे के समान होंगे।

इसलिए जो चावल के दाने पहले सीताफल के जितने बड़े होते थे, वो चावल के दाने अब मक्का, गेहूँ से भी छोटे होते हैं। भूरे रंग की चींटी के अण्डे के समान होते हैं।

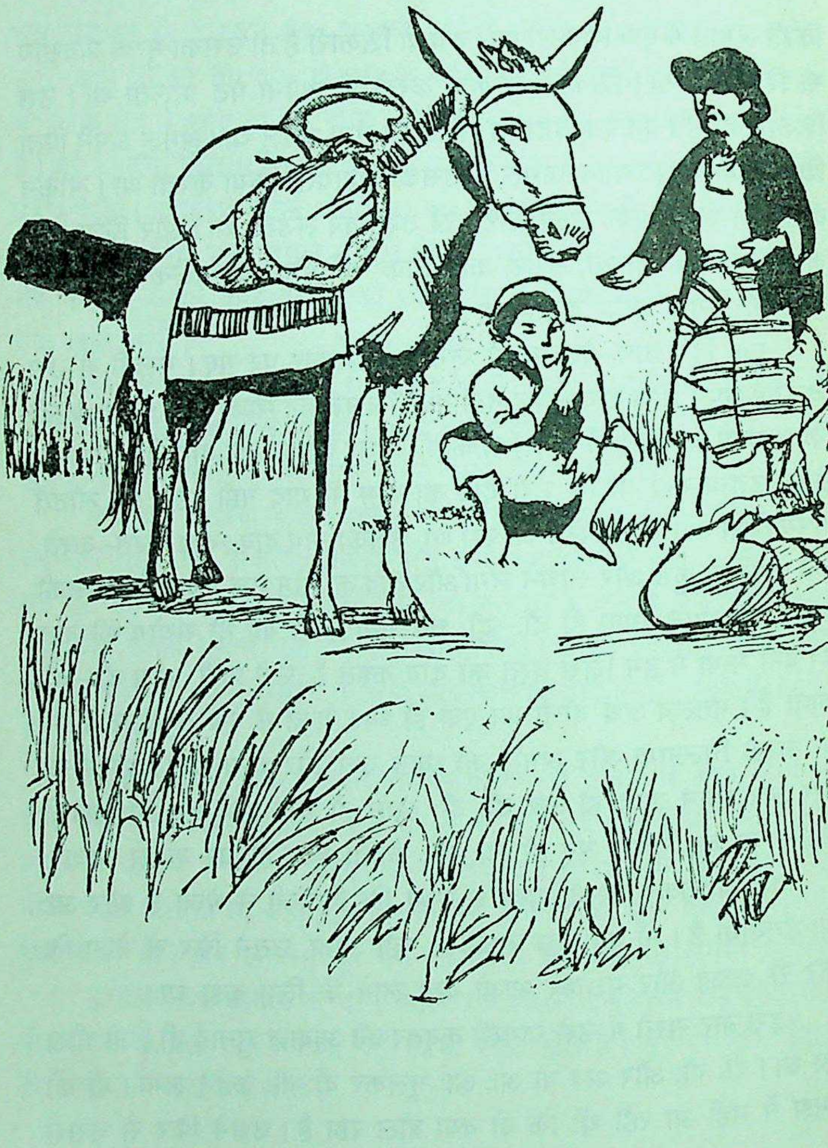
मूर्ख अभलू

किसी ज़माने में एक शिकारी था। जब वो शिकारी है तो उसका मुख्य व्यवसाय भी शिकार होगा। शिकारी शिकार करके ही अपना पेट पालता था। उस शिकारी दम्पति का एक बेटा था। जिसका नाम अभलू था। अभलू अपने पिता शिकारी के साथ जाकर जंगल में उसकी सहायता किया करता था। लेकिन वास्तव में अभलू एक भोला और मूर्ख तरह का लड़का था। और जिस तरह की वो मदद करता था, उससे काम ठीक नहीं होता था, बल्कि बनने वाला काम भी बिगड़ जाया करता था।

एक दिन बाप–बेटा दोनों जंगल में शिकार पर गए। गलती से उस दिन वह अपने साथ दाव लेकर नहीं गए। जिससे वह शिकार की चीड़ा–फाड़ी किया करते थे। पिता ने अभलू से कहा कि घर जाकर तुम दाव लेकर आओ। अभलू इतना मूर्ख था कि उसे दाव का नाम भी याद नहीं रहा। घर लौटते समय जिस दाव को वो लेने जा रहा था, उसका नाम दाव–दाव करते–करते, एक जगह वो कुछ और सोचने लगा और दाव का नाम भूल गया। फिर उसकी जबान पर अपने–आप ही दौंः–दौंः चढ़ गया। वैसे यह भी संयोग की बात है। बर्मी भाषा में हम जिस वस्तु को दाव कहते हैं, उसे पलौंः लोग दौंः–दौंः कहते हैं। मतलब अर्थ दोनों का एक ही था। रास्ते में पेड़ के ऊपर कौआ आ करके चिल्लाया और अभलू का ध्यान उस ओर चला गया। अभलू का उस ओर ध्यान जाते ही अब दौंः दौंः खत्म हो गया और आः आः उसकी जबान पर चढ़ गया। अब वो आः आः कहता हुआ ही घर वापस आया।

घर पहुँचकर उसने माता से कहा कि पिताजी ने भेजा है और आः आः मँगवाया है। माँ को कुछ समझ में नहीं आया, उसने फिर से भेजा कि फिर से जाओ और पूछकर आओ क्या लाने के लिए कहा था।

इस बार रास्ते में उसे जंगली कबूतर की आवाज़ सुनाई दी। जो चीख रहा था। वौंः वौंः और अब वो आः आः भूलकर वौंः वौंः कहने लगा। माँ को समझ में नहीं आ रही थी कि वो क्या बोल रहा है। उसने फिर से उससे



कहा कि फिर जंगल में जाओ और पिता से पूछकर आओ कि क्या चाहिए।

इस पर शिकारी पिता का सब्र टूट गया और उसने बेटे अभलू को वहीं बैठा दिया और उससे कहा—"देखो यह जो शिकार हमने मारा है। इसकी तुम रखवाली करना। यहाँ शोर नहीं मचाना। चुपचाप यहाँ बैठे रहो और किसी भी अन्य व्यक्ति को शिकार पर हाथ मत लगाने देना। मैं दाव लेने जा रहा हूँ और अभी लौटता हूँ।"

पिता के चले जाने के बाद कुछ देर के लिए अभलू चुपचाप शान्ति से बैठा रहा। चारों ओर से पक्षियों के चहचहाने की आवाज़ें आ रही थीं। उनको सुनकर वह बोला—"ओ, तुम लोग शोर मत करो। तुम लोगों के शोर की वज़ह से दूसरे लोग यहाँ आ जायेंगे और मेरा शिकार उड़ाकर ले जायेंगे।" उसने यह कहकर उन्हें डाँट दिया। अभलू की आवाज़ को जब निकट के दूसरे शिकारियों ने सुना और जब उनको यह मालूम हुआ कि शिकार के पास अभलू बैठा है, तो उन्होंने शिकार की चीड़—फाड़ की और उन्होंने आपस में उसे बराबर बाँट लिया।

जब पिताश्री लौटे और उन्होंने देखा कि वहाँ शिकार नहीं है। वहाँ सिर्फ हड्डियाँ और बाकी की गन्दगी ही पड़ी है, तो वह बहुत नाराज़ हुए, और डाँटते—डाँटते घर लौटे।

दो दिनों बाद बाप—बेटे को फिर से एक बड़ा शिकार मिला, तो इस बार शिकारी ने अपने बेटे अभलू को शिकार के पास बैठने के लिए नहीं कहा, बल्कि चीड़—फाड़ कर जितना घर पहुँचा सकता था, उसे पहुँचाने के लिए कहा। पहुँचाने के लिए जब अभलू से कहा गया तो पिता ने अभलू से कहा कि अगर कोई रास्ते में माँगे तो उसे थोड़ा—सा देना। रास्ते में काँटे से शिकार का माँस अटका तो अभलू ने समझा कि कोई गोश्त माँग रहा है। पिता के कहे अनुसार उसने थोड़ा—थोड़ा काट—काटकर दिया। इस तरह जब भी डाली या टहनी से छू जाता, तो वह काट—काटकर देता रहा। घर पहुँचते—पहुँचते थोड़ा—सा माँस भी नहीं रह गया था।

अभलू की बेवकूफियों को सहने का धैर्य अब पिता में नहीं था, इसलिए उन्होंने बेटे को घर से निकाल दिया।

सोचने की शक्ति जिस अभलू में कम थी, वो जंगल में वापस गया। तो यहाँ—वहाँ खोजकर कुछ भी खा नहीं सकता था। तब जंगल में ही भूख के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

सच और झूठ

पुराने ज़माने की बात है कि एक गाँव में एक बहुत ही बातूनी, पलौः जाति का एक लड़का रहता था। वह अपने आपको बहुत चालाक समझता था, उसका नाम आइंसा था। वह एक प्रकार से डपोरशंख था।

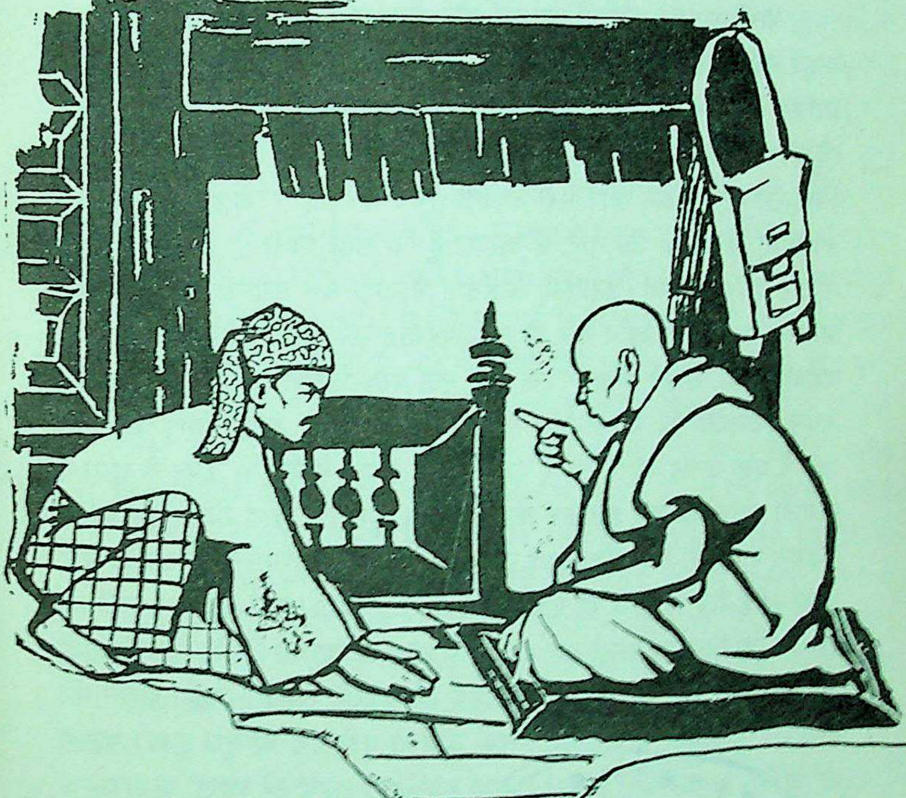
एक दिन आइंसा जो चालाक था और जो पलौः जाति से था और दूसरी ओर एक दूसरे गाँव में अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने वाला और अपनी प्रशंसा अपने आप करने वाला, अपने बारे में झूठ का प्रचार करने वाला, डपोरशंख लड़का था। दूसरे गाँव वाला भी पलौः जाति से था, जिसका नाम आईमाट् था।

आइंसा बहुत बातूनी था आईमाट् बहुत चालाक था। आइंसा के गाँव के लोग इस बात के लिए उसकी बड़ी तारीफ किया करते थे कि वो बोल–चाल में बहुत होशियार है और बातचीत में वो अपने आपको किसी से कम नहीं मानता।

उसी प्रकार आईमाट् के गाँव वाले भी उसके बारे में कहते थे कि आईमाट् भी बहुत चालाक है और वह अपने मुँह अपनी झूठी प्रशंसा बहुत करता है।

कभी–कभी ऐसा होता कि दोनों के गाँव वाले जब इकट्ठे होकर बैठते तो आइंसा और आईमाट् की कहानी ले बैठते और कहते कि हमारे गाँव वाला लड़का ज्यादा होशियार है।

गाँव वालों की बहस जब आइंसा और आईमाट् ने भी सुनी, तो उन लोगों ने फैसला किया कि गाँव वालों का मनोरंजन भी हो जायेगा और हमें भी अपने–अपने बारे में ठीक–ठीक ज्ञान हो जायेगा कि कौन कितने पानी में है। तो हम लोग विश्वसनीय कथायें सुनाते हैं। इस कथा को सुनाने में बस शर्त यही है कि इसको सुनने के बाद यदि कोई यह कह दे कि मैं तुम्हारी कहानी को नहीं मानता तो उसको हार माननी पड़ेगी। और वह दूसरे को अपने से उच्च मान लेगा। इतना ही नहीं जीतने वाला मालिक होगा।



दोनों ने शर्तें बड़े ध्यान से सुनीं, दोनों ने हामी भर दी और दोनों ने यह तय कर लिया कि इस दिन हमारी प्रतियोगिता होगी। जिस दिन वे उस जगह पर पहुँचे उस स्थिति पर पहुँचे तो आइंसा से कहा गया कि तुम अपनी बात कहो। आइंसा जोकि बातचीत में बहुत ही होशियार माना जाता था। उसने कहा—''सर्दी का एक दिन मौसम बड़ा ही सुहावना था, मैं अपने साथियों के साथ लकड़ियाँ काटने गया। मैं अपने थैले में जो बाँसुरी रखी हुई थी, उसे निकालकर बजाने लग गया।

तभी आवाज़ें सर्दी में जम गईं और बाहर नहीं निकल पाईं। जब आवाज़ें बाहर नहीं आईं तो मैं तरकीबें करता रहा कि अब निकलेंगी, आज निकलेंगी। प्रतीक्षा करते–करते जब गर्मी का मौसम आया और सवेफी चाय की पत्तियाँ तोड़ने का समय आ गया। तब बाँसुरी में से आवाज़ें बहकर अपने–आप निकलने लगीं। अब कहो मेरी कहानी तुमने मानी है ?'' आइंसा ने पूछा तो आईमाट् ने सोचा कि यदि मैं कहता हूँ कि नहीं मानी है, तो मुझे इसका नौकर बनना पड़ेगा। इसलिए आईमाट् ने कहा मैंने तुम्हारी कहानी मानी। आइंसा ने कहानी खत्म कर दी तो, आईमाट् की बारी आई और हमेशा जो बड़बोला था, उसने कहा—''एक दिन मुझे बड़ा आलस आ रहा था। तब मैंने अपने पिताजी का धनुष–बाण लिया और जंगल में चला गया। जंगल में जब मैं एक जगह पहुँचा तो मैं पेड़ पर चढ़ गया। मैं पेड़ के ऊपर से छुपकर जंगली जानवरों का इंतजार करने लगा। कुछ देर बाद जिस पेड़ पर मैं चढ़कर जानवरों की प्रतीक्षा कर रहा था। उसी पेड़ के सामने एक शेर दिखाई दिया और शेर के पीछे ही एक हिरण दिखाई दिया। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि किसको पहले मारूँ। अभी मैं सोच ही रहा था कि पेड़ पर मक्खियों का जो छत्ता था, उसमें से एक शहद की मक्खी उड़कर आई। उसने मेरे हाथ पर डंक मार दिया और उसके डंक से मुझे दर्द महसूस हुआ। गलती से जो मैंने धनुष–बाण खींचकर रखा हुआ था। शहद की मक्खी के अचानक काटने से झटका लगा और उसे मैंने छोड़ दिया। वो एक ही तीर इतनी तेजी के साथ में गया कि उसने शेर को भी और उसके पीछे जो हिरण जो कि उससे काफी दूरी पर था, दोनों को एक ही तीर से मार गिरा दिया। पिताजी का जो धनुष था, उसकी जो शक्ति थी, उसकी शक्ति ही के कारण, जो पीछे की ओर धकेलती थी, मैं भी पेड़ से पीछे की ओर गया। मैं वहाँ जंगली अण्डों पर, जो वहाँ बिखरे हुए थे, जाकर गिरा, और मैंने जब खुले

हुए मुँह से पेड़ की ओर देखा तो देखा कि शहद एक–एक बूँद करके मेरे मुँह में टपक रहा है। क्या तुम इस बात को मानते हो ? इस बात पर यकीन करते हो ?'' उसने आइंसा से पूछा। अगर मैं यकीन नहीं करता तो कहीं नौकर बनने की नौबत न आ जाये यही सोचकर आइंसा ने कहा कि हाँ, मैं यकीन करता हूँ कि तुमने ठीक कहानी सुनाई है।

जहाँ वो लोग कथा सुना रहे थे, यह बात कर रहे थे कि किसने विश्वसनीय कथायें बोलीं। वहाँ एक अनजान व्यक्ति आया, जिसने कि एक बहुत बड़ी टोकरी उठा रखी थी। उस व्यक्ति ने कहा–''मैं भी तुम लोगो की तरह विश्वसनीय कहानी सुनाना चाहता हूँ।'' यह कहकर वह अपनी कहानी सुनाने लगा। तब आइंसा और आईमाट् ने उस व्यक्ति की ललकार कबूल कर ली–''हाँ, ठीक है। तुम भी सुनाओ।'' अनुमति मिलने पर उस व्यक्ति ने कहा–''मैं हर साल अपने खेत पर सीताफल लगाया करता हूँ। इस साल वहाँ एक अद्भुत सीताफल लगा है। उस सीताफल में से दो लोग निकले। उन दो व्यक्तियों को मैंने अपने घर में नौकर रखा, लेकिन वो दोनों भाग गये। मैं उनकी खोज में निकल पड़ा हूँ। अब जाकर वो दो व्यक्ति मुझे दिखाई दिए हैं। वो दोनों आदमी कोई और नहीं, तुम दोनों ही हो। क्यों मेरी कहानी पर भरोसा करते हो ? क्या मेरी कहानी विश्वसनीय है ? बताओ मानते हो ?'' उस अन्जान ने आइंसा और आईमाट् से प्रश्न किया। अगर आइंसा और आईमाट् यह कहते हैं कि हम मानते हैं, तो वो उसके नौकर बन जाते हैं, और वो यह कहते हैं कि नहीं मानते तो अन्जान व्यक्ति के नौकर बन जायेंगे, वो किसी भी तरह का उत्तर देने में असमर्थ थे। वे एक–दूसरे का चेहरा देख रहे थे। जब उनसे कोई उत्तर नहीं बना तो उस व्यक्ति ने उन दोनों को उठाकर अपनी विशाल टोकरी में डाल लिया और अपने घर में नौकर बनाने के लिए उनको अपने साथ ले गया।

हिन्दी में बर्मी साहित्य का एकमात्र प्रकाशन संस्थान

इरावदी प्रकाशन

भारत और बर्मा के बीच साहित्यिक आदान-प्रदान का कीर्तिमान

बर्मा की लोकप्रिय लोक कथाएँ
पन्द्रह खण्डों में प्रस्तावित कथामाला

चयन, सम्पादन एवं रूपान्तर

चन्द्रप्रकाश प्रभाकर 'मौतीरि'

साहसी युवक (खण्ड एक)		
ISBN 81-85720-50-9,	पृ० संख्या 266	1994, प्रकाशित
पसीने की कमाई (खण्ड दो)		
ISBN 81-85720-51-7,	पृ० संख्या 271	1995, प्रकाशित
उड़ती नाव (खण्ड तीन)		
ISBN 81-85720-53-3,	पृ० संख्या 270	1995, प्रकाशित
फौलाद का अर्क (खण्ड चार)		
ISBN 81-85720-55-X,	पृ० संख्या 256	1995, प्रकाशित
नौ सिरों वाला साँप (खण्ड पाँच)		
ISBN 81-85720-54-1,	पृ० संख्या 264	1995, प्रकाशित
शक्तिमान (खण्ड छः)		
ISBN 81-85720-56-8,	पृ० संख्या 272	1995, प्रकाशित
सयाना कौन ? (खण्ड सात)		
ISBN 81-85720-57-6,	पृ० संख्या 272	1995, प्रकाशित
नागरानी का उपहार (खण्ड आठ)		
ISBN 81-85720-52-5,	पृ० संख्या 272	1995, प्रकाशित
अजूबा शेर (खण्ड नौ)		
ISBN 81-85720-71-1,	पृ० संख्या 272	1995, प्रकाशित
अनोखा तीरन्दाज (खण्ड दस)		
ISBN 81-85720-72-X,	पृ० संख्या 272	1995, प्रकाशित
ओझल बस्ती (खण्ड ग्यारह)		
ISBN 81-85720-73-8,	पृ० संख्या 272	1996, प्रकाशनाधीन
लाल पहाड़ (खण्ड बारह)		
ISBN 81-85720-74-6,	पृ० संख्या 272	1996, प्रकाशनाधीन
बादलों की गवाही (खण्ड तेरह)		
ISBN 81-85720-75-4,	पृ० संख्या 272	1996, प्रकाशनाधीन
सूरज का शाप (खण्ड चौदह)		
ISBN 81-85720-76-2,	पृ० संख्या 272	1996, प्रकाशनाधीन
भूत और भभूत (खण्ड पन्द्रह)		
ISBN 81-85720-77-0,	पृ० संख्या 272	1996, प्रकाशनाधीन

प्रत्येक का मूल्य : 150 रुपये

व्यवस्थापक, फोन : 5504169

इरावदी प्रकाशन

सी-487, विकासपुरी, नई दिल्ली 110018